

सापत ताड़त परुष कहंता । विप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
 पूजिअ विप्र सील गुन हीना । सूद्र न गुन गन ग्यान प्रवीना ॥
 कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निज पद प्रीति देखि मन भावा
 रघुपति चरन कमल सिरु नाई । गयउ गगन आपनि गति पाई ॥
 ताहि देइ गति राम उदारा । सबरी कें आश्रम पगु धारा ॥
 सबरी देखि राम गृहँ आए । मुनि के बचन समुझि जियँ भाए
 सरसिज लोचन बाहु बिसाला । जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥
 स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ॥
 प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा
 सादर जल लै चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥
 दो०—कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहूँ आनि ।

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥ ३४ ॥

पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी
 केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी
 अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी ॥
 कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ॥
 जाति पाँति कुल धर्म बढ़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
 भगति हीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा
 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
 प्रथम भगति संतन्ह कर संगी । दूसरि रति मम कथा प्रसंगी ॥

दो०-पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म ।

मायाछन्न न देखिये जैसे निर्गुन ब्रह्म ॥३९(क)॥

सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जल माहिं ।

जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजुत जाहिं ॥३९(ख)॥

विकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ॥

बोलत जलकुक्कुट कलहंसा । प्रभु विलोकि जनु करत प्रसंसा ॥

चक्रवाक बक खग समुदाई । देखत बनइ वरनि नहिं जाई ॥

सुंदर गगन गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥

ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए । चहु दिसि कानन बिटप सुहाए ॥

चंपक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस परास रसाला ॥

नव पल्लव कुसुमित तरु नाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥

सीतल मंद सुगंध सुभाऊ । संतत बहइ मनोहर बाऊ ॥

कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं । सुनि ख सरस ध्यान मुनि टरहीं ॥

दो०-फल भारन नमि बिटप सब रहे भूमि निभराइ ।

पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाइ ॥ ४० ॥

देखि राम अति रुचिर तलावा । मजनु कीन्ह परम सुख पावा ॥

देखी सुंदर तरुवर छाया । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥

तहँ पुनि सकल देव मुनि आए । अस्तुति करि निज धाम सिधाए ॥

बैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहत अनुज सन कथा रसाला ॥

विरहवंत भगवंतहि देखी । नारद मन भा सोच विसेषी ॥

मोर साय करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुख भारा ॥
 ऐसे प्रभुहि त्रिलोकउँ जाई । पुनि न वनिहि अस अवसर आई
 यह विचारि नारद कर बीना । गए जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥
 गावत राम चरित मृदु वानी । प्रेम सहित बहु भाँति बखानी ॥
 करत दंडवत लिए उठाई । राखे बहुत बार उर लाई ॥
 स्वागत पूँछि निकट बैठारि । लछिमन सादर चरन पखारि ॥

दो०—नाना विधि विनती करि प्रभु प्रसन्न जियँ जानि ।

नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह पानि ॥ ४१ ॥

सुनहु उदार सहज रघुनाथक । सुंदर अगम सुगम वर दायक ॥
 देहु एक वर मागउँ स्वामी । जद्यपि जानत अंतरजामी ॥
 जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । जन सन कवहुँ कि करउँ दुराऊ
 कयन वस्तु असि प्रिय मोहि लागी । जो मुनिवर न सकहु तुम्ह मागी ॥
 जन कहूँ कद्यु अदेय नहि मोरें । अस विस्वास तत्रहु जनि भोरें ॥
 तब नारद बोले हरषाई । अस वर मागउँ करउँ दिठाई ॥
 जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें एका ॥
 राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अब खग गन बाधिका ॥

दो०—राका रजनी भगति तब राम नाम सोइ सोम ।

अपर नाम उडगन विमल बसहुँ भगत उर व्योम ॥ ४२ (क) ॥

एवमस्तु मुनि सन कहैउ कृपा सिंधु रघुनाथ ।

तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नाथ उ माथ ॥ ४२ (ख) ॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी । पुनि नारद बोलै मृदु बानी ॥
 राम जबहि प्रेरेउ निज माया । मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया ॥
 तब विवाह मैं चाहउँ कीन्हा । प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा ॥
 सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा । भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा
 करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी । जिमि बालक राखइ महतारी ॥
 गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई । तहँ राखइ जननी अरगाई ॥
 प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता । प्रीति करइ नहिं पाछिलि वाता ॥
 मोरें प्रौढ़ तनय सम ग्यानी । बालक सुत सम दास अमानी ॥
 जनहि मोर बल निज बल ताही । दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥
 यह विचारि पंडित मोहि भजहीं । पाएहुँ ग्यान भगति नहिं तजहीं ॥

दो०—काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।

तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ॥ ४३ ॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । मोह विपिन कहँ नारि बसंत ॥
 जप तप नेम जलाश्रय झारी । होइ ग्रीष्म सोषइ सब नारी ॥
 काम क्रोध मद मत्सर भेका । इन्हहि हरपप्रद वरषा एका ॥
 दुर्वासना कुमुद समुदाई । तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई ॥
 धर्म सकल सरसीरुह बृंदा । होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा ॥
 पुनि ममता जवास बहुताई । पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई ॥
 पाप उलूक निकर सुखकारी । नारि निविड़ रजनी अँधिआरी ॥
 बुधि बल सील सत्य सब मीना । बनसी सम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥

दो०—भवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।

ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि ॥ ४४ ॥

मुनि रघुपति के बचन सुहाए । मुनि तन पुलक नयन भरि आए
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती । सेवक पर ममता अरु प्रीती ॥
जे न भजहिँ अस प्रभु भ्रम त्यागी । ग्यान रंक नर मंद अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम विग्यान विसारद ॥
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा । कहहु नाथ भव भंजन भीरा ॥
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहजँ । जिन्ह ते मैं उन्ह कैं बस रहजँ ॥
पट विकारजित अनघ अकामा । अचल अकिंचन सुचि सुखधामा
अमितबोध अनीह मितभोगी । सत्यसार कवि कोविद जोगी ॥
सावधान मानद मदहीना । धीर धर्म गति परम प्रवीना ॥

दो०—गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह ।

तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहूँ देह न गेह ॥ ४५ ॥

निज गुन श्रवन सुनत सकुचार्हीं । पर गुन सुनत अधिक हरषार्हीं
सम सीतल नहिँ त्यागहिँ नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ॥
जप तप व्रत दमसंजम नेमा । गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा ॥
श्रद्धा छमा मयत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ॥
विरति विवेक विनय विग्याना । बोध जथारथ वेद पुराना ॥
दंभ मान मद करहिँ न काऊ । भूलि न देहिँ कुमारग पाऊ ॥
गावहिँ सुनहिँ सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥

मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । कहि न सकहि सारद श्रुति तेते ॥

छं०—कहि संक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे ।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगत गुन निज मुख कहे ॥
सिरु नाइ बारहिं वार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए ।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रँग रँग ॥

दो०—रावनारि जसु पावन गावहिं सुनहिं जे लोग ।
राम भगति दृढ़ पावहिं बिनु विराग जप जोग ॥ ४६ (क) ॥
दीप सिखा सम जुवति तन मन जनि होसि पतंग ।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥ ४६ (ख) ॥

मासपारायण, चाईसवाँ विश्राम
ते श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
तृतीयः सोपानः समाप्तः ।
(अरण्यकाण्ड समाप्त)



॥ श्रीरामाय नमः ॥

श्रीरामचरितमानस

किष्किन्धाकाण्ड



समुद्रतटपर—(सीताकी खोज)



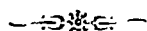
अस कहि लवनसिंधु तट जाई ।

बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस



चतुर्थ सोपान

(किष्किन्धाकाण्ड)



श्लोक

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामाबुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुपरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।

संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो०-मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अध हानिकर ।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कसन ॥
जरत सकल सुर वृंद विषम गरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥

आगेँ चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत निअराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ॥
अति सभीत कहसुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि वटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥
पठए वालि होहिं मन मैला । भागौँ तुरत तजौँ यह सैला ॥
त्रिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु वन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु विचरहु वन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह वन आतप वाता ॥
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दो०-जग कारन तारन भव भंजन धरंजी भार ।

की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु वचन मानि वन आए ॥
नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥

हौं हरी निमिचर वैदेही । विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
 मापन चरित कहा हम गार्ह । कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥
 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । मो सुख उमा जाइ नहिं वरना ॥
 तुलकित तन मुख आवन वचना । देव्यत रुचिर बेर कै रचना ॥
 पुनि धीरु भरि अस्तुति कीन्दी । हरष हृदयै निज नाथहि चीन्दी
 मोर न्याउ मैं पूछा गार्ह । तुम्ह पूछहु कम नर की नाई ॥
 तव माया बस फिरउँ भुलाना । ता ते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥
 श्लो०—एकु मैं मंद मोह्यस कुटिल हृदय अग्यान ।

पुनि प्रभु मोहि दिसारेउ दीन बंधु भगवान ॥ २ ॥
 तदपि नाथ बहु अवगुन मोरे । सेवक प्रभुहि परे जनि मोरें ॥
 नाथ जीव तव मायाँ मोहा । सो निस्तरह तुम्हारेहि छोहा ॥
 ना पर मैं रघुवीर दोहाई । जानउँ नहिं कहु भजन उपाई ॥
 सेवक सुत पति मातु भरोसैं । रहइ अमोच बनइ प्रभु पोसैं ॥
 प्रस कहि परेउ चरन अकुलार्ह । निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई
 तव रघुपति उठाइ उर लाया । निज लोचन जल सींचि जुड़ावा
 तुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना । तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥
 समदरसी मोहि कह सव कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥

श्लो०—सो अनन्य जाकैं असि मति न टरइ हनुमंत ।

मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥
 रत्नि पवनसुत पति अनुकूला । हृदयै हरष बीती सव सूला ॥

नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । दीन जानि तेहि अभय करीजे ॥
 सो सीता कर खोज कराइहि । जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥
 एहि विधि सकल कथा समुझाई । लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ॥
 जय सुग्रीवँ राम कहूँ देखा । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥
 सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेंटैउ अनुज सहित रघुनाथा ॥
 कपि कर मन विचार एहि रीती । करिहहि विधि मो सन ए प्रीती ॥
 दो०—तव हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।

पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दढ़ाइ ॥ ४ ॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाषा
 कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥
 मंत्रिन्ह सहित इहाँ एकबारा । बैठ रहेउँ मैं करत विचारा ॥
 गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत बिलपाता ॥
 राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥
 मागा राम तुरत तेहि दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
 सब प्रकार करिहउँ सेवकाई । जेहि विधि मिलिहि जानकी आई

दो०—सखा वचन सुनि हरषे कृपासिंधु बलसीव ।

कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

नाथ वालि अरु मैं द्वौ भाई । प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥

मय सुत मायायी तेहि नाऊँ । आया सो प्रभु हमरें गाऊँ ॥
 अर्थ राति पुर द्वार पुकारा । बाली गिधु बल नई न पाया ॥
 धाया बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गवउँ बंधु संग लागा ॥
 गिरिदर गुहौं पैठ सो जाई । तब बाली मोहि कहा बुझाई ॥
 परिलेनु मोहि एक पल्लवारा । नहिं आर्यो तब जानेनु मारा ॥
 मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी । निगरी नथिर धार तहँ भारी ॥
 बालि हतेसि मोहि मागिहि आई । सिला देइ तहँ चलेउँ फाई ॥
 मंथिन्ह पुर देखा विनु आई । दानेउ मोहि राज बरिआई ॥
 बाली ताहि मारि गइ आया । देखि मोहि जियँ भेद बढ़ाया ॥
 रिपु नम मोहि मांगिसि अति भारी । हरि लीनेसि सर्वसु अर नारी ॥
 ताकें भय गह्वर कृपाया । सकल भुवन मैं किं उँ विहाया ॥
 इहाँ गार बस आवत नहीँ । तदसि समीत गइँ मन मारी ॥
 सुनि सेवक दुख दानदयाला । फरकि उठौं द्वै भुजा बिसाला ॥

दो०—सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहिं यान ।

मग्न रुद्र सरनागत गर्यँ न उबरिहिं प्रान ॥ ६ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहिं विलोकत पातक मारी ॥
 निज दुख गिरि गम रज करि जाना । मित्रक दुख रज मेरु समाना ॥
 जिन्ह कें आँस मति सहज न आई । ते सठ कत हठि करत मिताई ॥
 क्षुपथ निवारि सुबंध चलाया । गुन प्रगटे अवगुनन्हि दुखाया ॥
 देत लेत मन संक न भरई । बल अनुमान सदा हित कराई ॥

विपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥
 आगें कह मृदु वचन बनाई । पाछें अनहित मन कुटिलाई ॥
 जा कर चित अहि गति सम भाई । अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई ॥
 सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ॥
 सखा सोच त्यागहु बल मोरें । सत्र विधि घटव काज मैं तोरें ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । बालि महाबल अति रनधीरा ॥
 दुंदुभि अस्थि ताल देखराए । विनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ॥
 देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालि बधव इन्ह भइ परतीती ॥
 बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरप कपीसा ॥
 उपजा ग्यान वचन तव बोला । नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ॥
 सुख संपति परिवार बढ़ाई । सत्र परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥
 ए सत्र राम भगति के बाधक । कहहिं संत तव पद अवराधक ॥
 सत्र मित्र सुख दुख जग माहीं । माया कृत परमारथ नाहीं ॥
 बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन विषादा ॥
 सपनें जेहि सन होइ लराई । जागें समुझत मन सकुचाई ॥
 अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती । सत्र तजि भजनु करौं दिन रा ॥
 सुनि विराग संजुत कपिवानी । बोले विहँसि रामु धनुषा ॥
 जो कछु कहेहु सत्य सत्र सोई । सखा वचन मम मृपा न हो ॥
 नट मरकट इव सत्रहि नचावत । रामु खगेस वेद अस गा ॥
 लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि ह ॥
 तव रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल ॥

सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुक्षावा ॥
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सीवा ॥
कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहि संग्रामा ॥

दो०—कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।

जौं कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होई सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी । तून समान सुग्रीवहि जानी ॥
भिरे उभौ बाली अति तर्जा । मुटिका मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव विकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बड्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर बह काया ॥
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि अम तैं नहि मारैं सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव करीरा । तनु मा झुल्य गइ मर पाग ॥
मेली कंठ सुमन कै मात । पटवा पुनि बड्र देइ दिसाया ॥
पुनि नाना विधि मई लगाई । चित्त अंत देखि रघुगई ॥

दो०—बहु छल बल सुग्रीव कर दिई हाथ मय मानि ।

मारा बालि राम तब हृदय मरु कर दानि ॥ ८ ॥

परा विकल महि कर के लग्यो । पुनि उठि बैठे देखि प्रभु अग्यो ॥
स्याम गाव सिर जय कत हो । अन्न नल्ल न चर चढ़ हो ॥
पुनि पुनि चितइ चान चित देखि । सुता बल नान प्रभु देखि ॥
हृदय प्रीति मुख बचन कटोर । बोल्य चितइ ॥
धर्म हेतु अवनइ सोचइ । मोह मोहि ॥

मैं बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा॥
 अनुजवधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥
 इन्हहि कुदृष्टि विलोकइ जोई। ताहि बधैं कछु पाप न होई॥
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना
 मम भुज बल आश्रित तेहि जानी॥ मारा चहसि अधम अभिमानी॥

दो०-सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसेउ निज पानी॥
 अचल करौं तनु राखहु प्राणा। बालि कहा सुनु कृपानिधाना॥
 तन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाही॥
 जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अबिनासी॥
 मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

छं०-सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।

जिति पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥
 मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही ।
 अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥१॥
 अब नाथ करि करुना विलोकहु देहु जो बर मागउँ ।
 जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागउँ ॥
 यह तनय मम सम विनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।
 गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

二、四、六、八、十、十二、十四、十六、十八、二十

[illegible]

一、二、三、四、五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

संस्कृत-विभाग

उत्तमः सुतः सुतः सुतः सुतः । विद्वत्पुत्रः सुतः सुतः सुतः ।

$$\frac{1}{10} \quad \frac{1}{9} \quad \frac{1}{8} \quad \frac{1}{7} \quad \frac{1}{6} \quad \frac{1}{5} \quad \frac{1}{4} \quad \frac{1}{3}$$

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

$\frac{1}{10} \quad \frac{1}{10} \quad \frac{1}{10} \quad \frac{1}{10} \quad \frac{1}{10}$

[illegible]

司馬遷

— 11 —

二、生理學實驗

[illegible]

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044

[illegible]

(The following are the names of the persons who have been appointed as members of the Board of Directors of the Corporation since the last meeting of the Board of Directors.)

(continued)

मैं बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा॥
 अनुजबधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥
 इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधैं कछु पाप न होई॥
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना
 मम भुज बल आश्रित तोहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी॥

दो०—सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसेउ निज पानी॥
 अचल करौं तनु राखहु प्राणा। बालि कहा सुनु कृपानिधाना॥
 जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं॥
 जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अबिनासी॥
 मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

दं०—सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।

जिति पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥

मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही ।

अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥१॥

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो वर मागऊँ ।

जेहिं जोनि जन्मों कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ॥

यह तनय मम सम बिनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।

गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ।

दो०—राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।

सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ १० ॥
 राम बालि निज धाम पठावा । नगर लोग सब व्याकुल धावा ॥
 नाना विधि विलाप कर तारा । छूटे केस न देह सँभारा ॥
 तारा विकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥
 छिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ॥
 प्रगट सो तनु तव आगें सोच । जीव नित्य केहि लागि तुम्ह रोवा ॥
 उपजा ग्यान चरन तव लागी । लीन्हेसि परम भगति वर मागी ॥
 उमा दारु जोषित की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥
 तव सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा ॥
 राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
 रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दो०—लछिमन तुरत बोलाणु पुरजन विप्र समाज ।

राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ भंगद कहँ जुवराज ॥ ११ ॥
 उमा राम सम हित जग माहीं । गुर पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥
 सुर नर मुनि सब कै यह रीती । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ॥
 बालि त्रास व्याकुल दिन राती । तन बहु व्रन चितों जर छाती ॥
 सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराज । अति कृपाल रघुवीर सुभाज ॥
 जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं । काहे न विपति जग परहीं ॥
 पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । बहु प्रकार

कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ॥
 गत ग्रीपम वरपा रिनु आई । रहिहउँ निकट सैल पर छाई ॥
 अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । संतत हृदयँ धरेहु मम काजू ॥
 जब सुग्रीव भवन फिरि आए । रामु प्रवरपन गिरि पर छाए ॥

दो०—प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ ।

राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आइ ॥ १२ ॥

सुंदर वन कुसुमित अति सोभा । गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ॥
 कंद मूल फल पत्र सुहाए । भए बहुत जब ते प्रभु आए ॥
 देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥
 मधुकर खग मृग तनु धरि देवा । करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ॥
 मंगलरूप भयउ वन तव ते । कीन्ह निवास रमापति जब ते ॥
 फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई । सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई ॥
 कहत अनुज सन कथा अनेका । भगति बिरति नृपनीति विवेका ॥
 वरपा काल मेघ नभ छाए । गरजत लागत परम सुहाए ॥

दो०—लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि ।

गृही बिरति रत हरष जस बिष्णुभगत कहूँ देखि ॥ १३ ॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥
 दामिनि दमक रह न घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥
 वरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ॥
 बूँद अघात सहहिं गिरि कैसैं । खल के वचन संत सह जैसैं ॥

छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई । जस योरेहुँ धन खल इतराई ॥
 भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ॥
 समिटि समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सजन पहिं आवा
 सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई
 दो०—हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।

जिमि पाखंड बाद ते गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । वेद पढ़हिं जनु बडु समुदाई ॥
 नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिलें त्रिवेका ॥
 अर्क जवास पात त्रिनु भयऊ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
 खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥
 ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥
 निसि तम धन खद्योत विराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥
 महावृष्टि चलिं फूटि किआरीं । जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं ॥
 कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
 देखिअत चक्रचाक खग नाहीं । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
 ऊपर वरपइ तृन नहिं जामा । जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा
 त्रिविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥
 जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ॥

दो०—कबहुँ प्रबल वह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।

जिमि कपूत के उपजें कुल ॥

कयहुँ दिवस महुँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१५(ख)॥

बरषा विगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
 फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोभहि सोपइ संतोषा ।
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
 रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥
 जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥
 पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥
 जल संकोच विकल भइँ मीना । अवुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥
 विनु घन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥
 कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ १६

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमिं हरि सरन न एकउ बाधा
 फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूप
 चक्रवाक मन दुख निसिपेखी । जिमि दुर्जन पर संपति देख
 चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लंहइ न संकरद्री
 सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक ट

देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥
मसक दंस बीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ॥

दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १७ ॥

वरपा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि विसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहिं सायक मारा मैं बाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह रघुवीर चरन रति मानी ॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०—तव अनुजहि समुझावा रघुपति करना सीव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा । राम काजु सुग्रीवँ विसारा ॥
निकट जाइ चरनन्हि सिख नाया । चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना । विषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥
कहहु पाख महुँ आवन जोई । मोरें कर ताकर बध होई ॥
तव हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि र-----

कयहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१५(ख)॥

बरपा बिगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
 फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोभहि सोपइ संतोषा ॥
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
 रसरस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥
 जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥
 पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥
 जल संकोच बिकल भई मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥
 बिनु धन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सय आसा ॥
 कहूँ कहूँ वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥
 फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा ॥
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूपा ॥
 चक्रवाक मन दुख निसिपेखी । जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥
 चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लंहइ न संकरदोही ॥
 सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक टरई ॥

देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥
मसक दंस वीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ॥

दो०-भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १० ॥

वरया गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥
कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । पाया राज कोस पुर नारी ॥
जेहिं सायक मारा मैं वाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह खुबीर चरन रति मानी ॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०-तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा । राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नाया । चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा
मुनि सुग्रीवँ परम भय माना । विषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥
कहहु पाख महुँ आवन जोई । मोरें कर ताकर बध होई ॥
तब हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहूता ॥

कवहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कवहुँक प्रगट पतंग ।
 बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥ १५ (ख) ॥

वरषा विगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
 फूलें कास सकल महि छाई । जनु वरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा । जिमि लोभहि सोपइ संतोपा ॥
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
 रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥
 जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥
 पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥
 जल संकोच बिकल भइँ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥
 विनु धन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥
 कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥

दो०—चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।
 जिमि हरि भगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ वा
 फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जै
 गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना
 चक्रवाक मन दुख निसि पेखी । जिमि दुर्जन पर संपति
 चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लंहइ न संक
 सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक

देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ।
मसक दंस वीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किऐं कुल नासा ॥

दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥ १७ ॥

वरषा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुँ आनौं ॥
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई । तात जतन करि आनउँ सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहिं सायक मारा मैं बाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥
जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी ॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो०—तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा । राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा । चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ॥
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना । बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥
कहहु पाख महुँ आवन जोई । मोरें कर ताकर बध होई ॥
तब हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहूता ॥

भयं अरु प्रीति नीति देखराई । चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥
 एहि अवसर लछिमन पुर आए । क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ॥
 दो०—धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउँ पुर छार ।

व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार ॥ १९ ॥

चरन नाइ सिरु विनती कीन्ही । लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥
 क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । कह कपीस अति भयँ अकुलाना ॥
 सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि विनती समुझाउ कुमारा ॥
 तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ॥
 करि विनती मंदिर लै आए । चरन पखारि पलंग बैठाए ॥
 तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥
 नाथ विषय सम मद कछु नार्हीं । मुनि मन मोह करइ छन मारहीं ॥
 सुनत विनीत बचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहु विधि समुझावा ॥
 पवनतनय सब कथा सुनाई । जेहि विधि गए दूत समुदाई ॥
 दो०—हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।

रामानुज आगें करि आए जहँ रघुनाथ ॥ २० ॥

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥
 अतिसय प्रबल देव तव माया । छूटइ राम करहु जौं दाय ॥
 विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मैं पावँ पसु कपि अति काम ॥
 नारि नयन सर जाहिन लगा । घोर क्रोध तम निसि जो जा ॥
 लोभ पाँस जेहिं गर न बँधाया । सो नर तुम्ह समान रघुरा ॥

यह गुन साधन तैं नहिं होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ॥
 तत्र रघुपति बोले मुसुकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥
 अब सोइ जतनु करहु मन लाई । जेहि विधि सीता कै सुधि पाई ॥
 दो०—एहि विधि होत वतकही आए बानर जूथ ।

नाना वरन सकल दिसि देखिअ कीस वरूथ ॥ २१ ॥
 बानर कटक उमा मैं देखा । सो मूरख जो करन चह लेखा ॥
 आइ राम पद नावहिं माथा । निरखि बदन स्रव होहिं सनाथा ॥
 अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥
 यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकारी । विस्वरूप व्यापक रघुराई ॥
 ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥
 राम काजु अरु मोर निहोरा । बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
 जनकसुता कहँ खोजहु जाई । मास दिवस महँ आएहु भाई ॥
 अवधि मेटि जो विनु सुधि पाएँ । आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥
 दो०—वचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।

तव सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ २२ ॥
 सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
 सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू । सीता सुधि पूँछेहु सब काहू ॥
 मन क्रम वचन सो जतन विचारेहु । रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ॥
 भानु पीठि सेइअ उर आगी । स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी ॥
 तजि माया सेइअ परलोका । मिटहिं सकल भवसंभव सोका ॥

देह धरे कर यह फलु भाई । भजिअ राम सब काम बिहाई ॥
 सोइ गुनग्य सोई बड़भागी । जो रघुबीर चरन अनुरागी ॥
 आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥
 पाछें पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥
 परसा सीस सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥
 बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि बल विरह बेगि तुम्ह आएहु ॥
 हनुमत जन्म सुफल करि माना । चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ॥
 जद्यपि प्रभु जानत सब वाता । राजनीति राखत सुरवाता ॥
 दो०—चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।

राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥ २३ ॥

कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा । प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥
 बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिं ॥
 लागि तृपा अतिसय अकुलाने । मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥
 मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब विनु जल पाना ॥
 चढ़ि गिरि सिखर चहुँ दिसि देखा । भूमि विवर एक कौतुक पेखा ॥
 चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं । बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ॥
 गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । सब कहुँ लै सोइ विवर देखावा ॥
 आगें कै हनुमंतहि लीन्हा । पैठे विवर बिलंबु न कीन्हा ॥

दो०—दीख जाइ उपवन वर सर विगसित बहु कंज ।

मंदिर एक रुचिर तहुँ बैठि नारि तपपुंज ॥ २४ ॥

दूरे ते ताहि सन्नहि सिर नावा । पूछें निज वृत्तान्त सुनावा ॥
 तेहिं तव कहा करहु जल पाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥
 मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए । तासु निकट पुनि सब चलि आए ॥
 तेहिं सब आपनि कथा सुनाई । मैं अब जाव जहाँ खुलाई ॥
 मूदहु नयन विवर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥
 नयन मूदि पुनि देखहिं वीरा । ठाढ़े सकल सिंधु कें तीरा ॥
 सो पुनि गई जहाँ खुनाथा । जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥
 नाना भाँति विनय तेहिं कीन्ही । अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥

दो०—बदरीवन कहूँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस ।

उर धरि राम चरन जुग जे बंदत अज ईस ॥ २५ ॥

इहाँ विचारहिं कपि मन माहीं । वीती अवधि काज कछु नाहीं ॥
 सब मिलि कहहिं परस्पर वाता । विनु सुधि लएँ करव का भ्राता ॥
 कह अंगद लोचन भरि वारी । दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
 इहाँ न सुधि सीता कै पाई । उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥
 पिता बधे पर मारत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥
 पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥
 अंगद वचन सुनत कपि वीरा । बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ॥
 छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस वचन कहत सब भए ॥
 हम सीता कै सुधि लीन्हें विना । नहिं जैहैं जुवराज प्रवीना ॥
 अस कहि लवनसिंधु तट जाई । बैठे कपि सब ~~दुःख~~ डसाई ॥

जामवंत अंगद दुख देखी । कहीं कथा उपदेस विसेषी ॥
 तात राम कहूँ नर जनि मानहु । निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥
 हम सब सेवक अति बड़भागी । संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी ॥

दो०—निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।

सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥ २६ ॥

एहि विधि कथा कहहिं बहु भाँती । गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥
 बाहेर होइ देखि बहू कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥
 आजु सगहि कहँ भच्छन करजँ । दिन बहु चले अहार विनु मरजँ
 कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा । आजु दीन्ह विधि एकहिं बारा
 डरपे गीध वचन सुनि काना । अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
 कपि सब उठे गीध कहँ देखी । जामवंत मन सोच विसेषी ॥
 कह अंगद विचारि मन, माहीं । धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥
 राम काज कारन तनु त्यागी । हरिपुर गयउ परम बड़भागी ॥
 सुनि खग हरष सोक जुत बानी । आवा निकट कपिन्ह भय मानी
 तिन्हहिं अभय करि पूछेसि जाई । कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥
 सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति महिमा बहु विधि बरनी

दो०—मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि ।

वचन सहाइ करबि मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा । कहि निज कथा सुनहु कपि वीरा
 हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गए रवि निकट उड़ाई ॥

दो०—भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि ।

तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥३०(क)॥

सो०—नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक ।

सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥३०(ख)॥

मासपारायण, तेईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुप्रविध्वंसने

चतुर्थः सोपानः समाप्तः ।

(किष्किन्धाकाण्ड समाप्त)



शरणागत विभीषण



श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भवभीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद खुवीर ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस



पञ्चम सोपान

(सुन्दरकाण्ड)



श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं कल्याणकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये

सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।

भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे

कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥२॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं

दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं

रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥३॥

जामवंत के वचन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अति भाए
तत्र लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई । सहि दुख कंद मूल फल खाई
जब लगि आवौं सीतहि देखी । होइहि काजु मोहि हरष विसेषी
यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा । चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुवीर सँभारी । तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि चरन देखि हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर वाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत विचारी । तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

दो०—हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

राम काजु कीन्हें यिनु मोहि कहाँ विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा । जानैं कहूँ बल बुद्धि विसेषा ॥
सुरसा नाम अहिन कै माता । पठइन्हि आइ कही तेहि वाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा । सुनत वचन कह पवनकुमारा ॥

राम काजु करि फिरि मैं आवौं । सीता कइ मुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
 तव तव वदन पैठिहउँ आई । सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
 कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना । अससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
 जोजन भरि तेहिं वदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा ।
 सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ । तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ॥
 जस जस सुरसा वदनु वढ़ावा । तामु दून कपि रूप देखावा ॥
 सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥
 वदन पइठि पुनि बाहेर आवा । मागा विद्रा ताहि मिरु नावा ॥
 मोहि सुरन्ह जेहि लागि पटावा । बुधि बल मग्गु तोर मैं पावा ॥

दो०-राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।

आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरि एक सिंधु महँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥
 जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल विलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥
 गहइ छाँह सक सो न उड़ाई । एहि विधि मदा गगन चर गवाई ॥
 सोइ छल हनुमान कहँ कीन्हा । तामु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
 ताहि मारि मारुतसुत वीरा । वारिधि पार गयउ मतिवीरा ॥
 तहाँ जाइ देखी वन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
 नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥
 सैल विसाल देखि एक आगें । ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें ॥
 उमान कछु कपि कै अधिकारि । प्रभु प्रताप जो कालहि खारि ॥

गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग विशेषी ॥
अति उत्तंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छं०—कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट दीर्थीं चारु पुर बहु विधि बना ॥
गज बाजि खच्चरनिकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै ।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन वरनत नहिं बनै ॥१॥
वन बाग उपवन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ माल देह विसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु विधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥२॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्ह त्यागि गति पैहहिं सही ॥३॥

दो०—पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥ ३ ॥
मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर वमत धरनीं दनमनी ।

विप्र रूप धरि वचन सुनाए। सुनत विभीषन उठि तहँ आए
 करि प्रनाम पूँछी कुसलाई। विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
 की तुम्ह हरिदासन्ह महुँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
 की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी ॥
 दो०-तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।

सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ ६ ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि नहुँ जीम विचारी
 तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहिं कृपा भानुकुल नाथा ॥
 तामस तनु कछु साधन नार्ही। प्रीति न पद सरोज मन मारही ॥
 अब मोहि मा भरोस हनुमंत। विनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता
 नै खुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
 उगहु विभीषन प्रभु कै रोती। कराहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
 कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबही विधि हीना ॥
 प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहार ॥

दो०-अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर खुबीर ।

कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहुँ अस स्वामि विसारी। फिरोहिं ते काहे न होहिं दुखारी
 एहि विधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिर्वाच्य विश्रामा।
 पुनि सब कथा विभीषन कही। जेहि विधि जनकसुता तहँ रही।
 तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता ।

जुगुति विभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत विदा कगई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । वन असोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहि महुँ क्रीन्ह प्रनामा । बैठेहि वीति जात निसि जामा ॥
कृष तनु सीस जटा एक वेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

दो०—निज पद नयन दिउँ मन राम पद कमल लीन ।

परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तव पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ विचार कगैं का भाई ॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आया । संग नारि बहु किएँ बनाया ॥
बहु विधि खल सीतहि समुझाया । ताम दान मव भेद देखाया ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि स्यानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । एक बार विलोकु मम ओरा ॥
तुन धरि ओट कहति वैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कवहुँ कि नलिनी करइ विकासा ॥
अस मन समुझ कहति जानकी । खल सुवि नहिं रघुवीरवान की ॥
सठ सूनें हरि आनेहि मोही । अधम निलज लाज नहिं तोही ॥

दो०—आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।

पल्य वचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥ ९ ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तव सिर कटिन कृपाना
नहिं त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥
स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधरा ॥

सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
 चंद्रहास हर मम परितापं । रघुपति विरह अनल संजातं ॥
 सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हर मम दुख भारा ॥
 सुनत वचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥
 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु विधि त्रासहु जाई
 मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मैं मारवि काढ़ि कृपाना ॥

दो०—भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि वृंद ।

सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥
 सवन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
 सपनैं बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥
 खर आरूढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
 एहि विधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ विभीषन पाई ॥
 नगर फिरी रघुवीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
 यह सपना मैं कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥
 तासु वचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

दो०—जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।

मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥
 तजौं देह कर बेगि उपाई । दुसह विरहु अत्र नहिं सहि जाई ॥

आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
 सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि
 निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी
 कह सीता विधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला
 देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥
 पावकमय ससि स्रवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
 सुनहि विनय मम ब्रिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
 नूतन किसलय अनल समाना । देहि अग्नि जनि करहि निदाना
 देखि परम विरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कल्प सम बीता ॥

सो०—कपि करि हृदयँ विचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।

जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
 चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरष विषाद हृदयँ अकुलानी ॥
 जीति को सकइ अजय रघुराई । माया तें अति रचि नहिं जाई ॥
 सीता मन विचार कर नाना । मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
 रामचंद्र गुन बरनै लगा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
 लागीं सुनै श्रवन मन लाई । आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
 श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई । कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
 तब हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बैठीं मनु

राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुना निधान की ॥
 यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्ह राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
 नर वानरहि संग कहु कैसैं । कही कथा भइ संगति जैसेँ ॥
 दो०—कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।

जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
 बूढ़त विरह जलधि हनुमाना । भयहु तात मो कहँ जलजाना ॥
 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी
 कोमलचित्त कृपाल खुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
 सहज बानि सेवक सुख दायक । कबहुँक सुरति करत खुनायक ॥
 नयन मम सीतल ताता । होइहहिँ निरखि स्याम मृदु गाता
 बचनु न आव नयन भरे वारी । अहह नाथ हौं निपट विसारी ॥
 देखि परम विरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन विनीता ॥
 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
 जनि जननी मानहु जियँ ऊना । तुम्ह ते प्रेमु राम कै दूना ॥

दो०—रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।

अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम त्रियोग तव सीता । मो कहँ सकल भए विपरीता ॥
 नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू । कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥
 कुवलय त्रिपिन कुंत वन सरिसा । वारिद तपत तेल जनु वरिसा ॥

जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिविध समीरा
 कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौ यह जान न कोई ॥
 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
 कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
 उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम वचन तजहु कदराई
 दो०-निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृमानु ।

जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥
 जौं रघुवीर होति सुधि पाई । करते नहिं बिलंबु खुराई ॥
 राम बान रवि उएँ जानकी । तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥
 अवहिं मातु मैं जाउँ लवाई । प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
 कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुवीरा
 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥
 हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥
 मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा
 कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल वीरा ॥
 सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥
 दो०-सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि विसाल ।

प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु व्याल ॥ १६ ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥
 अजर अमर गुननिधि सुत होहु । करहुँ बहुत रघुनायक छोहु ॥
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
 बार बार नाएसि पद सीसा । बोला वचन जोरि कर कीसा ॥
 अत्र कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ विख्याता ॥
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
 सुनु सुत करहिं त्रिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥
 तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं
 दो०—देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।

रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
 रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
 नाथ एक आवा कपि भारी । तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥
 खाएसि फल अरु ब्रिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
 सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गजेंउ हनुमाना ॥
 सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥
 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमार । चला संग लै सुभट अपारा ॥
 आवत देखि ब्रिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

दो०—कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।

कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
 मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥
 चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
 कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
 अति बिसाल तरु एक उपारा । विरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
 रहे महाभट ताके संगी । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥
 तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
 मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥
 दो०—ब्रह्म अस्त्र तेहिँ साँधा कपि मन कीन्ह विचार ।

जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मवान कपि कहूँ तेहिँ मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥
 तेहिँ देखा कपि मुरुछित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिँ नर ग्यानी ॥
 तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लागि कपिहिँ बंधावा ॥
 कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥
 दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
 कर जोरें सुर दिसिप विनीता । भृकुटि बिलोकत सकल समीता ॥
 देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥
 दो०—कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।

सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि कैं बल घालेहि वन खीसा ॥
 की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही । देखउँ अति असंक सठ तोही ॥
 मारे निसिचर केहिं अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ॥
 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया । पाइ जासु बल विरचति माया ॥
 जाकैं बल विरंचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥
 जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
 धरइ जो विविध देह सुर त्राता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥
 हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
 खर दूषन तिसिरा अरु बाली । बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

दो०—जाके बल लवलेस तैं जितेहु चराचर झारि ।

तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
 समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि वचन बिहसि बिहरावा ॥
 खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव ते तोरेउँ रूखा ॥
 सब कैं देह परम प्रिय स्वामी । मारहिं मोहि कुमारग गामी ॥
 जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥
 मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥
 विनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
 देखहु तुम्ह निज कुलहि विचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भयहार ॥
 जाकैं डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥

तासों बयर कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै ॥

दो०—प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।

गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू ॥

रिषि पुलस्ति जसु विमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥

राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥

बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी ॥

राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई ॥

सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं ॥

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥

संकर सहस बिष्णु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो०—मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।

भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥ २३ ॥

जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति विवेक बिरति नय सानी ॥

बोला बिहसि महा अभिमानी। मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ॥

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही ॥

उलटा होइहिं कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥

सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राणा ॥

सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित विभीषनु आए ॥

नाइ सीस करि विनय बहूता। नीति विरोध न मारिअ दूता ॥

आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥
 सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

दो०—कपि कै ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।

तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहि लइ आइहि
 जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई । देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
 बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
 जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥
 रहा न नगर बसन धृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
 कौतुक कहँ आए पुरवासी । मारहिं चरन कारहिं बहु हाँसी ॥
 बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
 पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
 निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी । भई सभित निसाचर नारी ॥
 दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।

अट्टहास करि गर्जा कपि बड़ि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तैं मंदिर चढ़ धाई ॥
 जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
 तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहिं अवसर को हमहि उबारा ॥
 हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥
 साधु अवग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥

जारा नगर निमिष एक माहीं । एक विभीषन कर गृह नाहीं ॥
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दो०-पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।

जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसैं रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तव दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीन दयाल विरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सकसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥
मास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा
कहु कपि केहि विधि राखौं प्राणा । तुम्हहू तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती

दो०-जनकसुतहि समुझाइ करि बहु विधि धीरजु दीन्ह ।

चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥ २७ ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्वहिं सुनि निसिचर नारी
नाधि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा
हरषे सब त्रिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तव जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज विराजा । कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पावु जिमि वारी ॥

चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥
तव मधुवन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥
रखवारे जब बरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

दो०—जाइ पुकारे ते सब वन उजार जुबराज ।

सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥ २८ ॥

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुवन के फल सकहिं कि खाई
एहि विधि मन विचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा
पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राणा ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ । कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेउ
राम कपिन्ह जब आवत देखा । किऐं काजु मन हरष बिसेषा ॥
फाटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाइ ॥

दो०—प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।

पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया । जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर । सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिनई गुन सागर । तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ॥
प्रभु कीं कृपा भयउ सब काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी । सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥

नतनय के चरित सुहाए । जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥
 त कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥
 हु तात केहि भाँति जानकी । रहति करति रच्छा स्वप्राण की

०-नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्राण केहिं बाट ॥ ३० ॥

त मोहि चूड़ामनि दीन्ही । रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही
 य जुगल लोचन भरि वारी । वचन कहे कछु जनककुमारी ॥
 भुज समेत गहेहु प्रभु चरना । दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥
 क्रम वचन चरन अनुरागी । केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
 गुन एक मोर मैं माना । विछुरत प्राण न कीन्ह प्याना ॥
 य सो नयनन्हि को अपराधा । निसरत प्राण करहिं हठि बाधा ॥
 ह अगिनि तनु तूल समीरा । स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥
 न खचहिं जलु निज हित लागी । जरैं न पाव देह विरहागी ॥
 ता कै अति विपति त्रिसाला । विनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥

०-निमिष निमिष कहनानिधि जाहिं कलप सम वीति ।

वेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

न सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥
 न कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ वृझिअ विपति कि ताही
 ह हनुमंत विपति प्रभु सोई । जय तव सुमिरन भजन न होई
 तेक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिवीर्यकी

सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी
 प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा
 सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि विचार मन माहीं ॥
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता
 दो०—सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।

चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठव न भावा ॥
 प्रभु करपंकज कपि कै सीमा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
 सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
 कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
 कहु कपि रावन पालित लंका । केहि विधि दहेहु दुर्ग अति बंका
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला वचन विगत अभिमाना ॥
 साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥
 नाथ सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बधि विपिन उजारा
 सो सब तव प्रताप खुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥
 दो०—तां कहूँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।

तव प्रभावं बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥ ३३ ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ।
 सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तव कहेउ भवानी ।
 उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना

यह संवाद जासु उर आना । रघुपति चरन भगति सीध पावा
 सुनि प्रभु वचन कहहि कपि ब्रह्मा । जय जय जय प्रताप रघुन पौवा
 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलि का कबहु पावावा ॥
 अब विलंबु छेदि कागन बीजे । तुरत कपिन्ह कहैं आयम् दीजे ॥
 कौतुक देखि सुदन बहू बरपी । नम नै मयन चलि सुन हरी ॥

दो०—कह्योनि श्रीग बाळाए, आप, नृपम नय ।

नाम बरन अनुक अक बाबर मोहि लेख ॥ ११ ॥

कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
 जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥१॥
 सहि सक न भार उदार अहिपति वार वारहिं मोहई ।
 गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
 रघुवीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
 जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥२॥

दो०—एहि विधि जाइ कृपानिधि उत्तरे सागर तीर ।

जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि वीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका । जव तें जारि गयउ कपि लंका ॥
 निज निज गृहँ सब करहिं विचारा । नहिं निसिचर कुल केर उवारा
 जासु दूत बल वरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥
 दूतिन्ह सन सुनि पुरजन वानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
 रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥
 कंत करप हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥
 समुझत जासु दूत कह करनी । सबहिं गर्भ रचनीचर घरनी ॥
 तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
 तव कुल कमल बिपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥
 सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

दो०—राम वान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।

जव लगि असत न तव लगि जतनु करहु तजि टेक ॥ ३६ ॥

श्रवण सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥
जौ आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा । तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता । भयउ कंत पर विधि विपरीता ॥
बैठेउ सभाँ खवरि असि पाई । सिंधु पार सेना सत्र आई ॥
बूझैसि सचिव उचित मत कहहू । ते सत्र हँसे मष्ट करिर रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तत्र श्रम नाहीं । नर वानर केहि लेखे माहीं ॥

दो०—सचिव वैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस ।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगहीं नास ॥ ३७ ॥
सोइ रावन कहूँ बनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि विभीषनु आवा । भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन । बोला बचन पाइ अनुससन ॥
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि वाता । मति अनुल्य कहउँ हित ताता ॥
जो आपन चाहै कल्याना । मुजसु मुमति मुम गति मुन नाना ॥
सो परनारि लिलार गोसाई । तनउ चउयि के चंद्र किनाई ॥
चौदह भुवन एक पति होई । भूतघोइ तिउइ ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ । अल्प लोभ मर ॥

दो०—काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।

सब परिहरि रघुवीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥ ३८ ॥

तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥
 ब्रह्मा अनामय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥
 जन रंजन भंजन खल ब्राता । वेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥
 ताहि वयरु तजि नाइअ माया । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
 देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही । भजहु राम विनु हेतु सनेही ॥
 सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा । विस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
 जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन
 दो०—बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।

परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥ ३९(क) ॥

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।

तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥ ३९(ख) ॥

माल्यवंत अति सचिव सथाना । तासु वचन सुनि अति सुख माना
 तात अनुज तव नीतिविभूषन । सो उर धरहु जो कहत विभीषन ॥
 रिपु उत्तकरष कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
 माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ विभीषनु पुनि कर जोरी ॥
 सुमति कुमति सब कैं उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
 जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

तव उर कुमति बसी विपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो०—तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।

सीता देहु राम कहूँ अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही विभीषन नीति बखानी ॥
सुनत दसानन उठि रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद वारहिं वारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजैं हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सवहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।

मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला विभीषनु जवहीं । आयूहीन भए सब तवहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जवहिं विभीषन त्यागा । भयउ विभव विनु तवहिं अभागा
चलेउ हरपि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहुँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥

जे पद परसि तरी रिपिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥
 जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥
 हर उर सर सरोज पद जेई । अहो भाग्य में देखिहउँ तेई ॥
 दो०—जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।

ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि विधि करत सप्रेम विचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥
 कपिन्ह विभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥
 ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥
 कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
 जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥
 भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥
 सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥
 सुनि प्रभु वचन हरप हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दो०—सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।

ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि विप्र बध लागहिं जाहू । आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ।
 सनमुख होइ जीव मोहि जवहीं । जन्म कोटि अध नासहिं तवहीं ।
 पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ।
 जौँ पै दुष्टहृदय सोइ होई । मोरें सनमुख आव कि सोई ।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दससीसा । तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महुँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥
जाँ समीत आवा सरनाई । रखिहउँ ताहि प्रान की नार्ई ॥

दो०—उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।

जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगें करि वानर । चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता । नयनानंद दान के दाना ॥
बहुरि राम छवि धाम विलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन
सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता । मन धरि धोर कही मृदु वाता ॥
नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर वंस जनम सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उलकहि तम पर नेहा ॥

दो०—श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।

त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर ॥ ४५ ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरप विसेषा ॥
दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज विसाल गहि हृदयँ लगावा
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले वचन भगत भयहारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर वास तुम्हारा ॥

॥ रामचरितमानस ॥

मंडली बसतु दिनु राती। सखा भरम निबद्ध केहि भौंती
जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भान अनीती
मल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देष्ट विपाता ॥
न पद देखि कुसल खुराया। जौं तुम्ह कीन्ह जानि जन दाया
दो०—तब लगि कुसल न जीव कहूँ सपनेहुँ मन बिभाम।
जब लगि भजत न राम कहूँ सोक धाम तजि काम ॥४६॥
तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह भञ्जर मद माना ॥
जब लगि उर न बसत खुनाया। धरे चाप सायक कटि भाया ॥
ममता तरुन तभी अँधिआरी। राग द्वेष उरूक सुखकारी ॥
न लगि बसति जीव मन भारी। जब लगि प्रभु प्रताप रवि नारी
सल मित्रे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
जा पर अनुकला। ताहि न व्याप निनिध भय सूल
पर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ
सु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि ला
दो०—अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुखपुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ॥४७॥
सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान सुसुंछि संभु गिरिजाऊ
जौं नर होइ चराचर द्रोही। आनै समस सरन तकि मोह
तजि मद मोह कपट लल नाना। करउँ सग तेहि साधु समा
जगनी जनक बंधु सुत दाया। तनु धनु भवन सुदृढ परिव

सब कै ममता ताग बढोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नार्हीं । हरष सोक भय नहिँ मन माहीं ॥
अस सजन मम उर बस कैसैं । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसैं ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिँ आन निहोरें ॥

दो०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।

ते नर प्रान समान मम जिन्ह कैं द्विज पद प्रेम ॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिँ जय कृपा बरूथा ॥
सुनत विभीषनु प्रभु कै बानी । नहिँ अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बाराहिँ बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नार्हीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन वृष्टि नभ भई अपारा ॥

दो०—रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।

जरत विभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ॥४९(क)॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिऐँ दस माथ ।

सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥४९(ख)॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु विनु पूँछ विषाना ॥
 निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥
 पुनि सर्वग्य सर्व उर वासी । सर्वरूप सब रहित उदासी ॥
 बोले वचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥
 सुनु कपीस लंकापति वीरा । केहि विधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥
 संकुल मकर उरग झप जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥
 कह लंकेस सुनहु खुनायक । कोटि सिंधु सोपक तव सायक ॥
 जगपि तदपि नीति असि गाई । विनय करिअ सागर सन जाई ॥
 दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय विचारि ।

विनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥ ५० ॥
 सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौं होइ सहाई ।
 मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम वचन सुनि अति दुख पावा ।
 नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोपिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।
 कादर मन कहँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकार ।
 सुनत विहसि बोले खुवीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।
 अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए खुरा ।
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसा ।
 जबहिं विभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठा ।
 दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।
 प्रभु गुन हृदय सराहिं सरनागत पर नेह ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा विसरि दुराऊ ॥
 रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
 कह सुग्रीव सुनहु सब वानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
 सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥
 बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
 जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥
 रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

दो०—कहेहु सुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।

सीता देइ मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा । चले दूत वरनत गुन गाथा ॥
 कहत राम जसु लंकाँ आए । रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥
 बिहसि दसानन पूँछी बाता । कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
 पुनि कहु खबरि विभीषन केरी । जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
 करत राज लंका सठ त्यागी । होइहि जव कर कीट अभागी ॥
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
 जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ मृदुल चित सिंधु विचारा ॥
 कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।

कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥ ५३ ॥

नाथ कृपा करि पूँछहु जैसें । मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥
 मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥
 रावन दूत हमहि सुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हें दुख नाना ॥
 श्रवन नासिका काटैं लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥
 पूँछिहु नाथ राम कटकाई । वदन कोटि सत वरनि न जाई ॥
 नाना वरन भालु कपि धारी । विकटानन बिसाल भयकारी ॥
 जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महुँ तेहि बलु थोरा ॥
 अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल विपुल बिसाला ॥
 दो०—द्विविद मयंद नील नल अंगद गद विकटासि ।

दधिमुख केहरि निसठ संठ जामवंत बलरासि ॥ ५४ ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
 राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ॥
 अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पंदुम अठारह जूथप बंदर ॥
 नाथ कटक महुँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥
 परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
 सोषहिं सिंधु सहित श्लष व्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ।
 मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । ऐसेइ वज्रन कहहिं सब कीसा ।
 गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका । मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ।

दो०—सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।

रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई । सेप सहस सत संकहिं न गाई ॥
 सक सर एक सोपि सत सागर । तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥
 तासु वचन सुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥
 सुनत वचन विहसा दससीसा । जौं असि मति सहाय कृत कीसा
 सहज भीरु कर वचन दढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥
 मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह में पाई ॥
 सचिव सभित विभीषन जाकें । विजय विभूति कहाँ जग ताकें ॥
 सुनि खल वचन दूत रिस बाढ़ी । समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥
 रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ वचाइ जुड़ावहु छाती ॥
 विहसि वाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग वचावन
 दो०-वातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।

राम विरोध न उवरसि सरन विष्णु अज ईस ॥५६(क)॥

की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।

होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥५६(ख)॥

सुनत समय मन मुख मुसुकाई । कहत दसानन सवहि सुनाई ॥
 भूमि परा कर गहत अकासा । लवु तापस कर वाग विलासा ॥
 कहं सुक नाथ सत्य सव वानी । समुझहु छाड़ि प्रकृत अभिमानी
 सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥
 अति कोमल रघुवीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
 मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही । उर अपराध न एकउ धरिही ॥

जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
 जब तेहिं कहा देन बैदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
 नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपा सिंधु रघुनाथक जहाँ ॥
 करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥
 रिपि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भंयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
 ब्रंदि राम पद बारहिं बारा । मुनिनिज आश्रम कहूँ पगु धारा
 दो०—विनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।

बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोपौं वारिधि विसिख कृसानू ॥
 सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥
 ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन विरति बखानी
 क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज वएँ फल जथा ॥
 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ॥
 संधानेउ प्रभु विसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
 मकर उरग झप गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
 कनक थार भरि मनि गन नाना । विप्र रूप आयउ तजि माना ॥

दो०—काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।

विनय न मान खगोस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥५८॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छंमहु नाथ सत्र अवगुन मेरे ॥
 गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी

तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
 प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥
 प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
 ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
 प्रभु प्रताप मैं जाव सुखाई । उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
 प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई
 दो०—सुनत विनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।

जेहि बिधि उत्तरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥५९॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाईं रिपि आसिष पाई ॥
 तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥
 एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ
 एहिं सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥
 सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥
 देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
 सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छं०—निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।

यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥

सुख भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना ।

तजि सकल भास भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दो०-सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

माखपारायण, चौबीसवाँ विश्राम
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

(सुन्दरकाण्ड समाप्त)



॥ श्रीरामाय नमः ॥

श्रीरामचरितमानस

लंकाकाण्ड



दो०-सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

(सुन्दरकाण्ड समाप्त)



॥ श्रीरामाय नमः ॥

श्रीरामचरितमानस

लंकाकाण्ड



रामके लिये देव-रथ



पुंज रथ दिव्य अनूपा ।

हरापि चढे कोसलपुर भूपा ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

षष्ठ सोपान

(लंकाकाण्ड)

श्लोक

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥१॥
शङ्खेन्द्राभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशङ्कप्रियम् ।

काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
 नौमीढ्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥२॥
 यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
 खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो०—लव निमेष परमानु जुग बरष कल्प सर चंड ।
 भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदंड ॥

सो०—सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
 अव बिलंबु केहि काम करहु सेतु उत्तरै कटकु ॥
 सुनहु भानु कुल केतु जामवंत कर जोरि कह ।
 नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भव सागर तरहिं ॥

लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा
 मु प्रताप बड़वानल भारी । सोपेउ प्रथम पयोनिधि बारी ॥
 रिपु नारि रुदन जल धारा । भरेउ बहोरि भयउ तेहिं खारा ॥
 सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । हरषे कपि रघुपति तन हेरी ॥
 जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सत्र कथा सुनाई ॥
 राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
 बोलि लिए कपि निकर बहोरी । सकल सुनहु विनती कछु मोरी ॥
 राम चरन पंकज उर धरहू । कौतुक एक भालु कपि करहू ॥
 धावहु मर्कट विकट बरूथा । आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा ॥
 सुनि कपि भालु चले करि हूहा । जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥

दो०—अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ ।

आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सैल विसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥
देखि सेतु अति सुंदर रचना । विहसि कृपानिधि बोले वचना
परम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहिं बरनी
करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कल्पना ॥
सुनि कपीस बहु दूत पठाए । मुनिवर सकल बोलि लै आए ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा
सिव द्रोही मम भगत कहावा । सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा ॥
संकर विमुख भगति चह मोरी । सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥

दो०—संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।

ते नर करहिं कल्प भरि घोर नरक महुँ बास ॥ २ ॥

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि । भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही । सो विनु श्रम भव सागर तरिही ॥
राम वचन सत्र के जिय भाए । मुनिवर निज निज आश्रम आए
गिरिजा खूपति कै यह रीती । संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥
बाँधा सेतु नील नल नागर । राम कृपाँ जसु भयउ उजागर ॥
बूझिं आनहि घोरहिं जेई । भाप जगल बोझित मम वेई ॥

महिमा यह न जलधि कइ बरनी। पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी॥

दो०—श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण ।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ॥

चली सेन कछु बरनि न जाई । गर्जहिं मर्कट भट समुदाई ॥

सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥

देखन कहूँ प्रभु करुना कंदा । प्रगट भए सब जलचर वृंदा ॥

मकर नक्र नाना झप व्याला । सत जोजन तन परम विसाला ॥

अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहीं । एकन्ह केँ डर तेपि डेराहीं ॥

प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे । मन हरषित सब भए सुखारे ॥

तिन्ह की ओट न देखिअ बारी । मगन भए हरि रूप निहारी ॥

चला कटकु प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपि दल त्रिपुलाई ॥

दो०—सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहिं ।

अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिं ॥ ४ ॥

अस कौतुक विलोकि द्वौ भाई । विहँसि चले कृपाल रघुराई ॥

सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥

सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन्ह कहूँ आयसु दीन्हा ॥

खाहु जाइ फल मूल सुहाए । सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाए ॥

सब तरु फरे राम हित लागी । रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी ॥

खाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं । लंका सन्मुख सिखर चलावहिं ॥

जहँ कहँ फिरत निसाचर पावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥
 दसनन्हि काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहिं तव जाना ॥
 जिन्ह कर नासा कान निपाता । तिन्ह रावनहि कही सत्र वाता ॥
 सुनत श्रवन वारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥
 दो०—ब्रँध्यो वननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।

सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

निज विकलता विचारि बहोरी । विहँसि गयउ गृह करि भय भोरी
 मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकीं पाथोधि बंधायो ॥
 कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली परम मनोहर बानी ॥
 चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
 नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सक्रिअ जीति जाही सों
 तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥
 अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे । महावीर दितिसुत संघारि ॥
 जेहिं बलि ब्रँधि सहसभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥
 तासु विरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाकें हाथा ॥

दो०—रामहि सौँपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।

सुत कहँ राज समर्पि वन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीन दयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गएँ न खाई ॥
 चाहिअ करन सो सत्र करि वीते । तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥
 संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन ॥

तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
 सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
 मुनिवर जतनु करहिं जेहि लागी । भूप राजु तजि होहिं विरागी ॥
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिबात ॥ ७ ॥
 तव रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥
 वरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
 देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥
 मंदोदरी हृदयँ अस जाना । काल वस्य उपजा अभिमाना ॥
 सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करव कवन विधि रिपु सैं जूझा ॥
 कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
 कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो०—सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥
 कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥
 बारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सबु गाव ॥

छुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
 सुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥
 जेहि वारीस बँधायउ हेला । उत्तरेउ सेन समेत सुवेला ॥
 सो भनु मनुज खाव हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
 बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
 प्रथम वसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥
 दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥
 अबहीं ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥
 पुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
 हित मत तोहि न लागत कैसें । काल विवस कहूँ भेषज जैसें ॥
 संध्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
 लंका सिखर उपर आगारा । अति बिचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥
 बाजहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्र

तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
 सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
 मुनिवर जतनु करहि जेहि लागी । भूप राजु तजि होहि विरागी ॥
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिबात ॥ ७ ॥

तव रावन मयसुता उठाई । कहै लग खल निज प्रभुताई ॥
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥
 बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
 देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥
 मंदोदरीं हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥
 सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करव कवन विधि रिपु सैं जूझा ॥
 कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
 कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो०—सब के वचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥
 वारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सदा ॥

धुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
 मुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा
 केहिं बारीस बँधायउ हेली । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
 तो भनु मनुज खाव हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
 बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥
 दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥
 यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई
 अबहीं ते उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥
 सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
 हित मत तोहि न लागत कैसें । काल बिबस कहूँ भेषज जैसें ॥
 संध्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥
 जहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥

कुधा न रही तुम्हहि तब काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
 सुनत नीक आगेँ दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥
 केहिं वारीस बँधायउ हेला । उत्तरेउ सेन समेत सुबेला ॥
 जो भनु मनुज खाव हम भाई । बचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
 तात बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥
 प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
 बचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥
 दो०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सिखाई ॥
 अबहीं ते उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥
 पुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
 हेत मत तोहि न लागत कैसें । काल ब्रिबस कहूँ भेषज जैसें ॥
 श्रद्धा समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥
 बाजहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना ॥

तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
 सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
 मुनिवर जतनु करहि जेहि लागी । भूप राजु तजि होहि विरागी ॥
 सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ॥
 जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो०—अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥ ७ ॥

तव रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ॥
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥
 बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
 देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई । सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥
 मंदोदरीं हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ॥
 सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन विधि रिपु सैं जूझा ॥
 कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ॥
 कहहु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

दो०—सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥
 बारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सबु गावा ॥

छुधा न रही तुम्हहि तव काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
 सुनत नीक आगें दुख पाया । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा
 जेहि वारीस बँधायउ हेली । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
 सो भनु मनुज खात्र हम भाई । वचन कहहि सत्र गाल फुलाई ॥
 तात वचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर
 प्रिय बानी जे सुनहि जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
 अचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहि जे कहहि ते नर प्रभु थोरे ॥
 अथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥
 १०—नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढाइअ रारि ।

नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥
 ह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥
 त सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहि तोहि सिखाई
 त्वहीं ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहु घमोई ॥
 नि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि वचन कठोरा ॥
 त मत तोहि न लागत कैसें । काल बिबस कहूँ भेषज जैसें ॥
 व्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
 का सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 ५ जाइ तेहि मंदिर रावन । लागे किंनर गुन गन गावन ॥
 जहिं ताल पखाउज बीना । नृत्य करहि अपछरा प्रवीना ॥

अस कौतुक करि राम सर प्रबिसेउ आइ निपंग ।

रावन सभा ससंक सब देखि महा रस भंग ॥ १३ (ख) ॥

कंप न भूमि न मरुत विसेपा । अछ सछ कछु नयन न देखा ॥
 सोचहिं सव निज हृदय मझारी । असगुन भयउ भयंकर भारी ॥
 दसमुख देखि सभा भय पाई । विहसि वचन कह जुगुति बनाई
 सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । मुकुट परे कस असगुन ताही ॥
 सयन करहु निज निज गृह जाई । गयने भवन सकल सिर नाई ॥
 मंदोदरी सोच उर वसेऊ । जव ते श्रवनपूर महि खसेऊ ॥
 सजल नयन कह जुग कर जोरी । सुनहु प्रानपति विनती मोरी ॥
 कंत राम विरोध परिहरहू । जानि मनुज जनि हठ मन धरहू
 दो०-विस्वरूप रघुवंसमनि करहु वचन बिस्वासु ।

लोक कल्पना वेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा । अपर लोक अँग अँग विश्रामा
 भृकुटि विलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच घन माला
 जासु प्रान अस्विनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपा
 श्रवन दिसा दस वेद बखानी । मारुत स्वास निगम निज वा
 अधर लोभ जम दसन कराला । माया हास बाहु दिगपाला
 आनन अनल अंबुपति जीहा । उत्तपति पालन प्रलय समीहा
 रोम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नस जारा
 उदर उदधि अधगो जातना । जगमय प्रभु का बहु कल्पन

दो०—अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।

मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान् ॥१५(क)

अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन वयरु बिहाइ ।

प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ ॥१५(ख)

बिहँसा नारि बचन सुनि काना । अहो मोह महिमा बलवाना ।

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।

साहस अनृत चपलता माया । भय अबिवेक असौच अदाया ।

रिपु कर रूप सकल तैं गावा । अति बिसाल भय मोहि सुनाव

सो सब प्रिया सहज बस मोरें । समुझि परा प्रसाद अब तोरें ।

जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई । एहि बिधि कहहु मोरि प्रभुता

तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि । समुझत सुखद सुनत भय मोच

मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ । पियाहि काल बस मतिभ्रम भय

दो०—एहि बिधि करत बिनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।

सहज असंकलंकपति सभाँ गयउ मद अंध ॥१६(क)

सो०—फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा वरषहिं जलद ।

मूरुख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम ॥१६(ख)

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ।

कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ॥

सुनु सर्वग्य सकल उर बासी । बुधिबल तेज धर्म गुन रासी ॥

मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा । दूत पठाइअ बालिकुमारा ॥

नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
 बालितनय बुधि बल गुन धामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥
 बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहउँ । परम चतुर मैं जानत अहउँ ॥
 काजु हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

सो०—प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।

सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु ॥ १७ (क) ॥

स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियउ ।

अस विचारि जुवराज तन पुलकित हरषित हियउ ॥ १७ (ख) ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥
 प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा बालिसुत बंका ॥
 पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गै भेटा ॥
 बातहिं बात करप बदि आई । जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥
 तेहिं अंगद कहूँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई ॥
 निसिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
 एक एक सन मरमु न कहहीं । समुझि तासु बध चुप करि रहहीं ॥
 भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेहिं जारी ॥
 अब धौं कहा करिहि करतारा । अति समीत सब करहिं विचार ॥
 विनु पूछें मगु देहिं दिखाई । जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई ॥
 दो०—गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज ।

सिंह ठवनि इत उत चितव धीर वीर बल पुंज ॥ १८ ॥

तुरत निसाचर एक पठावा । समाचार रावनहि जनावा ॥
 सुनत बिहँसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥
 आयसु पाइ दूत बहु धाए । कपिकुंजरहि बोलि लै आए ॥
 अंगद दीख दसानन बैसैं । सहित प्रान कजलगिरि जैसैं ॥
 भुजा बिटप सिर सुंग समाना । रोमावली लता जनु नाना ॥
 मुख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥
 गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा । बालितनय अतिबल बाँकुरा ॥
 उठे सभासद कपि कहूँ देखी । रावन उर भा क्रोध बिसेपी ॥
 दो०—जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ ।

राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभाँ सिरु नाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवन तैं वंदर । मैं रघुवीर दूत दसकंधर ॥
 मम जनकहि तोहि रही मिताई । तव हित कारन आयउँ भाई ॥
 उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती । सिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥
 वर पायहु कीन्हेहु सव काजा । जीतेहु लोकपाल सव राजा ॥
 नृप अभिमान मोह बस किंवा । हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥
 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा । सव अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥
 दसन गहहु तून कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥
 सादर जनकसुता करि आगें । एहि विधि चलहु सकल भय त्यागें ॥
 दो०—प्रनतपाल रघुवंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।

आरत गिरा सुनत प्रभु अभय कैरंगो तोहि ॥ २० ॥

रे कपि पोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥
 कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नातें मानिए मिताई ॥
 अंगद नाम बालि कर बेटा । तासों कबहुँ भई ही भेटा ॥
 अंगद वचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर में जाना ॥
 अंगद तहीं बालि कर बालक । उपजेहु बंस अनल कुल घालक ॥
 गर्भ न गयहु व्यर्थ तुम्ह जायहु । निज मुख तापस दूत कहायहु ॥
 अब कहु कुसल बालि कहँ अहई । बिहँसि वचन तब अंगद कहई
 दिन दस गएँ बालि पहिँ जाई । बूझेहु कुसल सखा उर लाई ॥
 राम विरोध कुसल जसि होई । सो सब तोहि सुनाइहि सोई ॥
 सुनु सठ भेद होइ मन ताकें । श्रीरघुवीर हृदयँ नहिँ जाकें ॥

दो०—हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस ।

अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तब बीस ॥ २१ ॥

सिव त्रिरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरन सेवकाई ।
 तासु दूत होइ हम कुल बोरा । अइसिहुँ मति उर बिहरन तोर
 सुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी
 खल तब कठिन वचन सब सहऊँ । नीति धर्म में जानत अहऊँ
 कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी
 देखी नयन दूत रखवारी । बूढ़ि न मरहु धर्म व्रत धारी
 कान नाक बिनु भगिनि निहारी । छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी
 धर्मसीलता तब जग जागी । पावा दरसु हमहुँ बड़भार्ग

दो०—जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु ।

लोकपाल बल विपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ॥२२(क)॥

पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास ।

सोभत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥२२(ख)॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा बढ

तव प्रभु नारि धिरहँ बलहीना । अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥

तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥

जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥

सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला । है कपि एक महा बलसीला ॥

आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा । सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥

सत्य बचन कहु निसिचर नाहा । साँचेहुँ कीस कीन्ह पुर दाहा ॥

रावन नगर अल्प कपि दहई । सुनि अस बचन सत्य को कहई

जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥

चलइ बहुत सो वीर न होई । पठवा खवरि लेन हम सोई ॥

दो०—सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ ।

फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहिं भय रहा लुकाइ ॥२३(क)॥

सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह ।

कोउ न हमारै कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥२३(ख)॥

प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।

जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥२३(ग)॥

जद्यपि लघुता राम कहूँ तोहि वधे बड़ दोष ।
 तदपि कठिन दसकंठ सुनु दृत्र जाति कर रोष ॥२२(घ)॥
 बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।
 प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुँ काढ़त भट दससीस ॥२३(ङ)॥
 हँसि बोलेउ दसमौलि तव कपि कर बड़ गुन एक ।

जो प्रतिपालह तासु हित करइ उपाय अनेक ॥२३(च)॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥
 नाचि कूदि करि लोग रिझाई । पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥
 अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती
 मैं गुन गाहक परम सुजाना । तव कटु रटनि करउँ नहिं काना
 कह कपि तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥
 बन विधंसि सुत वधि पुर जारा । तदपि न तोहिं कछु कृत अपकारा
 सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥
 देखेउँ आइ जो कछु कपि भापा । तुम्हरेँ लाज न रोष न माखा ॥
 जौँ असि मति पितु खाए कीसा । कहि अस बचन हँसा दससीसा ।
 पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । अत्रहीं समुझि परा कछु मोही ।
 बालि विमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहि अधम अभिमान
 कहु रावन रावन जग केते । मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते
 बलिहि जितन एक गयउ पताला । राखेउ बाँधि सिसुन्ह ह्यसात
 खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई

एक बहोरि सहस्र भुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा
दो०—एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि कीं काँख ।

इन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदाहि तजि माख ॥२४॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुजलीला ॥
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित वार त्रिपुरारी ॥
भुज विक्रम जानहिं दिगपाला । सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जव जव भिरउँ जाइ बरिआई ॥
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव दूटे ॥
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी
सोइ रावन जग विदित प्रतापी । सुनहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥
दो०—तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ।

रे कपि बर्बर खर्व खल अब जाना तव ग्यान ॥२५॥

मुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥
सहस्रबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु वारा ॥
तासु गर्व जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ॥
राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ॥

बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥
 सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा
 दो०—सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि ।

कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ॥२६॥
 सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसिन कृपा सिंधु रघुराई ॥
 जौं खल भएसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
 मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला । राम बयर अस होइहि हाला ॥
 तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । परिहहिं धरनि राम सर लागें ॥
 ते तव सिर कंदुक सम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ॥
 जबहिं समर कोपिहि रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक
 तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस विचारि भजु राम उदारा
 सुनत वचन रावन परजरा । जरत महानल जनु धृत परा ॥
 दो०—कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सकारि ।

मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥२७॥
 सठ साखामृग जोरि सहाई । बाँधा सिंधु इहह प्रभुताई ॥
 नाथहिं खग अनेक वारीसा । सूर न होहिं ते सुनु सत्र कीसा ॥
 मम भुज सागर बल जल पूरा । जहँ बूढ़े बहु सुर नर सूरा ॥
 बीस पयोधि अगाध अपारा । को अस वीर जो पाइहि पारा ॥
 दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूप सुजस खल मोहि सुनावा ॥
 जौं पै समर सुभट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा

तौ बसीठ पठवत केहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ।
हरगिरि मथन निरखु मम बाहु । पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सरा

दो०—सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।

हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस ॥२८॥

जरत विलोकेउँ जवहिं कपाला । विधि के लिखे अंक निज भाला ।
नर कै कर आपन बध बाँची । हसेउँ जानि विधि गिरा असाँची ।
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें । लिखा विरंचि जरठ मति भोरें ।
आन वीर बल सठ मम आगें । पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें ।
कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥
लाजवंत तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसि न काउ ।
सिर अरु सैल कथा चित रहि । ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेहु उर घाली । जीतेहु सहसबाहु बलि बाली ॥
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटें सीस कि होइअ सूरा ॥
इंद्रजालि कहूँ कहिअ न वीरा । काटइ निज कर सकल सरीरा ॥

दो०—जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद ।

ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ २९ ॥

अब जनि व्रतवढ़ाव खल करही । सुनु मम बचन मान परिहरही ॥
दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ । अस विचारि रघुवीर पठायउँ ॥
बार बार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु वधें सुकाला ॥
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे । सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे ॥

नाहिं त करि मुख भंजन तोरा । लै जातेउँ सीतहि वरजोरा ॥
 जानेउँ तव बल अधम सुरारी । सूनै हरि आनिहि परनारी ॥
 तैं निसिचर पति गर्व बहूता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥
 जौं न राम अपमानहि डरउँ । तोहि देखत अस कौतुक करउँ ॥

दो०—तोहि पटक महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ ।

तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ३० ॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि बधे नहिं कछु मनुसाई ॥
 कौल कामवस कृपिन विमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥
 सदा रोगवस संतत क्रोधी । विष्णु विमुख श्रुति संत विरोधी ॥

पोषक निंदक अघखानी । जीवत सब सम चौदह प्रानी ॥
 अस विचारि खल बधउँ न तोही । अत्र जनि रिस उपजावसि मोही ॥
 सुनि सक्रोप कह निसिचर नाथा । अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥
 रे कपि अधम मरन अग्र चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ॥
 कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकैं । बल प्रताप बुधि तेज न ताकैं ॥

दो०—अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता वनवास ।

सो दुख अरु जुवती विरह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥ ३१ (क) ॥

जिन्ह के बल कर गर्व तोहि अइसे मनुज अनेक ।

खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥ ३१ (ख) ॥

जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा । क्रोधवंत तब भयउ कपिंदा ॥
 हरि हर निंदा सुनइ जो काना । होइ पाप गोघात समाना ॥

टकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥
 लत धरनि सभासद खसे । चले भाजि भय मारुत ग्रसे ॥
 रत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥
 छुतेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे । कछु अंगद प्रभु पास पवारे ॥
 आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥
 नी रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ॥
 ह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू । लूक न असनि केतु नहिं राहू ॥
 ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ॥

श्लो०—तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास ।

कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥३२(क)॥

उहाँ सकोप दसानन सब सन कहत रिसाइ ।

धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ॥३२(ख)॥

एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु
 मर्कटहीन करहु महि जाई । जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ॥
 मुनि सकोप बोलेउ जुवराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ॥
 मरु गर काटि निलज कुलघाती । बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती
 त्रिय चोर कुमारग गामी । खल मल रासि मंदमति कामी ॥
 अन्यपात जल्पसि दुर्बादा । भएसि कालवस खल मनुजादा ॥
 पाको फलु पावहिगो आगें । बानर भालु चपेटन्हि लागें ॥
 रामु मनुज बोलत असि बानी । गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥

गिरिहहिं रसना संसय नाहीं । सिरन्हि समेत समर महि माहीं ॥

सो०-सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर ।

बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़ ॥३३(क)॥

तव सोनित की प्यास तृषित राम सायक निकर ।

तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ॥३३(ख)॥

मैं तव दसन तोरिवे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥

असि रिस होति दसउ मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महुँ बोरौं ॥

गूलरि फल समान तव लंका । बसहु मध्य तुम्ह जन्तु असंका ॥

मैं बानर फल खात न बारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥

जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखिहि कहैं बहुत झुठाई ॥

बालि न कबहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लवारा ॥

साँचेहुँ मैं लवार भुजबीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥

समुझि राम प्रताप कपि कोषा । सभा माझ पन करि पद रोषा ॥

जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिं रामु सीता मैं हारी ॥

सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥

इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥

झपटहिं करि बल विपुल उपाई । पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ॥

पुनि उठि झपटहिं सुर आराती । टरइ न कीस चरन एहि भाँती ॥

पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दो०—कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ।

झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥३४(क)॥

भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।

कोटि विघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥३४(ख)॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कें परचारे ॥

गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहें न तोर उबारा ॥

गहसि न राम चरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥

भयउ तेजहत श्री सब गई । मध्यदिवस जिमि ससि सोहई ॥

सिंघासन बैठेउ सिर नाई । मानहुँ संपति सकल गँवाई ॥

जगदातमा प्रानपति रामा । तासु विमुख किमि लह विश्रामा ॥

उमा राम कीं भृकुटि बिलासा । होइ बिस्व पुनि पावइ नासा ॥

तृन ते कुलिस कुलिस तृन करई । तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥

पुनि कपि कही नीति विधि नाना । मान न ताहि कालु निअरान्ना ॥

रिपु मद मथि प्रभु सुजसु सुनायो । यह कहि चल्यो बालि नृप जाय ॥

हतौ न खेत खेलाइ खेलाई । तोहि अबहिं का करौ बड़ाई ॥

प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । सो सुनिरावन भयउ दुखारा ॥

जातुधान अंगद पन देखी । भय व्याकुल सब भए बिसेषी ॥

दो०—रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज ।

पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥३५(क)॥

साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाइ ।

मंदोदरीं रावनहि बहुरि कहा समुझाइ ॥३५॥(ख)

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही
रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ नहिं नावेहु असि मनुसा
पिय तुम्ह ताहि जितव संग्रामा । जाके दूत केर यह कामा
कौतुक सिंधु नाधि तव लंका । आयउ कपि केहरी असंका
रखवारे हति विपिन उजारा । देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा ।
अव पति मृग गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु हृदयँ विचारहु
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । अग जग नाथ अतुलबल जान
वान प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ।
जनक सभाँ अगनित भूपाला । रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाल
भंजि धनुष जानकी विआही । तव संग्राम जितेहु किन ताही ।
सुरपति सुत जानइ बल थोरा । राखा जिअत आँखि गहि फोरा
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपि हृदयँ नहिं लाजविं

दो०—बधि विराध खर दूपनहि लीलाँ हत्यो कबंध ।

बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध

जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित
कारुनीक दिनकर कुल केतू । दूत पठायउ तज
सभा माझ जेहिं तव बल मथा । करि बरूथ मँट

अंगद हनुमत अनुचर जाके । रन बाँकुरे वीर अति बाँके ॥
 तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । मुधा मान ममता मद बहहू ॥
 अहह कंत कृत राम विरोधा । काल विवस मन उपजन बोधा ॥
 काल दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धि विचारा ॥
 निकट काल जेहि आवत साई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई ॥

दो०—दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।

कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ विमल जसु लेंहु ॥३७॥

नारि बचन सुनि बिसिख समाना । सभाँ गयउ उठि होत विद्वाना ॥
 बैठ जाइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब भूली ॥
 इहाँ राम अंगदहि बोलावा । आइ चरन पंकज सिद्ध नावा ॥
 अति आदर समीप बैठारी । बोले विहँसि कृपाल खरारी ॥
 बालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहु पृछउँ तोही ॥
 रावनु जातुधान कुल टीका । भुज बल अतुल जासु जग लीका ॥
 तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । कहहु तात कवनी विधि पाए ॥
 सुनु सर्वग्य प्रनत सुखकारी । मुकुट न होहि भूप गुन चारी ॥
 साम दान अरु दंड विभेदा । नृप उर बसहि नाथ कह बेंदा ॥
 नीति धर्म के चरन सुहाए । अस जियँ जानि नाथ पहि आए ॥

दो०—धर्महीन प्रभु पद बिमुख काल विवस दससीस ।

तेहि परिहरि गुन आए सुनहु कोसलाधीस ॥३८(क)॥

परम चतुरता श्रवन सुनि बिहँसे राम उदार ।

समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥३८(ख)॥

रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलाए ॥
लंका बाँके चारि दुआरा । केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा ॥
तब कपीस रिच्छेस बिभीषन । सुमिरि हृदयँ दिनकर कुल भूषन
करि बिचार तिन्ह मंत्र दढ़ावा । चारि अनी कपि कटकु बनावा ॥
जथाजोग सेनापति कीन्हे । जूषप सकल बोलि तब लीन्हे ॥
प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए । सुनि कपि सिंघनाद करि धाए ॥
हरषित राम चरन सिर नावहिं । गहि गिरि सिखर वीर सब धावहिं
। जँ तर्जहिं भालु कपीसा । जय रघुवीर कोसलाधीसा ॥
जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले असंका ॥
घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । मुखहिं निसान बजावहिं भेरी ॥

दो०—जयति राम जय लछिमन जय कपीस सुग्रीव ।

गर्जहिं सिंघनाद कपि भालु महा बल सीव ॥३९॥

लंकाँ भयउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहँकारी ॥
देखहु वनरन्ह केरि ढिठाई । बिहँसि निसाचर सेन बोलाई ॥
आए कीस काल के प्रेरे । छुधावंत सब निसिचर मेरे ॥
अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठेँ अहार बिधि दीन्हा ॥
सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥
उमा रावनाहि अस अभिमाना । जिमि टिटिम खग सूत उताना

चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिंडिपाल वर साँगी ।
तोमर मुद्रर परसु प्रचंडा । सूल कृपान परिघ गिरिखंडा ।
जिमि अरुनोपल निकर निहारी । धावहिं सठ खग मांस अहारी ।
चोंच भंग दुख तिन्हहि न सूझा । तिमि धाए मनुजाद अवूझा ।

दो०—नानायुध सर चाप धर जातुवान बल वीर ।

कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधीर ॥ ४० ॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे । मेरु के संगनि जनु घन वैसे ।
बाजहिं ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाव ।
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिं दरारा ।
देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अति विसाल तनु भालु सुभट्टा ।
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा । पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा ।
कटकटहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं । दसन ओठ काटहिं अति तर्जहिं ।
उत रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥
निसिचर सिखर समूह ढहावहिं । कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ।

छं०—धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।

झपटहिं चरन गहि पटकि सहि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥

अति तरल तरुन प्रताप तरपहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गए ।

कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गावत भए ॥

दो०—एकु एकु निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।

ऊपर आपु हेठ भट गिरहिं धरनि पर आइ ॥ ४१ ॥

राम प्रताप प्रबल कपिजूथा । मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा ॥
 चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर । जय रघुवीर प्रताप दिवाकर ॥
 चले निसाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि धन समुदाई ॥
 हाहाकार भयउ पुर भारी । रोवहिं बालक आतुर नारी ॥
 सब मिलि देहिं रावनहि गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ॥
 निज दल विचल सुनी तेहिं काना । फेरि सुभट लंकेस रिसाना ॥
 जो रन विमुख सुना मैं काना । सो मैं हतब कराल कृपाना ॥
 सर्वसु खाइ भोग करि नाना । समर भूमि भए बल्लभ प्राना ॥
 उग्र वचन सुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥
 सन्मुख मरन वीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

५१०—बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि ।

ब्याकुल किए भालु कपि परिघ त्रिसूलन्हि मारि ॥ ४२ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥
 कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुविद बलवंता ॥
 निज दल विकल सुना हनुमाना । पच्छिम द्वार रहा बलवाना ॥
 मेघनाद तहँ करइ लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥
 पवनतनय मन भा अति क्रोधा । गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा ॥
 कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरिमेघनाद कहँ धावा ॥
 भंजेउ रय सारथी निपाता । ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥
 दुसरें सूत विकल तेहि जाना । स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दो०—अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।

रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ ४३ ॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥
 रावन भवन चढ़े द्वौ धाई । करहिं कोसलाधीस दोहाई ॥
 कलस सहित गहि भवनु ढहावा । देखि निसाचरपति भय पावा ॥
 नारि बृंद कर पीटहिं छाती । अब दुइ कपि आए उतपाती ॥
 कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहिं । रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥
 पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा
 गर्जि परे रिपु कटक मझारी । लागे मर्दै भुज बल भारी ॥
 काहुहि लात चपेटन्हि केहू । भजहु न रामहि सो फल लेहू ॥

दो०—एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।

रावन आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ ४४ ॥

महा महा मुखिआ जे पावहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥
 कहइ विभीषनु तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहू निज धामा ॥
 खल मनुजाद द्विजामिष भोगी । पावहिं गति जो जाचत जोगी ॥
 उमा राम मृदुचित करुनाकर । वयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर
 देहिं परम गति सो जियँ जानी । अस कृपाल को कहहु भवानी ॥
 अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी । नर मतिमंद ते परम अभागी
 अंगद अरु हनुमंत प्रवेसा । कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा ॥
 लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसैं । मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसैं ॥

दो०-भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।

कूदे जुगल बिगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥ ४५ ॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥
राम कृपा करि जुगल निहारे । भए बिगतश्रम परम सुखारे ॥
गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
जातुधान प्रदोष बल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥
निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥
द्वौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥
महावीर निसिचर सब कारे । नाना वरन बलीमुख भारे ॥
सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥
प्राविट सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया । विचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥
भयउ निमिष महँ अति अँधिआरा । वृष्टि होइ रुधिरपल छारा ॥

दो०-देखि निविड़ तम दसहुँ दिसि कपि दल भयउ खभार ।

एकहि एक न देखई जहँ तहँ करहिं पुकार ॥ ४६ ॥

सकल मरमु रघुनायक जाना । लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं । ग्यान उदयँ जिमि संसय जाहीं ॥
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाए हरष बिगत श्रम त्रासा ॥

हनूमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
भागत भट पटकहिं धरि धरनी । करहिं भालु कपि अद्भुत करनी
गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झष धरि धरि खाहीं
दो०—कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।

गर्जहिं भालु बलीमुख रिपु दल बल बिचलाइ ॥ ४७ ॥
निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसलाधनी ॥
राम कृपा करि चितवा सबही । भए विगतश्रम बानर तबही ॥
उहाँ दसानन सचिव हँकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटकु कपिन्ह संघारा । कहहु बेगि का करिअ बिचारा
माल्यवंत अति जरठ निसाचर । रावन मातु पिता मंत्री बर ॥
बोला वचन नीति अति पावन । सुनहु तात कछु मोर सिखावन
जब ते तुम्ह सीता हरि आनी । असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥
बेद पुरान जासु जसु गायो । राम बिमुख काहुँ न सुख पायो ॥
दो०—हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।

जेहिं मारे सोइ भवतरेउ कृपा सिंधु भगवान ॥ ४८(क) ॥

मासपारायण पचीसवाँ विश्राम

कालरूप खल बन दहन गुनागार घनबोध ।

सिव बिरंचि जेहि सेवहिं तासों कवन बिरोध ॥ ४८(ख) ॥

परिहरि बयर देहु बैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥
ताके बचन बान सम लागे । करिआ मुह करि जाहि अभागै

बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । अव जनि नयन देखावसि मोही
 तेहिं अपने मन अस अनुमाना । वध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥
 सो उठि गयउ कहत दुर्वादा । तव सक्रोध बोलेउ घननादा ॥
 कौतुक प्रात देखिअहु मोरा । करिहउँ बहुत कहाँ का थोरा ॥
 सुनि सुत वचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक बैठावा ॥
 करत विचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा ॥
 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढु घेरा । नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥
 विविधायुध धर निसिचर धाए । गढ़ ते पर्वत सिखर ढहाए ॥
 छं०-ढाहे महीधर सिखर कोटिन्ह विविध विधि गोला चले ।

घहरात जिमि पविपात गर्जत जनु प्रलय के बादले ॥
 मर्कट विकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भए ।
 गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचर हए ॥

दो०-मेघनाद सुनि श्रवन अस गढु पुनि छँका आइ ।

उतरयो वीर दुर्ग तें सन्मुख चलयो वजाइ ॥ ४९ ॥

कहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता । धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
 कहँ नल नील दुविद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सींवा ॥
 कहाँ विभीषनु भ्राताद्रोही । आजु सबहि हठि मारउँ ओही ॥
 अस कहि कठिन वान संधाने । अतिसय क्रोध श्रवन लगि ताने
 सर समूह सो छाड़ै लागा । जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा ॥
 जहँ तहँ परत देखिअहिं वानर । सन्मुख होइ न सके तेहि अवसर

जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा । बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा ॥
सो कपि भालु न रन महँ देखा । कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेपा ॥

दो०—दस दस सर सब सारेसि परे भूमि कपि वीर ।

सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर ॥ ५० ॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला । क्रोधवत जनु धायउ काला ॥
महासैल एक तुरत उपारा । अतिरिस मेघनाद पर डारा ॥
आवत देखि गयउ नभ सोई । रथ सारथी तुरग सब खोई ॥
बार बार पचार हनुमाना । निकट न आव मरमु सो जाना ॥
रघुपति निकट गयउ घननादा । नाना भाँति करेसि दुर्वादा ॥
अख सख आयुध सब डारे । कौतुकीं प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना । करै लाग माया विधि नाना ॥
जिमि कोउ करै गरुड़ सँ खेला । डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥

दो०—जासु प्रबल माया बस सिव बिरंचि बड़ छोट ।

ताहि दिखावइ निसिचरनिज माया मति खोट ॥ ५१ ॥

नभ चढ़ि वरष बिपुल अंगारा । महि ते प्रगट होहि जलधारा ॥
नाना भाँति पिसाच पिसाची । मारु काटु धुनि बोलहि नाची ॥
विष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा । वरषइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥
वरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा । सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
कपि अकुलाने माया देखें । सब कर मरन बना एहि लेखें ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने । भए समीत सकल कपि जाने ॥

एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके । भए प्रबल रन रहहि न रोके ॥

दो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥ ५२ ॥

छतज नयन उर बाहु विसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला
इहाँ दसानन सुभट पठाए । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥
भूधर नख विटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपासु ॥
असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥
देखहिं कौतुक नभ सुर वृंदा । कबहुँक विसमय कबहुँ अनंदा ॥

दो०—संधर गाड़ भरि भरि जम्बो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अंगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाइ ॥ ५३ ॥

घायल ग्रीर विराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा
एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती
क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ।
नाना विधि प्रहार कर सेपा । राच्छस भयउ प्रान अवसेपा ।
रावनसुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ।

बीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥
 मरुछा भई सक्ति के लागें । तब चलि गयउ निकट भय त्यागें
 दो०-मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।

जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारइ भुवन चारिदस आसू ॥
 सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥
 संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥
 व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ वृक्ष करनाकर
 तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना
 जामवंत कह वैद सुषेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥
 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दो०-राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुषेन ।

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भाषी ॥
 उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥
 दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना ॥
 देखत तुम्हहि नगर जेहिं जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥
 भजि रघुपति कर हित आपना । छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥
 नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥

एक बान काटी सब माया । जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके । भए प्रबल रन रहहि न रोके ॥

दो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ ॥ ५२ ॥

छतज नयन उर बाहु विसाला । हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला
इहाँ दसानन सुभट पठाए । नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥

भूधर नख विटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥

भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥

मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं

मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥

असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥

देखहिं कौतुक नभ सुर वृंदा । कबहुँक विसमय कबहुँ अनंदा ॥

दो०—सुधिर गाड़ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अंगार रासिन्ह पर मृतक धूम रह्यो छाइ ॥ ५३ ॥

घायल वीर विराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥

लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा

एकहिं एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती

क्रोधवंत तव भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥

नाना विधि प्रहार कर सेपा । राच्छस भयउ प्रान अवसेपा ॥

रावनसुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥

गिरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥
 भुलछा भई सक्ति के लागें । तब चलि गयउ निकट भय त्यागें
 दो०-मेघनाद सम कोटि सत जोधा रहे उठाइ ।

जगदाधार सेष किमि उठै चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

पुनु गिरिजा क्रोधानल जासू । जारइ भुवन चारिदस आसू ॥
 एक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥
 संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥
 व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर
 तब लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना
 जामवंत कह बैद सुषेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥
 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥

दो०-राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुषेन ।

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भाषी ॥
 उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥
 दसमुख कहा मरमु तेहिं सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना ॥
 देखत तुम्हहि नगर जेहिं जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥
 भजि खुपति करु हित आपना । छाँड़हु नाथ मृग्या जल्पना ॥
 नील कंज तनु सुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचनाभिरामा ॥

मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । महा मोह निसि सूतत जागू ॥
काल ब्याल कर भच्छक जोई । सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥

दो०—सुनि दसकंठ रिसान अति तेहिं मन कीन्ह विचार ।

राम दूत कर मरौं बरु यह खल रत मल भार ॥५६॥
अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर वर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । मुनिहि वृद्धिजल पियौं जाइ श्रम
राछस कपट वेष तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥
जाइ पवनसुत नायउ माया । लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥
होत महा रन रावन रामहिं । जितिहहिं राम न संसय या महिं ॥
इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई । ग्यानदृष्टि बल मोहि अधिकारि ॥
मागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल । कह कपि नहिं अघाउँ थोरें जल ॥
सर मजन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ग्यान जेहिं पावहु ॥

दो०—सर पैठत कपि पद गहा मकरीं तव अकुलान ।

मारी सो धरि दिव्य तनु चली गगन चढ़ि जान ॥५७॥
कपि तव दरस भइउँ निष्पापा । मिटा तात मुनिवर कर सापा ॥
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहु सत्य वचन कपि मोरा ॥
अस कहि गई अपछरा जवहीं । निसिचर निकट गयउ कपि तवहीं
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ॥
सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि भरती वारा ॥
राम राम कहि छाड़ेसि प्राणा । सुनि मन हरापि चलेउ हनुमाना

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि ब्राना ॥

राम प्रभाव विचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दो०—तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत ॥६० (क) ॥

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ॥६० (ख) ॥

उहाँ राम लछिमनहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥

अर्ध राति गइ कपि नहीं आयउ । राम उठाइ अनुज उर लायउ

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥

॥ हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु विपिन हिम आतप बाता

सो अनुराग कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम बच बिकलाई

जौं जनतेउँ वन बंधु विछोहू । पिता बचन मनतेउँ नहीं ओहू ॥

सुत वित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बाराहिं बारा ॥

अस विचारि जियँ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥

जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिबर कर हीना

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही । जौं जइ दैव जिआवै मोही ॥

जैहउँ अवध कौन मुहु लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं । नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा । सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥

निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सव विधि सुखद परम हित जानी
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई
बहु विधि सोचत सोच विमोचन । स्ववत सलिल राजिव दल लोचन
उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाल देखाई ॥

सो०—प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए बानर निकर ।

आइ गयउ हनुमान जिमि कहना महुँ वीर रस ॥ ६१ ॥

हरपि राम भेटेउ हनुमाना । अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत वैद तव कीन्हि उपाई । उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥
हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ भ्राता । हरपे सकल भालु कपि ब्राता ॥
कपि पुनि वैद तहाँ पहुँचावा । जेहि विधि तबहिं ताहि लइ आवा
यह वृत्तांत दसानन सुनेऊ । अति विषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ
व्याकुल कुंभकरन पहिं आवा । विविध जतन करि ताहि जगावा
जागा निसिचर देखिअ कैसा । मानहुँ कालु देह धरि वैसा ॥
कुंभकरन वूझा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ॥
कथा कही सव तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
तात कपिन्ह सव निसिचर मारे । महा महा जोधा संग्रारे ॥
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अर्कपन भारी ॥
अपर महोदर आदिक वीरा । परे समर महि सव रनधीरा ॥

दो०—सुनि दसकंधर वचन सव कुंभकरन विलखान ।

जगदंबा हरि आनि अव सठ चाहत ॥ ६२ ॥

मल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । अब मोहि आइ जगाएहि काहा
 अजहूँ तात त्यागि अभिमाना । भजेहु राम होइहि कल्याना ॥
 हैं दससीस मनुज रघुनायक । जाके हनूमान से पायक ॥
 अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई । प्रथमहि मोहि न सुनाएहि आई
 कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक । सिव विरंचि सुर जाके सेवक ॥
 नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । कहतेउँ तोहि समय निरबहा ॥
 अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई । लोचन सुफल करौं मैं जाई ॥
 स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥
 दो०—राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।

रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥ ६३ ॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना । गर्जा बज्राघात समाना ॥
 कुंभकरन दुर्मद रन रंगा । चला दुर्ग तजि सेन न संग्गा ॥
 देखि विभीषनु आगे आयउ । परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥
 अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो । रघुपति भक्त जानि मन भायो ॥
 तात लात रावन मोहि मारा । कहत परम हित मंत्र विचारा ॥
 तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउँ । देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥
 सुनु सुत भयउ कालवस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन
 धन्य धन्य तैं धन्य विभीषन । भजेहु तात निसिचर कुल भूपन
 बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर । भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥

दो०—बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।

जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालवस बीर ॥ ६४ ॥

बंधु वचन सुनि चला विभीषन । आयउ जहँ त्रैलोक विभूषन ॥
 नाथ भूधराकार सरीरा । कुंभकरन आवत रत्नधीरा ॥
 एतना कपिन्ह सुना जव काना । किलकिलाइ धाए बलवाना ॥
 लिएउठाइ बिटप अरु भूधर । कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥
 कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा । करहिं भालु कपि एक एक वारा ॥
 मुरथो न मनु तनु टारथो न टारथो । जिमि गज अर्क फलनि को मारथो ॥
 तव मारुतसुत मुठिका हन्यो । परथो धरनि व्याकुलसिर धुन्यो ॥
 पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता । धुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥
 पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि । जहँ तहँ पटक पटक भट डारेसि ॥
 चली बलीमुख सेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समुहाई ॥

दो०—अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।

काँख दाबि कपिराज कहँ चला अमित बल सीव ॥ ६५ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला । खेलत गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥
 भृकुटि भंग जो कालहि खाई । ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥
 जंग पावनि कीरति विस्तरिहहिं । गाइ गाइ भवनिधि नर तारिहहिं ॥
 मुरुछा गइ मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तव खोजन लागा ॥
 सुग्रीवहु कै मुरुछा वीती । निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रतीती ॥
 काटेसि दसन नासिका काना । गरजि अकास चलेउ तेहिं जाना ॥
 गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघवँ उठि पुनि तेहि मारा ॥
 पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥

नाक कान काटे जियँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥
 सहज भीम पुनि विनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥
 दो०—जय जय जय रघुवंसमनि धाए कपि दै हूह ।

एकहि बार तासु पर छाढ़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

कुंभकरन रन रंग विरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
 कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीढ़ी गिरि गुहाँ समाई ॥
 कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥
 मुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥
 रन मद मत्त निसाचर दर्पा । विस्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अर्पा ॥
 मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
 कुंभकरन कपि फौज विडारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥
 देखी राम विकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥
 दो०—सुनु सुग्रीव विभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥
 प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥
 सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥
 जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट विकट पिसाचा ॥
 कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक बीर होहिं सत खंडा ॥
 घुमिं घुमिं घायल महि परहीं । उठि सँभारि सुभट पुनि लरहीं ॥

लागत बान जलद जिमि गाजहिं । बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ।
रंड प्रचंड मुंड विनु धावहिं । धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं ।

दो०—छन महुँ प्रभु के सायकन्हि काटे बिकट पिसाच ।

पुनि रघुबीर निषंग महुँ प्रविसे सब नाराच ॥ ६८ ॥

कुंभकरन मन दीख विचारी । हति छन माझ निसाचर धारी ॥
भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा । कियो मृगनायक नाद गँभीरा ॥
कोपि महीधर लेइ उपारी । डारइ जहँ मर्कट भट भारी ॥
आवत देखि सैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रज सम करि डारे ॥
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाँड़े अति कराल बहु सायक ॥
तनु महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं । जिमि दामिनि घन माझ समाहीं ॥
सोनित खचत सोह तन कारे । जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे ॥
बिकल बिलोकि भालु कपि धाए । बिहँसा जबहिं निकट कपि आए ॥

दो०—महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस ।

महि पटकइ गजराज इव सपथ करइ दससीस ॥ ६९ ॥

भागो भालु बलीमुख जूथा । बृकु बिलोकि जिमि मेष बरूथा
चले भागि कपि भालु भवानी । बिकल पुकारत आरत बानी ॥
यह निसिचर दुकाल सम अहई । कपिकुल देस परन अब चहई ॥
कृपा बारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारति हारी ॥
सकरुन वचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ॥
राम सेन निज पाछें घाली । चले सकोप महा बलसाली ॥

नाक कान काटे जियँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥

दो०—जय जय जय रघुवंसमनि धाए कपि दै हूह ।

एकहि बार तासु पर छाढ़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीढ़ी गिरि गुहाँ समाई ॥
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥
सुख नासा श्रवनन्हि कीं बाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥
रन मद मत्त निसाचर दर्पा । बिस्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अर्पा ॥
सुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सूझ न नयन सुनिहिं नहिं टेरे ॥
कुंभकरन कपि फौज बिडारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥
देखी राम बिकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो०—सुनु सुग्रीव बिभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥
जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट बिकट पिशाचा ॥
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक वीर होहिं सत खंडा ॥
धुर्मि धुर्मि घायल महि परहीं । उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं ॥

छं०—संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी ।

श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥

भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने ।

कह दास तुलसी कहि न सक छवि सेव जेहि आनन घने ॥

दो०—निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम ।

गिरिजा ते नर मंदमतिजे न भजहिं श्रीराम ॥ ७१ ॥

दिन के अंत फिरीं दोउ अनी । समर भई सुभटन्ह श्रम घनी ॥

राम कृपाँ कपि दल बल बाढ़ा । जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा ॥

छीजहिं निसिचर दिनु अरु राती । निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती ॥

बहु बिलाप दसकंधर करई । बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई ॥

रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तासु तेज बल त्रिपुल बखानी ॥

मेघनाद तोहि अवसर आयउ । कहि बहु कथा पिता समुझायउ ॥

देखेहु कालि मोरि मनुसाई । अबहिं बहुत का करौं बढ़ाई ॥

इष्टदेव सैं बल रथ पायउँ । सो बल तात न तोहि देखायउँ ॥

एहि विधि जल्पत भयउ बिहाना । चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥

इत कपि भालु काल सम वीरा । उत रजनीचर अति रनधीरा ॥

लरहिं सुभट निज निज जय हेतू । वरनि न जाइ समर खगकेतू ॥

दो०—मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ अकास ।

गजेंउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास ॥ ७२ ॥

सक्ति सूल तरवारि कृपाना । अछ सख कुलिसायुध नाना ॥

डारइ परसु परिष पाषाणा । लागेउ वृष्टि करै बहु वाना ॥
 दस दिशि रहे वान नभ छाई । मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥
 धरु धरु मारु सुनिअ धुनि काना । जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥
 गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं । देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं ॥
 अवघट घाट वाट गिरि कंदर । माया बल कीन्हैसि सर पंजर ॥
 जाहिं कहाँ व्याकुल भए बंदर । सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥
 मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हैसि बिकल सकल बलसीला ॥
 पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन । सरन्हि मारि कीन्हैसि जर्जर तन ॥
 पुनि रघुपति सैं जूझै लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥
 व्याल पास बस भए खरारी । स्वयस अनंत एक अतिकारी ॥
 नट इव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥
 रन सोभा लागि प्रभुहिं बँधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥

दो०—गिरिजा जासु नाम जपि सुनि काटहिं भव पास ।

सो कि बंध तर आवइ व्यापक बिस्व निवास ॥ ७२ ॥

चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहिं बुद्धि बल वानी ॥
 अस विचारि जे तग्य विरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥
 व्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहइ दुर्वादा ॥
 जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनि करि ताहि क्रोध अति वाढ़ा ॥
 बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥
 अस कहि तरल तिसूल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥

मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि धुर्मित सुरवाती ।
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ।
वर प्रसाद सो मरइ न मारा । तव गहि पद लंका पर डारा ॥
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥

दो०-खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।

माया विगत भए सब हरषे वानर जूथ ॥ ७४ (क) ॥

गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ ।

चले तमीचर विकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४ (ख) ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी । पितहि विलोकि लाज अति लागी ॥
तुरत गयउ गिरिवर कंदरा । करौं अजय मख अस मन धरा ॥
इहाँ विभीषन मंत्र विचारा । सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥
मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । नाथ वेगि पुनि जीति न जाइहि ॥
सुनि खगपति अतिसय सुख माना । बोले अंगदादि कपि नाना ॥
लछिमन संग जाहु सब भाई । करहु विधंस जग्य कर जाई ॥
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । देखि समय सुर दुख अति मोही ॥
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहिं छीजै निसिचर सुनु भाई ॥
जामवंत सुग्रीव विभीषन । सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥
जब खगवीर दीन्हि अनुसासन । कटि निधंग कसि साजि सरासन ॥
प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥

जौं तेहि आजु ब्रधेँ बिनु आवौं । तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥
जौं सत संकर करहि सहाई । तदपि हतउँ रघुवीर दोहाई ॥

दो०—रघुपति चरन नाह सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा बैसा । आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥
कीन्ह कपिन्ह सब जग्य विधंसा । जव न उठइ तब करहि प्रसंसा ॥
तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई । लातन्हि हति हति चले पराई ॥
लै त्रिसूल धावा कपि भागे । आये जहँ रामानुज आगे ॥
आवा परम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर रव वारहि बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाए । हति त्रिसूल उर धरनि गिराए ॥
प्रभु कहँ छाँड़ेसि सूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥
उठि बहोरि मारुति जुवराजा । हतहिं कोपि तेहि घाउ न बाजा ॥
फिरे वीर रिपु मरइ न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा ॥
आवत देखि क्रुद्ध जनु काला । लछिमन छाड़े विसिख कराला ॥
देखेसि आवत पवि सम वाना । तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥
बिविध वेष धरि करइ लराई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥
देखि अजय रिपु डरपे कीसा । परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा ॥
लछिमन मन अस मंत्र दृढ़ावा । एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा ॥
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । सर संधान कीन्ह करि दापा ॥
छाड़ा वान माझ उर लागा । मरती बार कपटु सब त्यागा ॥

दो०—रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़ैसि प्रान ।

धन्य धन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥ ७६ ॥

बिनु प्रयास हनुमान उठायो । लंका द्वार राखि पुनि आयो ॥
तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा । चढ़ि विमान आए नम सर्वा ॥
वरषि सुमन दुंदुभीं बजावहिं । श्रीरघुनाथ विमल जसु गावहिं ॥
जय अनंत जय जगदाधारा । तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥
अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए । लछिमन कृपासिंधु पहिं आए ॥
सुत ब्रध सुना दसानन जबहीं । मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥
मंदोदरी रुदन कर भारी । उर ताड़न बहु भाँति पुकारी ॥
नगर लोग सब व्याकुल सोचा । सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥
दो०—तब दसकंठ विविधि विधि समुझाई सब नारि ।

नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदयँ बिचारि ॥ ७७ ॥

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन । आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥
पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
निसा सिरानि भयउ भिनुसारा । लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
सुभट बोलाइ दसानन बोला । रन सन्मुख जा कर मन डोला ॥
सो अबहीं बरु जाउ पराई । संजुग विमुख भएँ न भलाई ॥
निज भुज बल मैं बयरु बढ़ावा । देहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आव ॥
अस कहि मरुत वेग रथ साजा । बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले वीर सब अतुलित बली । जनु कज्जल कै आँधी चली ॥

असगुन अमित होहिं तेहि काला। गनइ न भुज बल गर्व विसाला॥

छं०—अति गर्व गनइ न सगुन असगुन स्वहिं आयुध हाथ ते ।

भट गिरत रथ ते वाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ ते ॥

गोमाय गीध कराल खर रव स्वान बोलहिं अति घने ।

जनु कालदूत उलूक बोलहिं वचन परम भयावने ॥

दो०—साहि कि संपत्ति सगुन सुभ सपनेहुँ मन विश्राम ।

भूव द्रोह रत मोहवस राम विमुख रति काम ॥ ७८ ॥

चलेउ निसाचर कटकु अपारा । चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥

विबिध भाँति बाहन रथ जाना । विपुल वरन पताक ध्वज नाना ॥

चले मत्त गज जूथ घनेरे । प्राविट जलद मरुत जनु प्रेरे ॥

वरन वरन विरदैत निकाया । समर सूर जानहिं बहु माया ॥

अति विचित्र बाहिनी विराजी । वीर बसंत सेन जनु साजी ॥

चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं । छुभित पयोधि कुधर डगमगाहीं ॥

उठी रेनु रवि गयउ छपाई । मरुत थकित बसुधा अकुलाई ॥

पनव निसान घोर रव बाजहिं । प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ॥

भेरि नफीरि बाज सहनाई । मारु राग सुभट सुखदाई ॥

केहरिनाद वीर सव करहीं । निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥

कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ॥

हैं मारिहउँ भूप द्वौ भाई । अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई ॥

यह सुधि सकल कपिन्ह जव पाई । धाए करि रघुवीर दोहाई ॥

छं०-धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते ।
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर वृंद नाना वान ते ॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं ॥

दो०-दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।
भिरे वीर इत रामहि उत रावनहि बखानि ॥७९॥
रावनु रथी विरथ रघुबीरा । देखि विभीषन भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा । बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना । केहि विधि जितव वीर बलवाना ॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल विवेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
ईस भजनु सारथी सुजाना । विरति चर्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । वर विग्यान कठिन कोदंडा ॥
अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥
कवच अमेद विप्र गुर पूजा । एहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकैं । जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकैं ॥

दो०-महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो वीर ।
जाकैं अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥८०(क)॥
सुनि प्रभु बचन विभीषन हरषि गहे पद कंज ।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥८०(ख)॥

उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ।

लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन ॥८०(ग)॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रन नभ चढ़े विमाना ॥

हमहू उमा रहे तेहिं संगी । देखत राम चरित रन रंगा ॥

सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥

एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ॥

मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ॥

उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटक भट डारहिं

सिचर मट महि गाड़हिं भालू । ऊपर ढारि देहिं बहु बालू ॥

बीर बलीमुख जुद्ध विरुद्धे । देखिअत विपुल काल जनु क्रुद्धे

छं०—क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन खवत सोनित राजहीं ।

मर्दिहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं ॥

मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीं ।

चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजहीं ॥ १ ॥

धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।

प्रह्लादपति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ॥

धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।

जय राम जो तृन ते कुलिस कर कुलिस ते कर तृन सही ॥ २ ॥

दो०—निज दल बिचलत देखेसि बीस भुजाँ दस चाप ।

रय चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप ॥ ८१ ॥

पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं ॥
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी । छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छं०—सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही ।

परयो बीर बिकल उठाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥

ब्रह्मांड भवन विराज जाकेँ एक सिर जिमि रज कनी ।

तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी ॥

दो०—देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।

आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥८३॥

तु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा सँभारि बहुत रिस भरा ॥

८३ एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु वज्र प्रहारा ॥

मुरुछा गै बहोरि सो जागा । कपि बल त्रिपुल सराहन लागा ॥

धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जाँ तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही ॥

अस कहि लछिमन कहूँ कपि ल्यायो । देखि दसानन विसमय पायो

कह रघुबीर समुझु जियँ भ्राता । तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता ॥

सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सकति कराला ॥

पुनि कोदंड बान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए

छं०—आतुर बहोरि विभंजि स्यंदन सूत हति व्याकुल कियो ।

गिरयो धरनि दसकंधर बिकलतर बान सत बेध्यो हियो ॥

सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।

रघुबीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥

वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ बिचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ विसेपा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥

चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥

रथारूढ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ विसेयी ॥

सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया विस्तारी ॥

सो माया रघुवीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥

देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं०—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।

जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे ॥

निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।

माया हरी हरि निमिष महुँ हरषी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर ।

द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंकज सिर नावा ॥

तब लंकेस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥

जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥
 रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जाकें बंदीखाना ॥
 खर दूषन विराध तुम्ह मारा । बधेहु व्याध इव बालि बिचारा ॥
 निसिचर निकर सुभट संघारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥
 आजु बयरु सबु लेउँ निवाही । जौ रन भूप भाजि नहिं जाही ॥
 आजु करउँ खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥
 सुनि दुर्बचन काल बस जाना । बिहँसि बचन कह कृपानिधाना
 सत्य सत्य सत्र तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

छं०—जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।
 संसार महँ पुरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा ॥
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।
 एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ॥

दो०—राम बचन सुनि बिहँसा मोहि सिखावत ग्यान ।

बयरु करत नहिं तब डरे अब लागे प्रिय प्रान ॥ ९० ॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिस सम् न लाग छाँड़ै सर ॥
 नानाकार सिलीमुख धाए । दिसि अरु । बहिसि गगन महि छाए ॥
 पावक सर छाँड़ेउ रघुबीरा । छन महँ जरे निसाचर तीरा ॥
 छाड़िसि तीव्र सक्ति खिसिआई । वान संग प्रभु फेरि चलाई ॥
 कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारै । विनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥
 निफल होहिं रावन सर कैसें । खल के सकल मनोरथ जैसें ॥

तव सत वान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥
राम कृपा करि सूत उठावा । तव प्रभु परम क्रोध कहूँ पावा ॥

छं०—भए क्रुद्ध जुद्ध बिरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।
कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे ॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर ग्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गाज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

दो०—तानेउ चाप श्रवन लागि छाँड़े बिसिख कराल ।

राम मारगन गन चले लहलहात जुनु व्याल ॥ ९१ ॥

चले वान सपच्छ जुनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥
रथ विभंजि हति केतु पताका । गर्जा अति अंतर बल थाका ॥
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना । अस्त्र सस्त्र छाँड़ेसि विधि नाना
विफल होहिं सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥
तव रावन दस सूल चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खैंचि सरासन छाँड़े सायक ॥
रावन सिर सरोज वनचारी । चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥
दस दस वान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥
स्ववत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥
तीस तीर रघुवीर पनारे । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥
काटतहीं पुनि भए नवीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ॥
प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥

पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥
रहे छाड़ नभ सिर अरु बाहू । मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छं०-जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं ।
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहीं ।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुंतुद पोहहीं ॥

दो०-जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।
सेवत विषय विबर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥९२॥

दसमुख देखि सरन्ह कै बाढ़ी । विसरा मरन भई रिम गाढ़ी ॥
गजेंउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सगसन तानी ॥
समर भूमि दसकंधर कोप्यो । वरपि वान रघुपति रथ तोप्यो ॥
दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ ॥
हाहाकार सुरन्ह जय कीन्हा । तव प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा ॥
सर निवारि रिपु के सिर काटे । ते दिसि त्रिदिसि गगन महि पाटे
काटे सिर नभ मारग धावहिं । जय जय धुनि करि भय उपजावहिं
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा । कहँ रघुबीर कोसलाधीसा ॥

छं०-कहँ रासु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले ।
संधानि धनु रघुवंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥
सिर मालिका कर कालिका गहि वृद्ध वृद्धन्हि बहु मिलीं ।
करि सुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम बट पूजन चलीं ॥

दो०—पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।

चली विभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥९३॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा । प्रनतारति भंजन पन मोरा ॥

तुरत विभीषन पाछें मेला । सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥

लागि सक्ति मुरुछा कछु भई । प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई ॥

देखि विभीषन प्रभु श्रम पायो । गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥

रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे । तैं सुर नर मुनि नाग त्रिरुद्धे ॥

सादर सिव कहुँ सीस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ॥

तेहि कारन खल अब लगि बाँच्यो । अब तव काल सीस पर नाच्यो ॥

राम विमुख सठ चहसि संपदा । अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

छं०—उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि परयो ।

दस वदन सोनित खवत पुनि संभारि धायो रिस भरयो ॥

द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध बिरुद्ध एक एकहि हनै ।

रघुबीर बल दर्पित विभीषनु घालि नहिं ता कहुँ गनै ॥

दो०—उमा विभीषनु रावनहि सन्मुख चितव कि काउ १ ।

सो अब भिरत काल ज्यों श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा श्रमित विभीषनु भारी । धाएउ हनूमान गिरि धारी ॥

रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय माझ तेहि मारेसि लाता ॥

ठाढ़ रहा अति कंपित गाता । गयउ विभीषनु जहँ जनवाता ॥

पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी ॥

गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥
लरत अकास जुगल सम जोधा । एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं । कजलगिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥
बुधि बल निसिचर परइ न पारयो । तव मारुतसुत प्रभु संभारयो ॥

छं०-संभारि श्रीरघुवीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो ।
महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहूँ जय जय मन्यो ॥
हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।
रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले ॥

दो०-तव रघुवीर पचारे धाए कीस प्रचंड ।
कपि बल प्रबल देखि तेहिं कीन्ह प्रगट पापंड ॥ ९५ ॥

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥
रघुपति कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥
देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥
भागो बानर धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लछिमन रघुवीरा ॥
दहँ दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डरे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब भाई ॥
सब सुर जिते एक दसकंधर । अब बहु भए तकहु गिरि कंदर ॥
रहे विरंचि संभु मुनि ग्यानी । जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कह्यु जानी ॥

छं०-जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।
चले विचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥

हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन बाँकुरे ।

मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥

दो०—सुर वानर देखे बिकल हँस्यो कोसलाधीस ।

सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस ॥ ९६ ॥

प्रभु छन महुँ माया सब काटी । जिमि रवि उएँ जाहिं तम फाटी ।

रावनु एकु देखि सुर हरषे । फिरे सुमन बहु प्रभु पर वरषे ॥

भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एकन्ह तव टेरे ॥

प्रभु बलु पाइ भालु कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥

अस्तुति करत देवतन्हि देखें । भयउँ एक मैं इन्ह केलेखें ॥

सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल । अस कहि कोपि गगन पर धायल ।

हाहाकार करत सुर भागे । खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥

देखि बिकल सुर अंगद धायो । कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

छं०—गहि भूमि पारयो लात मारयो बालिसुत प्रभु पहिं गयो ।

संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर, रव गर्जत भयो ॥

करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई ।

किए सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई ॥

दो०—तव रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।

काटे बहुत बड़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ ९७ ॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी । भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी ॥

मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा । धाए कोपि भालु भट कीसा ॥

बालितनय मारुति नल नीला । वानरराज दुविद बलसीला ॥
 विष्टप महीधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा
 एक नखन्हि रिपु वपुष विदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी
 तव नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । नखन्हि लिलार विदारत भयउ
 रुधिर देखि विषाद उर भारी । तिन्हहि धरन कहूँ भुजा पसारी ॥
 गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं
 कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥
 पुनि संकोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कापे कीन्हे
 हनुमदादि मुरुछित करि बंदर । पाइ प्रदोष हरप दसकंधर ॥
 मुरुछित देखि सकल कपि वीरा । जामवंत धायउ रनधीरा ॥
 संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे पचारि पचारी ॥
 भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । गहि पद महि पटकइ भट नाना ॥
 देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि माझ उर मारेसि लाता ॥

छं०—उर लात घात प्रचंड लागत विकल रथ ते महि परा ।
 गहि भालु वीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ॥
 मुरुछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।
 निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तव सूत जतनु करत भयो ॥

दो०—मुरुछा बिगत भालु कपि सब आए प्रभु पास ।

निसिचर सकल रावनहि वेरि रहे अति त्राम ॥९८॥

मासपारायण, छव्वीसवाँ विश्राम

तेही निसि सीता पहिं जाई । त्रिजटा कहि सव कथा सुनाई ॥
 सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी । सीता उर भइ चास घनेरी ॥
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥
 होइहि कहा कहसि किन माता । केहि बिधि मरिहि बिस्व दुखदाता
 रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । बिधि विपरीत चरित सव करई ॥
 मोर अभाग्य जिआवत ओही । जेहिं हौं हरि पद कमल बिछोही ॥
 जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥
 जेहिं बिधि मोहि दुख दुसह सहाए । लछिमन कहुँ कटु वचन कहाए
 रघुपति बिरह सविष सर भारी । तकि तकि मार बार बहु मारी ॥
 ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राणा । सोइ बिधि ताहि जिआव न आना
 बहु बिधि कर बिलाप जानकी । करि करि सुरति कृपानिधान की ॥
 कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी । उर सर लागत मरइ सुरारी ॥
 प्रभु ताते उर हतइ न तेही । एहि के हृदयँ बसति वैदेही ॥

छं०—एहि के हृदयँ बस जानकी जानकी उर मम बास है ।
 मम उदर भुवन अनेक लागत बान सब कर नास हैं ॥
 सुनि वचन हरष बिषाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा ।
 अब मरिहि रिपु एहि बिधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दो०—काटत सिर होइहि विकल छुटि जाइहि तब ध्यान ।

तब रावनहि हृदय महुँ मरिहहिं रामु सुजान ॥ ९९ ॥

अस कहि बहुत भाँति समुझाई । पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई

राम सुभाउ सुमिरि व्रैदेही । उपजी विरह विथा अति तेही ॥
 निसिहि ससिहि निंदति बहु भाँती । जुग सम भई सिराति न राती
 करति विलाप मनहिं मन भारी । राम विरहँ जानकी दुखारी ॥
 जव अति भयउ विरह उर दाहू । फरकेउ बाम नयन अरु बाहू ॥
 सगुन विचारि धरी मन धीरा । अत्र मिलिहहिं कृपाल रघुवीरा
 इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा । निज सारथि सन खीझन लागा
 सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही
 तेहिं पद गहि बहु विधि समुझावा । भोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा
 सुनि आगवनु दसानन केरा । कण्ठिल खरभर भयउ घनेरा
 जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी । धाए कटकटाइ भट भारी ॥

छं०—धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा ।
 अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥
 बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो ।
 चहुँ दिसि चपेटन्ह मारि नखन्ह बिदारि तनु व्याकुल कियो

दो०—देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह बिचार ।

अंतरहित होइ निमिष महुँ कृत माया बिस्तार ॥१००॥

छं०—जव कीन्ह तेहिं पापंड । भए प्रगट जंतु प्रचंड ॥

बेताल भूत पिसाच । कर धरें धनु नाराच ॥

जोगिनि गहें करबाल । एक हाथ मनुज कपाल ॥

करि सद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं ॥

धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥
 मुख बाइ धावहिं खान । तब लगे कीस परान ॥ ३ ॥
 जहँ जाहिं मर्कट भागि । तहँ बरत देखहिं आगि ॥
 भए विकल वानर भालु । पुनि लाग बरषै बालु ॥ ४ ॥
 जहँ तहँ थकित करि कीस । गजेंउ बहुरि दससीस ॥
 लछिमन कपीस समेत । भए सकल वीर अचेत ॥ ५ ॥
 हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
 एहि विधि सकल बल तोरि । तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥ ६ ॥
 प्रगटेसि विपुल हनुमान । धाए गहे पाषाण ॥
 तिन्ह रामु घेरे जाइ । चहुँ दिसि बरूथ बनाइ ॥ ७ ॥
 मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥
 दहँ दिसि लँगूर बिराज । तेहिं मध्य कोसलराज ॥ ८ ॥

छं०—तेहिं मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही ।
 जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥
 प्रभु देखि हरष बिषाद उर सुर बढत जय जय जय करी ।
 रघुवीर एकहिं तीर कोपि निमेष सहुँ माया हरी ॥ १ ॥
 माया विगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।
 सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ॥
 श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
 सत सेष सारद निगम कबि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥ २ ॥

श्री०-ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।

जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास ॥१०१(क)॥

काटे सिर भुज बार बहु मरत न भट लंकेस ।

प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलेस ॥१०१(ख)॥

काटत बढ़हिं सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई

मरइ न रिपु श्रम भयउ त्रिसेषा । राम विभीषन तन तव देखा ॥

उमा काल मर जाकीं ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥

सुनु सरवग्य चराचर नायक । प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक

नाभिकुंड पियूष वस याकें । नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥

सुनत विभीषन वचन कृपाला । हरपि गहे कर वान कराला ॥

असुभ होन लागे तव नाना । रोवहिं खर सृकाल बहु स्वाना

बोलहिं खग जग आरति हेतू । प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू ॥

दसदिसि दाह होन अति लागा । भयउ परव त्रिनु रवि उपरागा

मंदोदरि उर कंपति भारी । प्रतिमा खवहिं नयन मग वारी ॥

छं०-प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ अति ब्रात बह डोलति मही ।

बरपहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक को कही ॥

उतपात अमित विलोकि नभ सुर विकल बोलहिं जय जए ।

सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए ॥

श्री०-खैचि सरासन श्रवन लागि लाड़े सर एकतीस ।

रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥१०२॥

सायक एक नाभि सर सोषा । अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥
 लै सिर बाहु चले नाराचा । सिर भुज हीन रुंड महि नाचा ॥
 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा
 गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ रामु रन हतौ पंचारी ॥
 डोली भूमि गिरत दसकंधर । छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर
 धरनि परेउ द्वौ खंड बढाई । चापि भालु मर्कट समुदाई ॥
 मंदोदरि आगें भुज सीसा । धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥
 प्रविसे सब निपंग महुँ जाई । देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥
 तासु तेज समान प्रभु आनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥
 जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । जय रघुवीर प्रवल भुजदंडा ॥
 वरषहिं सुमन देव मुनि वृंदा । जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥

छं०—जय कृपा कंद मुकुंद द्वंद हरन सरन सुखप्रद प्रभो ।

खल दल विदारन परम कारन कारुणीक सदा बिभो ॥

सुर सुमन वरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही ।

संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ॥१॥

सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।

जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजहीं ॥

भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने ।

जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं विपुल सुख आपने ॥२॥

दो०—कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किए सुर वृंद ।

भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद ॥१०२॥

पति सिर देखत मंदोदरी । मुरुछित बिकल धरनि खसि परी
 जुवति वृंद रोवत उठि धाई । तेहि उठाइ रावन पहिं आई ॥
 पति गति देखि ते करहिं पुकारा । छूटे कच नहिं बपुष सँगारा ॥
 उर ताड़ना करहिं विधि नाना । रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥
 तव बल नाथ डोल नित धरनी । तेजहीन पावक ससि तरनी ॥
 सेष कमठ सहि सकहिं न भारा । सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ॥
 बरुन कुवेर सुरेस समीरा । रन सन्मुख धरि काहुं न धीरा ॥
 भुज बल जितेहु काल जम साई । आजु परेहु अनाथ की नाई ॥
 जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई । सुत परिजन बल बरनि न जाई ॥
 राम विमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कोउ कुल रोवनिद्वारा ॥
 तव बस विधि प्रपंच सब नाथा । समय दिसिप नित नाचहिं माथा
 अब तव सिर भुज जंघुक खाई । राम विमुख यह अनुचित नाई ॥
 काल विवस पति कहा न माना । अग जग नाथु मनुज करि जाना
 छं०—जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।
 जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं कमनामयं ॥
 आजन्म ते परद्रोह रत पापौवसय तब तनु श्रयं ।
 तुमहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दो०—अहह नाथ रघुनाथ सम कृपा गिंयु नहिं आन ।

जोगि वृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान ॥ १०४ ॥

मंदोदरी वचन सुनि काना । सु मुनि मिद्व सर्वान्त सुख माना

अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥
 रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ विभीषनु मन दुख भारी ॥
 बंधु दसा विलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा
 लछिमन तेहि बहु विधि समुझायो । बहुरि विभीषन प्रभु पहिं आयो
 कृपा दृष्टि प्रभु ताहि विलोका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । विधिवत देस काल जियँ जानी ॥
 दो०—मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि ।

भवन गई रघुपति गुन गन वरनत मन माहि ॥१०५॥

आइ विभीषन पुनि सिर नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥
 सब मिलि जाहु विभीषन साथ । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथ ॥
 पिता वचन मैं नगर न आवउँ । आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ
 तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना । कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥
 सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥
 जोरि पानि सबहीं सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पहिं आए ॥
 तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय वचन सुखी सब कीन्हे ॥
 छं०—किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो ।
 पायो विभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥

मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

श्लो०—प्रभु के वचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।

बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥

समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥

तव हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥

बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥

दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । खुपति दूत जानकी चीन्हा ॥

कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥

सब विधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥

अविचल राजु विभीषन पायो । मुनि कपि वचन हरष उर छायो ॥

श्लो०—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।

का देखैं तोहि त्रैलोक्य महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥

सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।

रन जीति रिपु दल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

श्लो०—सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत ।

सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥१०७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । देखौं नयन स्याम मृदु गाता ॥

तव हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥

अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥
 भरि लोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥
 रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ विभीषनु मन दुख भारी ॥
 बंधु दसा विलोकि दुख कीन्हा । तब प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ॥
 लछिमन तेहि बहु विधि समुझायो । बहुरि विभीषन प्रभु पहिँ आयो ॥
 कृपा दृष्टि प्रभु ताहि विलोका । करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । विधिवत देस काल जियँ जानी ॥
 दो०—मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि ।

भवन गई रघुपति गुन गन वरनत मन माहि ॥१०५॥

आइ विभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ॥
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥
 सब मिलि जाहु विभीषन साथी । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥
 पिता वचन मैं नगर न आवउँ । आपु सरिस कपि अनुज पठावउँ ॥
 तुरत चले कपि सुनि प्रभु वचना । कीन्ही जाइ तिलक की रचना ॥
 सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥
 जोरि पानि सबहीं सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पहिँ आए ॥
 तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे । कहि प्रिय वचन सुखी सब कीन्हे ॥
 छं०—किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो ।
 पायो विभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥

मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास विनु नर पाइहैं ॥

दो०—प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।

बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥
तव हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥
दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता । कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥
सब विधि कुसल कोसलाधीसा । मातु समर जीत्यो दससीसा ॥
अविचल राजु विभीषन पायो । सुनि कपि बचन हरष उर छायो ॥

छं०—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।

का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥

सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।

रन जीति रिपु दल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

दो०—सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत ।

सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥१०७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । देखौं नयन स्याम मृदु गाता ॥

तव हनुमान राम पहिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥

सुनि संदेसु भानुकुलभूषन । बोलि लिए जुवराज विभीषन ॥
 मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥
 तुरतहिं सकल गए जहँ सीता । सेवहिं स्त्रनिचिचरौ विनीता ॥
 बेगि विभीषन तिन्हहि सिखायो । तिन्हबहु विधि मजन करवायो
 बहु प्रकार भूषन पहिराए । तिविका रत्निरसाजि पुनि ल्याए
 ता पर हरषि चढ़ी वैदेही । सुमिरि राम सुख धाम सनेही ॥
 बेतपानि रच्छक चहुँ पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥
 देखन भालु कीस सत्र आए । रच्छक कोपि निवारन धाए ॥
 कह रघुवीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादेँ आनहु ॥
 देखहुँ कपि जननी की नाई । बिहसि कहा रघुनाथ गोसाई ॥
 सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरपे । नमते ॥ मन बहु वरपे ॥
 सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रग ॥ साखी ॥

जौं मन वच क्रम मम उर माहीं । तजि खुरीर आन गति नाहीं ॥
तौ कृसानु सब कै गति जाना । मो कहूँ होउ श्रीखंड समाना ॥

०-श्रीखंड सम पावक प्रवेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जरे ।
प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥१॥
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग विदित जो ।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥
सो राम वाम विभाग राजति रुचिर अति सोभा भली ।
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥२॥

दो०-वरषहिं सुमन हरषि सुर बाजहिं गगन निसान ।
गावहिं किंनर सुरबधूँ नाचहिं चढ़ीं विमान ॥१०९(क)॥
जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार ।
देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार ॥१०९(ख)॥

तब रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई
आए देव सदा स्वारथी । वचन कहहिं जनु परमारथी ॥
दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ॥
विस्व द्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगगामी
तुम्ह समरूप ब्रह्म अविनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघसक्ति करुनामय ॥

मीन कमठ सूकर नरहरी । वामन परसुराम वपु धरी ॥
 जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तनु धरि तुम्हैं नसायो ॥
 यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कोही ॥
 अधम सिरोमनि तव पद पावा । यह हमरें मन त्रिसमय आवा ॥
 हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी ॥
 भव प्रवाहँ संतत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥
 दो०—करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।

अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि ॥ ११० ॥

छं०—जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ॥
 बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ बिभो ॥
 काम अनेक अनूप छत्री । गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ॥
 जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ॥
 जन रंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ॥
 अवतार उदार अपार गुनं । महि भार बिभंजन ग्यानघनं ॥
 अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुणाकर राम नमामि मुदा ॥
 रघुवंस बिभूषन दूषन हा । कृत भूष बिभीषन दीन रहा ॥
 गुन ग्यान निधान अमान अर्ज । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ॥
 भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खल वृंद निकंद महा कुसलं ॥
 विनु कारन दीन दयाल हितं । छवि धाम नमामि रमा सहितं ॥
 भव तारन कारन काज परं । मन संभव दारुन दोष हरं ॥
 सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुन लोचन भूपवरं ॥

सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद् मार मुधा ममता समनं ॥
 अनवद्य अखंड न गोचर गो । सवरूप सदा सव होइ न गो ॥
 इति वेद वदंति न दंतकथा । रवि आतप भिन्नमभिन्न जथा ॥
 कृतकृत्य बिभो सव बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ॥
 धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति विना भव भूलि परे ॥
 अब दीनदयाल दया करिए । मति मोरि विभेदकरी हरिए ॥
 जेहि ते विपरीत क्रिया करिए । दुख सो सुख मानि सुखी चरिए
 खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ॥
 नृप नायक दे वरदानमिदं । चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं ॥

दो०—विनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।

सोभासिंधु विलोकत लोचन नहीं अघात ॥१११॥

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । तनय विलोकि नयन जल छाए ॥
 अनुज सहित प्रभु वंदन कीन्हा । आसिरवाद पिताँ तव दीन्हा ॥
 तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यो अजय निसाचर राऊ ॥
 सुनि सुत वचन प्रीति अति वाढी । नयन सलिल रोमावलि ठाढी ॥
 रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना
 ताते उमा मोच्छ नहिं पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ॥
 सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहँ राम भगति निज देहीं ॥
 बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीन ।

सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर

छं०—जय राम सोभा धाम । दायक प्रनत विश्राम ॥

धृत त्रोन वर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ॥ १ ॥

जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ॥

यह दुष्ट मारेउ नाथ । भए देव सकल सनाथ ॥ २ ॥

जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ॥

जय रावनारि कृपाल । किए जातुधान विहाल ॥ ३ ॥

लंकेस अति बल गर्व । किए बस्य सुर गंधर्व ॥

मुनि सिद्ध नर खग नाग । हठि पंथ सब कें लाग ॥ ४ ॥

परद्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फल पापिष्ट ॥

अब सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन विसाल ॥ ५ ॥

मोहि रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥

अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ॥ ६ ॥

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अव्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥

मोहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ॥ ७ ॥

वैदेहि अनुज समेत । मम हृदयँ करहु निकेत ॥

मोहि जानिए निज दास । दे भक्ति रमानिवास ॥ ८ ॥

छं०—दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायक ।

सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायक ॥

सुर वृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलितबल ।

ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमल ॥

दो०—अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ।

काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल ॥११३॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे ।

मम हित लागि तजे इन्ह प्राना । सकल जिआउ सुरेस सुजाना ।

सुनु खगेस प्रभु कै यह वानी । अति अगाध जानहिं मुनि ग्यान ।

प्रभु सक त्रिभुअन मारिं जिआई । केवल सकहि दीन्ह बड़ाई ।

सुधा वरषि कपि भालु जिआए । हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए ।

सुधा वृष्टि भै दुहु दल ऊपर । जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ।

रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छूटे भव बंधन ।

सुर अंसिक सब कपि अस रीछा । जिए सकल रघुपति कीं ईछा ।

राम सरिस को दीन हितकारी । कीन्हे मुकुत निसाचर झारी ।

खल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिवर पाव न ।

दो०—सुमन वरसि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान ।

देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥११४(क)॥

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि वारि ।

पुलकित तन गदगद गिराँ विनय करत त्रिपुरारि ॥११४(ख)॥

छं०—मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृत वर चाप रुचिर कर सायक ।

मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय विपिन अनल सुर रंजन ।

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । अम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ।

काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मेन कानन ॥२॥

विषय मनोरथ पुंज कंज वन । प्रबल तुषार उदार पार मन ॥
 भव वारिधि मंदर परमं दर । वारय तारय संसृति दुस्तर ॥३॥
 स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन वंधु प्रनतारति मोचन ॥
 अनुज जानकी सहित निरंतर । वसहु राम नृप मम उर अंतर ॥४॥
 मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ॥५॥
 दो०—नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार ।

कृपासिंधु मैं आउव देखन चरित उदार ॥११५॥
 करि विनती जब संभु सिधाए । तव प्रभु निकट विभीषनु आए
 नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । विनय सुनहु प्रभु सारंगपानी ॥
 सकुल सदल प्रभु रावन मारयो । पावन जस त्रिभुवन विस्तारयो
 दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥
 अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मजनु करिअ सभर श्रम छीजे ॥
 देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा ॥
 सब विधि नाथ मोहि अपनाइअ । पुनि मोहि सहित अवधपुर जाइअ
 सुनत वचन मृदु दीनदयाला । सजल भए द्वौ नयन विसाला ॥

दो०—तोर कोस गृह मोर सब सत्य वचन सुनु भ्रात ।

भरत दसा सुमिरत मोहि निमिष कल्प सम जात ॥११६(क)॥

तापस वेष गात कृस जपत निरंतर मोहि ।

देखौं वेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि ॥११६(ख)॥

वीरें अवधि जाउँ जौं जिअत न पावउँ वीर ।

सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥११६(ग)

करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहिं ।

पुनि मम धाम पाइहहु जहाँ संत सब जाहिं ॥११६(घ)

मुनत विभीषन बचन राम के । हरषि गहे पद कृपाधाम के ॥

मानर भालु सकल हरषाने । गहि प्रभु पद गुन बिमल बखाने

हुरि विभीषन भवन सिधायो । मनि गन बसन विमान भरायो ॥

कै पुष्पक प्रभु आगें राखा । हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥

अदि विमान सुनु सखा विभीषन । गगन जाइ बरपहु पट भूपन ॥

धाम पर जाइ विभीषन तबही । बरषि दिए मनि अंबर सबही ॥

जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं

सैं रामु श्री अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ॥

श्लो०-मुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेति नेति कह वेद ।

कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद ॥११७(क)

उमा जोग जप दान तप नाना मख व्रत नेम ।

राम कृपा नहिं करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम ॥११७(ख)

भालु कपिन्ह पट भूपन पाए । पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ॥

माना जिनस देखि सब कीसा । पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥

चेतइ सगुन्हि पर कीन्ही दाया । बोले मृदुल बचन रघुराया ॥

तुम्हरेँ बल मैं रावनु मारयो । तिलक विभीषन कहँ पुनि सारयो

निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू
 सुनत वचन प्रेमाकुल वानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥
 प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । हमरें होत वचन सुनि मोहा ॥
 दीन जानि कपि किए सनाथा । तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥
 सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं । मसक कहूँ खगपति हित करहीं ॥
 देखि राम रुख वानर रीछा । प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दो०—प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।

हरष विषाद सहित चले विनय विविध विधि भाषि ॥११८(क)

कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।

सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥११८(ख)

कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि ।

सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि ॥११८(ग)

अतिसय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हे सकल विमान चढ़ाई ॥

मन महुँ विप्र चरन सिरु नायो । उत्तर दिसिहि विमान चलायो ॥

चलत विमान कोलाहल होई । जय रघुवीर कहइ सबु कोई ॥

सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥

राजतं रामु सहित भामिनी । मेरु संग जनु घन दामिनी ॥

रुचिर विमानु चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमन वृष्टि हरये सुर ॥

परम सुखद चलि त्रिविध बयारी । सागर सर सरि निर्मल वारी ॥

सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥

कह रघुवीर देखु रन सीता । लछिमन इहाँ हत्यो ईद्रजीता ॥
हनुमान अंगद के मारे । रन महि परे निसाचर भारे ॥
कुंभकरन रावन द्रौ भाई । इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥

दो०—इहाँ सेतु बाँध्यों अरु थापेउँ सिव सुख धाम ।

सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥११९(क)॥

जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह वास विश्राम ।

सकल देखाए जानकिहि कहे सबन्हि के नाम ॥११९(ख)॥

तुरत विमान तहाँ चलि आवा । दंडक बन जहँ परम सुहावा ॥
कुंभजादि मुनिनायक नाना । गए रामु सब कें अस्थाना ॥
सकल रिपिन्ह सन पाइ असीसा । चित्रकूट आए जगदीसा ॥
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला विमानु तहाँ ते चोखा ॥
बहुरि राम जानकिहि देखाई । जमुना कलि मल हरनि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्म कोटि अघ भागा ॥
देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरनि सोक हरि लोक निसेनी ॥
पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥
दो०—सीता सहित अवध कहूँ कीन्ह कृपाल प्रनाम ।

सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरपित राम ॥१२०(क)॥

पुनि प्रभु आइ त्रिवेनीं हरषित मज्जनु कीन्ह ।

कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहूँ दान विविध विधि दीन्ह ॥१२०(ख)॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥
 भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥
 तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तब प्रभु भरद्वाज पहिँ गयऊ ॥
 नाना त्रिधि मुनि पूजा कीन्ही । अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही
 मुनि पद बंदि जुगल कर जोरी । चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
 इहाँ निषाद सुना प्रभु आए । नाव नाव कहँ लोग बोलाए ॥
 सुरसरि नाधि जान तब आयो । उत्तरेउ तट प्रभु आयसु पायो ॥
 तब सीताँ पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥
 ' । ' असीस हरपि मन गंगा । सुंदरि तब अहिवात अभंगा ॥
 ' । ' गुहा धायउ प्रेमाकुल । आयउ निकट परम सुख संकुल
 प्रभुहि सहित विलोकि बैदेही । परेउ अवनि तन सुधि नहिँ तेही
 प्रीति परम विलोकि रघुराई । हरपि उठाइ लियो उर लाई ॥
 छं०—लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती ।
 बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर वीनती ॥
 अब कुसल पद पंकज विलोकि विरंचि संकर सेव्य जे ।
 सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥१॥
 सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लाइयो ।
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
 यह रावनारि चरित्र पावन राम पद रतिप्रद सदा ।
 कामादिहर विग्यानकर सुर सिद्ध मुनि गानहिँ मुदा ॥२॥

१०—समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान ।

बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान् ॥१२१(क)॥

यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु विचार ।

श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार ॥१२१(ख)॥

मासपारायण, सत्ताईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने

षष्ठः सोपानः समाप्तः ।

(लङ्काकाण्ड समाप्त)



प्रभुका ऐश्वर्य



अमित रूप प्रगटे तेहि काल ।

जयाजोग मिले सवहि कृपाल ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

—०३३०४२०—

सप्तम सोपान

(उत्तरकाण्ड)



श्लोक

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकरूढरामम् ॥ १ ॥
कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।

कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

दो०—रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।

जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग ॥

सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।

प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥

कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।

आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥

भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहिं बार ।

जानि सगुन मन हरप अति लागे करन विचार ॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा

कारन कवन नाथ नहिं आयउ । जानि कुटिल किधौ मोहि बिसरायउ

अहह धन्य लछिमन बड़भागी । राम पदारविंदु अनुरागी ॥

कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥

जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कलप सत कोरी ॥

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥

मेरे जियँ भरोस दड़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥

वातँ अवधि रहहिं जौं प्राणा । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दो०—राम विरह सागर महँ भरत मगन मन होत ।

विप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत ॥ १ (क) ॥

बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कृस गात ।

राम राम रघुपति जपत खवत नयन जलजात ॥१ (ख) ॥

देखत हनूमान अति हरषेउ । पुलक गात लोचन जल बरषेउ
मन महुँ बहुत भाँति सुख मानी । बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी ॥
जासु बिरहँ सोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुन गन पाँती ॥
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । आयउ कुसल देव मुनि त्राता ॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवत
सुनत बचन विसरे सब दूखा । तृषावंत जिमि पाइ पियूषा ॥
कोतुम्ह तात कहाँ ते आए । मोहि परम प्रिय बचन सुनाए ॥
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । नामु मोर सुनु कृपा निधाना ॥
दीन बंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटैउ उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नहिँ हृदयँ समाता । नयन खवत जल पुलकित गाता
कपि तव दरस सकल दुख वीते । मिले आजु मोहि राम पिरि ते ॥
बार बार बूझी कुसलाता । तो कहुँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥
एहि संदेस सरिस जग माहीं । करि बिचार देखेउ कछु नाहीं ॥
नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनावहु मोही ॥
तव हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुन गाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाई । सुमिरहिँ मोहि दास की नाई ॥
छं०-निज दास ज्यों रघुवंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन करयो ।
सुनि भरत बचन चिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो ॥

रघुवीरनिज मुख जासु गुन गन कहत भगजगनाथ जं
काहे न होइ विनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु से
दो०—राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य वचन मम तात ।

पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदयँ समात ॥२(क)

सो०—भरत चरन सिरु नाइ तुरित गयउ कपि राम पहिं ।

कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ॥२(ख)

हरषि भरत कोसलपुर आए । समाचार सब गुरहि सुनाए
पुनि मंदिर मँहँ बात जनार्ई । आवत नगर कुसल रघुराई
सुनत सकल जननीं उठि धाई । कहि प्रभु कुसल भरत समुझा
समाचार पुरबासिन्ह पाए । नर अरु नारि हरषि सब धाए
दधि दुर्वा रोचन फल फूला । नव तुलसीदल मंगल मूला
भरि भरि हेम थार भामिनी । गावत चलिं सिंधुरगामिनी
जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं । बाल वृद्ध कहँ संग न लावहिं
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई । तुम्ह देखे दयाल रघुराई
अवधपुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल सोभा कै खानी ।
वहइ सुहावन त्रिविध समीरा । भइ सरजू अति निर्मल नीरा ।

दो०—हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर वृंद समेत ।

चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत ॥३(क)।

बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन विमान ।

देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान ॥३(ख)।

राका ससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान ।

बढ़यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥ ३ (ग) ॥

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर । कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥

सुनु कपीस अंगद लंकेसा । पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना । वेद पुरान विदित जगु जाना ॥

अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ॥

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि ब्रह सरजू पावनि ॥

जा मजन ते विनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं वासा ॥

अति प्रिय मोहि इहाँ के वासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥

हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दो०-आवत देखि लोग सब कृपा सिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि विमान ॥ ४ (क) ॥

उत्तरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु ।

प्रेरित राम चलेउ सो हरषु विरहु अति ताहु ॥ ४ (ख) ॥

आए भरत संग सब लोग । कृस तन श्रीरघुवीर वियोगा ॥

ब्रामदेव ब्रसिष्ट मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥

धाइ धरे गुर चरन सरोरुह । अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ॥

भेंटि कुसल बूझी मुनिराया । हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया ॥

सकल द्विजन मिलि नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥

गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ॥

परे भूमि नहिं उठत उठाए । बर करि कृपासिंधु उर लाए ॥
 स्यामल गात रोम भए ठाढ़े । नवराजीव नयन जल बाढ़े ॥

छं०—राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी ।
 अति प्रेम हृदयँ लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी ॥
 प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही ।
 जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुपमा लही ॥१॥
 वृक्षत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई ।
 सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥
 अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।
 वृद्धत विरह वारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥२॥

दो०—पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ ।

लछिमन भरत मिले तव परम प्रेम दोउ भाइ ॥ ५ ॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । दुसह विरह संभव दुख मेटे ॥
 सीता चरन भरत सिख नावा । अनुज समेत परम सुख पावा ॥
 प्रभु विलोकि हरषे पुरवासी । जनित त्रियोग त्रिपति सब नारी ॥
 प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥
 अमित रूप प्रगटे तेहि काल । जथाजोग मिले सबहि कृपाल ॥
 कृपा दृष्टि खुबीर विलोकी । किए सकल नर नारि विसोकी ॥
 छन महिं सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहुँ न जाना ॥
 यदि विधि सगुनि सखी कपि गंगा । अगुँ नले मील गान धामा ॥

कौसल्यादि मातु सव धाई । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ।

छं०-जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृहँ चरन बन परबस गई ।

दिन अंत पुर लख श्रवत थन हुंकार करि धावत भई ॥

अति प्रेम प्रभु सव मातु भेटों बचन मृदु बहुविधि कहे ।

गइ विपम विपति वियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे

दो०-भेटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि ।

रामहि मिलत कैकई हृदयँ बहुत सकुचानि ॥६(क)

लछिमन सव मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ ।

कैकई कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥६(ख)

सासुन्ह सवनि मिली वैदेही । चरनन्ह लागि हरषु अति तेही

देहिं असीस वृद्धि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥

सव खुपति मुख कमल बिलोकहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहि

कनक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ।

नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं ।

कौसल्या पुनि पुनि खुबीरहि । चितवति कृपा सिंधु रन धीरहि ।

हृदयँ विचारति बारहिं बारा । कवन भाँति लंकापति मारा ॥

अति सुकुमार जुगल मेरे वारे । निशिचर सुमट महाबल भारे ॥

दो०-लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मातु ।

परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला ॥

हनुमदादि सब बानर वीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥
 भरत सनेह सील व्रत नेमा । सादर सब वरनहिं अति प्रेमा ॥
 देखि नगरवासिन्ह कै रीती । सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥
 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनि पद लागहु सकल सिखाए ॥
 गुर वसिष्ठ कुल पूज्य हमारे । इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे ॥
 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भए समर सागर कहँ बेरे ॥
 मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ॥
 सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । निमिष निमिष उपजत सुख नए ॥
 दो०—कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नायउ माथ ।

आसिष दीन्हें हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥ ८(क) ॥

सुमन वृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।

चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर वृंद ॥ ८(ख) ॥

कंचन कलस त्रिचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥
 बंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ॥
 वीथीं सकल सुगंध सिँचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥
 नाना भौंति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥
 जहँ तहँ नारि निछावारी करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥
 कंचन थार आरतीं नाना । जुवतीं सजें करहिं सुभ गाना ॥
 करहिं आरती आरतिहर कैं । रघुकुल कमल त्रिपिन दिनकर कैं ॥
 पुर सोभा संपति कल्याणा । निगम सेष सारदा दखाना ॥

राम कहा सेवकन्ह बुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
 सुनत वचन जहँ तहँ जन धाए । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए ॥
 पुनि करुनानिधि भरत हँकारे । निज कर राम जटा निरुआरे ॥
 अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । भगत बछल कृपाल खुराई ॥
 भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । सेप कोटि सत सकहिं न गाई ॥
 पुनि निज जटा राम विवराए । गुर अनुसासन मागि नहाए ॥
 करि मजन प्रभु भूपन साजे । अंग अनंग देखि सत लाजे ॥

दो०—सासुन्ह सादर जानकिहि मजन तुरत कराइ ।

दिव्य बसन वर भूपन अँग अँग सजे बनाइ ॥ ११(क) ॥

राम वाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि ।

देखि मातु सब हरपीं जन्म सुफल निज जानि ॥ ११(ख) ॥

सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद ।

चढ़ि विमान आए सब सुर देखन सुखकंद ॥ ११(ग) ॥

प्रभु त्रिलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंघासन मागा ॥

रवि सम तेज सो वरनि न जाई । बैठे राम द्विजन्ह सिख नाई ॥

जनकसुता समेत खुराई । पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई ॥

वेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा । पुनि सत्र विप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥

सुत त्रिलोकि हरपीं महतारी । बार बार आरती उतारी ॥

विप्रन्ह दान विविधि विधि दीन्हे । जाचक सकल अजाचक कीन्हे

सिंघासन पर त्रिभुवन साईं। देखि सुरन्ह दुंदुभीं वजाई ॥

छं०—नभ दुंदुभीं याजहिं विपुल गंधर्व किंनर गावहीं ।
 नाचहिं अपहरा वृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं ॥
 भंरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेत ते ।
 गहैं छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म सक्ति विराजते ॥ १ ॥
 श्री सहित दिनकर वंस भूपन काम बहु छवि सोहई ।
 नव अंबुधर वर गात अंबर पीत सुर मन मोहई ॥
 मुकुटांगदादि विचित्र भूषन अंग अंगान्हि प्रति सजे ।
 अंभोज नयन विसाल उरभुज धन्य नर निरखंति जे ॥ २ ॥

दो०—वह सोभा समाज सुख कहत न बनइ खगेस ।
 बरनहिं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस ॥ १२(क) ॥
 भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम ।
 बंदी वेष वेद तव आए जहैं श्रीराम ॥ १२(ख) ॥
 प्रभु सर्वग्य कीन्ह अति आदर कृपानिधान ।
 लखेउ न काहूँ मरम कछु लगे करन गुन गान ॥ १२(ग) ॥

छं०—जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।
 दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रवल खल भुज बल हने ॥
 अवतार नर संसार भार विभंजि दारुन दुख दहे ।
 जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नर

* रामचरितमानस *

तव विषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
 भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ॥
 जे नाथ करि कहना बिलोके त्रिविधि दुख ते निर्बहे ।
 भव खेद छेदन दच्छ हम कहूँ रच्छ राम नमामहे ॥२॥

जे ग्यान मान विमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।
 ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥
 बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
 जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ॥३॥

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।
 नख निर्गता मुनि वंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥
 ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।
 पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥४॥

अन्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
 घट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ॥
 फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।
 पल्लवत फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥५॥

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं ।
 ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ॥
 कहनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह वर मागहीं ।
 मन वचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ॥६॥

१०-सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्ह उदार ।

अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥१३(क)॥

बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर ।

बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर ॥१३(ख)॥

ॐ-जय राम रमारमनं समनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥

अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥

दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥

रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥

महिमंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निधंग वरं ॥

मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥

मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ॥

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । विषया बन पावँर भूलि परे ॥

बहु रोग वियोगन्हि लोग हए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥

भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं ॥

अवलंब भवंत कथा जिन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह के सम बैभव वा विपदा ॥

एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ॥

सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रनधीर भज ॥
 तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥
 गुन सील कृपा परमायतन । प्रनमामि निरंतर श्रीरमन ॥
 रघुनंद निकंदय द्वंद्वघन । महिपाल बिलोक्य दीन जन ॥

दो०-बार बार वर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा संतसंग ॥१४(क)।

वरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास ।

तव प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ॥१४(ख)।

सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिविध ताप भव भय दावनी ॥
 महाराज कर सुभ अभिषेका । सुनत लहहिं नर विरति त्रिवेका ॥
 जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख संपति नाना विधि पावहिं ॥
 सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । अंतकाल रघुपति पुर जाहीं ॥
 सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई । लहहिं भगति गति संपति नई ॥
 खगपति राम कथा मैं बरनी । स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी ॥
 विरति त्रिवेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी कहैं सुंदर तरनी ॥
 नित नव मंगल कौसलपुरी । हरषित रहहिं लोग सब कुरी ॥
 नित नई प्रीति राम पद पंकज । सब कैजिन्हहिं नमत सिव मुनि भज
 मंगन बहु प्रकार पहिराए । द्विजन्ह दान नाना विधि पाए ॥
 दो०-ब्रह्मानंद मगन कपि सब कै प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति ॥ १५ ॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नहीं । जिमि परद्रोह संत मन माहीं ॥
 तब रघुपति सब सखा बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिर नाए ॥
 परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु वचन उचारे
 तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । मुख पर केहि विधि करौ बड़ाई
 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवन सुख त्यागे
 अनुज राज संपति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
 सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । मृष्टा न कहउँ मोर यह बाना ॥
 सब केँ प्रिय सेवक यह नीती । मोरें अधिक दास पर प्रीती ॥

दो०—अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।

सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । को हम कहाँ बिसरि तन गए ॥
 एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरा
 परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा विविधि विधि ग्यान विसेष
 प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं
 तब प्रभु भूषन वसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥
 सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । वसन भरत निज हाथ बनाए ॥
 प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥
 अंगद बैठ रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो०—जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।

हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥ १७ (क) ॥

तब अंगद उठि नाहू सिरु सजल नयन कर जोरि ।

अति विनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥१७(ख)॥

सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥
मरती बेर नाथ मोहि वाली । गयउ तुम्हारेहि कोंछें घाली ॥
असरन सरन विरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगत हितकारी
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥
तुम्हहि विचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दीना ॥
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । पद पंकज विलोकि भव तरिहउँ
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही
दो०—अंगद बचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ।

प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥१८(क)॥

निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ ।

विदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ ॥१८(ख)॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भगत कृत चेता
अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा । फिरि फिरि चितव राम कीं ओ
बार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहिं रा
राम विलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मि
प्रभु रुख देखि विनय बहु भाषी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राख
अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आ

तव सुग्रीव चरन गहि नाना । भाँति विनय कीन्हे हनुमाना ॥
 दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥
 पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥
 अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दो० कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि ।

बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि ॥ १९(क) ॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥ १९(ख) ॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।

चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ॥ १९(ग) ॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा । दीन्हे भूपन वसन प्रसादा ॥

जाहु भवन मम सुमिरन करेहू । मन क्रम वचन धर्म अनुसरेहू ॥

तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥

वचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥

वरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा

रघुपति चरित देखि पुरवासी । पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी

राम राज बैठें त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥

यह न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥

दो०—वरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग ।

चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग ॥ २० ॥

* रामचरितमानस *

मा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंया संततमनिदिता ॥

०-जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदारविंद रति करति सुभावहिं खोइ ॥ २४ ॥

वहिं सानकूल सब भाई । राम चरन रति अति अधिकाई
 मधु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥
 हरप्रित रहहिं नगर के लोग । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
 अह्निसि विधिहि मनावत रहहीं । श्रीखुबीर चरन रति चहहीं ॥
 दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । लव कुसवेद पुरानन्ह गाए ॥
 दोउ बिजई विनई गुन मंदिर । हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर
 दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो०-ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मजन । बैठहिं सभा संग द्विज सजन ॥
 वेद पुरान वसिष्ठ बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं
 अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननीं सुख भरहीं
 भरत सत्रुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
 बूझहिं बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ।
 सुनत विमल गुन अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि विनय कहावहिं
 सब केँ गृह गृह होहिं पुराना । राम चरित पावन विधि नाना

नर अरु नारि राम गुन गानहिं । करहिं दिवस निसि जात न जानहिं
दो०—अवधपुरीबासिन्ह कर सुख संपदा समाज ।

सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम विराज ॥ २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन लागि कोसलाधीसा ॥
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं । देखि नगर विरागु विसरावहिं ॥
जातरूप मनि रचित अटारीं । नाना रंग रुचिर गच ढारीं ॥
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर । रचे कँगूरा रंग रंग वर ॥
नव ग्रह निकर अनीक बनाई । जनु घेरी अमरावति आई ॥
महि बहु रंग रचित गच काँचा । जो विलोकि मुनिवर मन नाचा ॥
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । कलस मनहुँ रवि ससि दुति निंदत
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं । गृह गृह प्रति मनि दीप विराजहिं
छं०—मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरीं विद्रुम रची ।

मनि खंभ भीति विरंचि विरची कनक मनि मरकत खची ॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ॥

दो०—चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ।

रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चोराइ ॥ २७ ॥

सुमन बाटिका सबहिं लगाई । विविध भाँति करि जतन बनाई ॥
लता ललित बहु जाति सुहाई । फूलहिं सदा वसंत कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिविधि सदा बह सुंदर ॥

उमा रमा ब्रह्मादि वंदिता । जगदंबा संततमनिदिता ॥

दो०-जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदारविंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ २४ ॥

सेवहि सानकूल सब भाई । राम चरन रति अति अधिकारि
प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कह्यु कहहीं
राम करहि भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहि नीती ॥
हरपित रहहि नगर के लोगा । करहि सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
अहनिसि विधिहि मनावत रहहीं । श्रीरघुवीर चरन रति चहहीं ॥
दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए । लव कुसवेद पुरानन्ह गाए ॥
दोउ विजई विनई गुन मंदिर । हरि प्रतिविंन मनहुँ अति सुंदर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो०-ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मजन । बैठहि सभा संग द्विज सजन ॥
वेद पुरान वसिष्ठ बखानहि । सुनहि राम जद्यपि सब जानहि
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननीं सुख भरहीं
भरत सत्रुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
बूझहि बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
सुनत विमल गुन अति सुख पावहि । बहुरि बहुरि करि विनय कहावहि ॥
सब केँ गृह गृह होहि पुराना । राम चरित पावन विधि नाना ॥

नाना खग बालकन्हि जिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥
 मोर हंस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत ॥
 जहँ तहँ देखहि निज परिछाहीं। बहु विधि कूजहि नृत्य कराहीं ॥
 सुक सारिका पढ़ावहि बालक। कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
 राज दुआर सकल विधि चारू। वीथी चौहट रुचिर बजारू ॥

छं०—बाजार रुचिर न बनइ बरनत वस्तु बिनु गथ पाइए।
 जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए ॥
 बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।
 सब सुखी सब सचरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ॥

दो०—उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।

बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २८ ॥
 दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा
 पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहि अस्नाना ॥
 राजघाट सब विधि सुंदर बर। मजहिं तहाँ बरन चारिउ नर ॥
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर। नहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुंदर
 कहूँ कहूँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी ॥
 तीर तीर तुलसिका सुहाई। वृंद वृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥
 पुर सोभा कछु बरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई।
 देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपवन बापिका तड़ागा ॥

जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी । प्रथम अविद्या निसा नसानी ॥
 अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
 विविध कर्म गुन काल सुभाऊ । एचकोर सुख लहहि न काऊ ॥
 मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनरन कवनिहुँ ओरा ॥
 धरम तड़ाग ग्यान विग्याना । एपंकज विकसे विधिनाना ॥
 सुख संतोष विराग विवेका । विगत सोक एकोक अनेका ॥

दो०—यह प्रताप रवि जाकेँ उर जब करइ प्रकास ।

पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास ॥ ३१ ॥

भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
 सुंदर उपनग देखन गए । सब तरु कुसुमित पलव नए ॥
 जानि समय सनकादिक आए । तेज पुंज गुन सील सुहाए ॥
 ब्रह्मानंद सदा लयलीना । देखत बालक बहुकालीना ॥
 रूप धरें जनु चारिउ वेदा । समदरसी मुनि विगत विभेदा ॥
 आसा बसन व्यसन यह तिन्हहीं । रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं ॥
 तहाँ रहे सनकादि भवानी । जहँ घटसंभव मुनिवर ग्यानी ॥
 राम कथा मुनिवर बहु बरनी । ग्यान जोनि पावक जिमि अरनी ॥

दो०—देखि राम मुनि आवत हरपि दंडवत कीन्ह ।

स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ३२ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई । सहित पवनसुत सुख अधिकाई ॥
 मुनि रघुपति छवि अतुल बिलोकी । भए मगन मन सके न रोकी ॥

स्यामल गात सरोरुह लोचन । सुंदरता मंदिर भव मोचन ॥
 एकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु कर जोरें सीस नवावहिं ॥
 तिन्ह कै दसा देखि रघुवीरा । खवत नयन जल पुलक सरीरा ॥
 कर गहि प्रभु मुनिवर वैठारे । परम मनोहर वचन उचारे ॥
 आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा । तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा ॥
 बड़ें भाग पाइव सतसंगा । विनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥
 दो०—संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ।

कहहिं संत कवि कोविद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥ ३३ ॥

सुनि प्रभु वचन हरषि मुनि चारी । पुलकित तन अस्तुति अनुसारी ॥
 जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ॥
 जय निर्गुन जय जय गुन सागर । सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥
 जय हंदिरा रमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
 ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान वेद वद ॥
 तग्य कृतग्य अग्यता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
 सर्व सर्वगत सर्व उरालय । वससि सदा हम कहूँ परिपालय ॥
 हृंद विपति भव फंद विभंजय । हृदि वसि राम काम मद गंजय ॥

दो०—परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।

प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिविधि ताप भव दाप नसावनि ॥
 प्रनत काम सुरधेनु कल्पतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह वर ॥

भव वारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत सुलभ सकल सुख दायक ।
 मन संभव दारुन दुख दारय । दीनबंधु समता विस्तारय ।
 आस त्रास इरिषादि निवारक । विनय विवेक विरति विस्तारक ।
 भूप मौलि मनि मंडन धरनी । देहि भगति संसृति सरि तरनी ।
 मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल वंदित अज संकर ॥
 रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सुभाउ गुन भच्छक ॥
 तारन तरन हरन सत्र दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूपन ॥
 दो०-वार वार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।

ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक विधि लोक सिधाए । भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए ॥
 पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं । चितवहिं सत्र मारुतसुत पाहीं ॥
 सुनी चहहिं प्रभु मुख कै बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥
 अंतरजामी प्रभु सभ जाना । बूझत कहहु काह हनुमाना ॥
 जोरि पानि कह तब हनुमंता । सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥
 नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । प्रसन्न करत मन सकुचत अहहीं ॥
 तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ॥
 सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना । सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥
 दो०-नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहुँ सोक न मोह ।

केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंद संदोह ॥ ३६ ॥

करउँ कृपानिधि एक ठिठाई । मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई ॥

तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कपिलहि घालइ हरदाई ॥
 खलन्ह हृदयँ अति ताप विसेषी । जरहिं सदा पर संपति देखी ॥
 जहँ कहँ निंदा सुनहिं पराई । हरपहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥
 काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
 वयर अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ॥
 झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चवेना ॥
 बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा । खाइ महा अहि हृदय कठोरा ॥

दो०—पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद ।

ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ॥ ३९ ॥
 लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । सिस्नोदर पर जमपुर वास न ॥
 काहू की जाँ सुनहिं बढ़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
 जब काहू कै देखहिं विपती । सुखी भए मानहुँ जग नृपती ॥
 स्वारथ रत परिवार विरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥
 मातु पिता गुर विप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥
 करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । वेद विदूषक परधन स्वामी ॥
 विप्र द्रोह पर द्रोह विसेषा । दंभ कपट जियँ धरें सुवेपा ॥
 दो०—ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेताँ नाहिं ।

द्वापर कछुक वृंद बहु होइहहिं कलियुग माहिं ॥ ४० ॥
 पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥

बैठे गुर मुनि अरु द्विज सजन । बोले वचन भगत भव भंजन ॥
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउँ न कछु ममता उर आनी
 नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन मानै जोई ॥
 जौं अनीति कछु भाप्यो भाई । तौ मोहि वरजहु भय विसराई ॥
 बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
 साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥

दो०—सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
 नर तनु पाइ विषयँ मन देहीं । पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं ॥
 ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
 आकर चारि लच्छु चौरासी । जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥
 फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन बेरा ॥
 कबहुँक करि करुना नरदेही । देत ईस विनु हेतु सनेही ॥
 नर तनु भव वारिधि कहूँ बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
 करनधार सदगुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥

दो०—जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ ।

सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ॥ ४४ ॥

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । सुनि मम वचन हृदयँ दृढ़ गहहू

मामवलोकय पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच विमोचन ।
 नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।
 जातुधान वरूथ बल भंजन । मुनि सजन रंजन अध गंजन ।
 भूसुर ससि नव वृंद बलाहक । असरन सरन दीन जन गाहक ।
 भुज बल विपुल भार महि खंडित । खर दूषन विराध बध पंडित ॥
 रावनारि सुखरूप भूपवर । जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर
 सुजस पुरान विदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥
 कारुणीक व्यलीक मद खंडन । सत्र विधि कुसल कोसला मंडन ॥
 कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन

दो०—प्रेम सहित मुनि नारद वरनि राम गुन ग्राम ।

सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ विधि धाम ॥ ५१ ॥

गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । मैं सत्र कही मोरि मति जथा ॥
 राम चरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न बरनै पारा ॥
 राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥
 जल सीकर महि रज गनि जाहीं । रघुपति चरित न बरनि सिराहीं ॥
 विमल कथा हरि पद दायनी । भगति होइ सुनि अनपायनी ॥
 उमा कहिउँ सत्र कथा सुहाई । जो भुसुंड़ि खगपतिहि सुनाई ॥
 कछुक राम गुन कहेउँ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥
 सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । बोली अति विनीत मृदु बानी ॥
 धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ राम युन भव भय हारी ॥

दो०-तुम्हरी कृपाँ कृपायतन अत्र कृतकृत्य न सोह ।

जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद संदोह ॥५२॥

नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुवीर ।

श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात सतिश्रीर ॥५३॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस विसेष जाना तिन्ह नाहीं

जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनिहिं निरंतर तेऊ

भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहैं दृढ़ नाथ

विषइन्ह कहैं पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभि

श्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहिन रघुपति चरित सोहाई

ते जड़ जीव निजात्मक घाती । जिन्हहि न रघुपति कथा सोह

हरिचरित्रमानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमिति सुख पा

तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंड़ि गरुड़ प्रति गा

दो०-विरति ग्यान विग्यान दृढ़ राम चरन अतिनेह ।

बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥५४॥

नर सहस्र महुँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म गतवा

धर्मसील कोटिक महुँ कोई । विषय विमुख विराग रत हो

कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत् कोउ ल

ग्यानवंत कोटिक महुँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत् जग

तिन्ह सहस्र महुँ सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्मलीन वि

सब ते सो दुर्लभ सुरराया । राम भगति रत गत मद माया ॥
 सो हरि भगति काग किमि पाई । विश्वनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दो०—राम परायन ग्यान रत गुनागार मति धीर ।

नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सरीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥
 तुम्ह केहि भाँति सुना मद नारी । कहहु मोहि अति कौतुक भारी
 गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । हरि सेवक अति निकट निवासी
 तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ॥
 कहहु कवन विधि भा संवादा । दोउ हरि भगत काग उरगादा ॥
 गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । बोले सिव सादर सुख पाई ॥
 धन्य सती पावन मति तोरी । रघुपति चरन प्रीति नहिं थोरी ॥
 सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा
 उपजइ राम चरन विश्वासा । भवनिधि तर नर विनहिं प्रयासा
 दो०—ऐसिअ प्रसन्न विहंगपति कीन्हि काग सन जाइ ।

सो सब सादर कहिहुँ सुनहु उमा मन लाइ ॥ ५५ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
 प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । सती नाम तव रहा तुम्हारा ॥
 दच्छ जग्य तव भा अपमाना । तुम्ह अति क्रोध तजे तव प्राना ॥
 मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥
 तव अति सोच भयउ मन मोरें । दुखी भयउँ वियोग प्रिय तोरें ॥

सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा । कौतुक देखत फिरउँ बेरागा ॥
गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । नील सैल एक सुंदर भूरी ॥
तासु कनकमय सिखर सुहाए । चारि चारु मोरे मन भाए ॥
तिन्ह पर एक एक ब्रिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥
सैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनि सोपान देखि मन मोहा ॥

दो०—सीतल अमल मधुर जल जलज विपुल बहुरंग ।

कूजत कलरव हंस गन गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहिं गिरि रुचिर बसइ खग सोई । तासु नास कल्पांत न होई ॥
माया कृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अविवेका ॥
रहे व्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं ॥
तहँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥
आँब छाँह कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥
वर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनहिं अनेक त्रिहंगा ॥
राम चरित विचित्र विधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
सुनहिं सकल मति बिमल मराला । बसहिं निरंतर जे तेहिं काला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद विशेषा ॥

दो०—तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥

अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । गयउ काग पहिं खग कुल केतू
जब रघुनाथ कीन्हि रन क्रीड़ा । समुझत चरित होति मोहि ब्रीड़ा
इंद्रजीत कर आपु बंधायो । तब नारद मुनि गरुड़ पठायो
बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदयँ प्रचंड विपादा ॥
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । करत विचार उरग आराती ॥
व्यापक ब्रह्म विरज बागीसा । माया मोह पार परमीसा ॥
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं । देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो०—भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जा कर नाम ।

खर्व निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ ५९ ॥
नाना भाँति मनहि समुझावा । प्रगट न ग्यान हृदयँ भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोहवस तुम्हरिहिं नाई ॥
व्याकुल गयउ देवरिपि पाहीं । कहेसि जो संसय निज मन माहीं
सुनि नारदहि लागि अति दाया । सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥
जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई । बरिआई विमोह मन करई ॥
जेहिं बहु बार नचावा मोही । सोइ व्यापी विहंगपति तोही ॥
महामोह उपजा उर तोरें । मिटिहि न वेगि कहें खग मोरें ॥
चतुरानन पहिं जाहु खगेश । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

दो०—अस कहि चले देवरिपि करत राम गुन गान ।

हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ ५९ ॥
तब खगपति विरंचि पहिं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥

नि विरंचि रामहि सिरु नावा । समुझि प्रताप प्रेम अति छावा ॥
 न महुँ करइ विचार विधाता । माया बस कवि कोविद ग्याता ॥
 रि माया कर अमिति प्रभावा । विपुल वार जेहिं मोहि नचावा ॥
 भग जगमय जग मम उपराजा । नहिं आचरज मोह खगराजा ॥
 त्र बोले विधि गिरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुताई ॥
 नैतेय संकर पहिं जाहू । तात अनत पूछहु जनि काहू ॥
 हँ होइहि तव संसय हानी । चलेउ विहंग सुनत विधि वानी ॥

दो०-परमातुर विहंगपति आयउ तब मो पास ।

जात रहेउँ कुवेर गृह रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

हेहिं मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
 पुनि ता करि विनती मृदु वानी । प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥
 मिलेहु गरुड़ मारग महुँ मोही । कवन भाँति समुझावौं तोही ॥
 तवहिं होइ सव संसय भंगा । जत्र बहु काल करिअ सतसंगा ॥
 सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
 जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
 निज हरि कथा होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥
 जाइहि सुनत सकल संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥

दो०-विनु सतसंग न हरि कथा तेहि विनु मोह न भाग ।

मोह गएँ विनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥६१॥

मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा । किएँ जोग तप ग्यान विरागा ॥

उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ॥
 राम भगति पथ परम प्रवीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ॥
 राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनिहिं विविध विहंगवर ॥
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥
 मैं जय तेहि सत्र कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई ॥
 ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरमु मैं पावा ॥
 होइहि कीन्ह कवहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
 कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भाया ॥
 ३ ॥ ३ ॥ माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥

दो०—ग्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति करं जान ।

ताहि मोह माया नर पावँर करहिं गुमान ॥६२(क)॥

मासपारायण. अट्टाईसवाँ विश्राम

सिव त्रिरंचि कहूँ मोहइ को है बपुरा आन ।

अस जियँ जानि भजहिं मुनि माया पति भगवान् ॥६२(ख)॥

गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडा । मति अकुंठ हरि भगति अखंडा
 देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सत्र गयऊ ॥
 करि तड़ाग मज्जन जलपाना । बट तर गयउ हृदयँ हरपाना ॥
 वृद्ध वृद्ध विहंग तहँ आए । सुनै राम के चरित सुहाए ॥
 कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥
 आवत देखि सकल खगराजा । हरषेउ वायस सहित समाजा ॥

अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर वचन तव बोलेउ कागा ॥

दो०—नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज ।

आयसु देहु सो करौं अब प्रभु आयहु केहि काज ॥६२(क)॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह सृदु वचन खगेस ।

जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥६३(ख)॥

सुनहु तात जेहि कारन आयऊँ । सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥

देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥

सादर तात सुनावहु मोही । बार बार बिनवउँ प्रभु तोही ॥

सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता । सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥

भयउ तासु मन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । रामचरित सर कहेसि बखानी ॥

पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिसुचरित कहेसि मन लाई ॥

दो०—बालचरित कहि बिबिधि बिधि मन महाँ परम उछाह ।

रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुवीर बिबाह ॥६४॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप वचन राजरस भंगा ॥

पुरवासिन्ह कर बिरह विषादा । कहेसि राम लछिमन संवादा ॥

बिपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥

बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥
 सचिवागवन नगर नृप मरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥
 करि नृप क्रिया संग पुरवासी । भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी ॥
 पुनि रघुपति बहु विधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ॥
 भरत रहनि सुरपति सुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥
 दो०—कहि विराध बध जेहि विधि देह तजी सरभंग ।

वरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥ ६५ ॥
 कहि दंडक बन पावनताई । गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥
 पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥
 पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥
 खर दूषन बध बहुरि बखाना । जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥
 दसकंधर मारीच बतकही । जेहि विधि भई सो सब तेहिं कही ॥
 पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुवीर विरह कछु बरना ॥
 पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्हि । बधि कबंध सबरिहि गति दीन्हि ॥
 बहुरि विरह बरनत रघुवीरा । जेहि विधि गए सरोवर तीरा ॥

दो०—प्रभु नारद संवाद कहि मास्ति मिलन प्रसंग ।

पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग ॥ ६६(क) ॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रवरपन बास ।

बरनन वर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥ ६६(ख) ॥

जेहि विधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिसि धाए ॥

बिबर प्रवेस कीन्ह जेहि भाँती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥
 सुनि सब कथा समीरकुमारा । नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥
 लंकाँ कपि प्रवेस जिमि कीन्हा । पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा
 बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥
 आए कपि सब जहँ रघुराई । व्रैदेही की कुसल सुनाई ॥
 सेन समेति जथा रघुव्रीरा । उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ॥
 मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो०—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ।

गयउ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार ॥६७(क)॥

निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिधि प्रकार ।

कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार ॥६७(ख)॥

निसिचर निकर मरन बिधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥
 रावन बध मंदोदरि सोका । राज बिभीषन देव असोका ॥
 सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी
 पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥
 जेहि बिधि राम नगर निज आए । त्रायस बिसद चरित सब गाए ॥
 कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर बरनत नृपनीति अनेका ॥
 कथा समस्त भुसुंड बखानी । जोमैं तुम्ह सन कही भवानी ॥
 सुनि सब राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो०—गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।

भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ॥६८(क)॥

मोहि भयउ अति मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि ।

चिदानंद संदोह राम विकल कारन कवन ॥६८(ख)॥

देखि चरित अति नर अनुसारी । भयउ हृदयँ मम संसय भारी ॥

सोइ भ्रम अव हित करि मै माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

जो अति आतप व्याकुल होई । तर छाया सुख जानइ सोई ॥

जौ नहिँ होत मोह अति मोही । मिलतेउँ तात कवन विधि तोही

सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई । अति विचित्र बहु विधि तुम्ह गाई

निगमागम पुरान मत एहा । कहहिँ सिद्ध मुनि नहिँ संदेहा ॥

संतविसुद्ध मिलहिँ परि तेही । चितवहिँ राम कृपा करि जेही ॥

राम कृपाँ तव दरसन भयऊ । तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥

दो०—सुनि विहंगपति बानी सहित विनय अनुराग ।

पुलक गात लोचन सजल मन हरपेउ अति काग ॥६९(क)॥

श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरिदास ।

पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिँ प्रकास ॥६९(ख)॥

बोलेउ काकभसुंड बहोरी । नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥

सब विधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥

तुम्हहिँ न संसय मोह न माया । मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥

पठइ मोह मिस खगपति तोही । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥

तुम्ह निज मोह कही खग साई । सो नहिं कछु आचरज गोसाई ॥
नारद भव विरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमवादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा । केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥

दो०—ग्यानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।

केहि कै लोभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥७०(क)॥

श्री मद बक्र न कीन्हि केहि प्रभुता बधिर न काहि ।

मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥७०(ख)॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही । कोउ न मान मद तजेउ निचेही ॥
जोवन ज्वर केहि नहिं बलकावा । ममता केहि कर जस न नसावा ॥
मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि को नहिं खाया । को जग जाहि न व्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग धुन को अस धीरा ॥
सुत ब्रित लोक ईषना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥
यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अमिति को बरनै पारा ॥
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं । अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो०—व्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट दंभ कपट पापंड ॥७१(क)॥

सो दासी रघुबीर कै समुझें मिथ्या सोपि ।

छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहउँ पद रोपि ॥७१(ख)॥

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहुँ न पावा ॥
 सोइ प्रभु भ्रू विलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥
 सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज विग्यान रूप बल धामा ॥
 व्यापक व्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥
 अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ॥
 निर्मम निराकार निरमोहा । नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
 प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी । ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी ॥
 इहाँ मोह कर कारन नाहीं । रवि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

०-भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।

किणु चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥७२(क)॥

जया अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ ।

सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ ॥७२(ख)॥

प्रसि रघुपति लीला उरगारी । दनुज विमोहनि जन सुखकारी ॥
 जे मति मलिन विषयवस कामी । प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
 नयन दोष जा कहँ जव होई । पीत वरन ससि कहँ कह सोई ॥
 जव जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥
 नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोह वस आपुहि लेखा ॥
 बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ॥
 हरि विपइक अस मोह विहंगा । सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा ॥
 मायावस मतिमंद अभागी । हृदयँ जमनिका बहुविधि लागी ॥

ते सठ हठ वस संसय करहीं । निज अग्यान राम पर धरहीं ।

दो०—काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।

ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप ॥७३(क

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ ।

सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥७३(ख

सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । कहउँ जथामति कथा सुहाई
जेहि विधि मोह भयउ प्रभु मोही । सोउ सब कथा सुनावउँ तोही
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता । हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता
ताते नहिं कछु तुम्हहि दुरावउँ । परम रहस्य मनोहर गावउँ
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ
संसृत मूल सूलप्रद नाना । सकल सोक दायक अभिमाना
ताते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाई । मातु चिराव कठिन की नाई

दो०—जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर ।

व्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर ॥७४(क

तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि ।

तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥७४(ख

राम कृपा आपनि जड़ताई । कहउँ खगेस सुनहु मन लाई
जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ । बालचरित विलोकि हरषाऊँ

जन्म महोत्सव देखउँ जाई । वरप पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥
 हृष्टदेव मम बालक रामा । सोभा वपुष कोटि सत कामा ॥
 निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥
 लघु बायस वपु धरि हरि संगी । देखउँ बालचरित बहु रंगी ॥
 दो०—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाई ।

जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥७५(क)

एक बार अतिसय सब चरित किए रघुबीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥७५(ख)

६२ भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥
 नृपमंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती
 वरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
 बालविनोद करत रघुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई
 मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छवि बहु कामा
 नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना
 ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर खकारी ॥
 चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई
 दो०—रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।

उर आयत भ्राजत त्रिविधि बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु त्रिसाल विभूषन सुंदर ॥
 कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छवि सीवा

कलवल वचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन विसद वर वारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम हासा ॥
नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
विकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छवि छाए
पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिविंब निहारी
मोहि सन करहिं विविधि विधि क्रीड़ा । वरनत मोहि होति अति ब्रीड़ा
किलकर्त मोहि धरन जय धावहिं । चलउँ भागि तव पूष देखावहिं

दो०—आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।

जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥७७(क)॥

प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।

कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७(ख)॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥
ग्यान अखंड एक सीतावर । माया वस्य जीव सचराचर ॥
जौं सब कैं रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
माया वस्य जीव अभिमानी । ईस वस्य माया गुनखानी ॥
परवस जीव स्ववस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

जन्म महोत्सव देखउँ जाई । बरप पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥
 इष्टदेव मम बालक रामा । सोभा ब्रपुष कोटि सत कामा ॥
 निज प्रभु वदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥
 लघु बायस ब्रपु धरि हरि संगी । देखउँ बालचरित बहु रंगी ॥
 दो०—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।

जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥७५(क)

एक बार अतिसय सब चरित किए रघुवीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥७५(ख)

कहइ भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥
 पमंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती
 नरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
 बालबिनोद करत खुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई
 मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छवि बहु कामा
 नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना
 ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥
 चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई
 दो०—रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।

उर आयत भ्राजत विविधि बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु विसाल विभूषन सुंदर ॥
 कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छवि सीवा

कलत्रल बचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन विसद वर वारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम हासा ॥
नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
विकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छवि छाए
पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही
रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिविंब निहारी
मोहि सन करहिं विविधि विधि क्रीड़ा ॥ वरनत मोहि होति अति व्रीड़ा
किलकर्त मोहि धरन जब धावहिं । चलउँ भागि तब पूष देखावहिं

दो०—आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।

जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥७७(क)॥

प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।

कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७(ख)॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥
ग्यान अखंड एक सीतावर । माया वस्य जीव सचराचर ॥
जौं सब कें रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु क
माया वस्य जीव अभिमानी । ईस वस्य माया गुनखा
परवस जीव स्वयस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंत
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । बिनु हरि जाइ न कोटि ३५।

दो०—रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान ।

ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान ॥७८(क)॥

राकापति षोढ़स उअहिं तारागन समुदाइ ।

सकल गिरिन्ह दव लाइअ बिनु रबि राति न जाइ ॥७८(ख)॥

ऐसेहिं हरि बिनु भजन खगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥

हरि सेवकहि न व्याप अविद्या । प्रभु प्रेरित व्यापइ तेहि बिद्या ॥

ताते नास न होइ दास कर । भेद भगति बाढ़इ बिहंगवर ॥

भ्रम तें चकित राम मोहि देखा । बिहँसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥

तेहि कौतुक कर मरमु न काहूँ । जाना अनुज न मातु-पिताहूँ ॥

जानु पानि धाए मोहि धरना । स्यामल गात अरुन कर चरना ॥

तब मैं भागि चलेउँ उरगारी । राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥

जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । तहँ भुज हरि देखउँ निज पासा ॥

दो०—ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उड़ात ।

जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥७९(क)॥

सप्तावरन भेद करि जहाँ लगें गति मोरि ।

गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि व्याकुल भयउँ बहोरि ॥७९(ख)॥

मूदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ । पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ

मोहि विलोकि राम मुसुकाहीं । बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं ॥

उदर माझ सुनु अंडज राया । देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥

अति विचित्र तहँ लोक अनेका । रचना अधिक एक ते एका ॥

कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । अगनित उडगन रवि रजनीसा
अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि विस्तारा ॥
सागर सरि सर विपिन अपारा । नाना भाँति सृष्टि विस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दो०—जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ ।

सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवनि विधि जाइ ॥८०(क)॥

एक एक ब्रह्मांड महुँ रहउँ बरष सत एक ।

एहि विधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक ॥८०(ख)॥

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता । भिन्न विष्णु सिव मनु दिसिनाता
नर गंधर्व भूत वेताला । किंनर निसिचर पसु खग व्याला
देव दनुज गन नाना जाती । सकल जीव तहँ आनहि भाँती ॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपंच तहँ आनइ आना ॥
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा । देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दसरथ कौसल्या सुनु ताता । विविध रूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखेउँ बालविनोद अपारा ॥

दो०—भिन्न भिन्न मैं दीख सबु अति विचित्र हरिजान ।

अमनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥८१(क)॥

सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुवीर ।

भुवन भुवन देखत फिरउँ प्रेरित मोह समीर ॥८१(ख)॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहुँ कल्प सत एका ॥
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ । तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ । निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥
 देखउँ जन्म महोत्सव जाई । जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
 राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनइ न जाइ बखाना ॥
 तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना । माया पति कृपाल भगवाना ॥
 करउँ विचार बहोरि बहोरी । मोह कलिल व्यापित मति मोरी ॥
 उभय घरी महँ मैं सत्र देखा । भयउँ भ्रमित मन मोह विसेपा ॥
 दो०—देखि कृपाल बिकल मोहि विहँसे तब रघुबीर ।

विहँसतहीं मुख बाहेर आयउँ सुनु मतिधीर ॥८२(क)॥

सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम ।

कोटि भाँति समुझावउँ मनु न लहइ विश्राम ॥८२(ख)॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा विसराई ॥
 धरनि परेउँ मुख आव न वाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥
 प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
 कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥
 कीन्ह राम मोहि विगत विमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥
 प्रभुता प्रथम विचारि विचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ॥
 भगत बछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति विसेपी ॥
 सजल नयन पुलकित कर जोरी । कीन्हिउँ बहु विधि विनय बहोरी

दो०—सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास ।

बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥८३(क)॥

काकभसुंढि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।

अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥८३(ख)॥

यान बिबेक विरति विग्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥

आजु देउँ सब संसय नार्हीं । मागु जो तोहि भाव मन मारहीं ॥

मुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेउँ

प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बहु बिंजन जैसे ॥

भजन हीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥

जौ प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥

मन भावत बर मागउँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥

दो०—अबिरल भगति बिसुद्ध तव श्रुति पुरान जो गाव ।

जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥८४(क)॥

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम ।

सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥८४(ख)॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परम सुखदायक ॥

सुनु बायस तैं सहज सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥

सब सुख खानि भगति तैं मागी । नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी

जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । जे जप जोग अनल तन लहहीं ॥

रीझेऊँ देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि अति भाई ॥
 सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरें । सब सुभ गुन बसिहहिँ उर तोरें ॥
 भगति ग्यान विग्यान बिरागा । जोग चरित्र रहस्य विभार्गा ॥
 जानव तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहिँ साधन खेदा ॥

दो०—माया संभव भ्रम सब अब न व्यापिहहिँ तोहि ।

जानेसु ब्रह्म अनादि भज अगुन गुनाकर मोहि ॥८५(क)॥

मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग ।

कायँ वचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग ॥८५(ख)॥

अब सुनु परम विमल मम बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
 निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही ॥
 मूम माया संभव संसारा । जीव चराचर त्रिविधि प्रकारा ॥
 सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥
 तिन्ह महुँ द्विज द्विज महुँ श्रुतिधारी । तिन्ह महुँ निगम धरम अनुसारी ॥
 तिन्ह महुँ प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी । ग्यानिहु ते अति प्रिय विग्यानी ॥
 तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
 पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥
 भगति हीन बिरंचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
 भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥

दो०—सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।

श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥८६॥

एक पिता के त्रिपुल कुमारा । होहिं पृथक् गुन सील अचारा ।
 कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
 कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहि प्रीति सम होई ॥
 कोउ पितु भगत वचन मन कर्मा । सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ॥
 सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
 एहि त्रिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
 अखिल विस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बरावरि दाया ॥
 तिन्ह महुँ जो परिहरि मद माया । भजै मोहि मन वच अरु काया ॥
 दो०—पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।

सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परग प्रिय सोइ ॥८७(क)॥

सो०—सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।

अस विचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥८७(ख)॥

कबहुँ काल न व्यापिहि तोही । सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥
 प्रभु वचनामृत सुनि न अधाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ ॥
 सो सुख जानइ मन अरु काना । नहिं रसना पहिं जाइ बखाना ॥
 प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना । कहि किमि सकहिं तिन्हहि नहिं बयन ॥
 बहु त्रिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । लगे करन सिसु कौतुक तेई ॥
 संजल नयन कछु मुख करि रूखा । चितइ मातु लागी अति भूखा ॥
 देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु वचन लिए उर लाई ॥
 गोद राखि कराव पय पाना । रघुपति चरित ललित कर गाना ॥

सो०—जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद ।

अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ संवत मगन ॥८८(क)॥

सोई सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ ।

ते नहिं गनहिं खगेस ब्रह्मसुखहि सजन सुमति ॥८८(ख)॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । देखेउँ बालबिनोद रसाला ॥

राम प्रसाद भगति बर पायउँ । प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ

तब ते मोहि न व्यापी माया । जब ते रघुनायक अपनाया ॥

यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा

निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा

राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥

जानैं बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥

बिना नहिं भगति दिढ़ाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई

सो०—बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।

गावहिं वेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥८९(क)॥

कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।

चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥८९(ख)॥

बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अच्छत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥

राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा । थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा

बिनु भिग्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ

भद्रा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महिगंध कि पावइ कोई ॥

नु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥
 ल कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई ॥
 ज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
 वनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नास
 ॥१०॥—बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।

राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु ॥१०॥(क)॥

॥१०॥—अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।

भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥१०॥(ख)॥

नेज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥

हेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी

हिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥

नेज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेश सिव पार न पावहिं

हहि आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥

तमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा

रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥

क्र कोटि सत सरिस बिलासा । नभ सत कोटि अमित अवकासा

॥१०॥—मरुत कोटि सत बिपुल बल रवि सत कोटि प्रकास ।

ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास ॥११॥(क)॥

काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।

धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत ॥११॥(ख)॥

प्रभु अगाध सत कोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला
 तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूरा नसावन
 हिमगिरि कोटि अचल खुबीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ॥
 कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ॥
 सारद कोटि अमित चतुराई । विधिसत कोटि सृष्टि निपुनाई ॥
 विष्णु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संहर्ता ॥
 धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
 भार धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

छं०—निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै ।
 जिमि कोटि सत खद्योत सम रवि कहत अति लघुता लहै ॥
 एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं ।
 प्रभु भाव गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

दो०—रामु अमित गुन सागर थाह कि पावइ कोइ ।

संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायउँ सोइ ॥९२(क)॥

सो०—भाव वस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।

तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीतारवन ॥९२(ख)॥

सुनि मुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ॥
 नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
 पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥
 पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥

रविनु भव निधि तरङ्ग न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ॥
सय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥
व सरूप गारुड़ि रघुनायक । मोहि जिआयउ जन सुखदायक
व प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

१०—ताहि प्रसंसि विविधि बिधि सीस नाइ कर जोरि ।

बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥९३(क)॥

प्रभु अपने अबिबेक ते बूझउँ स्वामी तोहि ।

कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥९३(ख)॥

तुम्ह सर्वग्य तग्य तम पारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥

पान बिरति विग्यान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥

गंरन कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥

राम चरित सर सुंदर स्वामी । पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥

नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महा प्रलयहुँ नास तव नाहीं ॥

पुधा बचन नहीं ईस्वर कहई । सोउ मोरें मन संसय अहई ॥

प्रग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जगु काल कलेवा ॥

मंड कटाह अमित लय कारी । कालु सदा दुरतिक्रम भारी ॥

१०—तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन ।

मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्रभाव कि जोग बल ॥९४(क)॥

१०—प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग ।

कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥९४(ख)॥

ऋड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा । बोलेउ उमा परम अनुरागा ॥
 अन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रसन्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी ॥
 सुनि तव प्रसन्न सप्रेम सुहाई । बहुत जनम कै सुधि मोहि आई ॥
 सब निज कथा कहउँ मैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई ॥
 जप तप मख सम दम व्रत दाना । विरति विवेक जोग विग्याना ॥
 सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा ॥
 एहि तन राम भगति मैं पाई । ताते मोहि ममता अधिकारी ॥
 जेहि तैं कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो०—पद्मगारि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं ।

अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥९५(क)॥

पाट कीट तैं होइ तेहि तैं पाटंबर रुचिर ।

कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्राण सम ॥९५(ख)॥

स्वारथ साँच जीव कहूँ एहा । मन क्रम वचन राम पद नेहा ॥
 सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजिअ रघुबीरा ॥
 राम त्रिमुख लहि त्रिधि सम देही । कबि कोविद न प्रसंसहिं तेही ॥
 राम भगति एहि तन उर जामी । ताते मोहि परम प्रिय स्वामी ॥
 तजउँ न तन निज इच्छा मरना । तन बिनु वेद भजन नहिं बरना ॥
 प्रथम मोहँ मोहि बहुत विगोवा । राम त्रिमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
 नाना जनम कर्म पुनि नाना । किए जोग जप तप मख दाना ॥
 कवन जोनि जनमेउँ जहँ नहिं । मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥

देखेउँ करि सब करम गोसाईं । सुखी न भयउँ अबहिं की नाई ॥
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी । सिव प्रसाद मति मोहँ न घेरी ॥

दो०—प्रथम जन्म के चरित अब कहउँ सुनहु बिहगोस ।

सुनि प्रभु पद रति उपजइ जातें मिटहि कलेस ॥९६(क)॥

पूरुष कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ।

नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल ॥९६(ख)॥

तेहिं कलिजुग कोसलपुर जाई । जन्मत भयउँ सूद्र तनु पाई ॥

सिव सेवक मन क्रम अरु बानी । आन देव निंदक अभिमानी ॥

धन मद मत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उर दंभ विसाला ॥

जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपिन कछु महिमा तब जानी ॥

अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुरान अस गावा ॥

कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । राम परायन सो परि होई ॥

अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहिं रामु धनुपानी ॥

सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥

दो०—कलि मल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।

दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥९७(क)॥

भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।

सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउँ कछुक कलिधर्म ॥९७(ख)॥

वरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति विरोध रत सब नर नारी

द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन

मारग सोइ जा कहूँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
 मिथ्यारंभ दंभ रत जोई । ता कहूँ संत कहइ सब कोई ॥
 सोइ सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥
 जो कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना
 निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी
 जाकें नख अरु जटा बिसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दो०—असुभ वेष भूपन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं ।

तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥९८(क)॥

सो०—जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।

मन क्रम बचन लवार तेइ बकता कलिकाल महुँ ॥९८(ख)॥

नारि ब्रिजस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाई ॥
 सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
 सब नर काम लोभ रत क्रोधी । देव विप्र श्रुति संत विरोधी ॥
 गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी
 सौभागिनीं विभूषन हीना । विधवन्ह के सिंगार नबीना ॥
 गुर सिष बधिर अंध का लेखा । एक न सुनइ एक नहिं देखा ॥
 हरइ सिष्य धन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महुँ परई ॥
 मातु पिता बालकन्ह बोलावहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ॥

दो०—ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।

कौढी लागि लोभ बस करहिं विप्र गुर घात ॥९९(क)॥

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।

जानहु ब्रह्म सो विप्रवर आँखि देखावहिं डाटि ॥१९(ख)॥

पर त्रिय लंपट कपट सगाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥

तेइ अभेदवादी ग्यानी नर । देखा मै चरित्र कलिजुग कर ॥

आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं । जे कहूँ सत मारग प्रतियालहिं ॥

कल्प कल्प भरि एक एक नरका । परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका ॥

जे बरनाधम तेलि कुम्हारा । स्वपच किरात कोल कलवारा ॥

नारि मुई गृह संपति नासी । मूढ़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी ॥

ते विप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥

विप्र निरच्छर लोलुप कामी । निराचार सठ वृपली स्वामी ॥

सूद्र करहिं जप तप व्रत नाना । वैठि बरासन कहहिं पुराना ॥

सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥

दो०—भए बरन संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।

करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक वियोग ॥१००(क)॥

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत विरति विवेक ।

तेहिं न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥१००(ख)॥

छं०—बहु दाम सँवारहिं धाम जती । विषया हरि लीन्हि न रहि विरती ॥

तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ॥

कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ॥

सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अवलानन दीख नहीं जब लौं ॥

ससुरारि पिआरिलगी जब तैं । रिपुरूप कुटुंब भए तब तैं ॥
 नृप पाप परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥
 धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विजचिन्ह जनेउ उधार तपी ॥
 नहिं मान पुरान न वेदहि जो । हरि सेवक संत सही कलि सो ॥
 कवि वृंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषक द्रात न कोपि गुनी ॥
 कलि वारहिं वार दुकाल परै । विनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥
 दो०—सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पापंड ।

मान मोह मारादि मद व्यापि रहे ब्रह्मंड ॥१०१(क)॥

तामस धर्म करहिं नरजप तप ब्रत मख दान ।

देव न वरषहिं धरनीं बए न जामहिं धान ॥१०१(ख)॥

छं०—अबला कच भूषन भूरि छुवा । धनहीन दुखी ममता बहुधा
 सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥१॥
 नर पीडित रोग न भोग कहीं । अभिमान विरोध अकारनहीं ॥
 लघु जीवन संवतु पंच दसा । कलपांत न नास गुमानु असा ॥२॥
 कलिकाल बिहाल किए मनुजा । नहिं मानत द्यौ अनुजा तनुजा ॥
 नहिं तोष बिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मगता ॥३॥
 इरिषा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता बिगता ॥
 सब लोग त्रियोग बिसोक हए । वरनाश्रम धर्म अचार गए ॥४॥
 दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता परबंचनताति घनी ॥
 तनु पोषक नारि नरा सगरे । परनिंदक जे जग सो बगरे ॥५॥

दो०-सुनु व्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार ।

गुनउ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥१०२(क)॥

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा मख अरु जोग ।

जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग ॥१०२(ख)॥

कृतजुग सब जोगी विग्यानी । करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रान

त्रेताँ विविध जग्य नर करहीं । प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं ।

द्वापर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ।

कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ।

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ।

सब भरोस तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि ।

सोइ भव तर कछु संसय नाही । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ।

कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ।

दो०-कलिजुग सम जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास ।

गाइ राम गुन गन विमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥१०३(क)॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महँ एक प्रधान ।

जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्याण ॥१०३(ख)॥

नित जुग धर्म होहिं सब केरे । हृदयँ राम माया के प्रेरे ।

सुद्ध सत्य समता विग्याना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ।

सत्य बहुत रज कछु रति कर्मा । सब विधि सुख त्रेता कर धर्मा ।

बहु रज स्वल्प सत्य कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ।

तामस बहुत रजोगुन योरा । कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
 बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
 काल धर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपति चरन प्रीति अति जाही ॥
 नट कृत विकट कपट खगराया । नट सेव कहि न व्यापइ माया ॥

दो०—हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं ।

भजिअ राम तजि काम सब अस विचारि मन माहिं ॥१०४(क)॥

तेहिं कलिकाल बरष बहु बसेउँ अवध विहगेस ।

परेउ दुकाल विपति बस तब मैं गयउँ विदेस ॥१०४(ख)॥

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ।

गएँ काल कछु संपति पाई । तहँ पुनि करउँ संभु सेवकाई ।

विप्र एक वैदिक सिव पूजा । करइ सदा तेहिं काजु न दूजा ।

परम साधु परमारथ बिंदक । संभु उपासक नहिं हरि निंदक ।

तेहि सेवउँ मैं कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेत

बाहिज नम्र देखि मोहि साई । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाई

संभु मंत्र मोहि द्विजवर दीन्हा । सुम उपदेस विविध विधि कीन्हा

जपउँ मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदयँ दंभ अहमिति अधिकाई

दो०—मैं खल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह ।

हरि जन द्विज देखें जरउँ करउँ बिष्णु कर द्रोह ॥१०५(क)

सो०—गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।

मोहि उपजइ अति क्रोध वंभिहि नीति कि भावई ॥१०५(ख)

एक बार गुर लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥
 सेव सेवा कर फल सुत सोई । अत्रिरल भगति राम पद होई ॥
 रामहि भजहिं तात सिव धाता । नर पावँर कै केतिक वाता ॥
 जासु चरन अज सिव अनुरागी । तासु द्रोहँ सुख चहसि अभागी ॥
 हर कहँ हरि सेवक गुर कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ
 अधम जाति मैं बिद्या पाएँ । भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ ॥
 मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करउँ दिनु राती ॥
 अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा
 जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ॥
 धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
 रज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ॥
 मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई ॥
 सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संग्गा ॥
 कवि कोविद गावाहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती
 उदासीन नित रहिअ गोसाई । खल परिहरिअ स्वान की नाई ॥
 मैं खल हृदयँ कपट कुटिलाई । गुर हित कहइ न मोहि सोहाई ॥

दो०—एक बार हर मंदिर जपत रहेउँ सिव नाम ।

गुर आयउ अभिमान तैं उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥१०६(क)॥

सो दयाल नहिं कहेउ कहु उर न रोष लवलेस ।

अति अध गुर अपमानता सहि नहिं सके महेस ॥१०६(ख)॥

मंदिर माझ भई नभयानी । रे हतभाग्य अंग्य अभिमानी ॥
 जत्रपि तव गुर कें नहिं क्रोधा । अति कृपालचित सम्यक बोधा ॥
 तदपि साप सठ दैहउँ तोही । नीति विरोध सोहाइ न मोही ॥
 जौं नहिं दंड करौं खल तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥
 जे सठ गुर सन इरिषा करहीं । रौरव नरक कोटि जुग परहीं ॥
 त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥
 बैठ रहेसि अजगर इव पापी । सर्प होहिं खल मल मति व्यापी ॥
 महा विटप कोटर महुँ जाई । रहु अधमाधम अधगति पाई ॥

दो०-हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप ।

कंपित मोहि विलोकि अति उर उपजा परिताप ॥१०७(क)॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि ।

बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि ॥१०७(ख)॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
 निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
 निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
 करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥
 तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
 स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालवालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
 चलत्कुंडलं श्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
 मृगाध्रीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

वडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
 यः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
 लातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी
 दानन्दसन्दोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
 यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
 तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
 जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
 रा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो
 लोक-रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ ९ ॥

१०-सुनि बिनती सर्वग्य सिव देखि बिप्र अनुरागु ।

पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजवर बर मागु ॥ १०८(क) ॥

जौं प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन परनेहु ।

निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥ १०८(ख) ॥

तव माया बस जीव जइ संतत फिरइ भुलान ।

तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपा सिंधु भगवान ॥ १०८(ग) ॥

संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल ।

साप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरेहीं काल ॥ १०८(घ) ॥

एहि कर होइ परम कल्याणा । सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥

बेप्रगिरा सुनि परहित सानी । एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥

जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा । मैं पुनि दीन्हि कोप करि सापा ॥
 तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहउँ एहि पर कृपा विसेषी ॥
 छमासील जे पर उपकारी । ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी
 मोर श्राप द्विज व्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥
 जनमत मरत दुसह दुख होई । एहि स्वल्पउ नहिं व्यापिहि सोई
 कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना । सुनहि सूद्र मम वचन प्रवाना ॥
 रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ । पुनि तैं मम सेवाँ मन दयऊ ॥
 पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें । राम भगति उपजिहि उर तोरें ॥
 सुनु मम वचन सत्य अव भाई । हरितोषन व्रत द्विज सेवकाई ॥
 अव जनि करहि विप्र अपमाना । जानेसु संत अनंत समाना ॥
 इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला । कालदंड हरि चक्र कराला ॥
 जो इन्ह कर मारा नहिं मरई । विप्रद्रोह पावक सो जरई ॥
 अस त्रिवेक राखेहु मन माहीं । तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
 औरउ एक आसिषा मोरी । अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दो०—सुनि सिव वचन हरपि गुर एवमस्तु इति भाषि ।

मोहि प्रयोधि गयउ गृह संभु चरन उर राखि ॥१०९(क)॥

प्रेरित काल बिंघिगिरि जाइ भयउँ मैं व्याल ।

पुनि प्रयास बिनु सो तनु तजेउँ गएँ कछु काल ॥१०९(ख)॥

जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि अनायास हरिजान ।

जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान ॥१०९(ग)॥

सिखँ राखी श्रुति नीति अरु मैं नहिं पावा क्लेश ।

एहि विधि धरेउँ विविधि तनु ग्यान न गयउ खगेस ॥ १०९ (घ)

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरै । तहँ तहँ राम भजन अनुसरै ॥
 एकं सूल मोहि बिसर न काऊ । गुर कर क्रोमल सील सुभाऊ ॥
 चरम देह द्विज कै मैं पाई । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥
 खेलउँ तहँ बालकन्ह मीला । करउँ सकल रघुनायक लीला ॥
 प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ावा । समझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा ॥
 मन ते सकल बासना भागी । केवल राम चरन लय लागी ॥
 कहु खगेस अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी ॥
 प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । हारेउ पिता पढ़ाई पढ़ाई ॥
 भएँ कालब्रस जब पितु माता । मैं बन गयउँ भजन जननाता ॥
 जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ । आश्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ ॥
 बूझउँ तिन्हहि राम गुन गाहा । कहहिं सुनउँ हरपित खगनाहा ॥
 सुनत फिरउँ हरि गुन अनुवादा । अब्याहत गति संभु प्रसादा ॥
 छूटी त्रिविधि ईषना गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
 राम चरन बारिज जब देखौ । तब निज जन्म सफल करि लेखौ ॥
 जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सत्य भूतमय अहई ॥
 निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई । सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥

दो०—गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु ला

रघुपति जस गावत फिरउँ छन छन नव अनुरा

मेरुसिखर बट छायाँ मुनि लोमस आसीन ।

देखि चरन सिरु नायउँ बचन कहेउँ अति दीन ॥११०(ख)॥

मुनि मम बचन विनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज ।

मोहि सादर पूँछत भए द्विज आयहु केहि काज ॥११०(ग)॥

तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्वग्य सुजान ।

सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ॥११०(घ)॥

तब मुनीस रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥

ब्रह्मग्यान रत मुनि विग्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥

लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥

अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥

मन गोतीत अमल अविनासी । निर्विकार निरवधि सुख रासी ॥

सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा । बारि बीचि इव गावहिं बेदा ॥

विविधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । निर्गुन मत मम हृदयँ न आवा ॥

पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥

राम भगति जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीस प्रवीना ॥

सोइ उपदेस कहहु करि दाया । निज नयनन्हि देखौं रघुराया ॥

भरिलोचन बिलोकि अवधेसा । तब मुनिहउँ निर्गुन उपदेसा ॥

मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । खंडि सगुन मत अगुन निरूपा ॥

तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥

उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा ॥

सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ । उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिएँ ॥
अति संघरषन जाँ कर कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ॥

दो०—बारंबार सकोप मुनि करइ निरूपन ग्यान ।

मैं अपने मन बैठ तब करउँ विविधि अनुमान ॥१११(क)॥

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान ।

मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ॥१११(ख)॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकैं । तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकैं
परद्रोही की होहि निसंका । कामी पुनि कि रहहि अकलंका ॥
बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें । कर्म कि होहि स्वल्पहि चीन्हें ॥
काहू सुमति कि खल सँग जामी । सुभ गति पाव कि परत्रिय गाम्नी
भव कि परहि परमात्मा विंदक । सुखी कि होहि कबहुँ हरिनिंदक
राजु कि रहइ नीति बिनु जानैं । अध कि रहहि हरिचरित बखानैं
पावन जस कि पुन्य बिनु होई । बिनु अव अनस कि पावइ कोई
लाभु कि किछु हरि भगति समाना । जेहि गावहि श्रुति संत दुगना ॥
हानि कि जग एहि सम किछु भाई । भजिअ न रामहि नर तनु पाई
अध कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस द्विजाना ॥
एहि विधि अमिति जुगुति मन गुनजैं । मुनि उपदेश न कइ सुनजैं
पुनि पुनि सगुन पच्छ मैं रोपा । तब मुनि बोलेउ बचन सुकोपा ॥
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु जानसि ॥
सत्य बचन विस्वास न करही । वायस इय स्वही ते इन्हें ॥

सठ स्वपच्छ तव हृदयँ बिसाला । सपदि होहि पच्छी चंडाला ॥
लीन्ह श्राप मैं सीस चढ़ाई । नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दो०-तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरु नाइ ।

सुमिरि राम रघुवंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥११२(क)॥

उसा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध ।

निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ॥११२(ख)॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिषि दूषन । उर प्रेरक रघुवंसबिभूषन ॥
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी ॥
मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
रिषि मम महत सीलता देखी । राम चरन बिस्वास बिसेषी ॥
अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई । सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई
मम परितोष विविधि विधि कीन्हा । हरषित राममंत्र तब दीन्हा ॥
बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥
सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा ॥
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥
सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरित सर गुप्त सुहावा । संभु प्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
राम भगति जिन्ह केँ उर नाहीं । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं
मुनि मोहि विविधि भाँति समुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ॥

निज कर कमल परचिन्न दीव । हरिषि आसिष दीन्ह सुनीष ॥
राम भगति अद्विष्ट उर तोरे । बलिहि सदा प्रसाद अब नोरे ॥

दो०—सदा राम प्रिय होहु तुन्ह सुभ गुन भवन अनाम ।

कामरूप इच्छानरन ग्यान विराग निवान ॥११३(क)॥

जेहिं आश्रम तुन्ह बसव पुनि सुनिरत श्रीभगवंत ।

व्यापिहि तहै न अविद्या जोजन एक प्रजंत ॥११३(ख)॥

काल कर्म गुन दोष सुमाज । कहु दुख तुन्हहि न व्यापिहि काज
राम रहस्य ललित विधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
विनु श्रम तुन्ह जानव सय सोऊ । नित नव नेह राम पद होऊ ॥
जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कहु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव वच मुनि ग्यानी । यह मम भगत कर्म मन दानी ॥
सुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । प्रेम भगन सब संसय गयऊ ॥
करि विनती मुनि आयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि सिर नाई ॥
हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ । प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पावउँ ॥
इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा । बीते कल्प सात अर बीसा ॥
करउँ सदा रघुपति गुन गाना । सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरीं रघुवीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥
तब तब जाइ राम पुर रहऊँ । सिमुलीला विलोकि सुख लहऊँ ॥
पुनि उर राखि राम सिमरूपा । निज आश्रम आवउँ खगभूपा ॥
कया सकल मैं तुम्हहि सुनाई । काग देह जेहिं कारन पाई ॥
कहिउँ तात सब प्रसन्न तुम्हारी । राम भगति महिमा अति भारी ॥

दो०—ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।

निज प्रभु दरसन पायउँ गए सकल संदेह ॥११४(क)॥

मासपारायण, उन्तीसवाँ विश्राम

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिपि साप ।

मुनि दुर्लभ वर पायउँ देखहु भजन प्रताप ॥११४(ख)॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं । केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं ॥
 ते जड़ कामधेनु गृहँ त्यागी । खोजत आकु फिरिहं पय लागी ॥
 सुनु खगेस हरि भगति बिहाई । जे सुख चाहिं आन उपाई ॥
 ते सठ महासिंधु बिनु तरनी । पैरि पार चाहिं जड़ करनी ॥
 मुनि भसुंडि के वचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु वानी ॥
 तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं । संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥
 सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा । तुम्हरी कृपाँ लहेउँ विश्रामा ॥
 एक बात प्रभु पूँछउँ तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
 कहहिं संत मुनि वेद पुराना । नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥
 सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाई । नहिं आदरेहु भगति की नाई ॥
 ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता ॥
 सुनि उरगारि बचन सुख माना । सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
 भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भव संभव खेदा ।
 नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगवर ।
 ग्यान विराग जोग विग्याना । ए सत्र पुरुष सुनहु हरिजाना ॥

जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
 तब ते जीव भयउ संसारी । छूटन ग्रंथि न होइ सुखारी ॥
 श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूटन अधिक अधिक अरुझाई
 जीव हृदयँ तम मोह विसेषी । ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ॥
 अस संजोग ईस जव करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
 सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जौ हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ॥
 जप तप व्रत जम नियम अपारा । जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥
 तेइ तून हरित चरै जव गाई । भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ॥
 नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
 परम धर्ममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥
 तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै । धृति सम जावनु देइ जमावै ॥
 मुदिताँ मयै विचार मथानी । दम आधार रजु सत्य सुबानी ॥
 तब मयि काढ़ि लेइ नवनीता । विमल विराग सुभग सुपुनीता
 दो०—जोग अगिनि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ ।

बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ ॥११७(क)॥

तब विग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ ।

चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ ॥११७(ख)॥

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तँ काढ़ि ।

तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि ॥११७(ग)॥

सो०—एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय ।

जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब ॥११७(घ)॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा । दीपसिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
 आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ॥
 प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ॥
 तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥
 छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । तब यह जीव कृतारथ होई ॥
 छोरत ग्रंथि जानि खगराया । विघ्न अनेक करइ तब माया ॥
 रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ॥
 कलबल छल करि जाहिं समीपा । अंचल बात बुझावहिं दीपा ॥
 होइ बुद्धि जौं परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जान ॥
 जौं तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ।
 इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ-तहँ सुर बैठे करि थाना ।
 आवत देखहिं विषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ।
 जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । तबहिं दीप बिग्यान बुझाई ।
 ग्रंथिन छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि विकल भइ विषय ब्रतास ॥
 इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । विषय भोग पर प्रीति सदाई ।
 विषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोर

दो०—तब फिरि जीव विविधि बिधि पावइ संसृति क्लेस ।

हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगोस ॥११८(क)

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।

होइ घुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८(ख)॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहिं बारा ॥

जो निर्विघ्न पंथ निर्बहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ॥

राम भजत सोइ मुकुति गोसाई । अनइच्छित आवइ बरिआई ॥

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥

तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति बिहाई

अस विचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने

भगति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नासा ॥

भोजन करिअ तृपिति हित लागी । जिमि सो असन पंचवै जठरागी

असि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥

दो०—सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि ।

भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥११९(क)॥

जौ चेतन कहँ जइ करइ जइहि करइ चैतन्य ।

अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ॥११९(ख)॥

कहेउ ग्यान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥

राम भगति चिंतामनि सुंदर । बसइ गरुड़ जाके उर अंतर ॥

परम प्रकास रूप दिन रांती । नहिं कछु चहिअ दिआ धृत बाती

मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । लोभ बात नहिं ताहि बुझावा ॥

प्रबल अविद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥
 खल कामादि निकट नहिं जाहीं । बसइ भगति जाके उर माहीं ॥
 गरल सुधासम अरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई
 व्यापहिं मानस रोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥
 राम भगति मनि उर बस जाकें । दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें ॥
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
 सो मनि जदपि प्रगट जग अहई । राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई
 सुगम उपाय पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥
 पावन पर्वत बेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ॥
 मर्मो सजन सुमति कुदारी । ग्यान विराग नयन उरगारी ॥
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी । पाव भगति मनि सब सुख खानी
 मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ॥
 राम सिंधु घन सजन धीरा । चंदन तरु हरि संत समीरा ॥
 सब कर फल हरि भगति सुहाई । सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥
 अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा
 दो०—ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं ।

कथा सुधा मधि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं ॥१२०(क)॥

बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि ।

जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ॥१२०(ख)॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥

नाथ मोहि निज सेवक जानी । सत प्रसन्नम कहहु बखानी ॥
 प्रथमहि कहहु नाथ मतिधीरा । सत्र ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥
 बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहि कहहु विचारी ॥
 संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु
 कवन पुन्य श्रुति विदित बिसाला । कहहु कवन अघ परम कराला ॥
 मानस रोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकाई ॥
 तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संछेप कहउँ यह नीती ॥
 नर तन सम नहि कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ॥
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान विराग भगति सुभ देनी ॥
 सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर । होहि विषय रत मंद मंद तर ॥
 काँच किरिच बदलें ते लेहीं । करते डारि परसमनि देहीं ॥
 नहि दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं
 पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सुभाउ खगराया ॥
 संत सहहि दुख परहित लागी । परदुख हेतु असंत अमागी ॥
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला । परहित निति सह विपति बिसाल
 सन इव खल पर बंधन करई । खाल कढ़ाह विपति सहि मरई ।
 खल विनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
 पर संपदा बिनासि नसाहीं । जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ॥
 दुष्ट उदय जग आरति हेतू । जया प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
 संत उदय संतत सुखकारी । बिस्व सुखद जिमि इंदु तमायी ॥
 परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा । पर निंदा सम अघ न गरीसा ॥

हर गुर निंदक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥
 द्विज निंदक बहु नरक भोग करि । जग जनमइ बायस सरीर धरि ॥
 सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी । रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
 होहिं उत्क संत निंदा रत । मोह निसा प्रिय ग्यान भानुगत
 सत्र कै निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
 सुनहु तात अय मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा
 मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला
 काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
 प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब सूल नाम को जाना ॥
 ममता दादु कंडु इरषाई । हरष विषाद गरह बहुताई ॥
 पर सुख देखि जरनि सोइ छई । कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥
 अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥
 तृस्ना उदरवृद्धि अति भारी । त्रिविधि ईषना तरुन तिजारी ॥
 जुग विधि ज्वर मत्सर अत्रिवेका । कहैं लगि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो०-एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु व्याधि ।

पीबहिं संतत जीव कहूँ सो किमि लहै समाधि ॥१२१(क)॥

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।

भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥१२१(ख)॥

एहि विधि सकल जीव जग रोगी । सोक हरष भय प्रीति त्रियोगी ॥

मानस रोग कछुक में गाए । दहिं सव कैं लखि विरलेन्ह पाए
 जाने ते छीजहिं कछु पापी । नास न पावहिं जन परितापी ॥
 विषय कुपय्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदयैं का नर बापुरे ॥
 राम कृपाँ नासहिं सव रोगा । जौं एहि भाँति बनै संजोगा ॥
 सदगुर वैद वचन विस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥
 रघुपति भगति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥
 एहि विधि भलेहिं सो रोग नसाहीं । नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं
 जानिअ तव मन विरुज गोसाँई । जव उर बल विराग अधिकाई
 सुमति द्युधा बाढ़इ नित नई । विषय आस दुर्बलता गई ॥
 विमल ग्यान जल जव सो नहाई । तव रह राम भगति उर छाई ॥
 सिव अज सुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म विचार बिसारद ॥
 सत्र कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पंकज नेहा ॥
 श्रुति पुरान सत्र ग्रंथ कहाहीं । रघुपति भगति बिना सुख नाहीं
 कमठ पीठ जामहिं बरु वारा । बंध्या सुत बरु काहुहि मारा ॥
 फूलहिं नभ बरु बहुविधि फूला । जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला
 तृपा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहिं सस सीस विषाना ॥
 अंधकार बरु रविहि नसावै । राम विमुख न जीव सुख पावै
 हिम ते अनल प्रगट बरु होई । विमुख राम सुख पाव न कोई ॥
 दो०-वारि मथें घृत होइ बरुसिकता ते बरु तेल ।

बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धान्त अपेल ॥ १२२(क) ॥

मसकहि करइ विरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन ।

अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रवीन ॥१२२(ख)॥

श्लोक-विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।

हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥१२२(ग)॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । व्यास समास स्वमति अनुरूपा
श्रुति सिद्धांत इहइ उरगारी । राम भजिअ सब काज विसारी ॥
प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥
तुम्ह विग्यानरूप नहिं मोहा । नाथ कीन्हि मो पर अति छोहा ॥
पूँछिहु राम कथा अति पावनि । सुक सनकादि संभु मन भावनि
सतसंगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकउ वारा ॥
देखु गरुड़ निज हृदयँ विचारी । मैं रघुवीर भजन अधिकारी ॥
सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कीन्ह विदित जग पाव
दो०-आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब विधि हीन ।

निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन ॥१२३(क)॥

नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ ।

चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावइ कोइ ॥१२३(ख)॥

सुमिरि राम के गुन गन नाना । पुनि पुनि हरप भुसुंड़ि सुजाना
महिमा निगम नेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
सिव अज पूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥
अस सुभाउ कहूँ सुनउँ न देखउँ । केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ

साधक सिद्ध विमुक्त उदासी । कवि कोविद कृतंग्य संन्यासी ॥
 जोगी सूर सुतापस ग्यानी । धर्म निरत पंडित विग्यानी ॥
 तरहिं न विनु सेएँ मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
 सरन गएँ मो . से अधरासी । होहिं सुद्ध नमामि अविनासी ॥

दो०—जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल ।

सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल ॥१२४(क)॥

सुनि भुसुंडि के वचन सुभ देखि राम पद नेह ।

बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ विगत संदेह ॥१२४(ख)॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुबीर भगति रस सानी ॥
 राम चरन नूतन रति भई । माया जनित विपति सब गई ॥
 मोह जलधि ब्रोहित तुम्ह भए । मो कहँ नाथ त्रिविध सुख दए ॥
 मो पहिं होइन प्रति उपकारा । बंदउँ तव पद वारहिं वारा ॥
 पूरन काम राम अनुरागी । तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥
 संत विट्ठल सरिता गिरि धरनी । परहित हेतु सबन्ह कै करनी ॥
 संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ॥
 निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता ॥
 जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद संतय सब गयऊ ॥
 जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ विहंगवर ॥

दो०—तासु चरन सिरु नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।

गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदयँ राखि रघुबीर ॥१२५(क)॥

गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।

विनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं वेद पुरान ॥१२५॥(ख)॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छूटहिं भव पासा ॥
 प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । उपजइ प्रीति राम पद कंजा ॥
 मन क्रम वचन जनित अघ जाई । सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई ॥
 तीर्थाटन साधन समुदाई । जोग विराग ग्यान निपुनाई ॥
 नाना कर्म धर्म व्रत दाना । संजम दम जप तप मख नाना ॥
 भूत दया द्विज गुर सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
 जहँ लगि साधन वेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवानी ॥
 सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई । राम कृपाँ काहूँ एक पाई ॥

दो०—मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।

जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥१२६॥

सोइ सर्वग्य गुनी सोइ ग्याता । सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥
 धर्म परायन सोइ कुल त्राता । राम चरन जाकर मन राता ॥
 नीति निपुन सोइ परम स्याना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥
 सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा । जो छल छाड़ि भजइ रघुवीरा ॥
 धन्य देस सो जहँ सुरसरी । धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ॥
 धन्य सो भूपु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥
 सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी ॥
 धन्य घरी सोइ जव सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥

दो०—सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।

श्रीरघुवीर परायन जेहिं नर उपज विनीत ॥१२७॥

मति अनुरूप कथा मैं भापी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकारि । तव मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरिलीलहि
कहिअ न लेभिहि क्रोधिहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥
राम कथा के तेइ अधिकारी । जिन्ह कें सतसंगति अति प्यारी
गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ॥
ता कहँ यह विशेष सुखदाई । जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥

दो०—राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वाण ।

भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान ॥१२८॥

राम कथा गिरिजा मैं बरनी । कलि मल समनि मनोमल हरनी ॥
संसृति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति सूरी ॥
एहि महुँ रुचिर सत सोपाना । रघुपति भगति केर पंथाना ॥
अति हरिकृपा जाहि पर होई । पाउँ देइ एहिं मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सत्र कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपाँ मम गत संदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥

दो०-मैं कृतकृत्य भयउँ अब तव प्रसाद विस्वेस ।

उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु उमा संवादा । सुख संपादन समन विषादा ॥

भव भंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सजन प्रिय एहा ॥

राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह कें कछु नाहीं ॥

रघुपति कृपाँ जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥

एहिं कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥

जासु पतित पावन बड़ बाना । गावहिं कवि श्रुति संत पुराना ॥

ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजें गति केहिं नहिं पाई ॥

छं०-पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।

गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥

आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अधरूप जे ।

कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥१॥

रघुवंसभूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।

कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥

सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ।

दारुन अविद्या पंच जनित बिकार श्री रघुवर हरै ॥२॥

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।

सो एक राम अकाम हित निर्वानप्रद सम आन को ॥

जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदास हूँ ।
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥२॥

दो०—मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।

अस बिचारि रघुवंसमनि हरहु विषम भव भीर ॥१३०(क)॥

कामिहि नारि पिभारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।

तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०(ख)॥

श्लो०—यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं

श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्यै तु रामायणम् ।

मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये

भाषावद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥ १ ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं

मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।

श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये

ते संसारपतङ्गवोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥ २ ॥

मासपारायण, तीसवाँ विश्राम ।

नवाह्नपारायण, नवाँ विश्राम ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने

सप्तमः सोपानः समाप्तः ।

(उत्तरकाण्ड समाप्त)



गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-सूची

गीमद्भगवद्गीता

गीता तत्त्वविवेचनी	४.००
गीता शांकरभाष्य	३.५०
गीता रामानुजभाष्य	३.००
गीता श्रीधरी	२.५०
सजिल्द	३.००
गीता बड़ी पदच्छेद,	
अन्वय मोटा टाइप	१.२५
गीता प्रत्येक अध्यायके	
माहात्म्यसहित अ०	१.१०
सजिल्द	१.५०
गीता गुटका पदच्छेद	
अन्वय सजिल्द	०.७५
गीता सटीक मोटे अक्षर-	
वाली अजिल्द	०.६०
सजिल्द	१.००
गीता मूल मोटा टाइप	०.३१
गीता केवल भाषा	०.३०
गीता-पञ्चरत्न	०.२५
गीता छोटी भाषाटीका	०.२०
गीता तावीजी	०.२०
गीता मूल विष्णुसहस्र	०.१२

गीता दैनन्दिनी १९७१ की. ७५

॥ ॥ सजि०. ०.९०

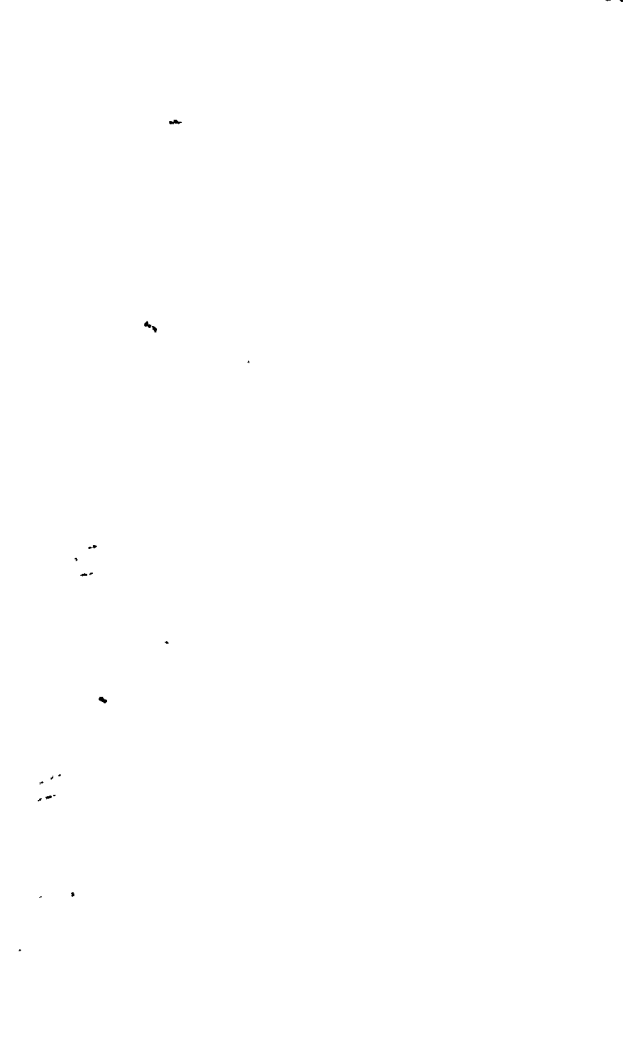
उपनिषद्

बृहदारण्यक-शांकरभाष्य	६.५०
छान्दोग्योपनिषद् ॥	५.००
ईशावास्य	०.२५
केन	०.६०
कठ	०.७०
मुण्डक	०.५५
प्रश्न	०.५५
माण्डूक्य	१.२५
ऐतरेय	०.४५
तैत्तिरीय	१.००
श्वेताश्वतर	१.०५
ईशावास्य सानुवाद	०.१०

अन्य शास्त्र-ग्रन्थ

श्रीविष्णुपुराण सटीक	५.००
अध्यात्मरामायण सटीक	४.००
पातञ्जलयोगदर्शन सटीक	०.९०
लघुसिद्धान्तकौमुदी	०.९०

दुर्गासप्तशती-मूल,		सनत्सुजात-शांकर०	२.५०
मोटा टाइप	१.२५	<u>श्रीमद्भागवत</u>	
दुर्गासप्तशती सटीक	१.००	श्रीशुक-सुधासागर	२५.००
दुर्गासप्तशती-मूल	०.६५	भागवत सटीक	२०.००
<u>महाभारत-सटीक</u>		भागवत-सुधासागर	१०.००
आदि, सभापर्व	१३.२५	„ मूल मोटा टाइप	७.५०
वन, विराटपर्व	१५.००	मूल-गुटका	४.००
उद्योग, भीष्मपर्व	१५.००	प्रेम-सुधासागर	४.५०
द्रोणसे स्त्रीपर्वतक	१८.००	श्रीभागवतामृत	२.००
शान्तिपर्व	१३.७५	एकादश स्कन्ध	१.२५
अनुशासनसे स्वर्गा-		<u>वाल्मीकीय रामायण</u>	
रोहणपर्वतक	१५.००	सटीक (दो जिल्दोंमें)	२०.००
<u>श्रीमन्महाभारतम् मूल</u>		केवल भाषा	१३.००
आदि, सभा, वनपर्व	७.००	केवल मूल	९.००
विराटसे द्रोणपर्वतक	७.००	सुन्दरकाण्ड	१.००
कर्णसे शान्तिपर्वतक	७.००	<u>श्रीरामचरितमानस</u>	
अनुशासनसे स्वर्गारोहण	५.५०	बृहदाकार सटीक	१८.००
हरिवंश सटीक	१४.००	मोटा टाइप-सटीक	८.५०
महाभारत-नामानुक्र०	२.५०	मझला साइज-सटीक	४.००
महाभारत-परिचय	१.७५	मोटा टाइप-मूल	५.००
श्रीजैमिनीयाश्वमेधपर्व	६.००	मझला साइज मूल	२.००



मनुष्यका परम कर्तव्य १.००

आत्मोद्धारके सरल

उपाय ०.७५

आनन्दमय जीवन १.००

अमृतके घूँट १.२५

स्वर्ण-पथ ०.९०

सत्सङ्गके विखरे मोती ०.९०

एक महात्माका प्रसाद ०.९०

एक लोटा पानी ०.९०

तत्त्व-चिन्तामणि (बड़ा)

भाग १ ०.६२

" २ ०.८७

" ३ ०.७०

" ४ ०.८१

" ५ ०.८१

" ६ १.००

" ७ १.१२

तत्त्व-चिन्तामणि (गुटका)

भाग १ सजिल्द ०.५०

" २ " ०.५६

" ३ " ०.५०

" ४ " ०.६२

" ५ " ०.५६

श्रीचैतन्यचरितावली

खण्ड १ १.१५

" २ १.४०

" ३ १.२५

" ४ ०.८५

" ५ १.००

संत-वाणी (दस हज़ार

अनमोल बोल) ०.७५

सूक्ति-सुधाकर ०.७

विदुरनीति ०.७

स्तोत्ररत्नावली ०.६

सत्सङ्ग-सुधा ०.६

प्रेम-सत्संगसुधामाला ०.१

सुखी जीवन ०.

भगवच्चर्चा

भाग १ ०

" ३ ०

" ४ ०

" ५ ०

" ६ ०

श्रीभीष्मपितामह

सती द्रौपदी

नित्यकर्मप्रयोग	०.५५	उपयोगी कहानियाँ	०.
जीवनका कर्तव्य	०.५५	प्रेम-दर्शन	०.
भक्त-भारती	०.५५	विवेक-चूडामणि	०.४
भक्त नरसिंह मेहता	०.४५	श्रीकृष्ण-गीतावली	०.३
रामायणके कुछ		भवरोगकी रामबाण दवा	०.३५
आदर्श पात्र	०.३७	<u>भक्त-चरित-माला</u>	
उपनिषदोंके १४ रत्न	०.४५	भक्त बालक	०.४०
<u>शोक-परलोकका सुधार</u>		भक्त नारी	०.४०
कामके पत्र) भाग १	०.४५	भक्त-पञ्चरत्न	०.४०
" " २	०.४५	आदर्श भक्त	०.४०
" " ३	०.६०	भक्त-चन्द्रिका	०.४०
" " ४	०.६०	भक्त सतरत्न	०.४०
" " ५	०.६०	भक्त कुसुम	०.४०
समझो और करो	०.४५	प्रेमी भक्त	०.४०
जीवनसे शिक्षा	०.४५	प्राचीन भक्त	०.४०
शिक्षा	०.४५	भक्त-सरोज	०.६०
लिये		भक्त-सुमन	०.४५
कर्तव्य-शिक्षा	०.३७	भक्त-सौरभ	०.४५
सीख	०.४५	भक्त-सुधाकर	०.४०
गार	०.४५	भक्त-महिलारत्न	०.६०
कन	०.४५	भक्त-दिवाकर	०.५५
नियाँ	०.४०	भक्त-रत्नाकर	०.५५
			०.५५

आदर्श चरित-माला

भक्तराज हनुमान्	०.३५
सत्यप्रेमी हरिश्चन्द्र	०.३५
प्रेमी भक्त उद्धव	०.२५
महात्मा विदुर	०.२०
भक्तराज ध्रुव	०.२५
शिक्षाप्रद ग्यारह	
कहानियाँ	०.२५
सती सुकला	०.३०

परमार्थ-पत्रावली

" भाग १	०.२५
" भाग २	०.२५
" भाग ३	०.५०
" भाग ४	०.५०

अध्यात्मविषयक पत्र	०.५०
शिक्षाप्रद पत्र	०.५०

कल्याण-कुञ्ज

" भाग १	०.३०
" भाग २	०.३५
" भाग ३	०.४५

महाभारतके आदर्श पात्र	०.२५
भगवान्पर विश्वास	०.३०

गीताप्रेस-लीला-चित्र-मन्दिर दोहावली	०.३०
-------------------------------------	------

गीताद्वार (गीताप्रेसका प्रवेशद्वार)	०.३०
---------------------------------------	------

बाल-चित्र-रामायण

" भाग १	०.३०
" भाग २	०.३०

बाल-चित्रमय चैतन्यलीला	०.४०
------------------------	------

बाल-चित्रमय बुद्धलीला	०.४०
-----------------------	------

बाल-चित्रमय श्रीकृष्ण-लीला (भाग १)	०.४५
------------------------------------	------

बाल-चित्रमय श्रीकृष्ण-लीला (भाग २)	०.४५
------------------------------------	------

भगवान राम भाग १	०.३०
-----------------	------

" " भाग २	०.३०
-----------	------

भगवान श्रीकृष्ण

" " भाग १	०.३०
-----------	------

" " भाग २	०.३०
-----------	------

आरती-संग्रह	०.३०
-------------	------

सत्सङ्गमाला	०.३०
-------------	------

बालकोंकी बातें	०.३०
----------------	------

वीर बालक	०.३०
----------	------

सच्चे और ईमानदार
बालक ०.३०

गुरु और माता-पिताके
भक्त बालक ०.३०

आदर्श चरितावली

॥ भाग १ ०.३०

॥ २ ०.३०

॥ ३ ०.३०

॥ ४ ०.३०

बालकके गुण ०.२८

संस्कृति-माला

॥ पहला भाग ०.२५

॥ २ ०.३०

॥ ३ ०.३५

॥ ४ ०.४५

॥ ५ ०.४५

॥ ६ ०.४५

॥ ७ ०.६५

॥ ८ ०.६५

वीर बालिकाएँ ०.२५

दयालु और परोपकारी

बालक-बालिकाएँ ०.२५

जानकीमङ्गल ०.२५

श्रीपार्वतीमङ्गल ०.१५

हनुमान-बाहुक ०.

हिंदी-बालपोथी

शिशु पाठ भाग १ ०.

॥ भाग २ ०.

॥ भाग ३ ०.

॥ भाग ४ ०.

दैनिक कल्याण-सूत्र ०.

ध्यान और मानसिक पूजा ०.

ध्यानावस्थामें प्रभुसे

वार्तालाप ०.

प्रार्थना ०.

आदर्श नारी सुशीला ०.

आदर्श भ्रातृ-प्रेम ०.

मानव-धर्म ०.

श्रीमद्भगवद्गीताके कुछ

श्लोकोंपर विवेचन ०.

श्रीराघामाधव-रस-सुधा ०.

आओ बच्चो तुम्हें बतायें ०.

गीता-निबन्धावली ०.

साधन-पथ ०.

अपरोक्षानुभूति ०.

मनन-माला ०.

भारतमें आर्य बाहरसे

नहीं आये ०.

(८)

झोंकी झोलचाल	०.२०
झोंको सीख	०.१५
लकके आचरण	०.१५
लककी दिनचर्या	०.१५
नवधा-भक्ति	०.१२
बाल-शिक्षा	०.१२
श्रीभरतजीमें नवधाभक्ति	०.१२
गीता-भवन-दोहा-संग्रह	०.१५
वैराग्य-संदीपनी	०.१५
बरवै रामायण	०.१५
<u>भजन-संग्रह</u>	

प्रथम भाग	०.१५
द्वितीय भाग	०.१५
तृतीय भाग	०.१५
चतुर्थ भाग	०.१५
पञ्चम भाग	०.१५
गङ्गासहस्रनाम सटीक	०.२०
श्रीलक्ष्मीनृसिंहसहस्रनामस्तोत्रम्	०.२०
श्रीगणेशसहस्रनामस्तोत्रम्	०.१५

श्रीविष्णुसहस्रनाम सटीक	०.१२
श्रीहनुमत्सहस्रनाम-स्तोत्रम्	०.१२
श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्रम्	०.१२
गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रम्	०.१२
श्रीराधिकासहस्रनाम मूल	०.१५
श्रीशिवसहस्रनाम	०.१२
श्रीरामसहस्रनाम	०.१२
श्रीलक्ष्मीसहस्रनाम	०.१२
श्रीसूर्यसहस्रनाम	०.१२
गजेन्द्रमोक्ष	०.१२
शाण्डिल्यभक्तिसूत्र	०.१२
बालप्रश्नोत्तरी	०.१२
स्वास्थ्य-सम्मान-सुख	०.१२
स्त्रीधर्मप्रश्नोत्तरी	०.१२
नारीधर्म	०.१२
गोपी-प्रेम	०.१२
मनुस्मृति	०.१२
तर्पण-विधि	०.१२

अन्य पुस्तकोंका जानकारीके लिये सूचीपत्र मुक्त मँगवा
व्यवस्थापक-गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

दो०-निगम नीति कुल रीति करि अरव पाँवड़े देत ।

वधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥३४९॥

चारि सिंघासन सहज सुहाए । जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥

तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे । सादर पाय पुनीत पखारे ॥

धूप दीप नैवेद वेद विधि । पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि ॥

बारहिं वारं आरती करहीं । व्यजन चारु चामर स्तिर ठरहीं ॥

वस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरी प्रमोद मातु सव सोहीं ॥

पावा परम तत्व जनु जोगी । अमृतु लहेउ जनु संतत रोगी ॥

जनम रंक जनु पारस पावा । अंधहि लोचन लाभु सुहावा ॥

मूक वदन जनु सारद छाई । मानहुँ समर सूर जय पाई ॥

०-एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु ।

भाइन्ह सहित विआहि घर आए रघुकुलचंदु ॥३५०(क)॥

लोक रीति जननीं करहिं वर दुलहिनि सकुचाहिं ।

मोदु बिनोदु बिलोकि बड़ रामु मनहिं मुसुकाहिं ॥३५०(ख)॥

देव पितर पूजे विधि नीकी । पूजीं सकल वासना जी की ॥

सवहि वंदि मागहिं वरदाना । भाइन्ह सहित राम कल्याणा ॥

अंतरहित सुर आसिष देहीं । मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥

भूपति बोलि बराती लीन्हे । जान वसन मनि भूषन दीन्हे ॥

आयसु पाइ राखि उर रामहि । मुदित गए सव निज निज धामहि

पुर नर नारि सकल पहिराए । घर घर वाजन लगे बधाए ॥

जाचक जन जाचहिं जोइ जोई । प्रमुदित राउ देखि सोइ सोई ॥

सेवक सकल बजनिआ नाना । पूरन किए दान स्नमाना ॥

दो०—देहिं भस्मीम जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ ।

तब गुर भूसुर सहित गृहें गवनु कीन्ह मरनाथ ॥३५१॥

जो बसिष्ट अनुसासन दीन्ही । लोक वेद विधि सादर कीन्ही ॥

भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग्य बढ़ जानी ॥

पाय पखारि सकल अन्हवाए । पूजि मली विधि भूप जेवाँए ॥

आदर दान प्रेम परिपोषे । देत असीस चले मन तोषे ॥

बहु विधि कीन्हि गाधिमुत पूजा । नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥

कीन्हि प्रसंसा भूषति भूरी । रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी ॥

भीतर भयन दीन्ह बर बाध । मन जोगवत रह नृपु रनिबाध ॥

पूजे गुर पद कमल बहोरी । कीन्हि विनय उर प्रीति न योरे ॥

दो०—बभुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु ।

पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत भसीस मुनीसु ॥३५२॥

विनय कीन्हि उर अति अनुरागे । सुत सपदा राखि सब आगे ॥

नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा । आखिरबाहु बहुत विधि दीन्हा ॥

उर धरि रामहि सोय समेता । हरषि फीन्ह गुर गयनु निकेता ॥

विप्रबधू सब भूप बोलाई । बेल चार भयन पहिराई ॥

बहुरि सोलार मुआग्निनि लीन्ही । रजि विनारि पहिरावनि दीन्ही ॥

नेगी नेग जोग सब लेहीं । रनि अनुरूप भूप ॥

प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने । भूपति भली भाँति सनमाने ॥
देव देखि रघुवीर बिबाहू । वरपि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥

दो०—चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।

कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयँ समाइ ॥३५३॥

सब विधि सबहि समदि नरनाहू । रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे । सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥
लिए गोद करि मोद समेता । को कहि सकइ भयउ सुखु जेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारीं । बार बार हियँ हरषि दुलारीं ॥
देखि समाजु मुदित रनिवासु । सब कें उर अनंद कियो वासू ॥
कहेउ भूपजिमि भयउ बिबाहू । सुनि सुनि हरषु होत सब काहू ॥
राज गुन सीलु बड़ाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥
बहुविधि भूप भाट जिमि बरनी । रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दो०—सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि विप्र गुर ग्याति ।

भोजन कीन्ह अनेक विधि घरी पंच गइ राति ॥३५४॥

मंगलगान करहिं वर भामिनि । भै सुखमूल मनोहर जामिनि ॥
अँचइ पान सब काहूँ पाए । सग सुगंध भूषित छवि छाए ॥
रामहि देखि रजायसु पाई । निज निज भवन चले सिर नाई ॥
प्रेमु प्रमोदु विनोदु बड़ाई । समउ समाजु मनोहरताई ॥
कहि न सकहिं सत सारद सेसू । वेद विरंचि महेस गनेसू ॥
सो मैं कहाँ कवन विधि बरनी । भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी ॥

नृप मय भौति सखि मनमानी । कहि मृदु बचन योत्तहि रानी ॥
बधू तारिकनी पर घर आई । राखेहु नयन पलक की नाई ॥

दो०-लरिका धर्मित उनीद बय मयन करावहु जाइ ।

अस कहि गे विश्रामगृह राम चरन चिनु न्याइ ॥३५५॥

भूप बचन मुनि सहज सुहाए । जगित कनक मनि पल्लव डसाए ॥
मुभग सुरभि पय पेन गमाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥
उपवरदन घर बरनि न जाई । स्वग सुगव मनिमंदिर माहीं ॥
स्तनदीप मुठि चारु चैंदोवा । कहत न बनद जान जेहि जोवा ॥
मेज रुचिर रचि राम उठाए । प्रेम समेत पल्लव पौड़ाए ॥
अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । निज निज मेज मयन तिन्ह कोन्ही
देखि त्याग मृदु मजुल गाता । कहहि सप्रेम बचन सब माता ॥
माग जात भयावनि भारी । केहि विधि तात ताइका मारी ॥

दो०-घोर निमाचर बिकट भट समर गनहि नहि काहु ।

मारे सहित महाय किमि गल मारीच सुबाहु ॥३५६॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईम अनेक करवरे टारी ॥
मल रम्यवारी करि दुहुँ भाई । गुरु प्रसाद मय विश्वा पाई ॥
मुनितिय तगी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठ पीठि पति कूट बटोरा । नृप गमाज महँ मिय धनु तोरा ॥
विस्व विजय जमु जानकि पाई । आण भवन व्याहि मय भाई ॥
सकल अमानुष करम तुम्हारे । केवल कौमिक कृपे

आजु सुफल जग जनमु हमारा । देखि तात त्रिधुवदन तुम्हारा ॥
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखें । ते विरंचि जनि पारहिं लेखें ॥

दो०—राम प्रतोषीं मातु सब कहि विनीत वर बैन ।

सुमिरि संभु गुर विप्र पद किए नीदबस नैन ॥३५७॥

नीदउँ वदन सोह सुठि लोना । मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरन नारीं । देहिं परसपर मंगल गारीं ॥
पुरी विराजति राजति रजनी । रानीं कहहिं त्रिलोकहु सजनी ॥
सुंदर बधुन्ह सासु लै सोई । फनिक्न्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचूड़ वर बोलन लागे ॥
बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जोहारन आए ॥
दि विप्र सुर गुर पितु माता । पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर वदन निहारे । भूपति संग द्वार पगु धारे ॥
दो०—कीन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।

प्रातक्रिया करि तात पहिं आए चारिउ भाइ ॥३५८॥

नवाह्नपारायण, तीसरा विश्राम

नूप त्रिलोकि लिए उर लाई । बैठे हरपि रजायसु पाई ॥
देखि रामु सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
पुनि बसिष्ठु मुनि कौसिकु आए । सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए ॥
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥
कहहिं बसिष्ठु धरम हतिहासा । सुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥

मुनि मन अगम गाधिमुन करनी। मुदिन यमिष्ट विपुल विधि बरन
बोले बामदेउ सब सौचो। करिनि कलित लोक तिहु माचो
मुनि आनहु भयउ सब काहु। राम लखन उर अधिक उछाहु।

दो०—मंगल मोद उछाह निन जाहिं दिवस गृहि भौति ।

उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ३५९

सुदिन सोधि कल ककन छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे ॥
नित नय मुखु मुर देखि सिहाही। अवध जन्म जाचहि विधि पाही ॥
विस्वामित्रु चलन नित चहही। राम सप्रेम विनय बस रहही ॥
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सगह महामुनिराऊ ॥
मागत विदा राउ अनुरागे। मुनन्ह समेत टाढ भे आगे ॥
नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥
करय सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरसन देन रहय मुनि मोहू ॥
अम कहि राउ सहित मुन रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी ॥
दीन्हि असीम विप्र बहु भौती। चलेन प्रीति रीति कहि जाती ॥
रामु सप्रेम संग सब भारी। आयसु पाइ पिरे पहुँचाई ॥

दो०—राम रूपु भूपति भगनि ब्याहु उछाहु अनंदु ।

जात सराहव मनहिं मन मुदिन गाधिकुलचंदु ॥३६०॥

बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिमुन कथा बखानी
मुनि मुनि मुजसु मनहिं मन राऊ। बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ। सुतन्ह समेत नृपति रहै गयऊ

हैं तहँ राम व्याहु सत्रु गावा । सुजसु पुनीत लोक तिहुँ छावा ॥
 भाए व्याहि रामु घर जय तैं । बसइ अनंद अवध सब तय तैं ॥
 यशु बिबाहँ जस भयउ उछाहू । सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू
 कबिकुल जीवनु पावन जानी । राम सीय जसु मंगल खानी ॥
 तेहि ते मैं कछु कहा बखानी । करन पुनीत हेतु निज यानी ॥
 छ०-निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसीं कह्यो ।

रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कवि कौनैं लह्यो ॥
 उपबीत व्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
 बेदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥
 ०-सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
 तिन्ह कहुं सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥३६१॥

मासपारायण, बारहवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
 प्रथमः सोपानः समाप्तः ।

(बालकाण्ड समाप्त)

॥ श्रीरामाय नमः ॥

श्रीरामचरितमानस

अयोध्याकाण्ड



राम-भरत-मिलन



वरदस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान ।
भरत राम की मिलनि लखि विसरे सबहि अपान ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

ॐ नमः शिवाय

द्वितीय सोपान

(अयोध्याकाण्ड)

—००००—

श्लोक

यस्याङ्गे च विभाति भूधरसुता देवापगा ममकं
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्मोरमि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुखरः सर्वोधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पानु माम् ॥ १ ॥
प्रसन्नतां या न गताभिप्रेकनमन्या न मम्ले वनवामदुःखतः ।
सुखाम्बुजव्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु मा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥ २ ॥
नीलाम्बुजप्रदयामलकोमलान्नं सीताममारोपितवामभागम् ।
पाणौ महामायकचारुचापं नमामि तामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दो०-श्रीगुरुं चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

वरनउँ रघुवर विमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

जब तैं रामु व्याहि घर आए । नित नव मंगल मोद बधाए ॥
 भुवन चारिदस भूधर भारी । सुकृत मेघ वरषहिं सुख बारी ॥
 रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहूँ आई
 मनगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥
 कहि न जाइ कछु नगर विभूती । जनु एतनिअ विरंचि करतूती ॥
 सब विधि सब पुर लोग सुखारी । रामचंद मुख चंदु निहारी ॥
 सुदित मातु सब सर्खाँ सहेली । फलित विलोकि मनोरथ बेली ॥
 राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देखि सुनि राज ॥

०-सब कैं उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।

आप अछत जुवराज पद रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥
 अकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू
 नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषैं । लोकप करहिं प्रीति रुख राखैं ॥
 तिभुवन तीनि काल जग माहीं । भूरिभाग दसरथ सम नाहीं ॥
 मंगलमूल रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सब तासू
 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । वदनु विलोकि मुकुड सम कीन्हा
 श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा
 नृप जुवराजु राम कहूँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू

दो०—यह बिचार उर आनि नृप मुदिनु सुभवसरु पाइ ।

प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु मुनिअ मुनिनायक। भए राम मय विधि सब लायक॥
सेयक सचिव सकल पुरवासी। जे हमारे अरि मित्र उदासी॥
स्यहि रामु प्रिय जेहि विधि मोही। प्रभु अमीन जनु तनु धरि सोही॥
पिप्र सहित परिवार गोसाईं। करहि छोडु सब रौरिहि नाई॥
जे गुर चरन रेनु भिर धरहीं। ते जनु सकल विभव बस करहीं॥
मोहिसम यहु अनुभयउ न दूजें। सब पापउँ रज पावनि पूजें॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरें। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू। कहेउ नरेश रजायसु देहू॥

दो०—राजन राउर नामु जमु सब अभिमत दातार ।

कल अनुगामी महिप भनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जियें जानी। दोलेउ राउ रहैंसि मृदु बानी॥
नाथ रामु करिअहि लुचराजू। कहिअ कृपा करि करिअ स्माजू॥
मोहि अछट यहु होइ उछाहू। लहहि लोग सब ओचन लाहू॥
प्रभु प्रसाद छिब स्यह निवाही। यह लालसा एक मन नही।
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ। जेहि न होइ पाछें पछिहू॥
मुनि मुनि दसरथ बचन सुहाए। मंगल मोद मूल न्न न्हए॥
मुनु रूप जासु विमुख पछिताही। आसु मन्न रिनु बरि न बहू॥
ममउ तुम्हार रनय सोइ स्वामी। रामु पुनीउ प्रे म्मुनरु॥

दो०—बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुद्ध समाजु ।

सुदिनु सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुवराजु ॥ १
मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत्रु बोल
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए । भूप सुमंगल वचन सुन
जौं पाँचहि मत लागै नीका । करहु हरपि हियँ रामहि टी
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । अभिमत विरवँ परेउ जनु प
बिनती सचिव करहिं कर जोरी । जिअहु जगतपति वरिस करं
जग मंगल भल काजु बिचारा । बेगिअ नाथ न लाइअ वा
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढ़त बाँड़ जनु लही सुसा
दो०—कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ ।

राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५
मुनीस कहेउ मृदु बानी । आनहु सकल सुतीरथ पा
मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल ना
चामर चरम वसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जा
मनिगन मंगल वस्तु अनेका । जो जग जोगु भूप अभिषेक
वेद विदित कहि सकल विधाना । कहेउ रचहु पुर विविध वि
सफल रसाल पूगफल केरा । रोपहु व्रीथिन्ह पुर चहुँ फे
रचहु मंजु मनि चौकें चारू । कहहु वनावन बेगि वजा
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । सब विधि करहु भूमिसुर सेव
दो०—ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।

सिर धरि मुनिवर बचन सबु निज निज काजहिं लाग ॥ ६

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥
 विप्र साधु सुर पूजन राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥
 सुनत राम अभिषेक सुहावा । राज गद्दागद् अथव यथावा ॥
 राम सीय तन सगुन जनाए । परकाहिं मंगल अग सुहाव ॥
 पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं । भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥
 भए बहुत दिन अति अवसेरी । सगुन प्रतीति भेंट प्रिय कैरी ॥
 भरत सरिस प्रिय को जग माही । इहइ सगुन फल दूसर नाहीं ॥
 रामहि बंधु सोच दिन राती । अडन्हि कमठ हृदउ जेहि भौंती
 दो०—एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहैंसेउ रनिवासु ।

सोभत लाखि विधु बढत जनु यासिधि बीचि बिलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए । भूपन बसन भूरि तिन्ह पाए ॥
 प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी । मंगल कलस सजन सब लागी ॥
 चौकें चाह सुमिर्षाँ पूरी । मनिमय विविध भौंति अति स्तूरी
 आनंद मगन राम महतारी । दिए दान बहु विप्र हँकारी ॥
 पूजी रामदेवि सुर नागा । कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
 जेहि विधि होइ राम कल्याण । देहु दया करे सो वरदान ॥
 गावहिं मंगल कोकिलबयनी । विधुबदनी मृगसावकनयनी ॥

दो०—राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरपे नर नारि ।

लगे सुमंगल सजन सब विधि अनुकूल विचारि ॥ ८ ॥

तब नरनाहें बसिष्ठु बोलाए । रामधाम सिख देन पठाए ॥

गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । द्वार आइ पद नायउ माथा ॥
 सादर अरघ देइ घर आने । सोरह भाँति पूजि सनमाने ॥
 गद्दे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल कर जोरी ॥
 सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ॥
 तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । पठइअ काज नाथ असि नीती ॥
 प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु यहु गेहू ॥
 आयसु होइ सो करौ गोसाई । सेवकु लहइ स्वामि सेवकाई ॥
 दो०—सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस ।

राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवसंस ॥ ९ ॥

वरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
 भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुम्हहि जुवराजू ॥
 राम करहु सब संजम आजू । जौ बिधि कुसल निबाहै काजू ॥
 गुरु सिख देइ राय पहिँ गयऊ । राम हृदयँ अस विस्मय भयऊ ॥
 जनमे एक संग सब भाई । भोजन सयन केलि लरिकाई ॥
 करनबेध उपवीत बिआहा । संग संग सब भए उछाहा ॥
 विमल बंस यहु अनुचित एकू । बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू ॥
 प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगत मन कै कुटिलाई ॥
 दो०—तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद ।

सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद ॥ १० ॥

बाजहिं बाजने बिबिध बिधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ॥

भरत आगमनु सकल मनावहिं । आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं ॥
 हाट बाट घर गलीं अयाई । कहहिं परसपर लोग लोगाई ॥
 कालि लगन भलि केतिक बारा । पूजिहि विधि अभिलाषु हमारा ॥
 कनक सिंघासन सीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चेता ॥
 सकल कहहिं कब होइहि काली । विधन मनावहिं देव कुचाली ॥
 तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा । चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥
 सारद बोलि विनय सुर करहीं । बारहिं बार पाय लै परहीं ॥

दो०—विपति हमारि बिलोकि यदि मातु करिअ सोइ आजु ।

रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥ ११ ॥

सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती । भइउँ सरोज विपिन हिमराती ॥
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं घोरिउ खोरी ॥
 विसमय हरष रहित रघुराज । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥
 जीव करम बस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ॥
 बार बार गदि चरन सँकोची । चली विचारि विबुध मति पोची ॥
 ऊँच निवासु नीचि करतूती । देखि न सकाहिं पराइ विभूती ॥
 आगिल काजु विचारि बहोरी । करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी ॥
 हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई । जनु ग्रह दसा दुसइ दुखदाई ॥

दो०—नामु मंधरा मंदमति चेरी कैफइ केरि ।

अऊंस पेढारी ताहि करि गई गिरा मति केरि ॥ १२ ॥

दीख मंधरा नगर बनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा ॥

पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । राम तिलकु सुनि भा उर द
 करइ विचार कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजु कवनि विधि रा
 देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गवँ तकइ लेउँ केहि
 भरत मातु पहिँ गइ विलखानी । का अनमनि हसि कह हँसि
 ऊतर देइ न लेइ उसासू । नारि चरित करि दारइ अ
 हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें । दीन्ह लखन सिख अस म
 तवहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ स्वास कारि जनु स
 दो०—सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु ।

लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥

कत सिख देइ हमहि कोउ माई । गालु करव केहि कर बल
 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देइ जु
 भयउ कौसिलहि विधि अति दाहिन । देखत गरव रहत उर
 देखहु कस न जाइ मय सोभा । जो अवलोकि मोर मनु छे
 पूतु विदेस न सोचु तुम्हारें । जानति हहु वम नाहु ह
 नीद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चत
 सुनि प्रिय वचन मलिन मनु जानी । झुकी रानि अवरहु उ
 पुनि अस कवहुँ कहसि वरफोरी । तव धरि जीभ कढ़ावउँ
 दो०—काने खोरे क्यरे कुटिल कुचाली जानि ।

तिय बिसेपि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ॥

प्रियवादिनि सिख दीन्हउँ तोही । सपनेहुँ तो पर कोपु न

सुदिन सुमंगल दायकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥
 जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति मुदाई ॥
 राम तिलकु जौ सँचेहु काली । देउँ मागु मन भावत आली ॥
 कौसल्या सम सब महतारी । रामहि सहज सुभायै पिआरी ॥
 मो पर कहि सनेहु विलेखी । मैं करि प्रीति परीछा देखी ॥
 जौ शिधि जनमु देह करि छोडू । होहु राम स्त्रिय पूत पुतोडू ॥
 प्रानतैं अधिक रामु प्रिय मोरें । निन्ह कैं तिलक छोभु कठ तोरें ॥
 दो०—भरत सपय तोहि साथ कहु परिहरि कपट दुराड ।

हरष समय विममड कामि कारन मोहि सुनाउ ॥ १५ ॥

एकहि बार आठ सब पूजी । अब कछु कहव जीम करि दूजी
 पोरै जोगु कगळ अमागा । भलेउ कहत दुख रउयेहि लागा
 कहि छठि फुरि बात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि कसई मैं भाई ॥
 हमहुँ कहवि अब ठकुरसोहाती । नाहि तमौन रहव दिनु राती ॥
 करि कुरूप शिधि परवस कीन्हा । क्या सो छुनिअ लहिअ जो दीन्हा
 कोउ नृप होउ हमहि का हानी । चेरि छादि अब होव कि रानी ॥
 जारै जोगु सुभाउ हमारा । अनमल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
 तानैं कछुक बात अनुसारी । छमिअ देवि यहि चूक हमारी ॥

दो०—गड कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि ।

सुरमाया बस बैसिनिहि सुहृद जानि पतिभानि ॥ १६ ॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओरी । स्वरी गान मृगी अनु मोही ॥

तसि मति फिरी अहइ जसि भात्री । रहसी चेरि घात जनु फात्री ॥
 तुम्हु पूँछहु मैं कहत डेराऊँ । धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥
 सजि प्रतीति बहुविधि गढ़ि छोली । अवध साढ़साती तव बोली ॥
 प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥
 रहा प्रथम अब ते दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते ॥
 भानुकमल कुल पोपनिहारा । विनु जल जारि करइ सोइ छारा ॥
 जरि तुम्हारि चह सवति उखारी । रूँधहु करि उपाउ बर बारी ॥
 दो०—तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ ।

मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥ १७ ॥

चतुर गँभीर राम महतारी । ब्रीचु पाइ निज बात सँवारी ॥
 पठए भरतु भूप ननिअउरें । राम मातु मत जानव रउरें ॥
 सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें । गरवित भरत मातु बल पीकें ॥
 सालु तुम्हार कौसिलहि माई । कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥
 राजहि तुम्ह पर प्रेमु विसेधी । सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी ॥
 रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई । राम तिलक हित लगन धराई ॥
 यह कुल उचित राम कहँ टीका । सवहि सोहाइ मोहि सुठि नीका ॥
 आगिलि बात समुझि डरु मोही । देउ देउ फिरि सो फलु ओही ॥
 दो०—रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हैसि कपट प्रबोधु ।

कहिसि कथा सत सवति कै जेहि विधि बाढ़ विरोधु ॥ १८ ॥

भावी बस प्रतीति उर आई । पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥

का पूँछहु तुम्ह अवहुँ न जाना । निज हित अनहित पमु पहिचाना
 भयउ पाखु दिन सजत समाजू । तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
 खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे । सत्य कहै नहि दोषु हमारे ॥
 जौ असत्य कछु कह्य बनाई । तौ विधिन्देदहि हमहि सजाई ॥
 रामहि तिलक कालि जौ भयऊ । तुम्ह कहूँ चिपात वीजु विधि बयऊ
 देख खेंचाइ कहउँ बलु भापी । भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥
 जौ सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥
 दो०—कहूँ बिनतहि दीन्ह दुसु तुम्हहि कौसिलौ देय ।

भरतु बंदिगृह सेइइहिं लखनु राम के नेव ॥ १९ ॥

कैकयसुता सुनत कटु यानी । कहिन सकइ कछु सहमि सुखानी
 तन पसेउ कदली जिमे काँपी । कुबरी दसन जीभ तय चाँपी ॥
 कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिनि रानी ॥
 फिता करमु प्रिय लागि कुचाली । बकिहि सराइ मानि मराली ॥
 मुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि ओखि नित परकइ मोरी
 दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । कहउँ न तोहि मोह बस अपने ॥
 काइ करौ सखि सूध सुभाऊ । दाहिन याम न जानउँ काऊ ॥

दो०—अपने चलत न आहु छगि अनभल काहुक कीन्ह ।

बेहिं भव एकहि बार मोहि दैअ दुसह दुसु दीन्ह ॥ २० ॥

नैर जनमु मरव बर जाई । जिअत न करचि सवति सेवकाई
 अरि बस दैउ जिआवत जाही । मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥

दीन वचन कह बहुविधि रानी । सुनि कुवरीं तियमाया ठानी ॥
 अस कस कहहु मानि मन ऊना । मुखु सोहागु तुम्ह कहँ दिन दूना
 जेहि राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फल परिपाका ॥
 जय तें कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न वासर नीद न जामिनि ॥
 पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहिं यह साँची ॥
 भामिनि करहु त कहौं उपाऊ । है तुम्हरीं सेवा वस राऊ ॥
 दो०—परउँ कूप तुअ वचन पर सकउँ पृत पति त्यागि ।

कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करव हित लागि ॥ २१ ॥
 कुवरीं करि कबुली कैकेई । कपट दुरी उर पाहन टेई ॥
 लखइ न रानि निकट दुखु कैसैं । चरइ हरित तिन बलिपसु जैसैं ॥
 सुनत वात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
 कहइ चेरि सुधि अहइ कि नार्हीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पार्हीं
 दुइ वरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
 सुतहि राजु रामहि वनवास । देहु लेहु सब सवति हुलास ॥
 भूपति राम सपथ जव करई । तव मागेहु जेहि वचनु न टरई ॥
 होइ अकाजु आजु निसि वीतैं । वचनु मोर प्रिय मानेहु जी तैं ॥
 दो०—बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु ।

काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥
 कुवरीहि रानि प्रानप्रिय जानी । वार वार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
 तोहि सम हित न मोर संसार । बहे जात कह भइसि अघार ॥

वीं विधि पुरव मनोरथु कारी । कर्ग तोहि चय पुनरि आनी ॥
 बहुविधि चेतिहि आदर देद । कोरभयन गवनी कैकेद ॥
 विपनि वीजु नरना स्तु नेगी । पुँद मर दुर्गने जैरद नेगी ॥
 पाइ कपट जलु अंकुर जामा । नर दोउ दल दुग फल परिनामा ॥
 कोन समातु मानि मनु मोद । रातु करत मित्र कुमति विगोद ॥
 राउर नगर कोलदलु होद । यह कुचालि कटु जानन कोद ॥
 दो०-प्रमुदित पुर नर नारि सब मजहिं भुमंगरुधार ।

एक प्रविमहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरवार ॥ २२ ॥

वाय सखा सुनि हियै हरगार्हा । मिलि दम पाँच राम पहिं जाहा ॥
 प्रभु आदरहिं प्रभु पहिचानी । पुँछहिं कुमन गेम मृदु बानी ॥
 जिहिं भवन प्रिय आयसु पाई । करत पगमार गम दड़ाई ॥
 को रघुवीर मरिस संसारा । मीलु मनेहु निवाइनहार ॥
 जेहिं जेहिं जोनि करम वम भ्रमही । तहँ नहँ ईमु देउ यह हमही ॥
 मेरक हम स्वामी सिथनाह । होउ नात यह आर निवाह ॥
 अस अभिलाषु नगर सब काहू । कैकयमुता हृदयै अति दाह ॥
 को न कुगंगति पाइ नमाई । रहद न नीच मतं चतुराई ॥
 दो०-मैंस समय मानंद नृपु गयउ कैकई गेह ।

गवनु निदुरता निकट किय जसु धरि देह मनेह ॥ २४ ॥

कोरभयन मुनि मकुचेउ राऊ । भय वस अगहड़ परद न पाऊ ॥
 सुपति वमद पाहँवत जाके । नरपति मकुल रगहिं रग ताके ॥

सो चुनि तिय रिस गयउ सुखाई । देखहु काम प्रताप बढ़ाई ॥
 सूल कुलिस असि अँगवनिहारे । ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥
 सभय नरेसु प्रिया पहिँ गयऊ । देखि दसा दुखु दारुन भयऊ ॥
 भूमि स्यन पटु मोट पुराना । दिए डारि तन भूषन नाना ॥
 कुमतिहि कसि कुबेपता फात्री । अनअहिवातु सूच जनु भात्री ॥
 जाइ निकट नृपु कहू मृदु बानी । प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छं०—केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवारई ।
 मानहुँ सरोष भुअंग भामिनि जियम भाँति निहारई ॥
 दोड दासना रसना दसन दर सरम ठाहरु देखई ।
 गुलसी नृपति भवतव्यता यस काम कौतुक लेखई ॥

सो०—पारदार कहू राउ सुमुखि सुलोचनि पिङ्गवचनि ।

कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज-छोष कर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केहू कीन्हा । फेहि दुइ सिर केहि जमु चढ़ लीन्हा ॥
 कहु कोऊ रंकहि करौ नरेसू । कहु केहि नृपहि निकासौ देखू ॥
 सकळें तोर अरि अमरउ मारी । काह कीट वपुरे नर नारी ॥
 जानसि मोर सुभाउ बरोरू । मनु तव आनन चद चकोरू ॥
 प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें । परिजन प्रजा सकल बस तोरें ।
 जौं कछु कहौं फपटु करि तोही । भामिनि राम सपथ सत मोही ।
 विहसि मागु मनभावति बाता । भूषन सजहि मनोहर गाता ।
 घरी कुघरी समुझि जियै देखू । वेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू ॥

दो०-यह सुनि मन गुनि सपथ यदि बिहसि उठी मतिमंद ।

भूपन सजति बिलोकि मृगु मनहुँ किरात्तिनि फंद ॥२९॥

पुनि कह राउ मुहद जियँ जानी । प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥

मामिनि भयउ तोर मनमाया । घर घर नगर अनंद बधाया ॥

रामहि देखै कालि जुवराजू । सजहि मुखोचनि मंगल साजू ॥

दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरु । जनु छुइ गयउ पाक बरतोरु ॥

ऐकठ पीर बिहसि तेहि गोई । चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई ॥

छलहि न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरु पढ़ाई ॥

जयनि नीति निपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥

कपट सनेहु बड़ाइ बहोरी । बोली बिहसि नयन मुहु मोरी ॥

दो०-भागु भागु पै कहहु प्रिय कबहुँ न देहु न लेहु ।

देन कहहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥२०॥

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाव परम प्रिय अहई ॥

धाती राखि न मागिहु काऊ । बिसरि गयउ मोहि भोर सुमाऊ ॥

छठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू । दुइ कै चारि मागि मकु लेहू ॥

खुकुल रीति सदा चलि आई । प्राण जाहुँ यह यचनु न जाई ॥

नहि असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होई कि कोटिक गुंजा ॥

सत्यमूल तव सुकृत सुहाए । वेद पुरान बिदित मनु गाए ॥

तेहि पर राम सपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रखुआई ॥

पात दड़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमति कुबिहग कुलह जनु खोली ॥

१००—भूप मनोरथ सुभग वनु सुख सुविहंग समाजु ।

भिहिनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु ॥ २८ ॥

मासपारायण, तेरहवाँ विश्राम

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक वर भरतहि टीका ॥
 मागउँ दूसर वर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
 तापस बेप विसेपि उदासी । चौदह बरिस रामु बनबासी ॥
 सुनि मृदु वचन भूप हियँ सोक । ससि कर छुअत विकल जिमि कोकू
 गयउ सहमि नहिँ कछु कहि आवा । जनु सचान बन झपटेउ लावा
 विश्वरन भयउ निपट नरपान् । दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥
 मार्यँ हाथ मूदि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
 मोर मनोरथु सुरतरु फूला । फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥
 अवध उजारि कीन्हि कैकेई । दीन्हिसि अचल विपति कै नेई ॥

दो०—कवनेँ अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास ।

जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास ॥ २९ ॥

एहि विधि राउ मनहिँ मन झाँखा । देखि कुभाँति कुमति मन माखा
 भरतु कि राउर पृत न होंही । आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥
 जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें । कहे न बोलहु बचनु सँभारें ॥
 देहु उतरु अनु करहु कि नहिँ । सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥
 देन कहेहु अय जनि वरु देहू । तजहु सत्य जग अपजसु लेहू ॥
 सत्य सराहि कहेहु वरु देना । जानेहु लेइहि मागि चवेना ॥

तुहँ सराहसि करसि सनेहू । अत्र सुनि मोहि भयउ संदेहू ॥
 जासु सुभाउ अरिहि अनुकूल । सो किमि करिहि मातु प्रतिकूल ॥
 दो०—प्रिया हास रिस परिहरहि मागु विचारि विवेकु ।

जेहिं देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ ३२ ॥

जिए मीन वरु वारि विहीना । मनि विनु फनिकु जिए दुख दीना
 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम विनु नाहीं ॥
 समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना । जीवनु राम दरस आधीना ॥
 सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई । मनहुँ अनल आहुति घृत परई
 कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥
 देहु किलेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥
 रामु साधु तुम्ह साधु सयाने । राममातु भलि सब पहिचाने ॥
 जस कौसिलौं मोर भल ताका । तस फलु उन्हहि देउँ करि साका

दो०—होत प्रातु मुनिवेष धरि जौं न रामु बन जाहिं ।

मोर मरनु राउर अजसु नृप समुझिअ मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी
 पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जोई
 दोउ वर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कुचरी बचन प्रचारा
 ढाहत भूपरूप तरु मूला । चली विपति वारिधि अनुकूल
 लखी नरेस बात फुरि साँची । तिय भिस मीचु सीस पर नार्च
 गहि पद विनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठ

जब लगि जिऔं कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोर
फिरि पछितैहसि अंत अभागी। मारसि गाइ नहारु लागी।
दो०-परेउ राउ कहि कोटि विधि काहे करसि निदानु ।

कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु ॥ २६ ॥

राम राम रट विकल भुआलू। जनु विनु पंख विहंग बेहालू ॥
हृदयँ मनाव भोरु जनि होई। रामहि जाइ कहै जनि कोई ॥
उदउ फरहु जनि रवि रघुकुल गुर। अवध बिलोकि सूल होइहि उर
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई। उभय अवधि विधिरची बनाई ॥
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा। वीना बेनु संख धुनि द्वारा ॥
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें। सहगामिनिहि विभूषन जैसें ॥
तेहि निसि नीद परी नहिं काहू। राम दरस लालसा उछाहू ॥
दो०-द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रवि देखि ।

जागेउ अजहुँ न अवधयति कारनु कवनु बिसेषि ॥ २७ ॥

पछिले पहर भूपु नित जागा। आजु हमहि बड़ अचरजु लागा।
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई। कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥
गए सुमंत्र तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं ॥
भाइ खाइ जनु जाइ न हेरा। मानहुँ विपति विषाद बसेरा ॥
पूछें कोउ न ऊतरु देई। गए जेहिं भवन भूप कैकेई ॥
कहि जयजीव बैठ सिरु नाई। देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥

सोच विकल विवरन महि पोक । मानहुँ कमल गुण गहि ॥
सचिउ समीत सकइ नहि पूछी । बोली असुभ भरी सुन ॥
दो०-परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीशु ॥

रामु रामु राँट भोक किय कहइ न मरसु महीशु ॥ २८ ॥

आनहु रामहि बेगि बोलाई । समाचार तब पूछेहु आई ॥
चलेउ सुमंत्र राय द्रव जानी । लखी कुचालि कीन्हि कहु गनी ॥
सोच विकल भग परइ न गाऊ । रामहि बोलि कहिहि का गाऊ ॥
उर धरि धीरनु गपउ दुआरें । पूछहि सकल देखि मनु मारें ॥
समाधानु करि सो सबही का । गपउ जहाँ दिनकर कुल दीका ॥
राम सुमंत्रहि आवत देखा । आदर कीन्हि रिता सम संग ॥
निरखि बदन कहि भूप राजाई । खुल्लसीगहि चलेउ लैवाई ॥
रामु कुभाँति सचिप संग जाहीं । देखि लोग जई नई बिरगवाई ॥
दो०-जाइ दीख रघुसंसभनि नरपति निरट कृपायु ॥

साहि परोउ छलि सिंधिनिहि मनहुँ इद गजगटु ॥ २९ ॥

सखहि अघर जइ सखु अपू । मनहुँ दैन नैनन नुअपू ॥
सकय समीप दीखि कैकेई । मानहुँ मनु बनी गनि लेई ॥
करुनामय मृदु राम मुभाऊ । प्रयन दीख दूनु दुख न गाऊ ॥
तदधि धार धरि समउ विचागी । पूछी मनु बदन ॥
मोहि कहु मानु तात दुख कागन । करिअ राजा जेहे ॥
मुनहु राम सखु कारनु एहु । राजाहे दुख ॥

देन कहेन्हि मोहि दुइ वरदाना । मागेउ जो कछु मोहि सोहाना ॥
 सो सुनि भयउ भूप उर सोचू । छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥
 दो०—सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु ।

सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु ॥४०॥
 निधरक बैठि कहइ कटु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी
 जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना
 जनु कठोरपनु धरें सरीरु । सिखइ धनुषविद्या वर वीरु ॥
 सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । बैठि मनहुँ तनु धरि निडुराई ॥
 मन मुसुकाइ भानुकुल भानू । रामु सहज आनंद निधानू ॥
 बोले बचन विगत सब दूषन । मृदु मंजुल जनु बाग विभूषन ॥
 सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥
 तनय मातु पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ॥

दो०—मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर ।
 तेहि महुँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर ॥४१॥

भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू । बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आ
 जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समा
 सेवहिं अरँडु कल्पतरु त्यागी । परिहरि अमृत लेहिं बिषु मार्ग
 तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं । देखु बिचारि मातु मन माहीं
 अंघ एक दुखु मोहि बिसेषी । निपट विकल नरनायकु देख
 थोरिहिं बात पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहि महता

राउ धीर गुन उदधि अगाधू । भी मोहिने कहु बड़ अपराधू ॥
जातें मोहि न कहत कहु राऊ । मोरि सपथ नोहि कहु सतिभाऊ ॥

दो०—सहज सरल रघुबर वचन कुमति कुटिल करि जान ।

खलहू जोंक जल यक्रगति जघपि सलिलु ममान ॥४२॥

रहभी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेहु जनार्द ॥
सपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर में कहु जाना ॥
तुम्ह अपराध जोगु नहि ताता । जननी जनक वधु सुखदाता ॥
राम सत्य सजु जो कहु कहहू । तुम्ह पिनु मातु वचन रत अरहू ॥
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । चौधेपन जेहि अजनु न होई ॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हें । उचित न तामु निरादरु कीन्हें ॥
लागाहिं कुमुख वचन सुभ कैसे । मगहैं गथादिक तीरथ जैम ॥
रामहि मातु वचन सब भाए । जिमि मुरसरि गत सलिल मुहाए ॥

दो०—गह मुखठा रामहि सुमिरि नृप फिरि करबट लोन्ह ।

सचिव राम भागमन कहि विनय समय सम कीन्ह ॥४३॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे । धरि धीरनु तव नयन उधारे ॥
सचिवैं सँभारि राउ बैठारे । चरन परत नृप रामु निहारि ॥
लिए सनेह विकल उर लाई । गै मनि मनहुं फनिक फिरि पाई ॥
रामहि चितह रहेउ नरनाहू । चला विलोचन बारि प्रवाहू ॥
छोक बिबस कहु कहे न पारा । हृदयें लगावत बारि ॥
विधिहि मनाव राउ मन मारी । जेहि रघुनाथ न

सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । विनती सुनहु सदासिव मोरी ॥
आसुतोप तुम्ह अवढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दो०—तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु ।

वचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥४४॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौं बर सुरपुर जाऊ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन ओट रामु जनिहौंही ॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेमवस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी
देस काल अवसर अनुसारी । बोले वचन विनीत बिचारी ॥
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई । अनुचित छमव जानि लरिकाई ॥
अति लघु बात लागि दुखु पावा । काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा
देखि गोसाईंहि पूँछिउँ माता । सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ॥
दो०—मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात ।

आयसु देइअ हरपि हियँ कहि पुलकै प्रभु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ताकें । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें ॥
आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई ॥
विदा मातु सन आवउँ मागी । चलिहउँ बनहि बहुरि पग लागी
अस कहि राम गवनु तत्र कीन्हा । भूप सोक बस उतह न दीन्हा ॥
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ॥

मुनि भए विकल सकल नर नारी । बेलि बिटप जिमि देखि दबारी
जो जहँ मुनइ धुनइ मिर मोई । वइ विषादु नहिं धीरजु होई ॥

दो०—सुख सुखाहिं लोचन म्वहिं मोकुन हृदयै समाइ ।

मनहुँ करन रम कटकई उतरी अवध बजाइ ॥४६॥

मिलेहि माझ विधि यात देगारी । जहँ तहँ देहिं कैकहि गारी ॥

एहि पाणिनिहि वृक्ष का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥

निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि मुधा विपु चाहत चीखा ॥

कुटिल कटोर कुबुडि अभागी । भइ खुबस बेनु बन आगी ॥

मालव बैठि पेहु एहिं काया । सुख महुँ सोक ठाडु धरि ठाया ॥

सदा सनु एहिं प्रान समाना । कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥

सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ । मय विधि अगहु अगाध दुराऊ

निज प्रतिविंबु बरकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दो०—काह न पावकु जारि सक का न समुद समाइ ।

का न करै अबला प्रबल बेहि जग कालु न खाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ विधि काइ सुनाया । का देखाइ चह काइ देखाया ॥

एक कहहिं भल भूप न कीन्हा । बरु बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा

जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु । अबला बिबस ग्यानु गुनु गा गनु

एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने ॥

सिधि दधीचि हरिचंद कहानी । एक एक सन का ॥

एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास भा

कान मूदि कर रद गहि जीहा । एक कहहिं यह बात अलीहा ॥
 सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहूँ प्रानपिआरे ॥
 दो०—चंदु चवै बर अनल कन सुधा होइ विषतूल ।

सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल ॥ ४८ ॥

एक विधातहि दूषनु देहीं । सुधा देखाइ दीन्ह विपु जेहीं ॥
 खरभरु नगर सोचु सब काहू । दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥
 विप्रबधू कुलमान्य जटेरी । जे प्रिय परम कैकई केरी ॥
 लगीं देन सिख सीलु सराही । बचन बानसम लागहिं ताही ॥
 भरतु न मोहि प्रिय राम समाना । सदा कहहु यहु सबु जगु जाना ॥
 करहु राम पर सहज सनेहू । केहि अपराध आजु बन देहू ॥
 कबहुँ न कियहु सवति आरेसू । प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ॥
 कौसल्याँ अब काह बिगारा । तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा ॥

दो०—सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम ।
 राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जिझहि विनु राम ॥ ४९ ॥

अस विचारि उर छाड़हु कोहू । सोक कलंक कोठि जनि होहू ॥
 भरतहि अवसि देहु जुवराजू । कानन काह राम कर काज ॥
 नाहिन रामु राज के भूखे । धरम धुरीन विषय रस रुखे ॥
 गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू । नृप सन अस बर दूसर ले ॥
 जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे । नहिं लागिहि कछु हाथ तुमारे ॥
 जौं परिहास कीन्हि कछु होई । तौ कहि प्रगट जनावहु ॥

राम सरिस मुन कानन जोगू । काह कहिहि मुनि तुम्ह कहूँ लोगू ॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई । जेहि विधि सोकु कलंकु नसाई ॥

छं०—जेहि भौंति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।

हडि केरु रामहि जात बन जनि मात दूसरि चालही ॥

जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु पंच बिनु जिमि जामिनी ।

तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धीं जियै भामिनी ॥

सो०—सखिन्ह सिखावनु दीन्ह मुनत मधुर परिनाम हित ।

तेहँ कसु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी क्वरी ॥ ५० ॥

उतर न देइ दुसह रिस रुखी । मृगिन्ह चितव जनु बाधिनि भूखी

ब्याधि अक्षधि जानि तिन्ह त्यागी । चलीं कहत मतिमंद अमागी

राजु करत यह दैअं विगोई । कीन्हैसि अस जस करइ न कोई ॥

एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारी । देहिं कुचालिहि कोटिक गारीं ॥

जरहिं विषम जर लेहिं उसासा । कबनि राम बिनु जीवन आसा ॥

विपुल वियोग प्रजा अकुलानी । जनु जलचर गन सूखत पानी ॥

अति विषाद बस लोग लोगाई । गए मातु पहिं रामु गोसाई ॥

मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । मिटा सोचु जनि राखै राऊ ॥

दो०—नव गयंदु रघुवीर मनु राजु अछान समान ।

छूट जानि बन गवनु मुनि उर अनंदु अधिकान ॥ ५१ ॥

खकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद न

दीन्हि असीसलाइ उर लीन्है । भूपन बसन नि

बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
 गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । खवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥
 प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
 सादर सुंदर बदनु निहारी । बोली मधुर वचन महतारी ॥
 कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिँ लगन मुद मंगलकारी ॥
 सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई । जनम लाभ कह अवधि अघाई ॥

दो०—जेहि चाहत नर नारि सय अति आरत एहि भाँति ।
 जिमि चातक चातकि तृपित वृष्टि सरद रितु स्वाति ॥ ५२ ॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
 पितु समीप तत्र जाएहु भैया । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥
 मातु वचन सुनि अति अनुकूल । जनु सनेह सुरतर के फूल ॥
 सुख मकरंद भरे श्रियमूल । निरखि राम मनु भँवर न भूल ॥
 धरम धुरीन धरम गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
 पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू । जहँ सय भाँति मोर बड़ काजू ॥
 आयसु देहि मुदित मन माता । जेहिँ मुद मंगल कानन जाता ॥
 जनि सनेह बस डरपसि भोरें । आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

दो०—बरष चारिदस छिपिन बसि करि पितु वचन प्रमान ।
 आहू पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥ ५३ ॥

वचन विनीत मधुर रघुवर के । सर सम लगे मातु उर करके
 सहमि सुखि सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ॥

कहि न जाइ कथु हृदय बिषादू । मनहुँ मृगी मुनि केहरि नादू ॥
 नयन सजल तन धर धर कौंसी । माजहि खाइ भोजन जनु मारी ॥
 धरि धीरबु मुन बदन निहारी । गदगद बचन कहति महतारी ॥
 तात पितरि तुन्द प्राननिआरे । देखि मुदित नित चरित तुन्हारे ॥
 राजु देन कहुँ नुन दिन काधा । कहेउ जान बन केहिँ अन्तराधा ॥
 तात मुनावहु मोहि निदानू । को दिनकर कुल भयउ कृतानू ॥
 दो०—निरखि रत्न रत्न मन्त्रिबसुत कारनु कहेउ बुझाई ।

मुनि प्रसंगु रहि मूक जिनि दस्त बरनि नहिं आइ ॥ ५३ ॥

* रामचरितमानस *

पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥
 अंतहुँ उचित नृपहि बनवासू । वय बिलोकि हियँ होइ हराँसू ॥
 बड़भागी बन अवध अभागी । जो रघुवंसतिलक तुम्ह त्यागी ॥
 जौ सुत कहौ संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ॥
 पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
 ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ ॥

दो०—यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु वढ़ाइ ।
 मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥ ५६ ॥
 देव पितर सब तुम्हहि गोसाई । राखहुँ पलक नयन की नाई ॥
 अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ॥
 मस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जिअत जेहि भेंटहु आई ॥
 ग्राहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥
 कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु त्रिपरीता ॥
 बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥
 दारुन दुसह दाहु उर न्यापा । बरनि न जाहि बिलाप कलापा ॥
 राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई ॥
 दो०—समाझइ तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
 जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ ५७ ॥
 दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलाइ ॥
 बैठ नमितमुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनी ॥

कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ॥
 सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती
 सुरसर सुभग बनज बन चारी । डावर जोगु कि हंसकुमारी ॥
 अस विचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥
 जौं सिय भवन रहै कह अंबा । मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥
 सुनि रघुवीर मातु प्रिय बानी । सील सनेह सुधाँ जनु सानी ॥
 दो०—कहि प्रिय वचन विवेकमय कोन्हि मातु परितोष ।

लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि विपिन गुन दोष ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौदहवाँ विश्राम

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥
 राजकुमारि सिखावनु सुनहू । आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू
 आपन मोर नीक जौं चहहू । वचनु हमार मानि गृह रहहू ॥

मोर सासु सेवकाई । सब विधि भामिनि भवन भलाई
 एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ॥
 जव जव मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम विकल मति भोरी ॥
 तव तव तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥
 कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥

दो०—गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ दिनहिं कलेस ।

हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस ॥ ६१ ॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरव सुनु सुमुखि सयानी ॥

दिवस जात नहिं लागिहि बारा । सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ॥
 जौ हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउव परिनामा ॥
 काननु कठिन भयंकर भारी । घोर घामु हिम थारि बयारी ॥
 कुस कंटक मग काँकर नाना । चल्य पयादेहिं विनु पदवाना ॥
 चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
 कंदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
 मालु बाघ बृक केहरि नागा । करहिं नाद मुनि धीरजु भागा ॥

दो०—भूमि सयन पलकल बसन असनु कंद फल मूल ।

ते कि सदा सब दिन मिलहिं सवुइ समय अनुमूल ॥ ६२ ॥

नर अहार रजनीचर चरही । कयटबेग बिधि कोटिक करही ॥
 लागइ अति पहार कर पानी । बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी
 ब्याल कराल बिहग बन घोरा । निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥
 डरपहिं धीर गहन मुधि आएँ । मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ ॥
 हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू । मुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥
 मानस ललित सुधौं प्रतिपाली । जिअइ कि लयन पयोधि मराली
 नय रसाल बन बिहरनसीला । सोइ कि कोकिल बिपिन करीला
 रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । चदवदनि दुखु कानन भारी ॥

दो०—सइअ सुहृद गुर स्वामि सिर जो न करइ सिर मानि ।

सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥ ६३ ॥

मुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । लोचन

सीतल सिख दाहक भइ कैसैं । चकइहि सरद चंद निशि जैसैं ॥
 उतर न आव विकल वैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही
 बरवस रोकि विलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥
 लागि सासु पग कह कर जोरी । छमवि देवि बड़ि अविनय मोरी ॥
 दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥
 मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय वियोग सम दुखु जग नाहीं
 दो०—प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।

तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
 सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
 जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते
 तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सत्रु सोक समाजू ॥
 भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संतारू ॥
 प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहूँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं
 जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
 नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद विमल बिधु बदन निहारें ॥

दो०—खग नृग परिजन नगरु वनु बलकल विमल दुकूल ।

नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ॥६५॥

वनदेवीं वनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ॥
 कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ॥

कद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस गहारू ॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रहिहउं मुदित दिवस जिमि कोकी
वन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय दियाद पारिताप घनेरे ॥
प्रभु वियोग लखलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना
अस जियें जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ सग मोहि छाड़िअ जनि
बिनती बहुत करौ का स्वामी । कइनामय उर अंतरजामी ॥
दो०—राखिअ भवध जो अवधि लगि रहत न जनिअहिं मान ।

दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ॥६६॥
गोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
सगहि भौति पिय सेवा करिहौ । मारग जनिन सकल अम हरिहौ ॥
पाय पखारि बैठि तरु छाहीं । करिहउं राउ मुदित मनु माहीं ॥
धम कन सहित स्याम तनु देखें । कहें दुख समउ प्राप्तपति पैखें ॥
सम महि तून तरुपलव डासी । पाय पलोटीहि सब निसि दासी ॥
चार बार मृदु मूरति जोड़ी । लगिदि ताउ ब्यारि न मोड़ी ॥
को प्रभु सँग मोहि चितबनिहारा । सिंधवधुहि जिमि ससक सिआरा
सैं सुकुमारि नाथ वन जोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहूँ भोगू
दो०—ऐनेउ बचन कठोर सुनि जौ न हृदउ बिलपान ।

‘सौ प्रभु विषम वियोग दुख सहिहहिं पावैं मान ॥ ६७ ॥

अस कहि सीर विकल भद मारी । बचन वियोगु न सकी सँमारी ॥
देखि दस रघुगति जियें जाना । हठि राखें नहिं राखिदि माना ॥

कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा । परिहरि सोचु चलहु वन साथी ॥
 नहिं विषाद कर अवसर आजू । बेगि करहु वन गवन समाजू ॥
 कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिष पाई ॥
 बेगि प्रजा दुख भेटव आई । जननी निठुर विसरि जनि जाई ॥
 फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी । देखिहउँ नयन मनोहर जोरी
 सुदिन सुधरी तात कव होइहि । जननी जिअत वदन विधु जोइहि
 दो०-बहुरि वच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुवर तात ।

कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात ॥ ६८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । वचनु न आव विकल भइ भारी
 राम प्रबोधु कीन्ह विधि नाना । समउ सनेहु न जाइ बखाना ॥
 तव जानकी सासु पग लागी । सुनिअ माय मैं परम अभागी ॥
 सेवा समय दैअँ वनु दीन्हा । मोर मनोरथु सफल न कीन्हा ॥
 तजव छोभु जनि छाड़िअ छोहू । करमु कठिन कछु दोसु न मोहू ॥
 सुनि सिय वचन सासु अकुलानी । दसा कवनि विधि कहौ बखानी
 बारहिं बार लाइ उर लीन्ही । धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही
 अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । जब लगि गंग जमुन जल धारा ॥
 दो०-सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार ।

चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार ॥ ६९ ॥

समाचार जब लछिमन पाए । व्याकुल बिलख वदन उठि धाए ॥
 कंप पुलक तनु नयन सनीरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥

कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े । मीनु दीन जनु जल तें काढ़े ॥
 सोचु हृदयें विधि का होनिहारा । सखु सुखु सुकृनु सिरान हमारा ॥
 मो कहूँ काह कह्य रखुनाथा । रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा ॥
 राम बिलोकि बंधु कर, जोरें । देह गेह सब सन नृनु तोरें ॥
 बोले बचनु राम नय नागर । सील सनेह सरल सुख सागर ॥
 तात प्रेम बस जनि कदराहू । समुझि हृदयें परिनाम उछाहू ॥
 दो०—मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायें ।

लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर ननरु जनमु जग जायें ॥ ७० ॥

अस जियें जानि मुनहु सिख भाई । करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥
 भयन भरतु रिपुसूदन नारी । राउ बृद्ध मम दुखु मन मारी ॥
 मैं धन जाउँ तुम्हहि लेइ साया । होइ सबहि विधि अवध अनाथा ॥
 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू । सब कहूँ परइ दुसह दुख भारू ॥
 रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
 जामु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अयसि नरक अधिकारी ॥
 रहहु तात असि नीति बिचारी । मुनत लखनु भए ब्याकुल भारी ॥
 सिअरें बचन सुखि गए कैसें । परसत बुझिन तामरसु जैसें ॥

दो०—उतरु न भावत प्रेम बस गहे चरन अकुलाह ।

नाथ दामु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ ॥ ७१ ॥

दांदि मोहि सिख नीकि गोसाई । लागि अगम अपनी कदराई ॥
 नरवर धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहूँ ते अधिकारी ॥

मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ॥
 गुर पितु मातु न जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥
 जहँ लगि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥
 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥
 धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ॥
 मन क्रम बचन चरन रत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥
 दो०—करुणासिंधु सुबंधु के सुनि मृदु बचन विनीत ।

समुझाए उर लाह प्रभु जानि सनेहँ सभोत ॥ ७२ ॥

मागहु विदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु वन भाई ॥
 मुदित भए सुनि रघुवर बानी । भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी ॥
 हरपित हृदयँ मातु पहिं आए । मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ॥
 जाइ जननि पग नायउ माथा । मनु खुनंदन जानकि साथी ॥
 पूँछे मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा विसेषी ॥
 गई सहमि सुनि बचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहु ओरा ॥
 लखन लखेउ भा अनरथ आजू । एहिं सनेह बस करव अकाजू ॥
 मागत विदा सभय सकुचाहीं । जाइ संग विधि कहिहि कि नाहीं ॥

दो०—समुझि सुमित्राँ राम सिय रूपु सुसीलु सुभाउ ।

नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥ ७३ ॥

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । सहज सुहृद बोली मृदु बानी ॥
 तात तुम्हारि मातु वैदेही । पिता रामु सब भाँति सनेही ॥

अवध तहाँ जहँ राम निवास । तहँहँ दिवसु जहँ मानु प्रकास ॥
 जौ वै सीय राम बन जाहीं । अवध तुम्हार काहु कहु नाहीं ॥
 गुर पितु मातु बंधु मुर सारै । सेइअहि सकल प्रान की नारै ॥
 राम प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सखी के ॥
 पूजनीय प्रिय परम जहाँ तैं । सब मानिअहि राम के मानैं ॥
 अस जियै जानि संग बन जाहू । लेहु तात जग जीवन लाहू ॥

श्लोक—भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाई ।

जौ तुम्हरेँ मन छादि छलु कीन्ह राम पद छारै ॥ ७४ ॥

पुत्रवती जुवती जग सोई । खुशति भगतु जासु मुनु होई ॥
 नलक शौन भलि यादि बिआनी । राम विमुख मुत तैं दिन जानी ॥
 तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं । दूसर हेनु तात कहु नाहीं ॥
 सकल मुकृत कर चढ़ पलुण्ड । राम सीय पद सहज स्नेह ॥
 राग रोष हरिषा मदु मोह । जानि सयनेहुँ इन्ह के बस होहू ॥
 सकल प्रकार विकार बिहाई । मन कम बचन करेहु सेवकाई ॥
 तुम्ह कहूँ बन सब भौंति सुपाए । संग पितु मातु राम सिय जाय ॥
 जेहि न राम बन लहहि कलेय । मुत सोइ करेहु रहर उपदेय ॥

श्लोक—उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं

पितु मातु प्रिय परिकार पुर सुख मुरनि बन विमरावहीं ॥

तुलसी प्रभुहि सिख देह आपसु दीन्ह पुनि

रति होइ अविरल भमल सिय रघुबीर पद

सो०-मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ ।

यागुरं बिषम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥ ७५ ॥

गए लखनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥
 वंदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए ॥
 कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलि बनाइ विधि बात विगारी ॥
 तन कृस मन दुखु बदन मलीने । विकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥
 कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं । जनु विनु पंगव विहग अकुलाहीं ॥
 भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरनि न जाइ विषादु अपारा ॥
 सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय वचन रामु पगु धारे ॥
 सिय समेत दोउ तनय निहारी । व्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥

दो०-सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।

बारहिं बार सनेह बस राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि विकल नरनाहू । सोक जनित उर दारुन दाहू ॥
 नाइ सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुबीर बिदा तव मागा ॥
 पितु असीस आयसु मोहि दीजै । हरप्र समय विसमउ कत कीजै ॥
 तात किएँ प्रिय प्रेम प्रमादू । जसु जग जाइ होइ अपवादू ॥
 सुनि सनेह बस उठि नरनाहूँ । बैठारे रघुपति गहि बाहूँ ॥
 सुनहु तात तुम्ह कहूँ मुनि कहहीं । रामु चराचर नायक अहहीं ॥
 सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । ईसु देइ फल हृदयँ विचारी ॥
 करइ जो करम पाव फल सोई । निगम नीति असि कह सबु कोई

दो०-और करे अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।

अति विचित्र भगवंत गति को जग जाने जोगु ॥ ७७ ॥

रायँ राम रखन हित लागी । बहुत उपाय किए छुटु त्यागी ॥
 लखी राम रख रहत न जाने । धरम धुरंधर धीर स्याने ॥
 तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही । अति हित बहुत भौंति मित्र दीन्ही
 कहियन के दुख दुखह सुनाए । सासु समुर पितु सुख समुझाए ॥
 मिय मनु राम चरन अनुरागा । घर न सुगमु बनु विपमु न लागा
 औरउ सखिँ सीय समुझाई । कहि कहि विपिन विपति अधिकारि
 सचिव नारि गुर नारि स्यानी । सहित सनेह कहहि मूढु बानी ॥
 तुम्ह कहँ तौ न दीन्ह बनवाहू । करहु जो कहहिँ मसुर गुर साहू ॥
 दो०-सिख सीतलि हित मधुर मूढु मुनि सीतहि न सोहानि ।

सरद चंद चंदिनि छात जनु चकई अकुल्यानि ॥ ७८ ॥

सीय सकुच बस उतह न देई । सो मुनि तमकि उठी कैकेई ॥
 मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगँ धरि बोली मूढु बानी ॥
 नृपहि प्रानमिय तुम्ह खुबीरा । सील सनेह न छाड़िहि भीरा ॥
 मुकुल मुजमु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिहि न काऊ
 अस विचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख मुनि सुख पावा
 भूपहि बचन बानसम लागे । करहिँ न प्रान पयान अभागे ॥
 लोग बिकल मुरुझित नरनाहू । काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥
 रामु गुरत मुनि बेधु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

दो०-सजि वन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत ।

बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग विरह दव दाढ़े ॥
 कहि प्रिय वचन सकल समुझाए । बिप्र बृंद खुबीर बोलाए ॥
 गुर सन कहि बरपासन दीन्हे । आदर दान विनय बस कीन्हे ॥
 जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
 दासी दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सौं पि बोले कर जोरी ॥
 सब कै सार सँभार गोसाईं । करवि जनक जननी की नाई ॥
 बारहिं बार जोरि जुग पानी । कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥
 सोइ सब भौंति मोर हितकारी । जेहि तैं रहै भुआल सुखारी ॥
 दो०-मातु सकल मोरे बिरहैं जेहिं न होहिं दुख दीन ।

सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रवीन ॥ ८० ॥

एहि विधि राम सबहि समुझावा । गुर पद पदुम हरपि सिरु नावा ॥
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ खुसाई ॥
 राम चलत अति भयउ विषादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥
 कुसगुन लंक अवध अति सोकू । हरष विषाद विवस सुरलोकू ॥
 गइ मुरुछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
 रामु चले वन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥
 एहि तैं कवन व्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
 पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दो०-सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।
 रथ चढ़ाइ देखराइ बनु कियेहु गएँ दिन पारि ॥ ८१ ॥
 जाँ नहिं किरहिं धीर दोउ भारी । सत्यसथ हृदमत रघुगार ॥
 तौ तुम्ह चिनय करेहु कर जोरी । पेरिअ प्रभु मिथिलेग कियेरी ॥
 जब सिय कानन देखि डेराई । कहेहु मोरि सिए अगद पारि ॥
 सासु समुर अस कहेउ मँदेग । पुत्रि किरिअ वन बहुत कहेग ॥
 पितृग्रह कबहुँ कबहुँ समुसारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ गुदागि ॥
 यहि विधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ त होइ प्रान अययथा ॥
 गहिं त मोर मरनु परिनामा । कछु न बगार भएँ विधि पाया ॥
 अस कहि मुखछि परा महि राज । रामु लावनु गिय आनि देगाऊ ॥
 ०-पाइ रजायसु नाइ सिद्ध रघु भनि बेग बनाइ ।
 गयउ जहाँ बाहेर नगर सीध गहिन दोउ भाइ ॥ ८२ ॥
 सुमंत्र नृप बचन सुनाए । करि बिनवीर्य रामु चढ़ाए ॥
 रथ सीध सहित दोउ भारी । चले हृदय अर्याह गिय नाइ ॥
 रामु लागि अवध अनाया । रिकर्य संग मय मांति गगना ॥
 कहु बहुविधि समुसावहिं । किरहिं प्रेम वन पुनि विधि ब्रतहिं ॥
 अवध मयावनि मारी । मानहुँ काव्यानि अंशवारी ॥
 तु मम दुर ना नारी । दारहिं पदहिं एक निगारी ॥
 न पंगुन अनु भूल । मुनलि मिल मरहुँ मनुगारी ॥
 विदुन बेरु कुम्हियारी । मरन मरन देखि ॥

दो०—हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर ।

पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ॥ ८३ ॥

राम वियोग विकल सत्र ठाढ़े । जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े
नगर सफल वनु गहवर भारी । खग मृग विपुल सकल नर नारी
विधि कैकई किरातिनि कीन्ही । जेहिँ दय दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही
सहि न सके रघुवर बिरहागी । चले लोग सत्र व्याकुल भागी ॥
सत्रहिँ विचार कीन्ह मन माहीं । राम लखन सिय विनु सुखु नाहीं
जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू । विनु रघुवीर अवध नहिँ काजू ॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई । सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई ॥
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही । विषय भोग बस करहिँ कि तिन्हही

दो०—बालक वृद्ध बिहाइ गृहँ लगे लोग सब साथ ।

तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमवस देखी । सद्य हृदयँ दुखु भयउ विसेषी ॥
करुनामय रघुनाथ गोसाँई । बेगि पाइअहिँ पीर पराई ॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाए । बहुविधि राम लोग समुझाए ॥
किए धरम उपदेस घनेरे । लोग प्रेम बस फिरहिँ न फेरे ।
सीछु सनेहु छाड़ि नहिँ जाई । असमंजस बस भे रघुराई ।
लोग सोग श्रम बस गए सोई । कछुक देवमायाँ मति मोई ।
जबहिँ जाम जुग जाभिनि वीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ।
खोज मारि रथु हाँकहु ताता । आन उपायँ अनिहि नहिँ वाता

दो०-राम छावन सिय जान चदि मंभु चरन सिरु नाइ ।

सचिवँ चलायउ मुरत रथु इत उत खोज दुराइ ॥ ८५ ॥

जागे सकल लोग भएँ भोरु । गे रघुनाथ भयउ अनि सोरु ॥
 रथ कर खोज कतहुँ नहिँ पावहिँ । राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिँ ॥
 मनहुँ यातिनिधि बूझ जहानू । भयउ विकल बड़ बनिक समानू ॥
 एकहिँ एक देहिँ उपदेनू । तजे राम हम जानि कयेनू ॥
 निशहिँ आपु सराहहिँ मीना । बिग जीवनु रघुबीर विरीना ॥
 जाँपे प्रियवियोगु विधि कीन्हा । ती कस मरनु न मागे दीन्हा ॥
 एहिँ विधि करत प्रलार कलापा । आए अवध भरे परिनापा ॥
 रिम वियोगु न जाइ बखाना । अयधि आम सब राखहिँ प्राना ॥
 दो०-राम दरम हित नेम मन लागे करन नर नारि ।

मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि ॥ ८६ ॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई । सुगवेरपुर पहुँचे जाई ॥
 उत्तरे राम देयसरि देखी । कीन्ह दडवत हरणु विसेपी ॥
 लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा । सबहिँ सहित मुखु पायउ रामा ॥
 गंग सकल मुद मंगल मूला । सब मुख करनि हरनि सब गुला ॥
 कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा । रामु बिलोकहिँ गंग तरंगा ॥
 सचिवहिँ अनुजहिँ प्रियहिँ सुनाई । विबुध नदी महिमा अधिकाई ॥
 मजनु कीन्ह पंथ भ्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ ॥
 सुमिरत जाहिँ मिटइ भ्रम भारु । तेहिँ भ्रम यह लौकिक न्यवहारु ॥

दो०—सुदृ सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।

चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ ८७ ॥

वह सुधि गुहँ निषाद जय पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
 लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियँ हरषु अपारा ॥
 करि दंडयत भेंट धरि आगे । प्रभुहि विलोकत अति अनुरागे ॥
 सहज स्नेह प्रियत रघुराई । पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥
 नाथ कुसल पद पंकज देखें । भयउँ भागभाजन जन लेखें ॥
 देव धरनि धनु धानु गुम्हारा । मैं जनु नीचु सहित परिवारा ॥
 कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जनु सत्रु लोगु तिहारु ॥
 कहेहु सत्य सत्रु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आवसु आना ॥

१०—वरष चारिदस वासु वन मुनि व्रत बेपु अहार ।

ग्राम वासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुस्रु भार ॥ ८८ ॥

राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी ॥
 ते पितु मातु कहहु सखि कैते । जिन्ह पठए वन बालक ऐते ॥
 एक कहहिं भल भूपति कीन्हा । लोचन लाहु हमहि विधि दीन्हा ॥
 तव निषादपति उर अनुमाना । तर तिसुपा मनोहर जाना ॥
 लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा । कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
 पुरजन करि जोहार घर आए । खुबर संख्या करन तिधाए ॥
 गुहँ सँवारि साँथरी डचाई । कुत कितल्यमय मृदुल सुहाई ॥
 मुनि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेति पानी ॥

दो०-सिय सुमंत्र भ्राता सहिन कंद मूल फल खाइ ।

सयन कीन्ह रघुबंधमनि पाप पलोटन भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी ॥
कछुक दूरि सजि बान सरासन । जागन लगे बैठि वीरासन ॥
गुहँ बोलाइ पाहम् प्रतीती । ठायँ ठायँ राखे आति प्रीती ॥
आपु लखन पहि बैठैउ जाई । कहि भाषी मर चाप चलाई ॥
सोवत प्रभुहि निहारि निपादू । भयउ प्रेम बस हृदयँ विपादू ॥
तनु पुलकि जलु लोचन बहरँ । बचन मप्रेम लखन मन कहई ॥
भूषति भवन मुभायँ मुहावा । मुरपति मदन न पटतर पावा ॥
मनिमय राँचित चारु चौबारे । जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

दो०-सुचि सुखिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।

पलंग मंहु मनिदीप जहँ सब विधि सकल सुपाम ॥ ९० ॥

विधि बसन उपधान तुराई । छीर केन मृदु विमद मुहाई ॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करह्यो । निज छवि रति मनोज महु हरह्यो ॥
ते सिय रामु साथरी सोए । भ्रमिन बसन विनु जाहिन जोए ॥
मातु रिता परिजन पुरवारी । सखा सुभील दास अह दासनी ॥
जोगबहिं किन्हहि मान की नारें । महि सोवन तेद राम गोलाई ॥
रिता जनक जग विदित प्रभाऊ । समुर सुरेस सखा रघुगऊ ॥
रामचंद्रु पति सो बैदेही । सोवत महि विधि वामन केही ॥
सिय रघुवीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सव्य कह लोगू ॥

तुम्ह सन तात बहुत का कहउँ । दिउँ उतर फिरि पातकु लहउँ ॥

दो०—पितु पद गहि कहि कोटि नति विनय करव कर जोरि ।

चिंता कवनिहु बात कै तात करिअ जनि मोरि ॥ ९५ ॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । विनती करउँ तात कर जोरें ॥

सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारें । दुख न पाव पितु सोच हमारें ॥

सुनि रघुनाथ सचिव संवादू । भयउ सपरिजन विकल निषादू ॥

पुनि कछु लखन कही कटु बानी । प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी ॥

सकुचि राम निज सपथ देवाई । लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥

कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू । सहि न सकिहि सिय विपिन कलेसू ॥

जेहि विधि अवध आव फिरि सीया । सोइ रघुवरहि तुम्हहि करनीया ॥

नतर निपट अवलंब विहीना । मैं न जिअव जिमि जल विनु मीना ॥

दो०—मइकें ससुरें सकल सुख जवहिं जहाँ मनु मान ।

तहँ तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि विपति विहान ॥ ९६ ॥

विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती । आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥

पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना । सियहि दीन्ह सिख कोटि विधाना ॥

सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू । फिरहु त सब कर मिटै खमारू ॥

सुनि पति वचन कहति बैदेही । सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥

प्रभु करुनामय परम बिबेकी । तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी ॥

प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई । कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥

पतिहि प्रेममय विनय सुनाई । कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥

तुम्ह पितु समुर मरिष हितकारी। उतर देउँ फिरि अनुचित भारी॥

दो०—आरति सम मनमुख भइउँ विलगु न मानब सात ।

आरजसुत पद कमल बिनु यादि जहाँ लगि नाव ॥ ९७ ॥

पितु वैभव विलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा

मुखनिधान अम पितु गृह मोरें। प्रिय बिहीन मन भाव न भोरें ॥

समुर चक्रवर्त्त कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥

आगें होर जेहि गुरपति लेई। अरध सिपाऊन आसनु देई ॥

समुद्र एतादस अवध निवासू। प्रिय परिवार मातु सम सासू ॥

बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागा

अगम पंथ बनभूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अगारा ॥

कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुखद प्रानपति संगी ॥

दो०—सामु समुर सन मोरि हुँति विनय करबि परि पायें ।

मोर सोखु जनि करिअ कछु मैं बन सुखी सुभायें ॥ ९८ ॥

प्राननाथ प्रिय देवर साया। वीर धुरीन धरें धनु भाया ॥

नहिं मग भ्रमु भ्रमु दुख मन मोरें। मोहि लगि सोखु करिअ जनि भोरें

मुनि मुमंशु सिध सीतलि बानी। भयउ बिकल जनु पनि मनि हानी

नयन सूख नहिं मुनइ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना

राम प्रबोधु कीन्ह बहु भौंती। तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥

जतन अनेक साथ हित कीन्हें। उचित उतर रघुनंदन दीन्हें ॥

मेरि जाइ नहिं राम रजार्इ। कठिन करम गरि ॥

राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ वनिक जिमि मूर गवाई ॥

दो०—रथु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।

देखि निषाद विषादवस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥ ९९ ॥

जासु त्रियोग विकल पसु ऐसैं । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसैं ॥

बरवस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ॥

मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु में जाना ॥

चरन कमल रज कहूँ सनु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥

छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ॥

तरनिउ मुनि धरिनी होइ जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥

एहिं प्रतिपालउँ सनु परिवारू । नहिं जानउँ कछु अउर कवारू ॥

जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं०—पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।

मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥

बरु तीर मारहुँ लखनु पै जय लगि न पाय पखारिहौं ।

तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सो०—सुनि केवट के बैन प्रेम् लपेटे भटपटे ।

बिहसे करुनाएन चितइ जानकी लखन तन ॥ १०० ॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥

वेगि आनु जल पाय पखारू । होत विलंबु उतारहि पारू ॥

जासु नाम सुमिरत एक वारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥

सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहि जगु क्रिय तिहु पगहु ते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी । मुनि प्रभु रचन मोहैं मति करणी ॥
केवट राम रजायसु पाया । पानि कटवता भरि लेइ आया ॥
अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पवारन लागा ॥
वरणि सुमन सुर मकल सिद्दी । एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

दो०—पद पस्वारि जलु पान करि आपु महित परिवार ।

पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयठ लेइ पार । १०१।

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ॥
केवट उतरि दंष्ट्रवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
पिय दिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कदेउ कृपाल लेहि उतगई । केवट चरन गहै अकुलई ॥
नाथ आजु मैं काह न पावा । भिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह विधि बनि भलि भूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरैं । दीनदयाल अनुग्रह तोरैं ॥
पिरती बार मोहि जो देया । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेया ॥

दो०—बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियैं नहिं कछु केवटु लेइ ।

पिदा कीन्ह करुनायतन भगति विमल बरु देइ । १०२।

तब मञ्जनु करि रघुकुलनाथा । पूजि पारयिव नाथउ माथा ॥
भियैं मुरमरिदि कदेउ कर जोरी । मातु मनोरथ पुरउचि ॥
पति देवर सँग कुसल बहोरी । आइ करौ जेहि पूजा ॥

सुनि सिय विनय प्रेम रस सानी । भइ तव विमल वारि वर बानी ॥
 सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही । तव प्रभाउ जग विदित न केही ॥
 लोकप होहि विलोकत तोरें । तोहि सेवहिं सव सिधि कर जोरें ।
 तुम्ह जो हमहि बड़ि विनय सुनाई । कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई
 तदपि देवि मैं देवि असीसा । सफल होन हित निज वागीसा ॥

दो०—प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आइ ।

पूजिहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०३॥

गंग वचन सुनि मंगल मूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥
 तव प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू । सुनत सूख मुखु भा उर दाहू ॥
 दीन वचन गुह कह कर जोरी । विनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥
 नाथ साथ रहि पंथु देखाई । करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥
 जेहि वन जाइ रहव रघुराई । परनकुटी मैं करवि सुहाई ॥
 तव मोहि कहँ जसि देव रजाई । सोइ करिहउँ रघुवीर दोहाई ॥
 सहज सनेह राम लखि तासू । संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू ॥
 पुनिगुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । करि परितोषु विदा तव कीन्हे ॥

दो०—तव गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि साथ ।

सखा अनुज सिय सहित वन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयउ विटप तर वासू । लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
 प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥
 सच्चिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीतु हितकारी ॥

भए त्रिगतश्रम रामु सुखारे । भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप जोग बिरागू ॥
 सकल सकल सुभ साधन साजू । राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । तुम्हरेँ दरस आस सत्र पूजी ॥
 अत्र करि कृपा देहु वर एहू । निज पद सरसिज सहज सनेहू ॥
 दो०—करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार ।

तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किऐँ कोटि उपचार ॥१०७॥

मुनि मुनि वचन रामु सकुचाने । भाव भगति आनंद अधाने ॥
 तब रघुवर मुनि सुजसु सुहावा । कोटि भाँति कहि सवहि सुनावा ॥
 सो बड़ सो सत्र गुन गन गेहू । जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥
 मुनि रघुवीर परसपर नवहीं । वचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥
 यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
 भरद्वाज आश्रम सत्र आए । देखन दसरथ सुअन सुहाए ॥
 राम प्रनाम कीन्ह सत्र काहू । मुदित भए लहि लोयन लाहू ॥
 देहिँ असीस परम सुखु पाई । फिरे सराहत सुंदरताई ॥

दो०—राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ ।

चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ ॥१०८॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं । नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं ॥
 मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं । सुगम सकल मग तुम्ह कहूँ अहं ॥
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए । मुनि मन मुदित पचासक आए ॥

सबन्हि राम पर प्रेम अपारा । सकल कहहि मगु दीख हमारा ॥
मुनि बहु चारि संग तब दीन्हें । जिन्ह बहु जनम मुकृत सब कीन्हें
करि प्रनामुरिषि आयमु पाई । प्रमुदित हृदयें चले सुराई ॥
ग्राम निकट जव निकगहि जाई । देखहि दरमु नारि नर धाई ॥
होहि सनाथ जनम फलु पाई । फिरहि दुखित मनु संग पडाई ॥

दो०—बिदा किणु बहु विनय करि फिरे पाइ मन काम ।

उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम स्याम ॥ १०९ ॥

मुनत तीरबासी नर नारी । धाए निज निज काज बिसारी ॥
लखन राम स्थि सुंदरताई । देखि करहि निज भाग्य बढ़ाई ॥
अति लालसा बसहि मन माहीं । नाउँ गाउँ ब्रह्मत सकुचार्हीं ॥
जे तिन्ह महुँ बयभिरिध मयाने । तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने
सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई । बनदि चले पितु आयमु पाई ॥
मुनि सविषाद सकल पछिताहीं । रानी गयें कीन्ह भल नाहीं ॥
तेहि अवसर एक तापमु आया । तेजपुंज लघुवयस मुदाया ॥
कथि अलखित गति बेनु शिरागी । मन क्रम रचन राम अनुरागी ॥

दो०—सजल नयन तन पुलकि निज हृदय पहिचानि ।

परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बरानि ॥ ११० ॥

राम सप्रेम पुलकि उर लाया । परम रंक जनु पारमु पाया ॥
मनहुँ प्रेमु परमारथु दोऊ । मित्त धरें तन कइ स्नु कोऊ ॥
बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥

पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा
 कीन्ह निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही
 पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा
 ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ॥
 राम लखन सिय रूपु निहारी । होहिं सनेह बिकल नर नारी ॥

दो०—तव रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह ।

राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेई कीन्ह ॥१११॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनिहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥
 चले ससीय मुदित दोउ भाई । रवितनुजा कइ करत बड़ाई ॥
 पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
 राज लखन सब अंग तुम्हारे । देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥
 मारग चलहु पयादेहि पाएँ । ज्योतिषु झूठ हमारे भाएँ ॥
 अगमु पंथु गिरि कानन भारी । तेहि महुँ साथ नारि सुकुमारी ॥
 करि केहरि वन जाइ न जोई । हम सँग चलहिं जो आयसु होई ॥
 जाव जहाँ लगि तहँ पहुँचाई । फिरव बहोरि तुम्हहि सिर नाई ॥

दो०—एहि बिधि पूछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।

कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ॥
 केहि सुकृती केहि घरीं बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥
 जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥

मुदित नारिनर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥
 एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥
 तरुन तमाल बरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥
 दामिनि बरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥
 मुनिपट कटिन्ह कसैं तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥
 दो०—जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल ।

सरद परब विधु वदन बर लसत स्वेद कन जाल ॥ ११५ ॥
 बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
 राम लखन सिय सुंदरताई । सब चित्तवहिं चित मन मति लाई
 थके नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥
 सीय समीप ग्रामतिथ जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥
 बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं वचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
 राजकुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ॥
 स्वामिनि अविनय छमवि हमारी । बिलगु न मानव जानि गवाँरी ॥
 राजकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह तैं लही दुति मरकत सोने ।

दो०—स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुपमा ऐन ।

सरद सर्वरीनाथ मुख सरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, चौथा विश्राम

मुदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥
 एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद चकोरा ॥
 तरुन तमाल वरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥
 दामिनि वरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥
 मुनिपट कटिन्ह कसैं तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥
 दो०—जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल ।

सरद परब विधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल ॥ ११५ ॥
 बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
 म लखन सिय सुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई
 के नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥
 गेय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥
 बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं वचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
 जकुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं ॥
 वामिनि अविनय छमवि हमारी । विलगु न मानव जानि गवारी ॥
 जकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह तें लही दुति मरकत सोने ॥

गे०—स्यमल गौर किसोर वर सुंदर सुषमा ऐन ।

सरद सर्वरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन ॥ ११६ ॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम
 नवाह्नपारायण, चौथा विश्राम

कोटि मनोज लजावनिहारे । सुमुख कहहु को आदि तुम्हारे ॥
 सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुची सिख मन महुँ मुमुक्षुनी ॥
 तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी । दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी ॥
 सकुचि सप्रेम बात भृगनयनी । बौली मधुर बचन विकस्यनी ॥
 सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु तनु देवर मोरे ॥
 यहुरि बदन बिधु अंचल टाँकी । पिय तन चितइ भौह करि बाँकी ॥
 खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेंउ तिन्हहि मियें मयननि ॥
 भई मुदित सब ग्रामबधूटी । रकन्द राय रासि जनु दूटी ॥
 दो०—अति सप्रेम सिख पायँ परि बहुमिधि देखिं असीस ।

सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जय लखि माहि अहि सीस ॥ ११७ ॥
 पारवती सम पतिप्रिय होहु । देखि न हम पर छाड़ब छोहु ॥
 पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी । जाँ एहि मारग फिरिअ बहोरी ॥
 दरसन देव जानि निज दासी । लखीं सीयें सब प्रेम पिआसी ॥
 मधुर बचन कहि कहि परितोरी । जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
 तबहिं लखन रघुवर रुख जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी ॥
 मुनत नारि नर भए दुखारी । पुलकित गात बिलोचन बारी ॥
 मिटा मोदु मन भए मलीने । बिधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने ॥
 संमुक्ति करम गति धोरजु कीन्हा । सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा ॥
 दो०—लखन जानकी सहित सब गवनु कीन्ह रघुनाथ ।

फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए छाड़ मन साथ ॥ ११८ ॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं । दैअहि दोषु देहिं मन माहीं ॥
 सहित विषाद परस्पर कहहों । विधि करतव उलटे सत्र अहहों ॥
 निपट निरंकुत निदुर नितंकू । जेहिं तति कीन्ह सहज सकलंकू ॥
 लख कल्पतरु सागर खारा । तेहिं पठए वन राजकुमारा ॥
 जौं पै इन्हहि दीन्ह वनयान् । कीन्ह वादि विधि भोग बिलास ॥
 ए विचरहिं मग विनु पदवाना । रचे वादि विधि वाहन नाना ॥
 ए महि परहिं डासि कुस पाता । सुभग सेज कत सजत विधाता ॥
 तरुवर वास इन्हहि विधि दीन्हा । धवलधाम रचि रचि श्रमु कीन्हा
 दो०—जौं ए सुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार ।

बिबिध भाँति भूषन बसन वादि किए करतार ॥११९॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं । वादि सुधादि अस्तन जग माहीं ॥
 एक कहहिं ए सहज सुहाए । आपु प्रगट भए विधि न बनाए
 जहँ लगि वेद कही विधि करनी । श्रवन नयन मन गोचर दरनी ॥
 देखहु खोजि भुअन दस चारी । कहँ अस पुरुष कहाँ अति नारी
 इन्हहि देखि विधि मनु अनुरागा ॥ पटतर जोग बनावै लागा ॥
 कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । तेहिं इरिषा वन आनि दुराए ॥
 एक कहहिं हम बहुत न जानहिं । आपुहि परम धन्य करि मानहिं ॥
 ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥
 दो०—एहि विधि कहि कहि वचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर ।

किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सनेह विकल बस होई। चकई सौं स समय जनु सोई ॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी। गह्वरि हृदयें कहहिं बर बानी ॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे। सकुचति मदि जिमि हृदय हमारे
जौं जगदीस इन्हदि बनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥
जौं मागा पाइअ विधि पाई। ए रखिअहिं सखि औंखिन्ह माई
जे नर नारि न अवसर आए। तिन्ह मिय रामु न देखन पाए ॥
मुनि मुरूपु मूसहिं अकुलाई। अब लगि गए कहों लगि भाई
समरथ धाई बिलोकहिं जाई। प्रमुदित फिरहिं जनमपलु पाई

दो०—अबला बालक मृदु जन कर मीजहिं पछिताहिं ।

होहिं प्रेमबस लोग हमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥१२॥

गावैं गावैं अस होइ अनंदू। देखि भानुकुल कैरय चंदू ॥
जे कछु समाचार मुनि पावहिं। ते नृप रानिदि दोमु लगावहिं ॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू ॥
कहहिं परसरर लोग लोगाई। बातें सरल सनेह मुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए। धन्य सो नगरु जहाँ तैं आए ॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाऊँ। जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥
मुखु पायउ विरंचि रचि तेही। ए जेहि के सब भाँति सनेही ॥
राम लखन पथि कया मुहाई। रही सकल मग कानन छाई ॥

दो०—जदि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह मुख नेत ।

जाहिं चले देखत विपिन सिप सौमित्रि सने

आगें रामु लखनु बने पाछें । तापस बेप विराजत काछें ॥
 उभय बीच सिय सोहति कैसैं । ब्रह्म जीव बिच माया जैसैं ॥
 बहुरि कहउँ छवि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥
 उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ॥
 प्रभु पद रेख बीच बिच सीता । धरति चरन मग चलति समीता ॥
 सीय राम पद अंक बराएँ । लखन चलहिं मगु दाहिन लाएँ ॥
 राम लखन सिय प्रीति सुहाई । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
 खग मृग मगन देखि छवि होहीं । लिए चोरि चित राम बटोहीं ॥
 दो०—जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।

भव मगु अगसु अनंदु तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ ॥१२३॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ । बसहुँ लखनु सिय रामु बटाऊ ॥
 राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥
 तब रघुवीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥
 तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
 देखत बन सर सैल सुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥
 राम दीख मुनि वासु सुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥
 सरनि सरोज बिटेप बन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥
 खग मृग विपुल कोलाहल करहीं । विरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

दो०—सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन ।

मुनि रघुवर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन ॥१२४॥

मुनि कहँ राम दंढवत कीन्हा । आनिन्दादु दिप्रवर दीन्हा ॥
 देखि राम छवि नयन जुड़ाने । करि स्तनानु आश्रमहि आने ॥
 मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल पल मधुर मगाए ॥
 सिध सौमित्रि राम पल म्याए । तव मुनि आश्रम दिए मुहाए ॥
 बालमीके मन आनँदु मारी । मंगल मृगनि नयन निहारी ॥
 तव कर कमल जोरि गधुगदं । बोले बचन श्रवन मुखदारी ॥
 तुम्ह त्रिकाल दरभी मुनिनाथा । बिम्ब बदर त्रिमि तुम्हरे हाथा ॥
 अम कहि प्रभु सब कथा बखानी । जेहि जेहि मौने दीन्ह वनु गनी ॥

दो०-तात बचन पुनि मानु हिन भाइ भरत अम राट ।

मो कहँ दरस तुम्हार प्रभु मष्ट मम पुन्य प्रभाउ ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए मुकृत सब सुफल हमारे ॥
 अब जेहँ राउर आयसु होई । मुनि उदवेगु न पावै कोई ॥
 मुनि तापम जिन्ह ते दुखु लहहीं । ते नरेम विनु पावक दहहीं ॥
 मंगल मूल विप्र परितोषू । दहद कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
 अम जिये जानि कहिअ सोद ठाऊँ । सिध सौमित्रि सहित जेहँ जाऊँ ॥
 तहँ रचि रुचिर परन नृन साला । वासु करी कछु काल कृपाला ॥
 सहज सरल मुनि श्रुवर बानी । माधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥
 कम न कहहु अस रक्षुलकेनू । तुम्ह पालक संतत श्रुति सेनू ॥

ए०-श्रुति सेनु पालक राम तुम्ह जगदीम माया जानकी ।

जो मृजति जगु पालनि हरनि हरि पाइ कृपानिधान की ॥

जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सो०-राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।

अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥१२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनिहारे ॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । औरु तुम्हहि को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी । विगत विकार जान अधिकारी ॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥

०-पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ॥१२७॥

सुनि सुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥
सुनहु राम अय कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे ॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलाषे ॥

जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ॥

सो०—राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ।

अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥ १२६ ॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनिहारे ॥
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । और तुम्हहि को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी । विगत विकार जान अधिकारी ॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥

०—पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ॥ १२७ ॥

सुनि सुनि बचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥
सुनहु राम अत्र कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहूँ गृह रूरे ॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलाषे ॥

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी । रूप बिंदु जल होहि मुखारी ॥
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक । बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥

दो०-अमु तुम्हार मानस बिमल हंमिनि जीहा जामु ।

मुकनाहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियै कामु ॥१२८॥

प्रभु प्रसाद मुचि सुभग सुवासा । सादर जामु लहइ नित नासा ॥
तुम्हहि निषेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूपन धरहीं ॥
सौस नबहिं मुर गुरु द्विज देखी । प्रीति सहित करि विनय बिसेरी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयै नहिं दूजा ॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन मारी ॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा ॥
तरपन होम करहिं विधि नाना । बिप्र जेवाँद देहिं बहु दाना ॥
तुम्ह तैं अधिक गुराहिं जियै जानी ॥ सकल भायै सेवहिं सनमानी ॥

दो०-सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होठ ।

तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोठ ॥१२९॥

काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छेम न राग न द्रोहा ॥
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥
सय के प्रिय सय के हितकारी । दुख मुख सरिस प्रसंसा गारी ॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी । जागत सोवन सन तुम्हारी ॥
तुम्हहि छादि गति दूसरि नारी । राम बसहु तिन्ह के मन मारी ॥
जननी सम जानहिं परनारी । धनु पराय बिय तैं बिय भारी ॥

आवत देखि मुदित मुनिवृंदा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा ॥
 मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होन हित आसिष देहीं ॥
 सिय सौमित्रि राम छत्रि देखहिं । साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥

दो०—जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किए मुनिवृंद ।

करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद ॥१३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरपे जनु नव निधि घर आई ॥
 कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥
 तिन्ह महुँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता । अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता ॥
 कहत सुनत रघुवीर निकाई । आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥
 करहिं जोहारु भेंट धरि आगे । प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥
 चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । पुलक सरीर नयन जल बाढ़े ॥
 राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय वचन सकल सनमाने ॥
 प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । वचन बिनीत कहहिं कर जोरी ॥
 दो०—अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।

भाग हमारै आगमनु राउर कोसलराय ॥१३५॥

धन्य भूमि वन पंथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा ॥
 धन्य विहग मृग काननचारी । सफल जनम भए तुम्हहि निहारी ॥
 हम सब धन्य सहित परिवारा । दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा ॥
 कीन्ह वासु भल ठाउँ विचारी । इहाँ सकल रितु रह्य सुखारी ॥
 हम सब भाँति करव सेवकाई । करि केहरि अहि बाघ बराई ।

वन बेहड़ गिरि कंदर खोह । सब हमार प्रभु पग पग जोह ॥
तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउब । सर निरझर जलठाउँ देखाउब ॥
हम सेयक परिवार समेता । नाथन सकुचब आयमु देता ॥

दो०—वेद वचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।

वचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥१३६॥

रामहि केवल प्रेमु पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥
राम सकल वनचर तब तोषे । कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे ॥
बिदा किए सिर नाइ मिधाए । प्रभु गुन कहत सुनत घर आए ॥
एहि विधि सिप समेत दोउ भारी । बसहि विपिन सुर मुनि सुखदाई ॥
जब तैं आइ रहे रघुनाथकु । तब तैं भयउ वनु मंगलदायकु ॥
पूर्यहि फलहि बिष्टप विधि नाना । मजु बलित घर बेलि बिताना ॥
मुरतक सरिग सुभायें सुहाए । मनहुँ त्रिबुध वन परिहरि आए ॥
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेणी । त्रिविध ब्यपारि बहइ सुख देनी ॥

दो०—नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्र चकोर ।

भौंनि भौंनि बोलहिं बिहग भवन सुखद चिन चोर ॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा । विगतवैर विचरहि मय संगी ॥
फिरत अहेर राम छवि देसी । होहि मुदित मृगवृद विसेयी ॥
त्रिबुध विपिन जहँ लगि जग माहीं । देखि राम वनु सकल मिहारी ॥
मुरमरि सरसद दिनकर कन्या । मेकलमुता गोदावरी धन्या ॥
सब सर सिंधु नदी नद नाना । मंदाकिनि कर करहि बखाना ॥

उदय अस्त गिरि अरु कैलासू । मंदर मेरु सकल सुरवासू ॥
 सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट जसु गावहिं तेते ॥
 विधि मुदित मन सुखु न समाई । श्रम बिनु विपुल बढ़ाई पाई ॥
 दो०—चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति ।

पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ॥१२८॥

नयनवंत रघुवरहि बिलोकी । पाइ जनम फल होहिं विसोकी ॥
 परति चरन रज अचर सुखारी । भए परम पद के अधिकारी ॥
 सो वनु सैलु सुभायँ सुहावन । मंगलमय अति पावन पावन ॥
 महिमा कहिअ कवनि विधि तासू । सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥
 पय पयोधि तजि अवध बिहाई । जहँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥
 कहि न सकहिं सुगमा जसि कानन । जौ सत सहस होहिं सहसानन ॥
 सो मैं वरनि कहौं विधि केहीं । डावर कमठ कि मंदर लेहीं ॥
 सेवहिं लखनु करम मन वानी । जाइ न सीलु सनेहु बखानी ॥

दो०—छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ।

करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु नेहु ॥१२९॥

राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति विसारी ॥
 छिनु छिनु पिय विधु बदनु निहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥
 नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी । हरपित रहति दिवस जिमि कोकी ॥
 सिय मनु राम चरन अनुरागा । अवध सहस सम वनु प्रिय लागा ॥
 परनकुटी प्रिय प्रियतम संग । प्रिय परिवार कुरंग विहंगा ॥

सासु समुर सम मुनितिय मुनिवर । असनु अमिअ सम कद मूल पर
नाथ साथ साँथरी सुहाई । मयन सयन सय सम सुखदाई ॥
लोक्य होहि बिलोकत जासू । तेहि कि मोहि मक विषय बिलासू
दो०—सुमिरत रामहि तजहिं जन नून सम विषय बिलासु ।

रामप्रिया जग जननि सिय कछु न आचरनु तासु ॥१४०॥

सीय लखन जेहि बिधि सुखु लहई । सोइ रघुनाथ करहि सोइ कहई
कहई पुरातन कथा कहानी । सुनिहिं लखनु मिय अति मुखु मानी
जय जय रामु अवध मुधि करहीं । तव तव थारि बिलोचन भरहीं ॥
सुमिरि मानु पितु परिजन भाई । भरत सनेहु मीलु सेवकाई ॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजु धरहिं कुसमट विचारी ॥
लखिसियलखनु बिकल होइ जाई । जिमि पुरुषहि अनुमर परिछाहीं
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगत उर चदनु ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता । सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता
दो०—रामु लखन सीता सहित सोइत परन निवेत ।

जिमि वामन बस अमरपुर सची जयंत समेत ॥१४१॥

जोगबहिं प्रभु सिय लखनहि कैसे । पलक बिलोचन गोलक जैसे ॥
सेवाई लखनु सीय रघुवीरहि । जिमि अबिवेकी पुरुष सरीरहि ॥
एहि बिधि प्रभु बन बगहिं सुखारी । खग भृगु मुर तापस हितकारी ॥
कहेउँ राम बन गवनु सुहावा । सुनहु सुमंथ अवध जिमि आवा
धरेड निपादु प्रभुहि पहुँचाई । सचिय सहित रय देखेसि आई ॥

मंत्री विकल विलोकि निषादू । कहि न जाइ जस भयउ विषादू ॥
 राम राम सिध लखन पुकारी । परेउ धरनितल व्याकुल भारी ॥
 देखि दखिन दिसि ह्य हिहिनार्हीं । जनु विनु पंख विहग अकुलार्हीं
 दो०—नहिं तृन चरहिं न पिअहिं जलु मोचहिं लोचन बारि ।

व्याकुल भए निषाद सब रघुवर बाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरजु तव कहइ निषादू । अब सुमंत्र परिहरहु विषादू ॥
 तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीर लखि विमुख विधाता
 विविधि कथा कहि कहि मृदु वानी । रथ बैठारेउ वरवस आनी ॥
 सोक सिथिल रथु सकइ न हाँकी । रघुवर विरह पीर उर बाँकी ॥
 चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । वन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
 अदुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें । राम वियोगि विकल दुख तीछें ॥
 १० कह रामु लखनु बैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥
 ११ जि विरह गति कहि किमि जाती । विनु मनि फनिक् विकल जेहि भौंती

दो०—भयउ निषादु विषादबस देखत सचिव तुरंग ।

बोलि सुसेवक चारि तव दिए सारथी संग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । विरहु विषादु वरनि नहिं जाई ॥
 बले अवध लेइ रथहि निषादा । होहिं छनहिं छन मगन विषादा ॥
 ओच सुमंत्र विकल दुख दीना । धिग जीवन रघुवीर विहीना ॥
 हिहि न अंतहुँ अधम सरीरु । जसु न लहेउ विछुरत रघुवीरु ॥
 गएं अजस अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥

अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
मीजि हाथ सिर धुनि पछिनार्द । मनहुँ रूपन धन गाँछि गयोई ॥
विरिद शौधि बर दीस कहार्द । चन्नेउ समर जनु सुभट पराई ॥
दो०-विप्र विवेकी वेदविद संमत साधु सुजाति ।

जिमि धोमैं मद् पान कर पाँचिब सोच तेहि भौंति ॥१४४॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पनिदेवता कर्म मन बानी ॥
रहै करम बम पगिहरि नाहू । सचिय हृदयैं निमि दाह्न दाहू ॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी । मुगइ न श्रयन विकल मति भोगी ॥
सूखहि अधर लागि मुहैं लाटी । जिउ न जाइ उर अबाब कपाटी ॥
विवरन भयउ न जाइ निहारी । मारमि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि विपुल मन व्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥
बचनु न आव हृदयैं पछिनार्द । अवध काह मैं देख्य जाई ॥
राम रहित रय देखिहि जोई । मकुचिहि मोहि विलोकत सोई ॥
दो०-धाइ पूँछिहहिं मोहि जब विकल नगर नर नारि ।

उतरु देव मैं सबहि तब हृदयें बज्रु चैतारि ॥१४५॥

पूँछिहहिं दीन दुखित तब माना । कहव काह मैं तिन्हहि विधाता ॥
पूँछिहि जबहिं लखन महतारी । कहिहउँ कवन सैंदेम मुखारी ॥
राम जननि जब आइहि धाई । मुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ॥
पूँछत उतर देव मैं तेही । मे वनु राम लखनु वैदेही ॥
जोर पूँछिहि तेहि उतर देवा । जाइ अवध अब बहु सुख लेवा ॥

पूँछिहि जवहिं राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
 देहउँ उतर कौनु मुहु लाई । आयउँ कुसल कुअँर पहुँचाई ॥
 सुनत लखन सिय राम सँदेसू । तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दो०—हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु ।

जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यहु जातना सरीरु ॥१४६॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥
 बिदा किए करि विनय निषादा । फिरे पायँ परि बिकल बिषादा ॥
 पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर बाँभन गाई ॥
 बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तत्र अवसरु पावा ॥
 अवध प्रबेसु कीन्ह आँधिआरें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥
 जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ॥
 रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
 नगर नारि नर व्याकुल कैसैं । निघटत नीर मीनगन जैसैं ॥

दो०—सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु ।

भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतर न आव बिकल भइ बानी ॥
 सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ॥
 दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई । कौसल्या गृहँ गई लवाई ॥
 जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ॥
 आसन सयन विभूषन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥

दे उमानु सोच यहि भोती । सुरपुर नें जनु खँसेउ जजाती ॥
हेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंच पयेउ सधाती ॥
राम राम कह राम मनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ॥

दो०-देखि मंचिबैं जय जीव कहि कीन्हैउ दंड प्रनामु ।

मुनत उठैउ ग्याकुल नृपनि कहु सुमंघ्र कहैं रामु ॥१४८॥

भूप सुमंघ्रु लीन्ह उर लार्द । बृद्धत कछु अंधार जनु पार्द ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि बारी ॥
राम कुसल कहु मखा सनेरी । कहैं रघुनाथु लखनु बैदेही ॥
आने पैरि कि बनीहि सिधाए । मुनत मंचिब लौचन जल छाए ॥
भोक बिकर पुनि पूँछ नरेम् । कहु मिय राम लखन सँदेम् ॥
राम रूप गुन सौल सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सौचत राऊ ॥
राउ सुनाइ दीन्ह बनवास । सुनि मन भयउ न हरपु हरौम् ॥
मो मुन बिछुरत गए न प्राणा । को पापी बड़ मोहि ममाना ॥
दो०-मखा रामु मिय लखनु जहैं तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

नाहिं न चाहत चलन अब प्राण कहउँ मनिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंचिदि राऊ । प्रियनम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥
करहि सखा सोर बेगि उठाऊ । रामु लखनु मिय नयन देखाऊ ॥
मंचिब धीर धरि कह मृदु बानी । महाराज तुम्ह पंडित म्यानी ॥
सीर सुधीर धुरंधर देवा । साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगा । शानि लानु प्रिय मित्रन विभोगा ॥

काल करय बस होहिं गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाई ॥
 सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥
 धीरज धरहु बिबेकु विचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो०—प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।

न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ बीर ॥१५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौ र गवाई ॥
 होत प्रात बट छीरु मगावा । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥
 राम सखाँ तब नाव मगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
 लखन बान धनु धरे बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
 बिकल बिलोकि मोहि रघुवीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
 तात प्रनामु तात सन कहेहू । बार बार पद पंकज गहेहू ॥
 करबि पायँ परि बिनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
 गुन मग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥

१०—तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।

प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥
 जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती धनी ।
 तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी ॥

श्लो०—गुर सन कहव सँदेसु बार बार पद पदुम गहि ।

करव सोइ उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति ॥१५१॥

गुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनाएहु बिनती मोरी ॥

हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥
 एक निमेष वरष सम जाई । एहि विधि भरत नगर निअराई
 असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
 खर सिआर बोलहिं प्रतिकूल । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगरु विसेषि भयावनु लागा ॥
 खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम वियोग कुरोग बिगोए ॥
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सवन्हि सव संपति हारी ॥
 दो०—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं ।

भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रत्रिकुल जलरुह चंदिनि
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
 भरत दुखित परिवारु निहारा । मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा ॥
 कैकेई हरषित एहि भाँती । मनहुँ मुदित दय लाइ किराती ॥
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥
 कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता
 दो०—सुनि सुत वचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय विचारी ॥

कधुक काज बिधि बीन बिगारेउ । भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ ॥
 मुनत भरतु भए बिबम बिगारा । जनु सदमेउ करि केहरि नादा ॥
 तात तात हा तात पुकारी । परं भूमितल व्याकुल भारी ॥
 चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि मीपेहु मोही ॥
 बहुरि धोर धरि उठे सँभारी । कहु गितु मरन हेतु मदतारी ॥
 मुनि मुत बचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देखै ॥
 आदिहु तैं सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी
 दो०—भरतहि बिसरेउ पितु मरन मुनन राम बन गौनु ।

हेतु अपनपड जानि जिये धकिन रहे धरि मानु ॥ १६० ॥

बिकल बिलोकि मुनहि समुसावति । मनहुं जं पर गेनु लगार्वाति ॥
 तात राउ नहि सोचै जोगू । बिदइ मुकल जमु कीन्देउ भोगू ॥
 जीवन सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन मिधारे ॥
 अस अनुमानि सोच परिहरहु । सहित समात्र राज पुर करहु ॥
 मुनि मुदि सदमेउ राजकुमारू । पाकैं छत जनु लग अँगारू ॥
 धीरज धरि भरि लेहि उगसा । पारिनि सशहि भाँति कुल नासा
 जौ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥
 पेद काटि तैं पालउ सीचा । मीन जिअन निति बारि उलीचा
 दो०—हंसबंसु दमरधु जनकु राम लखन मे भाइ ।

जननी तँ जननी भई बिधि मन कानु न बसाइ ॥ १६१ ॥

जब तैं कुमति कुमत जिये ठयऊ । गंड सांड होइ दटन न गरऊ

हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥
 एक निमेष बरष सम जाई । एहि बिधि भरत नगर निअराई
 असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
 खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर बिसेषि भयावनु लागा ॥
 खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम वियोग कुरोग बिगोए ॥
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥
 दो०—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं ।

भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रत्रिकुल जलरुह चंदिनि
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
 भरत दुखित परिवार निहारा । मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा ॥
 कैकेई हरषित एहि भाँती । मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥
 कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता
 दो०—सुनि सुत वचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि ब्रोली ब्रैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय बिचारी ॥

कछुक काज विधि बीच बिगारेउ। भूगति मुरपति पुर पगु धरिउ ॥
 मुनत भरतु भए विवस बिषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा ॥
 तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल व्याकुल भारी ॥
 चलत न देखन पायउँ तोही। तात न रामहि मँपेहु मोही ॥
 बहुरि धीर धरि उठे सँपारी। कहु पितु मरन हेतु महतागी ॥
 मुनि मुत बचन कहति कैकेई। मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥
 आदिहु तैं सब आपनि करनी। कुटिल कठोर मुदित मन बरनी
 दो०-भरतहि बिसरेउ पितु मरन मुनत राम बन गौनु ।

हेतु अपनपउ जानि जियै थकिन रहे धरि माँनु ॥१६०॥

बिकल बिलोकि मुतहि समुझायति। मनहुँ जंर पर ज्योनु लगायति ॥
 तात राउ नहि सोचै जोगू। बिदइ मुकृत जसु कान्हेउ भोगू ॥
 जीवत सकल जनम पल पाए। अंत अमरपति सदन सिधाए ॥
 अछ अनुमानि सोच परिहरहू। सहित समाज राज पुर करहू ॥
 मुनि मुठि सहमेउ राजकुमारू। पाकैं छत जनु लग अँगारू ॥
 धीरज धरि भरि लेहि उछामा। पापिनि सबहि भौंति कुल नामा
 जी पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही ॥
 पेद काटि तैं पालउ सींचा। मीन जिअन निति वारि उलीचा
 दो०-हंसबंसु दमरपु जनकु राम लखन से भाइ ।

जननी तैं जननी भई विधि मन कछु न बसाइ ॥१६१॥

जब तैं कुमति कुमत जियै ठयऊ। खंड खंड होइ हृदउ न राखऊ

हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥
 एक निमेष वरष सम जाई । एहि विधि भरत नगर निअराई
 असगुन होहिं नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
 खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला । सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥
 श्रीहत सर सरिता बन बागा । नगर बिसेधि भयावनु लागा ॥
 खग मृग हय गय जाहिं न जोए । राम बियोग कुरोग बिगोए ॥
 नगर नारि नर निपट दुखारी । मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी ॥
 दो०—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं ।

भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी । जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि । हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि
 सजि आरती मुदित उठि धाई । द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
 भरत दुखित परिवार निहारा । मानहुँ तुहिन बनजवनु मारा ॥
 कैकेई हरषित एहि भाँती । मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें । पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई । पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥
 कहु कहँ तात कहाँ सब माता । कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता

दो०—सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥१५९॥

तात बात मैं सकल सँवारी । मै मंथरा सहाय विचारी ॥

कछुक काज विधि बीन बिगारेउ । भूपति मुरपति पुर पगु धारेउ ॥
 सुनत भरतु भए बिबस बिगारा । जनु सद्मेउ करि केहरि नादा ॥
 तात तात हा तात पुकारी । परे भूमितल व्याकुल भारी ॥
 चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि भाँपेहु मोही ॥
 बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । कहु पितु मरन हेतु महतागी ॥
 मुनि मुत बचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देखी ॥
 आदिहु तैं सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदिन मन बरनी
 दो०-भरतहि बिसरेउ पितु मरन सुनत राम बन गाँनु ।

हेतु अपनपउ जानि जियै थकिन रहे धरि मानु ॥ १६० ॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझायति । मनहुँ जरे पर न्योनु लगायति ॥
 तात राउ नहि सोनै जोगू । बिदइ मुकृत जमु बान्देउ भोगू ॥
 जीवन सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति मदन मिथाए ॥
 अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥
 मुनि मुठि सद्मेउ राजकुमारू । पाकैं छन जनु लग अँगारू ॥
 धीरज धरि भरि लेहि उसासा । पापिनि सबहि भाँति कुल नागा
 जो पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥
 पेइ काटि तैं पालउ साँचा । मीन जिअन निति चारि उलीचा
 दो०-ईसबंसु दमरपु जनकु राम लखन से भाइ ।

जननी तूँ जननी भई विधि सन कसु न बमाइ ॥ १६१ ॥

जय तैं कुमति कुमत जियै ठयऊ । ग्वंड खंड दोर दृढउ न गयऊ

वर मागत मन भइ नहिं पीरा । गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा
 भूपँ प्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरन काल विधि मति हरि लीन्ही
 विधिहुँ न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी
 सरल सुसील धरम रत राऊ । सो किमि जानै तीय सुभाऊ ॥
 अस को जीव जंतु जग माहीं । जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं ॥
 भे अति अहित रामु तेउ तोही । को तू अहसि सत्य कहु मोही ॥
 जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई । आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

दो०—राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।

मो समान को पातकी वादि कहउँ कछु तोहि ॥१६२॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
 तेहि अवसर कुवरी तहँ आई । वसन विभूषन विविध बनाई ॥
 लखि रिस भरेउ लखन लघु भाई । वरत अनल घृत आहुति पाई ॥
 हुमगि लात तकि कूबर मारा । परि मुह भर महि करत पुकारा
 कूबर दूटेउ फूट कपारू । दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू ॥
 आह दइअ मैं काह नसावा । करत नीक फलु अनइस पावा ॥
 सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी । लगे घसीटन धरि धरि शौंटी
 भरत दयानिधि दीन्ह छड़ाई । कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

दो०—मलिन वसन विवरन बिकल कृस सरीर दुख भार ।

कनक कल्प वर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥१६३॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अवनि परी झई आई ।

देखत भरतु बिकल भए भारी । परे चरन तन दसा बिसारी ॥
मातु तात कहैं देहि देखाई । कहैं छिय रामु लखनु दोउ भाई
कैकय कत जनमी जग माझा । जी जनमित भइ काहे न सँझा
कुल कलंकु जेहि जनमेउ मोही । आजस माजन प्रियजन द्रोही ॥
को तिमुयन मोहि सरिस अमागी । गति अछि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुवर केनू । मैं केवल सब अनरण हेनू ॥
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी । दुसह दाइ दुरा दूपन भागी ॥
दो०—मातु भरत के बचन मृदु मुनि पुनि उठी सँभारि ।

लिष्ट उठाइ लगाइ उर लोचन मोघति बारि ॥ १६३ ॥

सरल सुमाय मायें दियें लाए । अति दित मनहुँ राम फिरि आए
भेंटैउ बहुरि लखन लपु भाई । सोकु सनेहु न हृदयें समाई ॥
देखि सुमाउ कहत सबु कोरं । राम मातु अस काहे न होइ ॥
माताँ भरतु गोद बैठारे । आँसु पौलि मृदु बचन उचारे ॥
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहु । कुसमउ समुझि लोक परिहरहु ॥
जनि मानहु दियें हानि गलानी । काल करम गति अघटित जानी ॥
काहुहि दोसु देहु जनि ताता । मा मोहि सब विधि वाम विधाता ॥
जो एतेहुँ दुरा मोहि जिआया । अजहुँ को जानइ का तेहि भाया ॥

दो०—पितु आयस भूपन बसन तात तजे रघुबीर ।

विसमउ हरतु न हृदयें कसु पहिरे बलकल चीर ॥ १६५ ॥

गुन प्रमद मन रंग न रोनु । सब कर सब विधि करिष

चले त्रिपिन सुनि सिय संग लागी। रहइ न राम चरन अनुरागी ॥
 सुनतहिं लखनु चले उठि साथी। रहहिं न जतन किए रखुनाथी ॥
 तब रखुपति सबही सिरु नाई। चले संग सिय अरु लघु भाई ॥
 रामु लखनु सिय वनहि सिधाए। गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥
 यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें। तउ न तजा तनु जीव अभागें ॥
 मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी ॥
 जिए मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो०—कौसल्या के वचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।

व्याकुल विलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥ १६६ ॥

विलपहिं विकल भरत दोउ भाई। कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥
 भाँति अनेक भरतु समुझाए। कहि विवेकमय वचन सुनाए ॥
 भरतहुँ मातु सकल समुझाई। कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥
 छल विहीन सुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि जुग पानी ॥
 जे अघ मातु पिता सुत मारें। गाइ गोठ महिसुर पुर जारें ॥
 जे अघ तिय बालक वध कीन्हें। मीत महीपति माहुर दीन्हें ॥
 जे पातक उपपातक अहहीं। करम वचन मन भव कवि कहहीं ॥
 ते पातक मोहि होहुँ विधाता। जौं यहु होइ मोर मत माता ॥

दो०—जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर ।

तेहि कइ गति मोहि देउ बिधि जौं जननी मत मोर ॥ १६७ ॥

वेचहिं वेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥

कपटी कुटिल कलहप्रिय कोपी । वेद विदूषक विस्व विरोधी ॥
लोभी लंपट लोलुपचारा । जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
पार्वी में तिन्ह कै गति घोरा । जीं जननी यहु संमन मोरा ॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे । परमारथ पथ विमुख अभागै ॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई । जिन्हहि न हरि हर मुजमु सोहाई ॥
तजि भ्रुतिपंथु वाम पथ चलहीं । बंचक विरचि बेग जगु छलहीं ॥
तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ । जननी जीं यहु जाना भेऊ ॥

दो०—मातु भरत के बचन सुनि सॉंचे सरल सुभायें ।

कहनि राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायें ॥६८॥

राम प्रानहु तैं प्रान तुम्हारे । तुम्ह रघुगतिहि प्रानहु तैं प्यारे ॥
विधु विष चवै सबै हिमु आगी । होइ वारिचर वारि विरागी ॥
भएँ ग्यानु बरु मिटै न मोह । तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होह ॥
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं । सो सखनेहुँ सुर सुगति न तहहीं ॥
अस कहि मातु भरतु दिवैं लाए । मन पय सबहिं नयन जल लाए ॥
करत बिलाप बहुत यहि माँती । बैठेहिं बीति गरं सब शती ॥
वामदेउ बसिउ तय आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
मुनि बहु भाँति भरत उरदेसै । कहि परमारथ बचन मुदेसै ॥

दो०—तात हृदयें धीरउ धरहु करहु जो भवसर आहु ।

उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहेउ मनु साहु ॥६९॥

नृपतनु वेद विदित अन्धका । परम विचित्र ॥

गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं रानि दरसन अभिलाषी ॥
 चंदन अगर भार बहु आए । अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥
 सरजु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
 एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही । विधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ह
 सोधि सुमृति सब वेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात विधाना ॥
 जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा । तहँ तस सहस भाँति सब कीन्हा ।
 भए विसुद्ध दिए सब दाना । धेनु वाजि गज वाहन नाना ॥

दो०—सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।

दिए भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिं बरन
 सुदिनु सोधि मुनिवर तत्र आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ।
 बैठे राजसभाँ सब जाई । पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥
 भरतु वसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममय वचन उचारे ॥
 प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी । कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी
 भूप धरमव्रतु सत्य सराहा । जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निवाहा ॥
 कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
 बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥

दो०—सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥१७१॥

अस विचारि केहि देइअ दोसू । ब्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥

सात विचार करहु मन माहीं । सोन जोसु दसरथ नृपु नाहीं ॥
 सोचिअ विप्र जो वेद पिईना । तजि निज घरसु प्रिय लयलीना
 सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेदिन प्रजा प्रिय प्रान समाना
 सोचिअ वपसु कृपन धनवान् । जो न अतिथि सिव भगति मुजान्
 सोचिअ सुदु विप्र अयमानी । मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ॥
 सोचिअ पुनि पति बंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
 सोचिअ बटु निज व्रतु परिहरई । जो नहिं गुर आयसु अनुसरई ॥

दो०—सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पय त्याग ।

सोचिअ जती प्रपंच रत विगत विवेक विराग ॥१०२॥

बैखानस सोइ सोचै जोगू । तपु पिडाइ जेहि भावइ भोगू ॥
 सोचिअ पिमुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु विरोधी ॥
 सब विधि सोचिअ पर अनकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ॥
 सोचनीय सबही विधि सोई । जो न छादि छटु हरि जन होई ॥
 सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
 मयड न अइइ न अब होनिदारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥
 विधि हरि हृद मुरपति दिशिनाया । वरनहिं सब दसरथ गुन गाथा ॥

दो०—कहहु सात बेहि भौंति कोड करिहि बदाई ठासु ।

राम लखन तुम्ह सनुइन सरिस सुभन सुधि जासु ॥१०३॥

सब प्रकार भूपति बटुभागी । यदि बिगडु करिअ तेंहि ॥
 यहु मुनि समुक्ति सोनु परिहरहु । छिर धरि राज रज्जयम ॥

रायँ राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा । पिता वचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥
 तजे रामु जेहिं वचनहि लागी । तनु परिहरेउ राम विरहागी ॥
 नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितु वचन प्रवाना ॥
 करहु सीस धरि भूप रजाई । हइ तुम्ह कहँ सव भाँति भलाई ॥
 परसुराम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सव साखी ॥
 तनय जजातिहि जौवनु दयऊ । पितु अग्याँ अघ अजसु न भयउ
 दो०—अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।

ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥१७४॥

अवसि नरेस वचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोकु परिहरहु ।
 सुरपुर नृपु पाइहि परितोषू । तुम्ह कहँ सुकृतु सुजसु नहिं
 वेद विदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ।
 करहु राजु परिहरहु गलानी । मानहु मोर वचन हित जानी ।
 सुनि सुखु लहव राम वैदेहीं । अनुचित कहव न पंडित केहीं ।
 कौसल्यादि सकल महतारीं । तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं ।
 परम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सव विधि तुम्ह सन भल
 सौपेहु राजु राम के आएँ । सेवा करहु सनेह सुहाएँ
 दो०—कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।

रघुपति आएँ उचित जस तस तब करब बहोरि ॥१७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई । पूत पथ्य गुर आयसु अहई
 सो आदरिअ करिअ हित मानी । तजिअ विषादु काल गति ज

येन रघुरति सुरपति नरनाहू । तुम्ह एहि माँति तात कदराहू ॥
 परिजन प्रजा सचिव सय अंश । तुम्हही सुत सय कहँ अवलंश ॥
 अलि विधि बाम कालु कठिनाई । धीरजु धरहु मातु बलि जाई ॥
 धरि धरि गुर आयसु अनुमरहु । प्रजा पालि परिजन दुखु दरहु ॥
 गुर के वचन सचिव अभिनंदनु । मुने भरत दिय दित जनु चंदनु ॥
 मुनी बहोरि मातु मृदु बानी । सील सनेह सरल रस मानी ॥

ॐ०-सानी सरल रस मातु बानी मुनि भरतु प्याकुल भण ।
 लोचन सरोरुह सवत सींचत बिरह उर अंकुर मण ॥
 सो दत्ता देखन समय तेहि बिसरी सबहि मुधि देह की ।
 तुलसी सराहत सकल सादर सीर्य सहज सनेह की ॥

सो०-भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ।
 वचन भमिभ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥ १७६ ॥

मासपारायण, अठारहवाँ विभाम

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । प्रजा सचिव मंमत रावही का ॥
 मानु उचित धरि आयसु दीन्हा । अबसि सीम धरि चाहउँ कीन्हा ॥
 गुर पितु मातु स्वामि दित बानी । मुनि मन मुदित करि भ भति जान ॥
 उचित कि अनुचित किएँ विचार । धरमु जाइ गिर पातक भार ॥
 तुम्ह तो देहु सरल सिल सोई । जो आचरत मोर मत होई ॥
 जयपि यह समुझत हउँ नीकै । तदपि होत परिलोषु न जी कै ॥
 अब तुम्ह विनय मोरि मुनि लेहू । मोहि अनुहरत सिखावन ॥

ऊतर देउँ छमय अपराधू । दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ॥

दो०—पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु ।

एहि तैं जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु ॥१७७॥

हित हमार सियपति सेवकाई । सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई ॥
 मैं अनुमानि दीख मन माहीं । आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥
 सोक समाजु राजु केहि लेखें । लखन राम सिय विनु पद देखें ॥
 वादि बसन विनु भूपन भारू । वादि बिरति विनु ब्रह्मविचारू ॥
 सरुज सरीर वादि बहु भोगा । विनु हरिभगति जायँ जप जोगा ॥
 जायँ जीव विनु देह सुहाई । वादि मोर सनु विनु खुराई ॥
 जाउँ राम पहिं आयसु देहू । एकहिं आँक मोर हित एहू ॥
 मोहि नृप करि भल आपन चहहू । सोउ सनेह जड़ता बस कहहू ॥

दो०—कैकेई सुभ कुटिलमति राम विमुख गतलाज ।

तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम कैं राज ॥१७८॥

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू । चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥
 मोहि राजु हठि देइहहु जवहीं । रसा रसातल जाइहि तवहीं ॥
 मोहि समान को पाप निवासू । जेहि लगि सीय राम बनवासू ॥
 रायँ राम कहूँ काननु दीन्हा । बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
 मैं सहु सब अनरथ कर हेतू । बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥
 विनु खुबीर बिलोकि अवासू । रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥
 राम पुनीत विषय रस रूखे । लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥

कहैं लगि कहीं हृदय कटिनारि । निदरि कुलिमु जेहि लही बहारि ॥

दो०—कारन तैं कारजु कठिन होइ दोमु नहिं मोर ।

कुलिस अस्थि तैं उपल तैं लोह कराल कठोर ॥१०९॥

कैकई भव तनु अनुरागे । पावैं प्रान अघाइ अमागे ॥

जौं प्रिय बिरहैं प्रान प्रिय लागे । देखव मुनव बहुत अव आगे ॥

लखन राम धिय कहूँ वनु दीन्दा । पठइ अमरपुर पति हित कीन्दा ॥

लीन्ह बिधवपन अरजमु आपू । दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू ॥

मोहि दीन्ह सुखु मुजमु मुराजू । कीन्ह कैकई सब कर काजू ॥

एहि तैं मोर काह अव नीका । तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥

कैकइ जठर जनमि जग माहीं । यह मोहि कहैं कछु अनुचित नाहीं ॥

मोरि बात सब बिधिहि बनाई । प्रजा पाँच कत करहु सदाई ॥

दो०—ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।

तेहि विभाहम वारनी कहहु काह उपचार ॥१८०॥

कैकइ सुअन जोगु जग जोई । चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥

दसरथ तनय राम लघु भारं । दीन्ह मोहि बिधि बादि बहारं ॥

तुम्ह सब कहहु कदावन टीका । राय रजायगु सब कहैं नीका ॥

उतइ देउँ केहि बिधि केहि केही । कहहु मुरेन जया रुचि जेही ॥

मोहि कुमातु समेत बिहारं । कहहु कहिहि के कीन्ह भलाइ ॥

मो पितु को सचराचर माहीं । जेहि स्त्रिय रामु प्रानप्रिय नाहीं ॥

परम हानि सब कहैं बड़ लाहू । अदिनु मोर नहिं दूयन काह ।

संसय सील प्रेम बस अहहू । सबुइ उचित सब जो कहू कहू ॥

दो०—राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि ।

कहह सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि ॥१८१॥

गुर बिबेक सागर जगु जाना । जिन्हहि विस्व कर बदर समाना ।
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । भएँ बिधि विमुख विमुख सबु के
परिहरि रामु सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं
सो मैं सुनव सहव सुखु मानी । अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू । परलोकहु कर नाहिन सोचू
एकइ उर बस दुसह दवारी । मोहि लगि भे सिय रामु दुखा
जीवन लाहु लखन भल पावा । सबु तजि राम चरन मनु लावा ॥
मोर जनम रघुवर बन लागी । झूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दो०—आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ ।

देखें विनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥१८२॥

आन उपाउ मोहि नहिँ सूझा । को जिय कै रघुवर विनु वूझा
एकहिँ आँक इहइ मन माहीं । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं
जद्यपि मैं अनभल अपराधी । भै मोहि कारन सकल उपार्थ
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि सब करिहहिँ कृपा बिसेष
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराज
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं सिसु सेवक जद्यपि बा
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयसु आसिष देहु सुवा

दो०—जरउ सो संपति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ।

सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ ॥१८५॥

घर घर साजहिं वाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू । नगर वाजि गज भवन भँडारू
संपति सब रघुपति कै आही । जौं विनु जतन चलैं तजि ताही
तौ परिनाम न मोरि भलाई । पाप सिरोमनि साइँ दोहाई ॥
करइ स्वामि हित सेवकु सोई । दूषन कोटि देइ किन कोई ॥
अस विचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि लायक सो तेहिं राखा ॥
करि सबु जतनु राखि रखवारे । राम मातु पहिं भरतु सिधारे ॥

दो०—आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।

कहेउ वनावन पालकीं सजन सुखासन जान ॥१८६॥

चक्र चक्रि जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥
जागत सब निसि भयउ बिहाना । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू । वनहिं देव मुनि रामहि राजू ।
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ।
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ । रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ।
विप्र वृंद चढ़ि वाहन नाना । चले सकल तप तेज निधाना ।
नगर लोग सब सजि सजि जाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना
सिविका सुभग न जाहिं ब्रखानी । चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रा

दो०—अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।

हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥१८९॥

होहु सँजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरै के ठाटा ॥

सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥

समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । राम काजु छनमंगु सरीरा ॥

भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू । बड़ें भाग असि पाइअ मीचू ॥

स्वामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥

तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें । दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरें ॥

साधु समाज न जाकर लेखा । राम भगत महुँ जासु नरेखा ॥

जायँ जिअत जग सो महि भारू । जननी जौवन विटप कुठारू ॥

दो०—विगत विषाद निषादपति सबहि बड़ाइ उछाहु ।

सुमिरि राम मागेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥१९०॥

भाइहु सजहु सँजोऊ । सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ ॥

भलेहिं नाथ सय कहहिं सहरपा । एकहिं एक बड़ावइ करपा ॥

चले निषाद जोहारि जोहारी । सूर सकल रन रूचइ रारी ॥

सुमिरि राम पद पंकज पनहीं । भार्या बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं ॥

अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं । फरसा बाँस सेल सम करहीं ॥

एक कुसल अति ओड़न खाँड़े । कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े ॥

निज निज साजु समाजु बनाई । गुह राउतहि जोहारे जाई ॥

देखि सुभट सब लायक जाने । लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो०-भाइहु लावहु धोख जनि भाहु काज बह मोहि ।

मुनि सरोप बोले सुभट घीर अधीर न होहि ॥१९१॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे । करहि कटकु बिनु भट बिनु घेरे
जीवत पाउ न पाछे धरहीं । बंद मुंडमय मेदिनि करहीं ॥
दीख निपादनाथ भल टोन् । कहेउ बजाउ पुसाऊ दोन् ॥
एतना कहत छीक भइ बाँए । कहेउ सगुनिअन्ह खेत मुहाए ॥
बूढ एक कह सगुन बिचारी । भरतहि मिलिअन होइहि रासी ॥
रामहि भरतु मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं ॥
मुनि गुह कहइ नीक कह बूढा । सहसा करि पछिताहि बिमूढा ॥
भरत सुभाउ सीछु बिनु यूँ । यदि हित हानि जानि बिनु जूँ ॥

दो०-गहहु घाट भट समिटि सय लेउँ मरम मिलि जाइ ।

मूँषि मित्र जरि मध्य गति तस सय करिहउँ भाइ ॥१९२॥

लखव सनेहु सुभायें मुहायें । बैद प्रीति नहि दुराँ दुराँ ॥
अस कहि भेंट सँजोयन लागे । कंद मूल पल खग मृग मागे ॥
मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कदारन्ह आने ॥
मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । मंगल मूल सगुन सुभ पाए ॥
देखि दूरि तैं कदि निज नामू । कीन्ह मुनीसदि दंड प्रनामू ॥
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा । भरतहि बहेउ बुसाइ मुनीसा ॥
राम उखा मुनि संदनु त्यागा । चले उतारि उमगत अनुरागा ॥
गाउँ जाति गुहँ नाउँ मुनारि । कीन्ह जोशब माय महि लारि ॥

दो०-करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।

मनहुँ लग्न सन भेंट भइ प्रेसु न हृदयँ समाइ ॥१९३॥

भेंटत भरत ताहि अति प्रीति । लोग सिहाहि प्रेम कै रीति ॥

धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहि वरिसहि फूला ॥

लोक वेद सब भाँतिहि नीचा । जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा ॥

तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥

राम राम कहि जे जमुहार्ही । तिन्हहि न पाय पुंज समुहार्ही ॥

यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ॥

करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥

उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

दो०-स्वपच सवर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात ।

रामु कहत पावन परम होत भुवन विख्यात ॥१९४॥

नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्हि रघुवीर बड़ाई

राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवधलोग सुख लहहीं

रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूँछी कुसल सुमंगल खेमा ॥

देखि भरत कर सीलु सनेहु । भा निपाद तेहि समय विदेहु ॥

सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा । भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥

धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । विनय सप्रेम करत कर जोरी ॥

कुसल मूल पद पंकज पेखी । मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥

अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें । सहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥

दो०—समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु सहिमा जियँ जोइ ।

जो न भजइ रघुबीर पद जग विधि बंचित सोइ ॥ १९५ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक बेद बाहेर सब भौंती ॥
 राम कीन्ह आपन जबही तैं । भयउँ भुवन भूपन तबही तैं ॥
 देखि प्रीति मुनि विनय मुहाई । मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥
 कहि निषाद निज नाम सुबानी । सादर सकल जोहारी रानी ॥
 जानि लखन सम देहिँ असीसा । जिअहु सुग्री सय लाख बरीसा ॥
 निराख निषादु नगर नर नारी । भए सुखी जनु लखनु निहारी ॥
 कहहिँ लदेउ एहिँ जीवन लाहू । भेंटैउ रामभद्र भरि बाहू ॥
 मुनि निषादु निज भाग बड़ाई । प्रमुदित मन लइ चलेउ लेयाई ॥
 दो०—सनकारे सेवक सकल चले स्वामि स्व पाइ ।

घर तरु तर सर बाग बन वास बनाएन्हि जाइ ॥ १९६ ॥

सुंगरेपुर भरत दीख जब । भे सनेहँ सब अग सिधिल नव ॥
 सोहत दिऐँ निषादाहि लागू । जनु तनु धरैं विनय अनुरागू ॥
 एहि विधि भरत सेनु सबु संगी । दीग्वि जाइ जग पावनि गंगा ॥
 रामघाट कहैं कीन्ह प्रनामू । भा मनु सगनु मिले जनु रामू ॥
 करहिँ प्रनाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय चारि निहारी ॥
 करि मज्जनु मागहिँ कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ॥
 भरत कहेउ मुरछरि तब रेनू । सकल मुखाद सेनक मुरधेनू ॥
 जोरि पानि बर मागउँ एहु । सीय राम पद सह

दो०—एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ ।

मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवाइ ॥१९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोधु सबही कर लीन्हा ॥
 सुर सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहिं गे दोउ भाई ॥
 चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । जननीं सकल भरत सनमानी ॥
 भाइहि सौं पि मातु सेवकाई । आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ॥
 चले सखा कर सौं कर जोरें । सिथिल सरीरु सनेहन थोरें ॥
 पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥
 जहँ सिय रामु लखनु निसि सोए । कहत भरे जल लोचन कोए ॥
 भरत बचन सुनि भयउ त्रिषादू । तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू ॥

दो०—जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुबर किय विश्रामु ।

अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु ॥१९८॥

कुस साँथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन्न जाई ॥
 चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । बनइ न कहत प्रीति अधिकाई ॥
 कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥
 सजल बिलोचन हृदयँ गलानी । कहत सखा सन बचन सुबानी ॥
 श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना । जया अवध नर नारि बिलीना ॥
 पिता जनक देउँ पटतर केही । करतल भोगु जोगु जग जेही ॥
 ससुर भानुकुल भानु भुआलू । जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥
 प्राननाथु रघुनाथ गोसाई । जो बड़ होत सो राम बड़ाई ॥

छं०-विधि वाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।
 तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥
 तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हौं सौंहीं किएँ ।
 परिनाम मंगल जानि अपने आनिए धीरजु हिएँ ॥

सो०-अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।
 चलिअ करिअ विभ्रामु यह बिचारि दद आनि मन ॥२०१॥
 सखा वचन सुनि उर धरि धीरा । वास चले सुमिरत रघुवीरा ॥
 यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले विलोकन आरत भारी ॥
 परदखिना करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥
 भरि भरि बारि विलोचन लेहीं । वाम विधातहि दूपन देहीं ॥
 एक सराहिं भरत सनेहू । कोउ कह नृपति निग्राहेउ नेहू ॥
 आपु सराहि निषादहि । को कहि सकइ विमोह विषादहि ॥
 एहि विधि राति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार गुदारा लागा ॥
 गुरहि सुनावैं चढ़ाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
 दंड चारि महुँ भा सबु पारा । उत्तरि भरत तत्र सबहि सँभारा ॥

दो०-प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ ।
 आगें किए निषाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥
 कियउ निषादनाथु अगुआई । मातु पालकीं सकल चलाई ॥
 साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । विप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥
 आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥

चातकु रटनि घटें घटि जाई। बड़े प्रेमु सब भाँति भलाई ॥
 कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें। तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें ॥
 भरत बचन सुनि माझ त्रिवेनी। भइ मृदु बानि सुमंगल देनी ॥
 तात भरत तुम्ह सब विधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू ॥
 बादि गलानि करहु मन माहीं। तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं ॥
 दो०—तनु पुलकेउ हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल।

भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित वरषहिं फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी। बैखानस बटु गृही उदासी ॥
 कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा। भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥
 सुनत राम गुन ग्राम सुहाए। भरद्वाज मुनिवर पहिं आए ॥
 दंड प्रनामु करत मुनि देखे। मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥
 उठाइ लाइ उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥

दीन्ह नाइ सिरु बैठे। चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे ॥
 मुनि पूँछव कछु यह बड़ सोचू। बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू ॥
 सुनहु भरत हम सब सुधि पाई। विधि करतव पर किछु न बसाई ॥

दो०—तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति।

तात कैकइहि दोसु नहिं गई गिरा मति धूति ॥२०६॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु वेदु बुध संमत दोऊ ॥
 तात तुम्हार बिमल जसु गाई। पाइहि लोकउ वेदु बड़ाई ॥
 लोक वेद संमत सबु कहई। जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥

निसि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसिहि न कैकह करतबु राहू ॥
 पूरन राम सुपेम पियूषा । गुर अवमान दोष नहिँ दूषा ॥
 राम भगत अब अमिअँ अघाहूँ । कीन्हैहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ ॥
 भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥
 दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं । अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं ॥

दो०—जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भए आइ ।

जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥
 कीरति विधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥
 तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥
 सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
 सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसन पावा ॥
 तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥

धन्य तुम्ह जसु जगु जयऊ । कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ
 सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर वरषे ॥
 धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा ॥

दो०—पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन ।

करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥२१०॥
 मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥
 एहिँ थल जौँ किछु कहिअ बनाई । एहिँ सम अधिक न अघ अधमाई
 तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥

मोहि न मातु करतव कर सोचू । नहिं दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू ॥
 नाहि न डरु विगरिहि परलोक । पितहु मरन कर मोहि न सोचू ॥
 सुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस मुत पाए ॥
 राम विरहँ तजि तनु छनभंगू । भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥
 राम लखन सिय त्रिनु पग पनहीं । करि मुनि बेप पितरहि वन वनहीं ॥
 दो०—अजिन बसन कल असन महि सयन दासि कुस पात ।

बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरपा वात ॥२११॥

एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती । भूख न बासर नीद न राती ॥
 एहि कुरोग कर औरधु नारी । सोधेउँ सकल बिस्व मन मारी ॥
 मातु कुमत बढ़इ अघ मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह बैसूला ॥
 कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्र । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्र ॥
 मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाट । घालेसि सब जगु बारहचाट ॥
 मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । बसइ अवध नहिं आन उपाएँ ॥
 भरत बचन सुनि मुनि मुखु पाइँ । सरहिं कीन्हि बहु भाँति बढ़ाई
 तात करहु जनि सोचु बिलेयी । सब दुखु मिटिहि राम पग देखी
 दो०—करि प्रबोधु मुनिवर कहेउ अतिथि पेमाप्रिय होहु ।

कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

मुनि मुनि बचन भरत हियँ सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू
 जानि गहइ गुर गिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
 किरधरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ॥

भरत बचन मुनिवर मन भाए । सुचि सेवक सिप्र निकट बोलाए
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ॥
 भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सिधाए
 मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देवता ॥
 सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहि गोसाई
 दो०—राम विरह व्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।

पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥
 रिधि सिधि सिर धरि मुनिवर बानी । बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी
 कहहि परसपर सिधि समुदाई । अतुलित अतिथि राम लघु भाई
 मुनि पद बंदि करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सब राज समाजू ॥
 अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । जेहि बिलोकि बिलखाहि बिमाना
 बिभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे
 दास साजु सब लीन्हें । जोगवत रहहि मनहि मनु दीन्हें ॥
 सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सुरपुर सपनेहुं नाहीं
 प्रथमहि बास दिए सब केही । सुंदर सुखद जया रुचि जेही ॥

दो०—बहुरि सपरिजन भरत कहूँ रिधि अस आयसु दीन्ह ।

विधि बिसमय दायकु विभव मुनिवर तपबल कीन्ह २१४
 मुनि प्रभाउ जव भरत बिलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
 सुख समाजु नहि जाइ बखानी । देखत विरति बिसारहि ग्यानी ॥
 आसन सयन सुबसन बिताना । बन बाटिका बिहग मृग नाना ॥

मुरभि फूल फल अमिअ समाना । विमल जलसय विविध विधाना
असन पान मुचि अमिअ अमी से । देखि लोग सकुचात जमी से ॥
सुर मुरभी मुरतरु खही कैं । लखि अभिलापु सुरेससची कैं ॥
रितु वसंत बह विविध बयारी । सब कहैं सुलभ पदारथ चारी ॥
सक चंदन वनितादिक भोगा । देखि हरप पिसमय बस लोगा ॥
दो०—संपत्ति चकई भरतु चक मुनि आयस खेलवार ।

तेहि निसि आश्रम पिंजरी राखे भा भिनुसार ॥ २१५ ॥

मासपारायण, उघीसवाई विधाम

कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा । नाद मुनिहि सिद्ध सहित समाजा ॥
रिपि आयमु असीस मिर राखी । करि दंडवत विनय बहु भापी ॥
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें । चले चित्रकूटहि चितु दीन्हें ॥
रामसखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरिजनु अनुरागू ॥
नहि पद त्रान सीध नहि छाया । पेमु नेमु व्रतु धरमु अमाया ॥
लखन राम सिय पंथ कहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ॥
राम बास थल बिटप विलोकैं । उर अनुराग रहत नहि रोकैं ॥
देखि दसा सुर बरिसहिं फूला । भइ मृदु महि मगु मंगल मूला ॥

दो०—किण् जाहिं छाया जलद सुखद बहइ घर घात ।

तस मगु भयउ न राम कहैं जस भा भरतहि जात ॥ २१६ ॥

जइ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
ते सब भए परम पद जोगू । भरत दरस मेढा भव /

यह ऋद्धि बात भरत कह नहीं । सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ॥
 वारक राम कहत जग जेऊ । होत तरन तारन नर तेऊ ॥
 भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता । कस न होइ मगु मंगलदाता ॥
 सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं । भरतहि निरखि हरषु हियँ लहहीं
 देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । जगु भल भलेहि पोच कहूँ पोचू
 गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई । रामहि भरतहि भेट न होई ॥
 दो०—रामु सँकोची प्रेम बस भरत सपेम पयोधि ।

बनी बात वेगारन चहति करिअ जतनु छलु सोधि २१७

बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । सहसनयन बिनु लोचन जाने ॥
 मायापति सेवक सन माया । करइ त उलटि परइ सुरराया ॥
 तब किछु कीन्ह राम रुख जानी । अब कुन्चालि करि होइहि हानी
 सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराध रिसाहि न काऊ ॥
 जो अपराधु भगत कर करई । राम रोष पावक सो जरई ।
 लोकहुँ वेद विदित इतिहासा । यह महिमा जानहिँ दुरवासा ।
 भरत सरिस को राम सनेही । जगु जप राम रामु जप जेही ।
 दो०—मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुवर भगत अकाजु ।

अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु ॥ २१८

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा । रामहि सेवकु परम पिआरा
 मानत सुखु सेवक सेवकाई । सेवक वैर वैर अधिकाई
 जद्यपि सम नहिँ राग न रोषू । गहहिँ न पाप पूनु गुन दोषू

करम प्रधान विस्व करि राखा । जो जस कह्य सो तस कह्यु चाखा ॥
तदपि करहिं सम विषम विहारा । भगत अभगत हृदय अनुमारा ॥
अगुन अलेप अमान एकरस । रामु सगुन भए भगत पेम बस ॥
राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद पुरान साधु मुर साखी ॥
अस जियै जानि तजहु कुटिलाई । करहु भरत पद प्रीति मुहाई ॥

दो०-राम भगत परहिच निरत पर दुख दुखी दयाल ।

भगत सिरोमनि भरत तैं जनि दरपहु सुरपाल ॥२१९॥

सत्यबंध प्रभु मुर हितकारी । भरत राम आयस अनुमारी ॥
स्वारथ विवस विकल तुम्ह होहू । भरत दोमु नहिं राउर मोहू ॥
मुनि सुरपर मुरगुर बर बानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥
बरपि प्रसून हरपि मुरराऊ । लगे सराहन भरत मुभाऊ ॥
एहि विधि भरत चले मग जाहीं । दसा देखि मुनि सिद्ध सिद्धानी ॥
जबहिं रामु कहि लेहि उषासा । उमगत पेमु मनहुँ चहु पासा ॥
द्वयहिं बचन मुनि कुलिस पपाना । पुरजन पेमु न जाइ बराना ॥
बीच बाध करि जमुनहिं आए । निरखि नीरु लोचन जल छाए ॥

दो०-रघुबर धरन बिलोकि बर बारि समेत समाज ।

होत मगन बारिधि विरह चढ़े धिवेक जहाज ॥२२०॥

जमुन तीर तोहि दिन करि बासू । भयउ समय सम सबहि सुवासू ॥
रातिहिं घाट घाट की तरनी । आई अगनित जाहिं न बरनी ॥
प्रात पार भए एकहि खेचौ । तोपे रामख्खा की सेचौ ॥

चले नहाइ नदिहि सिर नाई । साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥
 आगें मुनिवर बाहन आछें । राजसमाज जाइ सबु पाछें ॥
 तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । भूषन वसन वेष सुठि सादें ॥
 सेवक सुहृद सचिवसुत साथी । सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा ॥
 जहँ जहँ राम वास विश्रामा । तहँ तहँ करहि सप्रेम प्रनामा ॥
 दो०—मगवासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।

देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ ॥२२१॥
 कहहि सपेम एक एक पार्हीं । रामु लखनु सखि होहिं कि नार्हीं
 वय वपु वरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥
 बेषु न सो सखि सीय न संगी । आगें अनी चली चतुरंगा ॥
 नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा । सखि संदेहु होइ एहिं भेदा ॥
 तासु तरक तियगन मन मानी । कहहिं सकल तेहि सम न स्यानी
 तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । बौली मधुर वचन तिय दूजी ॥
 कहि सपेम सब कथाप्रसंगू । जेहि विधि राम राज रस भंगू ॥
 भरतहि बहुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाय सुभागी ॥
 दो०—चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु ॥२२२॥
 भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुख दूषन हरनू ॥
 जो किलु कहव थोर सखि सोई । राम बंधु अस काहे न होई ॥
 हम सब सानुज भरतहि देखें । भइन्ह धन्य जुवती जन लेखें ॥

मुनि गुन देखि दसा पछिताहीं । कैकद जननि जोगु मुनु नाहीं ॥
 कोउ कद दूगनु रानिहि नाहिन । विधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन
 कहैं हम लोक वेद विधि हीनी । लघु तिय कुल करतूति मनीनी ॥
 बसहि कुदेस कुगाँव कुयामा । कहैं यह दरमु पुन्य परिनामा ॥
 अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा । जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

श्लोक-भरत दरमु देखत सुलेउ मग लोगन्ह कर भागु ।

जनु सिंघलवासिन्ह भयउ विधि बस सुलभ प्रयागु ॥ २२३ ॥

निज गुन सहित राम गुन गाथा । सुनत जाहि सुमिरत रघुनाथा ॥
 तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा । निरखि निमज्जहि करहि प्रनामा ॥
 मनही मन मागहि बर एहू । सीय राम पद पदुम सनेहू ॥
 मिलहि किरात कोल बनबासी । बैखानस बटु जती उदासी ॥
 करि प्रनामु पूछहि जेहि तेही । केहि बन लखनु रामु बैदेही ॥
 ते प्रभु समाचार सब कहहीं । भरतहि देखि जनम कलु लहहीं ॥
 ते जन कहहि कुसल हम देखे । ते प्रिय राम लखन सम लेखे ॥
 यहि विधि बूझत सबहि मुयानी । सुनत राम बनवास कहानी ॥

श्लोक-तेहि बामर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ ।

राम दरस की छालसा भरत सरिस सब साथ ॥ २२४ ॥

बंगल सगुन होहि सब काहू । फरकाहि मुखद विलोचन बाहू ॥
 भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहि रामु भिटिहि दुख बाहू
 भरत मनोरथ जस जियै जाके । जाहि सनेह सुराँ सब

सहसन्नाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
 भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंचन राखव काऊ ॥
 एक कीन्हि नहिं भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ॥
 समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी । समर सरोष राम मुखु पेखी ॥
 एतना कहत नीति रस भूला । रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ॥
 प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥
 अनुचित नाथ न मानव मोरा । भरत हमहि उपचार न थोरा ॥
 कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥

दो०—छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।

लातहुँ मारें चढ़ति सिर नोच को धूरि समान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा । मनहुँ वीर रस सोवत जागा ॥
 बाँधि जटा सिर कसि कटि भाया । साजि सरासनु सायकु हाया ॥
 आजु राम सेवक जसु लेऊँ । भरतहि समर सिखावन देऊँ ॥
 राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥
 आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥
 जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
 तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
 जौँ सहाय कर संकर आई । तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥

दो०—अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।

समय लोक सख लोकपति चाहत भंभरि भगान ॥२३०॥

जगु भय मगन गगन भई बानी । लखन बाहुबल विपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । को कहि सकइ को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काजु किलु होऊ । समुझि करिअ मल कह सपु कोऊ
सहसा करि पाछे पछितार्हीं । कहहिं बेद बुध ते बुध नाही ॥
सुनि सुर वचन लखन सकुचाने । राम सीयें सादर सनमाने ॥
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । स्व तें कठिन राजमदु भाई ॥
जो अचवैत नृप मातहिं तेई । नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ॥
सुनहु लखन मल भरत सरीसा । विधि प्रपंच महँ सुना न दीसा ॥

दो०-भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ ।

कबहुँ कि कौंजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ॥२३१॥

तेमिह तदन तरनिहि मकु गिलई । गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई
गोपद जल बूझहिं घटजोनी । सहज छमा बह छाई छोनी ॥
मसक फूँक मकु मेह उड़ाई । होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥
लखन तुम्हार सपय पितु आना । सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना ॥
सुगुनु खीर अवगुन जलु ताता । मिलइ रचइ परपंचु विधाता ॥
भरतु हंस रविबंस तद्गागा । जनमि कौन्ह गुन दोष विभागा ॥
राहि गुन पय तजि अवगुन बारी । निज जस जगत कीन्हि उजिआरी
कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पेम पयोधि मगन सुर ॥

दो०-सुनि रघुबर बानी विबुध देखि भरत पर हे

सकल सहाइत राम सो प्रभु को कृपानिधि ॥

जौं न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को
 कवि कुल अगम भरत गुन गाथा । को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा
 लखन राम सियँ सुनि सुर बानी । अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी
 इहाँ भरतु सत्र सहित सहाए । मंदाकिनीं पुनीत नहाए ॥
 सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥
 चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निषादनाथु लघु भाई ॥
 समुझि मातु करतव्य सकुचाहीं । करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥
 रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ
 दो०—मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर ।

अथ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर ॥२३३॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी । जौं सनमानहिं सेवकु मानी ॥
 मोरें सरन रामहि की पनही । राम सुखामि दोसु सब जनही ॥
 जग जस भाजन चातक मीना । नेम पेस निज निपुन नवीना ॥
 अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहँ सिथिल सत्र गाता ॥
 फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भगति बल धीरज धोरी ॥
 जव समुझत रघुनाथ सुभाऊ । तव पथ परत उताइल पाऊ ॥
 भरत दसा तेहि अवसर कैसी । जल प्रवाहँ जल अलि गति जैसी
 देखि भरत कर सोचु सनेहू । भा निषाद तेहि समयँ विदेहू ॥
 दो०—लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु ।

मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु ॥२३४॥

सेवक बचन सत्य सब जाने । आश्रम निकट जाइ निअराने ॥

भरत दीख बन सैल समाज । मुदित छुधित जनु पाइ मुनाज ॥
 इति भीति जनु प्रजा दुखारी । त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥
 जाइ सुराज मुदेस सुखारी । होहि भरत गति तेहि अनुहारी ॥
 राम वास बन संपति भ्राजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
 सचिव विरागु विषेकु नरेस । विपिन मुहायन पावन देख ॥
 भट जम नियम सैल रजधानी । सति मुमति मुचि सुंदर रानी ॥
 सकल अंग संपन्न सुराज । राम चरन आश्रित चित चाऊ ॥
 दो०—जीति मोह महिपालु दल सहित विषेक मुगालु ।

करत अकंटक राजु पुरे मुख संपदा सुखलु ॥२३५॥
 बन प्रदेस मुनि वास घनेरे । जनु पुरनगर गाउँ गन खेरे ॥
 विपुल विचित्र विहग मृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ बखाना ॥
 खगडा करि हरि वास बराहा । देखि महिय बृष साजु सराहा ॥
 बयल विहाइ चरहि एक संगी । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥
 क्षरना क्षरहि मत्त गज गाजहि । मनहुँ निशान विविधि विधि बाजहि ॥
 चक्र चकोर चातक मुक पिक गन । कुजत मंजु भराल मुदित मन ॥
 अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहु ओरा ॥
 खेलि बिट्ठप तून सफल सफूला । सब समाजु मुद मंगल मूला ॥
 दो०—राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति वेसु ।

तापस तप कलु पाइ जिमि सुखी सिराने नेसु ॥२३६॥

मासपारायण, वीसवाँ विथ्राम
 नवाह्नपारायण, पाँचवाँ विथ्राम

तब केवटे ऊँचें चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥
 नाथ देखिअहिं ब्रिटप बिसाला । पाकरि जंबु रसाल तमाला ॥
 जिन्ह तरुवरन्ह मध्य बटु सोहा । मंजु बिसाल देखि मनु मोहा ॥
 नील सघन पल्लव फल लाला । अविरल छाँह सुखद सब काला ॥
 मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी ॥
 ए तरु सरित समीप गोसाँई । रघुवर परनकुटी जहँ छाई ॥
 तुलसी तरुवर बिबिध सुहाए । कहूँ कहूँ सियँ कहूँ लखन लगाए ॥
 बट छायाँ बैदिका बनाई । सियँ निज पानि सरोज सुहाई ॥
 दो०—जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान ।

सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान ॥२३०॥

सखा बचन सुनि ब्रिटप निहारी । उमगे भरत विलोचन वारी
 करत प्रनाम चले दोउ भाई । कहत प्रीति सारद सकुचाई
 हरषहिं निरखि राम पद अंका । मानहुँ पारसु पायउ रंका
 रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं । रघुवर मिलन सरिस सुख पाव
 देखि भरत गति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा
 सखहि सनेह बिबस मग भूला । कहि सुपंथ सुरवरषहिं फूला
 निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेहु सराहन लागे
 होत न भूतल भाउ भरत को । अचर सचर चर अचर करत
 दो०—पेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर ।

मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर ॥२३१॥

सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउ न लखन सधन बन ओटा
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन । सकल सुमंगल सदन सुहावन ॥
करत प्रवेश मिटे दुख दावा । जनु जोगी परमारु पावा ॥
देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूछे वचन कहत अनुरागे ॥
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधें । तून कसैं कर सर धनु काँधें ॥
बेदी पर मुनि साधु समाजू । सीय सहित राजत रघुराजू ॥
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा । जनु मुनिवेष कीन्ह रति कामा ॥
कर कमलनि धनु सायकु फेरत । जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दो०—लखत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु ।

ग्यात सभाँ जनु तनु धरैं भगति सखिदानंदु ॥२२९॥

सानुज सखा समेत मगन मन । बिसरे हरष सोक सुख दुख गन ॥
पाहि नाय कहि पाहि गोसाई । भूतल परे लकुट की नाई ॥
वचन सपेभ लखन पहिचाने । करत प्रनामु भरत जियैं जाने ॥
बंधु सनेह सरस एहि ओरा । उत साहिब सेवा बस जोरा ॥
मिलि न जाइ नहि गुदरत बनई । सुकवि लखन मन की गति भनई
रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खँच खेलाऊ ॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाया ॥
उठे रामु सुनि पेम अधीरा । कहूँ पट कहूँ निर्यंग धनु तीरा ॥

दो०—बरखस लिष्ट उठाइ डर लाए कृपानिधान ।

भरत राम की मिलनि सखि बिसरे सबहि अपान ॥२४०॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी। कविकुल अगम करम मन बानी
 परम पेम पूरन दोउ भाई। मन बुधि चित अहमिति विसराई
 कहहु सुपेम प्रगट को करई। केहि छाया कवि मति अनुसरई॥
 कविहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा
 अगम सनेह भरत रघुवर को। जहँ न जाइ मनु विधि हरि हर को
 सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। वाज सुराग कि गाँडर ताँती॥
 मिलनि बिलोकि भरत रघुवर की। सुरगन सभय धकधकी धरकी॥
 समुझाए सुरगुरु जड़ जागे। वरषि प्रसून प्रसंसन लागे।
 दो०-मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटैउ राम ।

भूरि भायँ भेंटै भरत लछिमन करत प्रनाम ॥२४१॥

भेंटैउ लखन ललकि लघु भाई। बहुरि निषादु लीन्ह उर लाई।
 पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे। अभिमत आसिप पाइ अनंदे॥
 सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि सिर सिय पद पदुम परागा॥
 पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए। सिर कर कमल परसि बैठाए॥
 सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेहँ देह सुधि नाहीं॥
 सब विधि सानुकूल लखि सीता। भे निसोच उर अपडर बीता॥
 कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूँछा। प्रेम भरा मन निज गति छूँछा
 तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि। जोरि पानि विनवत प्रनामु करि॥

दो०-नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग ।

सेवक सेनप सचिव सब आए बिकल वियोग ॥२४२॥

गुरतिय पद बंदे दुहु भाई । सहित त्रिप्रतिय जे सँग आई ॥
 गंग गौरि सम सब सनमानाँ । देहिं असीस मुदित मृदु बानी ॥
 गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटि संपति अति रंका ॥
 पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । परे पेम व्याकुल सब गाता ॥
 अति अनुराग अंग उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥
 तेहि अवसर कर हरष त्रिषादू । किमि कबि कहै मूक जिमि स्वाद ॥
 मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥
 पुरजन पाइ मुनीस नियोगू । जल थल तकि तकि उतरेउ लोग ॥
 दो०—महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ ।

पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आई मुनिवर पग लागी । उचित असीस लही मन मागी ॥
 गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता । मिली पेमु कहि जाइ न जेता ॥
 बंदि बंदि पग सिय सबही के । आसिरबचन लहे प्रिय जी के ॥
 सासु सकल जब सीयें निहारीं । मूदे नयन सहमि सुकुमारी ॥
 परीं बधिक बस मनहुँ मरालीं । काह कीन्ह करतार कुचालीं ॥
 तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा । सो सबु सहिअ जो दैउ सहावा ॥
 जनकसुता तब उर धरि धीरा । नील नलिन लोयन भरि नीरा ॥
 मिली सकल सासुन्ह सिय जाई । तेहि अवसर कवना महि छाई ॥

दो०—लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग ।

हृदयँ असीसहिं पेम यस रहिअहु भरी सोहाग ॥२४६॥

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ विकल जहाजू
 सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला॥
 पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो विलोकि अघ ओघ नसाहीं॥
 मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहिं हरषि दंडवत करि करि
 राम सैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं
 झरना झरहिं सुधासम बारी। त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी॥
 बिटप बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती॥
 सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं। जाइ वरनि बन छवि केहि पाहीं
 दो०—सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग।

वैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥२४६॥

कोल किरात भिह्य बनवासी। मधुसुचि सुंदर स्वादु सुधा सी॥
 भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी॥
 सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा॥
 देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं॥
 कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी॥
 तुम्ह सुकृती हम नीच निपादा। पावा दरसन राम प्रसादा॥
 हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा॥
 राम कृपाल निपाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा
 दो०—यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोहु लखि नेहु।

हमहि कृतारथ करन लागि फल तृन अंकुर लेहु ॥२५०॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे । सेवा जोगु न भाग हमारे ॥
 देव काह हम तुम्हाहि गोसोंई । ईधनु पात किरात मिनाई ॥
 यह हमारि अति यदि सेवकाई । लेहि न बामन बसन चोराई ॥
 हम जइ जीव जीव गन पाती । कुटिल कुचाली कुमति बुजाती
 पाप करत निशि बामर जाई । नहि पट कटि नहि पेट अघाई ॥
 सपनेहुँ धरम बुद्धि कम काऊ । यह रघुनंदन दग्ग प्रभाऊ ॥
 जब तैं प्रभु पद पदुम निहारे । मिटे दुमह दुख दोष हमारे ॥
 बचन मुनत पुरजन अनुरागे । तिन्ह के भाग भगहन लागे ॥

छं०—लागे मराहन भाग सब अनुराग बचन मुनावहीं ।
 बोलनि मिलनि मिय राम चरन मनेहु ल्यनि मुसु पावहीं ॥
 नर नारि निदरहिं नेहु निज मुनि कोल भित्ति की गिरा ।
 तुलसी कृपा रघुवंममनि की लोह लै लौका निरा ॥

सो०—बिहरहिं बन चहु ओर प्रति दिन प्रमुदिन लोग सब ।

जल ज्यों दादुर मोर भए पीन पावम प्रथम ॥२५१॥

पुरजन नारि मगन अति प्रीती । बामर जाहि पलक सम बीनी ॥
 सीय सामु प्रति बेध बनाई । सादर करइ गरिम भेयसाई ॥
 लला न मरमु राम बिनु काहूँ । माया सब मिय माया माहूँ ॥
 सीयें सामु सेवा बस कीन्हीं । तिन्ह लहि मुख सिख आभिय दीन्हीं
 लखि सिय सहित सरल दोड भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई
 अपनि जमहि जाचति कैकेई । महिन बीचु विधि मीचु न देखी ॥

अहिष महिष जहैं लगि प्रमुताई । जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥
करि विचार जियें देखहु नीकैं । राम रजाइ सीस स्वही कैं ॥

दो०—राखैं राम रजाइ रखइ हम सब कर दित होइ ।

समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ ॥२५४॥

सब कहूँ सुखद राम अभियेकू । मंगल मोद मूल मग एकू ॥
केहि विधि अवध चलहिं रघुराऊ । कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ
सब सादर सुनि मुनिवर बानी । नय परमारय स्वाय सानी ॥
उतह न आय लोग भए मोरे । तब सिद्ध नाइ भरत कर जोरे ॥
मानुबंस भए भूप घनेरे । अधिक एक तैं एक बदेरे ॥
जनम हेतु सब कहैं पितु माता । करम सुभासुम देइ विधाता ॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जगु जाना ॥
सो गोसाईं विधि गति जेहि छैंकी । सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दो०—बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अमागु ।

सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥२५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं । राम विमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥
सकुचउँ तात कहत एक बात । अरध तजहिं बुध सरबस जाता ॥
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥
सुनि सुबचन हरपे दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥
मन प्रसन्न तन तैलु बिराजा । जनु जिय राउ राम भूराजा ॥
बहुत लाम लोगन्ह लघु हानी । सम दुख सुख स

कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे । फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे
कानन करउँ जनम भरि वासू । एहि तैं अधिक न मोर सुपासू ॥

दो०—अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान ।

जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥२५६॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू । सभा सहित मुनि भए विदेहू ॥

भरत महा महिमा जलरासी । मुनि मति ठाढ़ि तीर अवला सी ॥

गा चह पार जतनु हियँ हेरा । पावति नाच न बोहितु बेरा ॥

औरु करिहि को भरत बड़ाई । सरसी सीपि कि सिंधु समाई ॥

परतु मुनिहि मन भीतर भाए । सहित समाज राम पहिं आए ॥

रामु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु । बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु ॥

गोले मुनिवरु बचन विचारी । देस काल अवसर अनुहारी ॥

मिहु राम सरबग्य सुजाना । धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥

दो०—सब के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।

पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५७॥

भरत कहहिं विचारि न काऊ । सूझ जुआरिहि आपन दाऊ ॥

नि मुनि बचन कहत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥

व कर हित रुख राउरि राखें । आयसु किँ मुदित फुर भाषें ॥

धम जो आयसु मो कहँ होई । मायें मानि करौं सिख सोई ॥

नि जेहि कहँ जस कहव गोसाई । सो सब भाँति घटिहि सेवकाई ॥

इ मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा । भरत सनेहँ विचारु न राखा ॥

तेहि तैं कहउँ बहोरि बहोरी । भरत भगति बस भइ मति मोरी ॥
मोरें जान भरत रुचि राखी । जो कीजिअ सो मुम खिय साखी ॥

दो०—भरत विनय सादर मुनिअ करिअ विषाद बहोरि ।

करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥२५८॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी । राम हृदयैं आनंदु बिसेरी ॥
भरतहि धरम धुरंधर जानी । निज सेवक तन मानस बानी ॥
बोले गुर आयस अनुकूल । वचन मंजु मृदु मगनमूल ॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहारैं । भयउ न भुअन भरत सम भारैं ॥
जे गुर पद अंबुज अनुरागी । ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी ॥
राउर जा पर अस अनुरागु । को कहि सकइ भरत कर भागु ॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचारैं । करत बदन पर भरत बदारैं ॥
भरतु कहहि सोइ किएँ भलाई । अस कहि राम रहे अरगारैं ॥

दो०—तब मुनि बोलै भरत सन सब सँकोचु तजि तात ।

कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात ॥२५९॥

मुनि मुनि वचन राम रुख पाई । गुरु साहिब अनुकूल अपारैं ॥
लखि अपने सिर सबु छरु भारु । कहि न सकहि कछु करहि बिचारु ॥
पुलकि मरीर सभों भए ठाढ़े । नीरज नयन नेह जल बाढ़े ॥
कहव मोर मुनिनाथ निषादा । एहि तैं अधिक कहाँ मैं काहा ॥
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ । अपराधिहु पर कोइ न काऊ ॥
मो पर कृपा सनेहु बिसेयी । खेलत खुनिस न कबहुँ देखी ॥

सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू । कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
 मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही । हारेहुँ खेल जितावहिं मोही ॥

दो०—महुँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन ।

दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन ॥२६०॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा । नीच ब्रीचु जननी मिस पारा ॥
 यहउ कहत मोहि आजु न सोभा । अपनी समुझि साधु सुचि को भा ॥
 मातु मंदि मैं साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
 फरह कि कोदव बालि सुसाली । मुकता प्रसव कि संबुक काली ॥
 सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
 बिनु समुझें निज अघ परिपाकू । जारिउँ जायँ जननि कहि काकू ॥
 हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा ॥
 गुर गोसाँइ साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दो०—साधु सभाँ गुर प्रभु निकट कहउँ सुधल सति भाठ ।

प्रेम प्रपचु कि छठ फुर जानहिं मुनि रघुराठ ॥२६१॥

भूपति मरन पेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु स्खु साखी ॥
 देखि न जाहिं बिकल महतारीं । जरहिं दुसह जर पुर नर नारीं ॥
 महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहिउँ सब सला ॥
 सुनि दन गवनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनि बेष लखन सिय साया ॥
 बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकर साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥
 बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू ॥

अब छु आँखिन्ह देखैउँ आई । जितत जोय जइ स्वर स्वरै ।
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बोली । तयाहिं विचन बिनु लखै नही
हो०-तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनरित सगो करे ।

वासु सनय तजि दुसह दुस दैठ सरासर करे ॥२१॥

मुनि अति बिकल भरत बर शानी । आपति प्रीति निनय नय सनै
सोक मगन स्य सभौं स्वभारु । मनहुँ कलज बन नरेड दुखद ।
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी । भरत प्रबोधु कंठ नुनै सनै
बोले उचित बचन रघुनंद । दिनकर कुत कैर बन चहुँ
तात जायँ जियँ करहु गलानी । रंस अर्धन बिंद गति दानै ।
तीनि काल तिभुअन मत मोरै । पुन्यलोक नरु लखै तेरे ।
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई । जाइ लोडु नखेडु नखेरे ।
दोसु देखि जननिहि जइ तेरे । जिन्ह गुर सपु मन नरे तेरे ।
हो०-मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अस्तित्व जनकल नर ।

लोक सुअसु परलोक सुसु सुनिरत ननु दुख ॥२२॥

कइउँ सुभाउ सत्य सिय सखी । भरत भूमि ए लखै लखै ।
तात कुतारक करहु जानि जायँ । बैर पेन नरे दुख दुखरे ।
मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं । रायक बचिह विहंगे नखेरे ।
रित अनरित पसु पच्छिउ जाना ननु दनु ननु नखेरे ।
तात तुम्हहि मैं जानउँ नीके । करौ काद अखन नखेरे ।
खसेउ ययँ सत्य मोहि त्यागी । ननु नखेरे नखेरे नखेरे ।

तासु वचन भेटत मन सोचू । तेहि तैं अधिक तुम्हार सँकोचू ॥
 ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा । अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा
 दो०—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु ।

सत्यसंध रघुवर वचन सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥

सुर गन सहित सभय सुरराजू । सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
 वनत उपाउ करत कछु नाहीं । राम सरन सब गे मन माहीं ॥
 बहुरि विचारि परस्पर कहहीं । रघुपति भगत भगति बस अहहीं
 सुधि करि अंवरीष दुरवासा । भे सुर सुरपति निपट निरासा ॥
 सहे सुरन्ह बहु काल विपादा । नरहरि किए प्रगट प्रह्लादा ॥
 लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा । अब सुर काज भरत के हाथा
 आन उपाउ न देखिअ देवा । मानत रामु सुसेवक सेवा ॥
 हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि । निज गुन सील राम बस करतहि
 दो०—सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भागु ।

सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥२६५॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामधेनु सय सरिस सुहाई ॥
 भरत भगति तुम्हरेँ मन आई । तजहु सोचु विधि वात बनाई ॥
 देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभायँ त्रिवस रघुराऊ ॥
 मन धिर करहु देव डरु नाहीं । भरतहि जानि राम परिछाहीं ॥
 सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥
 निज सिर भारु भरत जियँ जाना । करत कोटि विधि उर अनुमाना

देव एक विनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करब बहोरी ॥
 तिलक समाजु साजि सबु आना । करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना
 दो०—सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ ।

नतर फेरिअहिं धंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ ॥२६८॥

नतर जाहिं बन तीनिउ भाई । बहुरिअ सीय सहित रघुआई ॥
 जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करना सागर कीजिअ सोई ॥
 देव दीन्ह सबु मोहि अमारू । मोरें नीति न धरम बिचारू ॥
 कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कै चित चेतू ॥
 उतर देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवकु लखि लाज लजाई ॥
 अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ॥
 अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाई न पावा ॥
 प्रभु पद सपथ कहउँ सति भाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ॥

दो०—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ।

सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि ठानट अवरेब ॥२६९॥

भरत बचन सुनि सुनि सुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुर वरषे ॥
 असमंजस बस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनवासी ॥
 चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभो सन्न सोची ॥
 जनक दूत तेहि अवसर आए । मुनि बसिष्ठ सुनि बेगि बोलाए ॥
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । वेषु देखि भए निपट दुखारे ॥
 दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता । कहहु विदेह भूप कुसलाता ॥

मुनि सकुचारनाइ मदि माधा । बोले चर चर जोरें हाथा ॥
बूझव राउर सादर साई । कुगल हेतु सो भयउ गंगारई ॥

दो०—नाहिं त कोसल नाथ कें साथ कुसल गइ नाथ ।

मिथिल्य अवध विसैय तें जगु सब भयउ अनाथ ॥२७०॥

कोसलपति गति मुनि जनकौरा । भे सब लोक सोच यस वीरा ॥
जेहि देखे तेहि समय विदेह । नामु सत्य अग लाग न वैहू ॥
रानि कुचालि सुनत नरपालाहि । मूस न कछु जस मनि बितु न्यायहि
भरत राज खुबर बनवास । भा मिथिलेसाहि हृदयें हरायू ॥
नृप बूझे बुध सचिव समाज । बहहु विचारि उचिन का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिअ कि राईअ न कह कछु कोऊ
नृपहि धीर धरि हृदयें विचारी । पठए अवध चतुर चर चारी ॥
शूति भरत छति भाउ कुमाऊ । आएहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

दो०—गए अवध चर भरत गति बुझि देखि करतूति ।

पळे विश्वरूपहि भरतु चार चले तेरहनि ॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कह करनी । जनक समाज जयामति यरनी ॥
मुनि गुर परिजन सचिव मदीपति । भे सब सोच सनेहें बिकल अति
धरि धीरबु करि भरत बड़ाई । लिए सुभट साहनी बोलाई ॥
घर पुर देस राखि रख्यारे । हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥
दुधरी साथि चले ततकाल । किए विश्रामु न मग महिपाला ॥
भोरहिं आबु नहाइ प्रयागा । चले जमुन उतरन खु लागी ॥

खबरि लेन हम पठए नाथा । तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा
साथ किरात छ सातक दीन्है । मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्है ॥

दो०—सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु ।

रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच बिबस सुरराजु ॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई । काहि कहै केहि दूषनु देई ॥

असमन आनि मुदित नर नारी । भयउ बहोरि रहब दिन चारी ॥

एहि प्रकार गत बासर सोऊ । प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥

करि मज्जनु पूजहिं नर नारी । गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥

रमा रमन पद बंदि बहोरी । बिनबहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥

राजा रामु जानकी रानी । आनँद अवधि अवधरजधानी

सुबस बसउ फिरि सहित समाजा । भरतहि रामु करहुँ जुवराजा ॥

सुख सुधाँ सींचि सब काहू । देव देहु जग जीवन लाहू ॥

०—गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ ।

अछत राम राजा अवध मरिअ माग सबु कोउ ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी । निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी

एहि विधि नित्यकरम करि पुरजन । रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन

ऊँच नीच मध्यम नर नारी । लहहिं दरसु निज निज अनुहारी

सावधान सबही सनमानहिं । सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥

लरिकाइहि तें रघुवर बानी । पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥

सील सकोच सिंधु रघुराज । सुमुख सुलोचन सरल सुभाज ॥

कहत राम मुन मन अनुरागे । मय निव भाग स्त्राइन लागे ॥
हम सम पुन्य पुंज जग धोरे । जिन्हहि राम जानन करि मोरे ॥

दो०-प्रेम मगन तेहि ममय सब सुनि आवत निधिनेसु ।

सहित सभा संभ्रम उटैठ रविबुल कमल दिनेसु ॥२०४॥

भाद सचिव गुर पुरजन साया । आगें गवनु कीन्ह रघुनाया ॥
गिरिवर दीख जनकगति अवदी । करि प्रनामु रम त्यागेउ तबही ॥
राम दरम लालसा उछाहू । पथ भ्रम लेसु कलेसु न काहू ॥
मन तहैं जहैं रघुवर बैदेही । विनु मन तन दुख सुख सुधि बेदी ॥
आवन जनकु चले एहि भाँती । सहित समाज प्रेम मति माती ॥
आए निकट देखि अनुरागे । सादर मिलन परस्पर लागे ॥
लगे जनक मुनिजन पद बंदन । रिगिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि । चले लयाइ समेत समाजहि ॥

दो०-आश्रम सागर सांत रम पूरन पावन पाथु ।

मेन मनहुँ करना सरित लिपैं जाहिं रघुनाथु ॥२०५॥

बोसति ग्यान गिराग करारे । वचन समोक मिलत नद नारै ॥
सोच उमास समीर तरंगा । धीरज तट तरुवर कर भंगा ॥
विषम विषाद तोरावति धारा । भय भ्रम भवैर अवन अगारा ॥
केवट बुध विद्या बदि नाया । मरदिन गेइ ऐक नहि आया ॥
वननर कोल किरात विचारे । यके बिलोकि पयिक दियै दारे ॥
आश्रम उदधि मिली जब जाई । मनहुँ उटेठ अंबुधि अमृत्युआई ॥

सोक विकल दोउ राज समाजा । रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥
भूप रूप गुन सील सराही । रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥

छं०—अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा ।

द्वै दोष सकल सरोष दोलहिं वाम विधि कीन्हो कहा ॥

सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की ।

तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सो०—किण अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।

धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ट बिदेह सन ॥२७६॥

जासु ग्यानु रवि भव निसि नासा । बचन किरन मुनि कमल बिकासा

तेहि कि मोह ममता निअराई । यह सिय राम सनेह बढ़ाई ॥

विषई साधक सिद्ध सयाने । त्रिविध जीव जग वेद बखाने ॥

सनेह सरस मन जासू । साधु सभाँ बड़ आदर तासू ॥

न राम पेम बिनु ग्यानू । करनधार बिनुजिमि जलजानू ॥

मुनि बहुविधि बिदेहु समुझाए । राम घाट स्त्र लोग नहाए ॥

सकल सोक संकुल नर नारी । सो बासरु ब्रीतेउ बिनुबारी ॥

पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । प्रिय परिजन कर कौन बिचारू

दो०—दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात ।

वैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात ॥२७७॥

जे महिसुर दसरथ पुर बासी । जे मिथिलापति नगर निवासी ॥

हंस बंस गुर जनक पुरोध । जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥

लगे कहन उपदेस अनेका । सहित धरम नय विरति विवेका ॥
 कौसिक कहि कहि कथा पुरानी । समुझाई सब सभा सुयानी ॥
 तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ । नाथ कालि जल विनु सबु रहेऊ
 मुनि कह उचित कहत रघुराई । गयउ बीति दिन पहर अदाई ॥
 रिषि रुख लखि कह तेरहुतिराजू । इहाँ उचित नहि असन अनाजू
 कहा भूप भल स्वहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥
 दो०—तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।

लइ भाए बनघर विपुल भरि भरि काँवरिभार ॥२०८॥
 कामद भे गिरि राम प्रसादा । अवलोकत अपहरत विशादा ॥
 सर सरिता बन भूमि विभागा । जनु उमगत आनंद अनुजगा
 बेलि बिटप सब सफल सफूला । बोलत खग मृग अलि अनुकूला
 तेहि अक्खर बन अधिक उछाहू । विविध समीर सुखद सब काहू
 जाइ न बरनि मनोहरताई । जनु मदि करति जनक पदुनारं
 तब सब लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि अन्तु पाई ॥
 देखि देखि तरुवर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उदरन काने ॥
 दल फल मूल कंद विधि नाना । पावन सुंदर सुधा स्तना ॥
 दो०—सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार ।

पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन करहार ॥२०९॥
 एहि विधि वासर बीते चारी । रामु निरखि नर नारि सुखारी ॥
 दुहु समाज असि रुचि मन मारी । विनु छिन्न राम छिन्न मल नारी ॥

सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू॥
 परिहरि लखन रामु ब्रैदेही। जेहि घर भाव वाम विधि तेही॥
 दाहिन दइउ होइ जव सवही। राम समीप बसिअ बन तवही॥
 मंदाकिनि मज्जनु तिहु काल। राम दरसु मुद मंगल माला॥
 अटनु राम गिरि बन तापस थल। असनु अमिअ सम कंद मूल फल
 मुख समेत संवत दुइ साता। पल सम होहिं न जनिअहिं जाता
 दो०—एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु।

सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥२८०॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं। वचन सप्रेम सुनत मन हरहीं॥
 गीय मातु तेहि समय पठाई। दासी देखि सुअवसर आई॥
 आवकास सुनि सव सिय सासू। आयउ जनकराज रनिवासू॥
 सत्य सादर सनमानी। आसन दिए समय सम आनी॥
 १७ सनेहु सकल दुहु ओरा। द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा
 लक सिधिल तन बारि बिलोचन। महि नख लिखन लगीं सद सोचन
 व सिय राम प्रीति कि सि मूरति। जनु करुना बहु वेप बिसूरति॥
 य मातु कह विधि बुधि बाँकी। जो पय फेनु फोर पवि टाँकी॥

०—सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल।

जहँ तहँ काक उल्लूक बक मानस सकृत मराल ॥२८१॥

ने ससोच कह देवि सुमित्रा। विधि गति बड़ि विपरीत विचित्रा॥
 सृजि पालइ हरइ बहोरी। बाल केलि सम विधि मति भोरी॥

कौसल्या कह दोमु न काहू । करम विवस दुख मुख छति लाहू
कठिन करम गति जान बिधाता । जो सुभ असुभ सकल पल दाता
इंस रजाइ सोस सबही कै । उत्तगति पितिलय विग्रहु अमी कै
देवि मोह यस सोचिअ बादी । विधि प्रपंचु अम अवल अनादी
भूपति जिअव मरव उर आनी । सोचिअ सखि लखि निज हित हानी
सीय मातु कह सत्य सुधानी । सुकृती अवधि अवधगति रानी ॥

दो०—लखनु रामु सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु ।

गहबरि दियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु ॥२८२॥

इंस प्रसाद असीत तुम्हारी । मुन मुतरधू देवमरि चारी ॥
राम सद्य मै कीन्हि न काऊ । सो करि कहउँ सखी छति भाऊ ॥
भरत सील गुन विनष बढ़ाई । भाष्य भगति भरोस भलाई ॥
कहत सारदहु कर मति हीचे । सागर सीय कि जाहि उलीचे ॥
जानउँ सदा भरत कुलदीपा । बार बार मोहि कहेउ महीग ॥
कसे कनकु मनि पारिलि पाएँ । पुरुष परिलिअहि समयँ सुभाएँ ॥
अनुचित आजु कहव अस मोग । सोक सनेहँ सयानप योग ॥
मुनि सुरमारे सम पावनि बानी । भई सनेह विकल सब रानी ॥

दो०—कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेसि ।

को विवेकनिधि बलभहि तुम्हहि सकह उपदेसि ॥२८३॥

रानि राय सन अवसर पाई । अपनी माँति कहव समुझाई ॥
रखिअहि लखनु भरतु गवनहि बन । जौ यह मत मानै महीष मन ॥

तौ भल जतनु करव सुविचारी । मोरें सोचु भरत कर भारी ॥
 गूढ़ सनेह भरत मन माहीं । रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥
 लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी । सब भइ मगन करन रस रांनी ॥
 नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि । सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि ॥
 सबु रनिवासु बियकि लखि रहेऊ । तब धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ ॥
 देवि दंड जुग जामिनि बीती । राम मातु सुनि उठी सप्रीती ॥
 दो०—येगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेहँ सतिभाय ।

हमरें तौ अब ईस गति कै मिथिलेस सहाय ॥२८४॥

लखि सनेह सुनि वचन विनीता । जनकप्रिया गह पाय पुनीता ॥
 देवि उचित असि बिनय तुम्हारी । दसरथ धरिनि राम महतारी ॥
 प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अग्नि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ॥
 सेवकु राउ करम मन बानी । सदा सहाय महेसु भवानी ॥
 रउरे अंग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
 रामु जाइ वनु करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
 अमर नाग नर राम बाहुबल । सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
 यह सब जागवलिक कहि राखा । देवि न होइ मुघा मुनि भाषा ॥
 दो०—अस कहि पग परि पेस अति सिय हित बिनय सुनाइ ।

सिय समेत सियमातु तब चली सुभायसु पाइ ॥२८५॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
 तापस वेष जानकी देखी । भा सबु बिकल बिषाद बिषेयी ॥

रामहि रायँ कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥
 हम अय बन तैं बनहि पठाई । प्रमुदित फिरव विवेक बढ़ाई ॥
 तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भए प्रेम बस विकल विसेषी ॥
 समउ समुझि धरि धीरजु राजा । चले भरत पहिँ सहित समाजा ॥
 भरत आइ आगें भइ लीन्हे । अवसर सरिस सुआसन दीन्हे ॥
 तात भरत कह तेरहुति राज । तुम्हहि विदित खुबीर सुभाऊ ॥
 दो०—राम सत्यव्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु ।

संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥२९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि वारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ॥
 प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न बापू ॥
 कौसिकादि मुनि सचिव समाजू । ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू ॥
 सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ॥
 एहिँ समाज थल बूझव राउर । मौन मलिन मैं बोलव बाउर ॥
 छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता । छमव तात लखि वाम विधाता ॥
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ॥
 स्वामि धरम स्वारथहि विरोधू । बैर अंध प्रेमहि न प्रबोध ॥

दो०—राखि राम रुख धरमु व्रतु पराधीन मोहि जानि ।

सब कैं संमत सर्व हित करिअ पेसु पहिचानि ॥२९३॥
 भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राजा ॥
 सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर ॥

समय समाज धरम अविरोधा । बोले तब रघुवंस पुरोधा ॥
 जनक भरत संवादु सुनाई । भरत कहाउति कही सुहाई ॥
 तात राम जस आयसु देहू । सो सबु करै मोर मत एहू ॥
 सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य सरल मृदु बानी ॥
 विद्यमान आपुनि मिथिलेसू । मोर कहव सब भाँति भदेसू ॥
 राउर राय रजायसु होई । राउरि सपथ सही सिर सोई ॥

दो०—राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।

सकल विलोकत भरत मुखु बनह न ऊतरु देत ॥२९६॥

सभा सकुच बस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥
 देखि सनेहु सँभारा । बढ़त विधि जिमि घटज निवारा ॥
 सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी विमल गुन गन जगजोनी ॥
 भरत विवेक बराहँ बिसाला । अनायास उधरी तेहि काला ॥
 करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥
 छमव आजु अति अनुचित मोरा । कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा ॥
 हियँ सुमिरी सारदा सुहाई । मानस तँ मुख पंकज आई ॥
 विमल विवेक धरम नय साली । भरत भारती मंजु मराली ॥

दो०—निरखि विवेक विलोचनन्हि सिधिल सनेहँ समाजु ।

करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥२९७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥
 सरल सुसाहिबु सील निधानू । प्रनतपाल सर्वग्य सुजानू ॥

समरथ सरनागत हितकारी । गुनगाहकु अवगुन अघ हारी ॥
 स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसाईं । मोहि समान मैं साईं दोहाई ॥
 प्रभु पितु बचन मोह बस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥
 जग मल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुरु भीचू ॥
 राम रजाइ भेट मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
 सो मैं सब विधि कीन्हि दिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
 दो०—कृपां भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।

दूषन भै भूषन सरिस सुजसु पारु चहु ओर ॥२९८॥
 शठरि रीति सुवानि बढाई । जगत विदित निगमागम गाई
 कूर कुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥
 तेउ सुनि सरन सामुहैं आए । सकृत् प्रनामु किहैं अपनाए ॥
 देखि दोष कबहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥
 को साहिब सेवकहि नेबाजी । आपु समाज साज सब सार्जी ॥
 निज करतूति न समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥
 सो गोसाईं नहिँ दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥
 प्रभु नाचत मुक पाठ प्रवीना । गुन गति नट पाटक आधीना
 दो०—यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।

को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदाबलि बरजोर ॥२९९॥
 सोक सनेहैं कि बाल सुभाएँ । आयउँ लाइ रजायसु बाएँ ॥
 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहिँ भौंति भल मानेउ मोरा ॥

* ब्रह्मचरिनीसाधन * /

ॐ नमः सुदीप्त सूर्या । जनेहं स्वामि भद्रं ज अनन्तम् ॥
 साज विद्येयैः भाम् । सदी भूक साहित्य अनुसम ॥
 म अनुसम जं अयार्ह । कीर्ति भूमानिभिरस्य अभिषाह ॥
 ना मार दुःखार शोभाह । अपने भीक सुगामें भवार्ह ॥
 ॥ निपट भै कीर्ति द्विआह । स्वामि समाज लोकोप विदार्ह ॥
 विनय विनय अभ्यासवि जानी । स्तुतिदि द्विज अनि आरति जानी ॥
 ॐ ००० सुहृद्, सुजात सुवादिबहि बहून महम भदि कोरि ।
 आभय द्विद्वय भूय क्षय सखद् सुधारी शोदि ॥ १०० ॥
 भय पद पदुम परमा शोदाह । भय सुहृद् सुहृद् भीन सुहाह ॥
 भूमि कदहं द्विज, अपने भी । कवि जागत गोपत अपने भी ॥
 ० ० ० ० ० स्वामि शनभाह । स्तुतिदि द्विज पद पारि विदार्ह ॥
 ० ० ० ० ० सुगामि शोभा । गो प्रसाद, जन पाये देना ॥
 जग कदि प्रेम विनय भाय, भारी । पुलक गरीर निलोचन भारी ॥
 प्रभु पद भगवत शोद अकुलाह । समउ सनेह न शो कदि जाह ॥
 भूमादिभु भनमानि सुगानी । शैठाप, समीप गदि पानी ॥
 भक्त विनय मुनि द्विज सुभाज । मिथिल सनेहं सभा सुभाज ॥
 ॐ ००० सुभाज मिथिल सनेहं साधु समाज मुनि मिथिल धनी ।
 भग गहूँ पराहत भरत भायप भगति की सहिमा धनी ॥
 भरतदि प्रसंगत विष्णुभ भरपत सुसन मानस मलिन से ।
 पुलसी भिक्कल सख लोग मुनि सकुचे निसागम नलिन से ।

सो०-देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर नारि सब ।

मधवा महा मलीन मुए मारि मंगल चहुत ॥३०१॥

कपट कुचालि सीधैं सुरराजू । पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥

काक समान पाकरिषु सीती । छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥

प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला । सो उचाटु सब कैं छिर मेला ॥

सुरमायाँ सब लोग विमोहे । राम प्रेम अतिसय न विछोहे ॥

भय उचाट बस मन पिर नाहीं । छन बन रुचि छन सदन सोहाई ॥

दुषिध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु बारी ॥

दुनित कतहुँ परितोषु न लहहीं । एक एक सन भरमु न कहहीं ॥

लखि दिवैं हँसि कह कृपानिधानू । सरिस स्वान मधवान बुचानू ॥

दो०-भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ ।

छागि देवमाया सबहि जघाजोगु जनु पाइ ॥३०२॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहैं सुरपति छल मारे ॥

सभा राउ गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंघी ॥

रामाहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥

भरत प्रीति नति भिनय बढ़ाई । सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥

जासु बिलोकि भगति लयलेख । प्रेम भगन मुनिगन मिथिलेख ॥

महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भगति सुभायैं सुमति दिवैं हुलसी ॥

आपु छोटि महिमा बढ़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥

कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई । मति गति बाल बचन की नाई ॥

दो०-भरत विमल जसु विमल विधु सुमति चकोरकुमारि ।

उदित विमल जन हृदय नभ एकटक गही निहारि ॥३०३॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कवि छमहूँ ॥
 कहत सुनत सति भाउ भरत को । सीयराम पद होइ न रत को ॥
 सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । जेहि न सुलभु तेहि सरिस वाम को
 देखि दयाल दसा सबही की । राम सुजान जानि जन जी की ॥
 धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर ॥
 देसु कालु लखि समउ समाजू । नीति प्रीति पालक रघुराजू ॥
 बोले बचन बानि सरवसु से । हितपरिनाम सुनत ससि रसु से
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । लोक वेद विद प्रेम प्रवीना
 दो०-करम बचन मानस विमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।

गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥३०४॥

जानहु तात तरनि कुल रीती । सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥
 समउ समाजु लाज गुरजन की । उदासीन हित अनहित मन की ॥
 तुम्हहि विदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥
 मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुसारा ॥
 तात तात विनु बात हमारी । केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी ॥
 नतर प्रजा परिजन परिवारु । हमहि सहित सबु होत खुआरु ॥
 जाँ विनु अवसर अथवँ दिनेसू । जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥
 तस उतपातु तात विधि कीन्हा । मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा ॥

दो०—देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।

आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । समयँ सकोच जात कहि नाहीं ॥

कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले वानि सनेह सुहाई ॥

चित्रकूट सुचि थल तीरथ वन । खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन

प्रभु पद अंकित अवनि बिसेपी । आयसु होइ त आवौं देखी ॥

अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात त्रिगतभय कानन चरहू ॥

मुनि प्रसाद वनु मंगल दाता । पावन परम सुहावन भ्राता ॥

रिपिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ॥

मुनि प्रभु वचन भरत सुखु पावा । मुनि पद कमल मुदित सिर नावा

१०—भरत राम संवादु मुनि सकल सुमंगल मूल ।

सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल ॥३०८॥

भरत जय राम गोसाई । कहत देव हरषत वरिआई ॥

मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू । भरत वचन मुनि भयउ उछाहू ॥

भरत राम गुन ग्राम सनेहू । पुलकि प्रसंसत राउ विदेहू ॥

सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन । नेमु पेमु अति पावन पावन ॥

मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ॥

मुनि मुनि राम भरत संवादू । दुहु समाज हियँ हरषु विषादू ॥

राम मातु दुखु सुखु सम जानी । कहि गुन राम प्रबोधी रानी ॥

एक कहहि रघुवीर वढ़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो०—अग्रि कहैउ दस भरत सन सैल समीप सुख ।

राखिअ तीरथ सोय तहै पावन अमिअ अनूप ॥३०९॥

भरत अग्रि अनुसासन पाई । जल माजन सब दिए चलाई ॥

सानुज आपु अग्रि मुनि साधू । सहित गए जहै कूप अगाधू ॥

पावन पाय पुन्यघल राखा । प्रमुदित प्रेम अग्रि अस भाया ॥

तात अनादि सिद्ध यल एह । लोपेउ काल विदित नहिं केहू ॥

तब सेवकन्ह सरस यल देखा । कीन्ह मुजल हित कूप बिसेया ॥

विधि बस भयउ बिस्व उपकारु । मुगम अगम अति धरम बिचारु ॥

भरतकूप अर कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जल जोगा ॥

प्रेम सनेम निमजत प्रानी । होइहहिं बिमल करम मन बानी ॥

दो०—कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ ।

अग्रि मुनायउ रघुवरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥३१०॥

भरत धरम इतिहास स्मृती । भयउ मोर निशि सो मुल सीती ॥

नेल निबाहि भरत दोउ भाई । राम अग्रि गुर आपसु पाई ॥

जीत समाज राज सब सादें । चले राम सन अटन पयादें ॥

धौमउ चरन चलत विनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥

इउ कंटक काँकराँ कुराहें । कटुक कठोर कुबल दुराहें ॥

मई मंडुउ मृदु मारग कौन्हे । सहत स्मृति ॥ टीन्हे ॥

कुन बघि मुर घन करि छाहीं । बिटप फूटि ॥

गगनियोहि लग योलि मुबानी । सेबाहि ॥

दो०—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ।

राम प्रान प्रिय भरत कहँ यह न होइ बड़ि बात ॥३११॥
 एहि विधि भरतु फिरत बन माहीं । नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं॥
 पुन्य जलाश्रय भूमि विभागा । खग मृग तरु वृन गिरि बन बागा॥
 चारु विचित्र पवित्र विसेषी । वृक्षत भरतु दिव्य सब देखी॥
 सुनि मन मुदित कहत रिपिराज । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाज॥
 कतहुँ निमजन कतहुँ प्रनामा । कतहुँ विलोकत मन अभिरामा॥
 कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई॥
 देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा । देखिं असीस मुदित बनदेवा॥
 फिरहिं गएँ दिनु पहर अढ़ाई । प्रभु पद कमल त्रिलोकहिं आई॥

दो०—देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ ।

कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ॥३१२॥
 भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तेरहुति राजू॥
 भल दिन आजु जानि मन माहीं । रामु कृपाल कहत सकुचाहीं॥
 गुर नृप भरत सभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि त्रिलोकी॥
 सील सराहि सभा सब सोची । कहँ न राम सम स्वामि सँकोची॥
 भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर विसेषी॥
 करि दंडवत कहत कर जोरी । राखीं नाथ सकल रुचि मोरी॥
 मोहि लगि सहेउ सत्रहिं संतापू । बहुत भाँति दुखु पावा आपू॥
 अब गोसाँई मोहि देउ रजाई । सेवौं अवध अवधि भरि जाई॥

दो०—जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल ।

सो सिख देखै अवधि लुगि कोसलपाल कृपाल ॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं । सब सुचि सरस सनेहँ सगाईं ॥
राउर यदि भल भव दुख दाह । प्रभु पितु यदि परम पद लाह ॥
स्वामि मुजानु जानि सब ही की । रुचि लालमा रहनि जन जी की ॥
प्रनतगालु पालिहि सब काह । देउ दुहु दिसि ओर निचाह ॥
अस मोहि सब विधि भूरि भरोसो । किऐं विचार न सोनु खरो सो ॥
आरति मोर नाथ कर छोह । दुहुँ मिलि कीन्ह दोहु हठि मोह ॥
यह यह दोष दूरि करि स्वामी । तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ॥
भरत विनय मुनि स्याहि प्रसंखी । स्त्रीर नीर विवरन गति हंखी ॥

दो०—दीनबंधु मुनि बंधु के बचन दीन छलाहीन ।

देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रवीन ॥३१४॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिंता गुरहि नृपहि घर बन की ॥
माथे पर गुर मुनि मिथिलेख । हमहि तुम्हहि सनेहँ न कलेख ॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु । स्वारथु मुजमु धरमु परमारथु ॥
पितु आयसु पालिहि दुहु माई । लोक बेद भल भूप भलाई ॥
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें । चलेहुँ कुमग पग परहि न खालें ॥
अस विचारि सब सोच विहाई । पालहु अवध अवधि मरि जाई ॥
देसु कोसु परिजन परिवारु । गुर पद रजहि लाग छद्धारु ॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दो०-मुखिआ मुखु सो चाहिए खान पान कहूँ एक ।

पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित विवेक ॥३१५॥

राजधरम सरवसु एतनोई । जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ॥
 बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । त्रिनु अधार मन तोषु न साँती ॥
 भरत सील गुर सचिव समाजू । सकुच सनेह त्रिवस रघुराजू ॥
 प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हों । सादर भरत सीस धरि लीन्हों ॥
 चरनपीठ करुनानिधान के । जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥
 संपुट भरत सनेह रतन के । आखर जुग जनु जीव जतन के ॥
 कुल कपाट कर कुसल करम के । विमल नयन सेवा सुधरम के ॥
 भरत मुदित अवलंब लहे तैं । अस सुख जस सिय रामु रहे तैं ॥

०-मागेउ बिदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ ।

लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१६॥

स कुचालि सब कहँ भइ नीकी । अवधि आस सम जीवनि जी की ॥
 नतरु लखन सिय राम वियोगा । हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥
 रामकृपाँ अवरेय सुधारी । त्रिवुध धारि भइ गुनद गोहारी ॥
 भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम प्रेम रसु कहि न परत सो ॥
 तन मन बचन उमग अनुरागा । धीर धुरंधर धीरजु त्यागा ॥
 बारिज लोचन मोचत बारी । देखि दसा सुर सभा दुखारी ॥
 मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । ग्यान अनल मन कसैं कनक से ॥
 जे बिरंचि निरलेप उपाए । पदुम पत्र जिमि जग जल जाए ॥

दो०-सेठ बिलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार ।

भए मगन मन तन बचन सहित विराग विचार ॥१०॥
जहाँ जनक गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत बदि खोरी ॥
वरनत रघुवर भरत वियोगू । मुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥
सो सकोच रसु अकथ सुबानी । समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि मरतु रघुवर समुझाए । पुनि रिपुदयनु हरषि दिखै लाए
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
मुनि दादन दुखु दुहूँ समाजा । लगे चलन के साजन साजा ॥
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई । चले सीस धरि राम रजाई ॥
मुनि सापस बनदेव निहोरी । सब सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०-छलनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धरि ।

चले समेस भसीस मुनि सकल सुमंगल मूरि ॥११॥
छानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत विधि विनय बहारै ॥
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । छहित समाज काननहि आपउ ॥
पुर पशु धारिअ देइ अमीछा । कीन्ह धीर धरि गयनु महीछा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । बिदा किए हरि हर सम जाने ॥
छानु समीप गए दोउ भाई । फिरे बंदि पा आशिय पाई ॥
कोसिक बामदेव जागली । पुरजन परिजन सचिव सुचाही ॥
जया जोगु करि विनय प्रनामा । बिदा किए सब छानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बहरे । सब सनमानि कृपानिधि केरे ॥

दो०—भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि ।

विदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि ॥३१९॥
परिजन मातु पिताहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ॥
करि प्रनामु भेंटों सब सासू । प्रीति कहत कवि हियँ न हुलासू ॥
सुनि सिख अभिमत आसिप्र पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मगाई । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ॥
बार बार हिलि मिलि दुहु भाई । सम सनेहँ जननीं पहुँचाई ॥
साजि बाजि गज वाहन नाना । भरत भूप दल कीन्ह पयाना ॥
हृदयँ रामु सिय लखन समेता । चले जाहिँ सब लोग अचेता ॥
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें । चले जाहिँ परबस मन मारें ॥

दो०—गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।

फिरे हरष विसमय सहित आए परन निकेत ॥३२०॥

विदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदयँ बड़ विरह निषादू ॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन वियोग बिलखाहीं ॥
भरत सनेह सुभाउ सुवानी । प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी । श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना । चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
त्रिवुध बिलोकि दसा रघुवर की । वरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरो सो ॥

॥०॥-सानुज सीय समेत प्रभु राजत परत कुटीर ।

भगति ग्यानु देवाय जनु मोहत धरें मरीर ॥१२१॥

पुनि मदिमुर गुर भरत मुआइ । राम बिरहें म्हु माहु बिराइ ॥

मु गुन प्रान गनत मत्र माहीं । क्य चुनवात चने मग बहीं ॥

धमुना उतरि पार सबु भयऊ । सो राजद सिनु मोहन गनऊ ॥

उतरि देखरि दूमर बापु । रामकर्म सार बंनर सुगम ॥

छरें उतरि मोमती नहाए । चौपें दिवस अरुधुर आइ ॥

जनकु रहे पुर बाहर चारी । राज काज मग मज्ज संजारी ॥

सौमि सचिव गुर भरतहि राज । तेरहुनि चने मति म्हु छाडू ॥

नगर नारि नर गुर मिलत मानी । बसे सुगंत गन मज्जवानी ॥

दो०-राम दाम हरि लोभ सब करन नेम उपहास ।

तत्रितत्रि भूषन भोग सुख त्रिप्रव भवति की भाम ॥१२२॥

सचिव सुमेरु भरत प्रबोधि । नित नित काज पार म्हि अंघे

पुनि छित दीन्हि बोलि लघु मार । सीरी मकज माहु संजारी ॥

भूसुर बोलि भरत कर जोर । करि प्रनाम कर बिनय निदेर ॥

ऊंच नीच कारजु मल पोचू । आदमु देव न कर संजानू ॥

परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । समाधानु करि मुगल पटार ॥

सानुज ने गुर गेहें बहोरी । करि दंडन करन कर जेरी ॥

आदमु होइ त रहौ सनेमा । बोले पुनि तन पुनकि सनेमा ॥

सुसुख करव करव दुगद जोर । परम साद जग होइहि छोर ॥

दो०—सुनि सिख पाइ भसीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि ।

सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ॥३२३॥

राम मातु गुर पद सिख नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥
 नंदिगावँ करि परन कुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥
 जटाजूट सिर मुनिपट धारी । महि खनि कुस साँथरी सँवारी ॥
 असन बसन वासन व्रत नेमा । करत कठिन रिपिधरम सप्रेमा ॥
 भूषन बसन भोग सुख भूरी । मन तन वचन तजेतिन तूरी ॥
 अवध राजु सुर राजु सिहाई । दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ॥
 तेहिँ पुर बसत भरत बिनु रागा । चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥
 रमा विलासु राम अनुरागी । तजत बमन जिमि जन बड़भागी

दो०—राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति ।

जातक हंस सराहिअत टैंक बिबेक बिभूति ॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि होई । घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई ॥
 नित नव राम प्रेम पनु पीना । बढ़त धरम दलु मनु न मलीना ॥
 जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे । विलसत बेतस बनज बिकासे ॥
 सम दम संजम नियम उपासा । नखत भरत हिय बिमल अकासा
 ध्रुव बिस्वासु अवधि राका सी । स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी ॥
 राम पेम बिधु अचल अदोषा । सहित समाज सोह नित चोखा ॥
 भरत रहनि समुझनि करतूती । भगति विरति गुन बिमल बिभूती
 बरनत सकल सुकवि सकुचाहीं । सेस गनेस गिरा गमु नाहीं ॥

री०-नित पूजन प्रभु पाँवरी प्रीति न इदयँ समानि ।

मागि मागि आदमु करत रात्र कोत्र बहु मौलि ॥१२५॥
 पुष्क गात हियँ सिय खुबीरू । जीद नामु जर लोचन नीरू ॥
 लखन राम सिय कानन बसही । भरतु मयन बहि तरतनु कसही ॥
 दोउ दिशि समुझि कहत सनु लोगू । सब बिधि भरत सराहन जोगू ॥
 मुनि व्रतनेम साधु सकुचारी । देनि दसा मुनिराज नजारी ॥
 परम पुनीत भरत आचरनू । मधुर मंत्रु मुद मंगन करनू ॥
 हरन कठिन कलि कलुष कलेरू । महामोद निशि दलन दिनेरू ॥
 पार पुंज कुंजर मृगरानू । समन सकन संताद समानू ॥
 जन रंजन मंजन भव भारू । राम छनेह मुधाकर शरू ॥

छं०-मिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को ।

मुनि मन भगम जम नियम सम दम विषम मन आचरत को
 दुख दाह दारिद दम दूषन मुजम मिम अपहरत को ।
 कलिछाल तुलसी से सद्यन्दि हृदि राम सनमुन करत को ॥

सौ०-भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर मुनहिं ।

सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रमवितति ॥१२६॥

मासपारायण, शक्तीसर्वा विध्याम
 इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकण्टिकदुर्गाविघ्नघने

द्वितीयः सर्गः समाप्तः ।

(अयोध्याकाण्ड समाप्त)



सुतीक्ष्णजी रामके ध्यानमें



अतिसय प्रीति देखि खुबीरा ।

प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

ॐ नमः शिवाय

तृतीय सोपान

(अरण्यकाण्ड)

—०००००—

श्लोक

मूलं धर्मनरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यधधनध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोवरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं वाङ्मरं
वन्दे मङ्गकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूषप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलमत्तूणीरभारं वरम् ।
राज्जीवायतलोचनं धृतजटागूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगर्तं रामाभिरामं ॥ २ ॥

सो०-उमा राम गुन गूढ़ पंडित मुनि पावहिं बिरति ।

पावहिं मोह विमूढ़ जे हरि विमुख न धर्म रति ॥

पुर नर भरत प्रीति मैं गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
 अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन । करत जे वन सुर नर मुनि भावन
 एक बार चुनि कुसुम सुहाए । निज कर भूषन राम बनाए ॥
 सीतहि पहिराए प्रभु सादर । बैठे फटिक सिला पर सुंदर ॥
 सुरपति सुत धरि वायस बेपा । सठ चाहत रघुपति बल देखा ॥
 जिमि पिपीलिका सागर थाहा । महा मंदमति पावन चाहा ॥
 सीता चरन चौंच हति भागा । मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥
 चला रुधिर रघुनायक जाना । सीक धनुष सायक संधाना ॥

दो०-अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह ।

ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन रोह ॥ १ ॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा । चला भाजि वायस भय पावा ॥
 धरि निज रूप गयउ पितु पार्हीं । राम विमुख राखा तेहि नार्हीं ॥
 भा निरास उपजी मन त्रासा । जथा चक्र भय रिषि दुर्बासा ॥
 ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका । फिरा श्रमित व्याकुल भय सोका
 काहूँ बैठन कहा न ओही । राखि को सकइ राम कर द्रोही ॥
 मातु मृत्यु पितु समन समाना । सुधा होइ विष सुनु हरिजाना ॥
 मित्र करइ सत रिपु कै करनी । ता कहूँ त्रिवुधनदी बैतरनी ॥
 सब जगु ताहि अनलहु ते ताता । जो रघुबीर विमुख सुनु आता ॥

गारद देला विकल जयंता । लागि दया कोमल चित संता ॥
 गडवा तुरत राम पहि ताही । बहेनि पुकारि प्रनत हित पाई ॥
 आतुर समय गहेसि पद जाई । पाहि पाहि दयाल रुराई ॥
 अतुलित बल अतुलित प्रमुताई । मैं मानेमद जानि नहि पाई ॥
 निज कृत कर्म जनित फल पायउँ । अब प्रभु पाहि मग्न तकि आपउँ
 सुनि कृपाल अति आरत बानी । एकनयन करि तज्जा भवानी ॥
 सो०-कीन्ह मोह कम दोह जघपि तेहि कर बध उचिन ।

प्रभु छादैउ करि छोह को कृपाल रघुबीर मम ॥ २ ॥

खुरति चिभकूट बसि नाना । चरित किए भुति मुखा ममाना ॥
 बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भरि मरि मोहि जाना ॥
 कल मुनिन्ह सन बिदा कराई । सीता सहित चले दो भारी ॥
 त्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ । मुनत महा मुनि हरित भयऊ ॥
 ललित गात अत्रि उठि धाए । देखि रानु आतुर चलि आए ॥
 ब्रत दंडवत मुनि उर लाए । प्रेम बारि दो जन अन्हवाए ॥
 शिव राम छवि नयन जुड़ाने । छांदर निज आश्रम तत्र आने ॥
 छरि पूजा कहि वचन मुद्राए । दिए मूल फल प्रभु मन भाए ॥
 सो०-प्रभु आसन आसीन भरि छोचन मोभा निरगि ।

मुनिवर परम प्रचीन जोरि पानि भस्तुति करन ॥ ३ ॥

छं०-नमामि भक्त वासलं । कृपालु शील कोमलं ॥
 ममामि ते पद्मपुष्पं । भक्तमित्रा स्वधामदं ॥

निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मंदरं ॥
 प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥
 प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥
 निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥
 दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥
 मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥
 मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥
 विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥
 नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥
 भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥
 त्वदंग्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ॥
 पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥
 विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥
 निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
 तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥
 जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥
 भजामि भाव बलभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
 स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥
 अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥
 प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥

पटंति ये सर्वं इदं । नरादरेण ते पदं ॥

प्रज्जति नाग्र मंसयं । स्वदीय भक्ति मंयुताः ॥

दो०—बिनती करि मुनि नाइ मिह कह कर जोरि बहोरि ।

घरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ नैन मति मोरि ॥ ४ ॥

अनुमुखा के पद गहि सीता । मिन्दी बहोरि मुनीन्द्र विनीता ॥

रिगितिनी मन मुग्न अधिकाहं । आगिष देह निकट बैठाई ॥

दिग्न वसन भूषन पहिगाए । ले निन ननन अमल मुद्राए ॥

कह रिगिधू सरस मृदु बानी । नागिधर्म कटु व्याज बग्यानी ॥

मातु रिता भ्राता हितकारी । मित्रप्रद स्व मुनु गडबुमारी ॥

अमित दानि भर्ता बयदेही । अधम मो नारि जो सेव न तेही ॥

धीरज धर्म मित्र अरु नारी । आनंद काळ परिखिअहि चारी ॥

बुद्ध रोगपस जइ धनहीना । अंध बधिर श्रोत्री अनि दीना ॥

ऐसेहु पति कर किएँ अश्वमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥

एकह धर्म एक व्रत नेमा । कायें बचन मन पति पद प्रेमा ॥

जग पतिव्रता चारि विधि अर्ह्यी । वेद पुराण संत सब कह्यही ॥

उत्तम के अस बस मन मार्यी । मरनेहुँ आन पुरुष जग नारी ॥

मध्यम परपति देखद कैयें । भ्राता रिता पुत्र निज जैयें ॥

धर्म विचारि समुझि कुल रहई । मो निविष्ट त्रिष भुनि अस कहई ॥

बिनु अवसर भय तैं रह जोई । जानेहुँ अधम नारि जग सोई ॥

पति बंचक परपति रति करई । रोख नरक कल्य मत परई ॥

छन सुख लागि जनम सत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ।
 त्रिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥
 पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई । विधवा होइ पाइ तरनाई ॥

सो०—सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥५(क)॥

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ।

तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित ॥५(ख)॥

सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरन सिर नावा ॥

तव मुनि सन कह कृपानिधाना । आयसु होइ जाउँ वन आना ॥

संतत मो पर कृपा करेहु । सेवक जानि तजेहु जनि नेहु ॥

धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी । सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी ॥

जासु कृपा अज सिव सनकादी । चहत सकल परमारथ वादी ॥

ते तुम्ह राम अकाम पिआरे । दीन बंधु मृदु वचन उचारे ॥

अव जानी मैं श्री चतुराई । भजी तुम्हहि सव देव विहाई ॥

जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ता कर सील कस न अस होई ॥

केहि विधि कहैं जाहु अव स्वामी । कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥

अस कहि प्रभु विलोकि मुनि धीरा । लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥

छं०—तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए ।

मन ग्यान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए ॥

अब जोग धर्म समूह हैं नर भगति अनुपम पावई ।
रघुबीर चरित पुनीत जिसि दिन दाय गुल्मी गावई ॥

दो०—कलमल समन दमन मन राम मुज्य मुलमूल ।

सादर मुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुहृत ॥१(क)॥

सो०—कठिन काल माल कोस धर्म न ग्यान न जोग अब ।

परिहरि सकल भरोस रामहि भगहिं ते चतुर नर ॥१(ख)॥

मुनि पद कमल नाह करि सीसा । चले बनाई मुर नर मुनि ईसा ॥

आगे राम अनुज पुनि पाछें । मुनि वर देय बने अति बाछें ॥

उभय बीच भी सोहइ बैसी । मग्न जीव बिच माया बैसी ॥

छरिता बन गिरि अवषट घाटा । पति पहिचानि देहिं बर बाटा ॥

जहें जहें जाहिं देव रघुराया । करहिं मेय तहें तहें नम छाया ॥

मिला असुर विराध मग जाता । आवतही रघुबीर निगता ॥

तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पाया । देखि दुर्ता निज धाम पठाया ॥

पुनि आए जहें मुनि सरभंगा । सुंदर अनुज जानही संगी ॥

दो०—देखि राम मुख पंकज मुनिवर लोचन भृंग ।

सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग ॥ ० ॥

कह मुनि तुनु रघुबीर कृपाल । संकर मानस राबनराटा ॥

जात रहेउँ बिरांचि के धामा । सुनेउँ भयन बन देखि रामा ॥

चितवत पंथ रहेउँ दिन राती । अब प्रभु देखि बुझानी छाती ॥

नाथ सकल साधन मैं दीना । कीन्ही कृपा जानि जन दीना ॥

सो कछु देव न मोहि निहोरा । निज पन राखेउ जन मन चोरा॥
 तब लगि रहहु दीन हित लागी । जव लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी
 जोग जग्य जप तप व्रत कीन्हा । प्रभु कहँ देइ भगति वर लीन्हा
 एहि विधि सर रचि मुनि सरभंगा । बैठे हृदयँ छाड़ि सब संगी ॥

दो०—सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम ।

मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम ॥ ८ ॥

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा । राम कृपाँ बैकुंठ सिधारा ॥
 ताते मुनि हरि लीन न भयऊ । प्रथमहिं भेद भगति वर लयऊ
 रिषि निकाय मुनिवर गति देखी । सुखी भए निज हृदयँ बिसेषी ॥
 अस्तुति करहिं सकल मुनि वृन्दा । जयति प्रनत हित करुना कंदा
 पुनि रघुनाथ चले वन आगे । मुनिवर वृन्द विपुल संग लागे ॥
 अस्थि समूह देखि रघुराया । पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया
 जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी । सबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥
 निसिचर निकर सकल मुनि खाए । सुनि रघुवीर नयन जल छाए ॥

दो०—निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥ ९ ॥

मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना । नाम सुतीछन रति भगवाना ॥
 मन क्रम वचन राम पद सेवक । सपनेहुँ आन भरोस न देवक ॥
 प्रभु आगवनु श्रवन सुनि पावा । करत मनोरथ आतुर धावा ॥
 हे विधि दीनबंधु रघुराया । मो सेसठ पर करिहहिं दाया ॥

सहित अनुज मोहि राम गोसाई । मिलिहहि निज सेवक की नारै ॥
 मोरे जिये भरोष दद नहि । भगति बिरति न ग्यान मन मारि ॥
 नहि सतसंग जोग जर जागा । नहि दद चरन कमल अनुरागा ॥
 एक यानि करनानिधान की । सो प्रिय जाके गति न आन की ॥
 होइहै मुफल आबु मम लोचन । देखि बदन पंकज भय मोचन ॥
 निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी । कहि न जाइ सो दसा भयानी ॥
 दिसि अरु विदिसि पंथ नहि सूसा । को में चलेउं कहाँ नहि सूसा ॥
 कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई । कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥
 अविरल प्रेम भगति मुनि पाई । प्रभु देखैं तब ओट सुकाई ॥
 अतिष्ठ प्रीति देखि खुसीरा । प्रगटे हृदयें हरन मय भीरा ॥
 मुनि मग माझ अचल होइ बैसा । पुलक सरीर पनस पल जैसा ॥
 तब खुनाय निकट चलि आए । देखि दसा निज जन मन भाए ॥
 मुनिहि राम बहु भौंति जगाया । जाग न ध्यानजनित सुख पाया ॥
 भूय रूप तब राम दुराया । हृदयें चतुर्भुज रूप देखाया ॥
 मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे । विकल हीन मनि पनियर जैसे ॥
 आगे देखि राम तन स्यामा । सीता अनुज सहित मुख धामा ॥
 पेउ लकुट इव चरनन्हि लागी । प्रेम मगन मुनिबर बड़भागी ॥
 भुज विखल गहि लिए उठाई । परम प्रीति राखे उर लाई ॥
 मुनिहि मिलत अख सोइ कृपाला । कनक तरुहि जनु मेंट तमाला ॥
 राम बदन पिलोक मुनि ठाढ़ा । मानहुँ चित्र माझ लिखि फाढ़ा ॥

दो०—तब मुनि हृदयँ धीर धरि गहि पद बारहिं बार ।

निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिविध प्रकार ॥ १० ॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी । अस्तुति करौं कवन विधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी । रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ॥
मोह विपिन धन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ॥
निशिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ॥
अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ॥
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
संशय सर्प ग्रसन उरगादः । शमन सुकर्कश तर्क विषादः ॥
भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ॥
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्त कल्पपादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥
अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ॥
अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ॥
जदपि विरज व्यापक अविनासी । सब के हृदयँ निरंतर वासी ॥
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥

जो कोसलपति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मम अटना
अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
मुनि मुनि बचन राम मन भाए । बहुरि हरषि मुनिवर उर लाए ॥
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जो बर मागहु देउं सो तोही ॥
मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाचा । समुझि न परइ झूठ का साचा ॥
तुम्हहि नीक लागै रघुराई । सो मोहि देहु दास मुखदाई ॥
अविरल भगति विरति विग्याना । होहु सकल गुन ग्यान निधाना
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पाया । अब सो देहु मोहि जो भाया ॥

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु चाप मान धर राम ।

मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम ॥ ११ ॥

एवमस्तु करि रमानिवासा । हरषि चले कुंभज रिपि पासा ॥
बहुत दिवस गुर दरसनु पाएँ । भए मोहि एहि आश्रम आएँ ॥
अब प्रभु संग जाउँ गुर पार्हीं । तुम्ह कहैं नाथ निहोरा नार्हीं ॥
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । लिए संग विहसे दौ भारी ॥
वंश कहत निज भगति अनूपा । मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूषा ॥
तुरत सुतीलन गुर पार्हि गयऊ । करि दंडवत कहत अस भयऊ ॥
नाथ कोसलाधीस कुमारा । आए मिलन जगत आधारा ॥
राम अनुज समेत बैदेही । निसि दिनु देव जपत हहु जेही ॥
सुनत अगसि तुरत उठि धाए । हरि बिलोकि लोचन जल छाए
मुनि पद कमल परे दौ भारी । रिपि अति प्रीति लिए उर लारी ॥

सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी । आसन बर बैठारे आनी ॥
 पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा । मोहि सम भाग्यवंत नहिं दूजा
 जहँ लगि रहे अपर मुनि वृंदा । हरषे सत्र विलोकि सुखकंदा ॥

दो०—मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सब की ओर ।

सरद इंदु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर ॥ १२ ॥

तव रघुवीर कहा मुनि पाहीं । तुम्हसन प्रभु दुराव कछु नाहीं
 तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ । ताते तात न कहि समुझायउँ
 अव सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥
 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु वानी । पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥
 तुम्हरेई भजन प्रभाव अघारी । जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी
 ऊमरि तरु विसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
 जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
 ते फल भच्छक कठिन कराला । तव भयँ डरत सदा सोउ काला
 ते तुम्ह सकल लोकपति साई । पूँछेहु मोहि मनुज की नाई ॥
 यह बर मागउँ कृपानिकेता । बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ॥
 अबिरल भगति विरति सतसंगा । चरन सरोरुह प्रीति अभंगा ॥
 जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता
 अस तव रूप बखानउँ जानउँ । फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ
 संतत दासन्ह देहु बड़ाई । तातें मोहि पूँछेहु रघुराई ॥
 है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ । पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ॥

दंडक वन पुनीत प्रभु करहु । उग्र साप मुनिवर कर हरहु ॥
वास करहु तहैं रघुकुल राया । कीजे सकल मुनिन्ह परदाया ॥
चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहि पंचवटी निअगई ॥
श्लो०—नीधराज सैं भेंट भइ बहु विधि प्रीति बढ़ाई ।

गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाई ॥ १३ ॥

जब ते राम कीन्ह तहैं वासा । सुखी भए मुनि बीती प्रासा ॥
गिरि वन नदी ताल छवि छाए । दिन दिन प्रति अति होहि मुहाए
खग मृग बृंद अनंदित रहई । मधुप मधुर गुंजत छवि लहई ॥
सो वन बरनि न सक अहिराजा । जहाँ प्रगट रघुवीर विराजा ॥
एक बार प्रभु मुख आसीना । लछिमन बचन कहे छलहीना ॥
सुर नर मुनि सचराचर साई । मैं पूछउँ निज प्रभु की नाई ॥
मोहि समुझाई कहहु सोइ देवा । सब तजि करौ नरन रज भेवा ॥
कहहु ग्यान विराग अरु माया । कहहु सो भगति करहु जेहि दाया
श्लो०—इंस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाई ।

जातैं होइ चरन रति सौं मोह भ्रम जाई ॥ १४ ॥

धोरेदिमहैं सब कहउँ बुझाई । मुनहु तात मति मन चित लाई
मैं अरु मोर तोर तैं माया । जेहि बस कीन्हे जीव निकाया ॥
गो गोचर जहैं लगि मन जाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ । विद्या अगर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा । जा बस जीव परा भवकृपा ॥

एक रचइ जग गुन बस जाकें । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ॥
 ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं । देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥
 कहिअ तात सो परम विरागी । तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी
 दो०—माया ईस न आपु कहूँ जान कहिअ सो जीव ।

बंध मोच्छ प्रद सर्वपर माया प्रेरक सीव ॥ १५ ॥

धर्म तें विरति जोग तें ग्याना । ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना ॥
 जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई । सो मम भगति भगत सुखदाई ॥
 सो सुतंत्र अवलंब न आना । तेहि आधीन ग्यान विग्याना ॥
 भगति तात अनुपम सुखमूला । मिलइ जो संत होई अनुकूला ॥
 भगति कि साधन कहउँ बखानी । सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥
 प्रथमहिं विप्र चरन अति प्रीती । निज निज कर्म निरत श्रुति रीती
 एहि कर फल पुनि विषय विरागा । तब मम धर्म उपज अनुरागा ।
 श्रवणादिक नय भक्ति दृढ़ाहीं । मम लीला रति अति मन माहीं ।
 संत चरन पंकज अति प्रेमा । मन क्रम बचन भजन दृढ़ नेम
 गुरु पितु मातु बंधु पति देवा । सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा
 मम गुन गावत पुलक सरीरा । गदगद गिरा नयन बह नीरा
 काम आदि मद दंभ न जाकें । तात निरंतर बस मैं ताकें
 दो०—बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम ।

तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम ॥ १६ ॥

भगति जोग सुनि अति सुख पावा । लछिमन प्रभु चरनन्हि सिर

नाक कान बिनु भइ विकरारा । जनु खव सैल गेरु कै धारा ॥
 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता ॥
 तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई । जातुधान सुनि सेन बनाई ॥
 धाए निसिचर निकर बरूथा । जनु सपच्छ कजल गिरि जूथा ॥
 नाना बाहन नानाकारा । नानायुध धर धोर अपारा ॥
 सूपनखा आगें करि लीनी । असुभ रूप श्रुति नासा हीनी ॥
 असगुन अमित होहिं भयकारी । गनहिं न मृत्यु बिबस सब शारी ॥
 गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखि कटकु भट अति हरषाहीं ॥
 कोउ कह जिअत धरहु द्वौ भाई । धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई ॥
 धूरि पूरि नभ मंडल रहा । राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥
 लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । आवा निसिचर कटकु भयंकर ॥
 रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ॥
 देखि राम रिपुदल चलि आवा । बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छं०—कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह क्यों ।
 मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ॥
 कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।
 चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥

सो०—आइ गए बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।

जथा बिलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज ॥ १८ ॥

प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी । यकित भई रजनीचर धारी ॥

सचिव बोलि बोले खर दूपन । यह कोउ नृपबालक नर भूपन ॥
 नाग असुर मुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम केते ॥
 हम भरि जन्म मुनहु स्र माई । देखी नहिं असि सुंदरताई ॥
 जगपि भगिनी कीन्हि कुरूपा । बध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
 देहु तुरत निज नारि दुराई । जीअत भवन जाहु दौ माई ॥
 मोर कक्ष तुम्ह ताहि सुनावहु । तामु बचन मुनि आतुर आवहु ॥
 दूतन्ह कहा राम सन जाई । मुनत राम बोले मुमुकाई ॥
 हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ॥
 रिपु बलबंत देखि नहिं डरहीं । एक बार कालहु सन लरहीं ॥
 जगपि मनुज दनुज कुल घालक । मुनि पालक खल सालक बालक ॥
 जो न होइ बल घर फिरि जाहु । समर बिमुख मैं हतउँ न काहु ॥
 रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ॥
 दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ । मुनि खर दूपन उर अति दहेऊ ॥
 छं०-उर दहेऊ कहेऊ कि धरहु धाए बिकट भट रजनीचरा ।
 सर धाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा ॥
 प्रभु कीन्हि धनुष टकोर प्रथम कटोर घोर भयावहा ।
 भए बधिर न्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥

दो०-सावधान होइ धाए जानि सबल आराति ।

लागे धरपन राम पर भज सख बहुभाँ २॥(क)॥

तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुवीर ।

तानि सरासन श्रवन लागि पुनि छाँड़े निज तीर ॥ १९ (ख) ॥

छं०—तव चले वान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम । चले विसिख निसित निकाम ॥
अवलोकि खरतर तीर । मुरि चले निसिचर वीर ॥
भए कुन्ध तीनिउ भाइ । जो भागि रन ते जाइ ॥
तेहि बधव हम निज पानि । फिरे मरन मन महुँ ठानि ॥
आयुध अनेक प्रकार । सनमुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु धनुष सर संधानि ॥
छाँड़े विपुल नाराच । लगे कटन विकट पिसाच ॥
उर सीस भुज कर चरन । जहँ तहँ लगे महि परन ॥
चिह्नरत लागत वान । धर परत कुंघर समान ॥
भट कटत तन सत खंड । पुनि उठत करि पाषंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड । विनु भौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काक सृगाल । कटकटहिं कठिन कराल ॥

छं०—कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खर्पर संचहीं ।
बेताल वीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं ॥
रघुवीर वान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा ।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धर धरु धरु करहिं भयकर गिरा ॥

धुआँ देखि खरदूपन केरा । जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा ॥
 बोली बचन क्रोध करि भारी । देस कोस कै सुरति विसारी ॥
 करसि पान सोवसि दिनु राती । सुधि नहिँ तव सिर पर आराती ॥
 राज नीति विनु धन विनु धर्मा । हरिहि समपै विनु सतकर्मा ॥
 विद्या विनु त्रिवेक उपजाएँ । श्रम फल पढ़ें किएँ अरु पाएँ ॥
 संग तैं जती कुमंत्र ते राजा । मान ते ग्यान पान तैं लाजा ॥
 प्रीति प्रनय विनु मद ते गुनी । नासहिँ वेगि नीति अस सुनी ॥

सो०—रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि ।

अस कहि विविध बिलाप करि लागी रोदन करन ॥२१(क)॥

दो०—सभा माझ परि व्याकुल बहु प्रकार कह रोइ ।

तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ ॥२१(ख)॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई । समुझाई गहि बाँह उठाई ॥
 कह लंकेस कहसि निज वाता । केई तव नासा कान निपाता ॥
 अवध नृपति दसरथ के जाए । पुरुष सिंघ बन खेलन आए ॥
 समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी । रहित निसाचर करिहहिँ धरनी ॥
 जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन । अभय भए विचरत मुनि कानन
 देखत बालक काल समाना । परम धीर धन्वी गुन नाना ॥
 अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता । खल बध रत सुर मुनि सुखदाता
 सौभा धाम राम अस नामा । तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥
 रूप रासि त्रिधि नारि सँवारी । रति सत कोटि तासु बलिहारी ॥

दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥
 नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥
 भयदायक खेल कै प्रिय बानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥

दो०—करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात ।

कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयहु तात ॥ २४ ॥

दसमुख सकल कथा तेहि आगें । कही सहित अभिमान अभागें ॥
 होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी । जेहि विधि हरि आनों नृपनारी ॥
 तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा । ते नररूप चराचर ईसा ॥
 तासों तात ब्यर नहिं कीजै । मारें मरिअ जिआएँ जीजै ॥
 मुनि मख राखन गयउ कुमारा । विनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥
 जोजन आयउँ छन माहीं । तिन्ह सन ब्यरु किएँ भल नाहीं ॥
 मम कीट भृंग की नाई । जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई ॥
 जौं नर तात तदपि अति सूरा । तिन्हहि विरोधि न आइहि पूरा ॥

दो०—जेहिं ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड ।

खर दूपन तिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड ॥ २५ ॥

जाहु भवन कुल कुसल विचारी । सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ॥
 गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहि समान को जोधा ॥
 तब मारीच हृदय अनुमाना । नवहि विरोधे नहिं कल्याना ॥
 सखी मर्मी प्रभु सठ धनी । वैद बंदि कवि भानस गुनी ॥
 उभय भाँति देखा निज मरना । तब ताकिसि रघुनायक सरना ॥

उतर देत मोहि यवय अभागें । कस न मरौं रघुपति सर लागें ॥
अस जियँ जानि दसानन संगी । चला राम पद प्रेम अभंगी ॥
मन अति हरप जनाव न तेही । आजु देखिहउँ परम सनेही ॥

छं०-निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहीं ।
ध्री सहित अनुज समेत कृपानिकेत पद मन लाइहीं ॥
निर्बान दायक क्रोध जा कर भगति अबसहि बसकरी ।
निज पानि सर मंधानि सो मोहि बधिहि सुखमागर हरी ॥

दो०-मम पाछें धर धावत धरें सरासन बान ।

फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहउँ धन्य न मो सम आन ॥ २६ ॥

तेहि बन निकट दसानन गयऊ । तब मारीच कपटमृग भयऊ ॥
अति विचित्र कछु भरनि न जाई । कनक देह मनि रचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखी । अंग अंग सुमनोहर बेधा ॥
मुनहु देव खुबीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥
सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । आनहु चर्म कहति बैदेही ॥
तब रघुपति जानत सय कारन । उठे हरपि सुर काजु सँवारन ॥
मृग बिलोकि कटि परिकर ब्रँधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । फिरत विपिन निशिचर बहु भाई ॥
सीता केरि करेहु रखवारी । बुधि विवेक बल समय विचारी ॥
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाए राम सराम्न साजी ॥
निगम नेति सिव ध्यान न पावा । मायाभृग प ॥

कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई । कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई ॥
 प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि विधि प्रभुहि गयउ लै दूरी ॥
 तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥
 लछिमन कर प्रथमहि लै नामा । पाछें सुमिरेसि मन महुँ रामा ॥
 प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु समेत सनेहा ॥
 अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना ।

दो०—विपुल सुमन सुर वरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ ।

निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ ॥२७॥

खल बधि तुरत फिरे रघुवीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥
 आरत गिरा सुनी जव सीता । कह लछिमन सन परम सभीता ।
 दु वेगि संकट अति भ्राता । लछिमन विहसि कहा सुनु माता
 भृकुटि विलास सृष्टि लय होई । सपनेहुँ संकट परइ कि सोई ।
 मरम बचन जव सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ।
 वन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ।
 सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें वेषा
 जाकें डर सुर असुर डेराहीं । निसि न नीद दिन अन्न न खा
 सो दससीस स्वान की नाई । इत उत चितइ चला भड़िहाई
 इमि कुपंथ पग देत खगेसा । रहन तेज तन बुधि बल लेसा
 नाना विधि करि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई
 कह सीता सुनु जती गोसाई । बोलेहु बचन दुष्ट की नाई

नव रावन निज रूप देखाया । भई सभय जब नाम सुनाया ॥
 कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥
 जिमि हरिबधुहि सुब्रह्म सम नादा । भएसि कालवम निमिचर नादा ॥
 सुनत बचन दमर्मास रिसाना । मन महुँ चरन बंदि मुख माना ॥
 दो०-क्रोधवन्त सब रावन लीन्हिमि रथ बैठाइ ।

चला गगनपथ आनुर भयै रथ हाँकि न जाइ ॥ २८ ॥

हा जग एक वीर रघुराया । केहिं अपराध बिभारेहु दाया ॥
 आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिननायक ॥
 हा लछिमन तुम्हाग नहिं दोषा । मो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोमा ॥
 विविध बिलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
 विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरोडास चढ़ रामम खाया ॥
 सीता कै बिलाप सुनि भारी । भए चराचर जाँव दुखारी ॥
 गीधराज मुनि आरत थानी । रघुकुलखिलक नारि पहिचानी ॥
 अधम निताचर लीन्हें जाई । जिमि मलेछ यस कपिला गाई ॥
 सीते पुत्रि करसि जनि प्रामा । करिइउँ जातुधान कर नासा ॥
 धावा क्रोधवन्त खग कैसे । छूटइ पवि परबत कहँ जैसे ॥
 रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भय चलेसि न जानेहि मोही ॥
 आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दमकंधर कर अनुमाना ॥
 की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जान सहित पति सोई ॥
 जाना जरठ जटाधू एहा । मम कर तीरथ ॥ २९ ॥ देहा ॥

नत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
 जि जानकिहि कुसल गृह जाहू । नाहिं त अस होइहि बहुबाहू ॥
 म रोप पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ॥
 तरु न देत दसानन जोधा । तवहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥
 ारि कच विरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥
 वोचन्ह मारि विदारेसि देही । दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥
 ाव सक्रोध निसिचर खिसि आना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥
 काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अदभुत करनी ॥
 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी ॥
 करति विलाप जाति नभ सीता । व्याध विवस जनु मृगी समीता ॥
 गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥
 एहि विधि सीतहि सो लै गयऊ । वन असोक महुँ राखत भयऊ ॥
 दो०—हारि परा खल बहु विधि भय अरु प्रीति देखाइ ।

तव असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ ॥ २९(क) ॥

नवाह्नपारायण, छठा विश्राम

जेहि विधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम ।

सो छवि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम ॥ २९(ख) ॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी । बाहिज चिंता कीन्हि विसेषी ॥

जनकसुता परिहरिहु अकेली । आयहु तात बचन मम पेली ॥

निसिचर निकर फिरहि वन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥

दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपा निधाना ॥
 राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहिं वाता ॥
 जा कर नाम मरत मुख आवा । अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ॥
 सो मम लोचन गोचर आगैं । राखौं देह नाथ केहि खाँगैं ॥
 जल भरि नयन कहहिं रघुराई । तात कर्म निज तैं गति पाई ॥
 परहित वस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
 तनु तजि तात जाहु मम धामा । देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ॥
 दो०—सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ ।

जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ ॥ ३१ ॥

गीध देह तजि धरि हरि रूपा । भूषन बहु पट पीत अनूपा ॥
 स्याम गात बिसाल भुज चारी । अस्तुति करत नयन भरि वारी ॥

॥०—जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।
 दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥
 पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचन ।
 नित नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचन ॥१॥
 बलभप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचर ।

गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधर ॥
 जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजन ।
 नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजन ॥२॥

सापत ताड़त पक्ष कहैत। त्रिप पूज्य अस गावहि संत ॥
 पूजिअ त्रिप सील गुन होन। सूद न गुन शन शान प्रवीन ॥
 कहि निज धर्म ताहि समुझाव। निज पद प्रीति देखि मन भाव
 रखपति चरन कमल सिख नाई। राघउ शानन आपनि गति पाई ॥
 ताहि देखै गति राम उदार। सखी के आश्रम पगु धार ॥
 सखी देखि राम गहूँ आए। मुनि के वचन समुझि जियु भाए
 सरसिज लोचन गाहूँ निखाल। जटा मुकुट सिर उर बनमाल ॥
 त्याग गौर सुंदर दीउ भाई। सखी परी चरन लपटाई ॥
 प्रेम मगन मुख वचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा
 सादर जल लै चरन पखार। पुनि सुंदर आसन बैठार ॥
 हो—कंद मूल फल सुरस अति दिष्ट राम कहूँ आनि ।
 प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥ ३४ ॥
 पानि जोरि आगे भई ठाढ़ी। प्रभुहि त्रिलोक प्रीति अति बार्ढी
 कहि विधि अखति करौ गुहारी। अथम जाति में जड़मति भारी
 अथम ते अथम अथम अति नारी। तिनहूँ मई में मतिभंद अघारी ॥
 कहि रखपति सुनु भासनि गाता। मानहुँ एक भगति कर नाता ॥
 जाति पाति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परीजन गुन चतुराई ॥
 भगति होन नर सोइहूँ कैसा। त्रिनु जल गारिद देखिअ जैसा
 नवधा भगति कहैतुँ तोहि पाहौ। सावधान सुनु धर मन भारौ ॥
 प्रथम भगति संतहूँ कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥

टी०-पुरंदरि सवन ओट जल डोनि न पाइअ समु ।

मायाजल न डोनिअु डोसै निगुन दण्ड ॥ ३९(क) ॥

सुखी मीन सब एकदस अति आगध जल माहि ।

अथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजल जाहि ॥ ३९(ख) ॥

विकस सरोजन नाना रंगा । मयूर मुखर गुंजर नहुं भुंजा ॥

गोलत जलकुंभकुट कलहंसा । प्रभु विजोकि जनु करत प्रवसा ॥

नकयानक नक खग समुदाई । देखत ननइ भरनि नाई जाई ॥

सुंदर नगा गन निगा सुहाई । जाल पणिक जनु जेव बोलाई ॥

गाल मणीप मुनिन्ह गृह छाए । चहुं दिशि कानन विटप सुहाए ॥

नयक वकुल कंदव तमासा । पाटल पनस परस रसासा ॥

नय पण्डव कुसुमिन तन नाना । बंचरीक पटली कर गाना ॥

धीनल मंद सुगंध सुभाक । सतत गहरे मनोहर गोक ॥

कुहं कुहं कोकिल धुनि कराही । सुनि रव सरस स्थान सुनि टराही ॥

टी०-फल धारन नमि विटप सब रहे भूमि निभासाई ।

पर उपकारी पुख विजि नवाहि सुसंपलि पाइ ॥ ४० ॥

देखि राम अति वीर तलावा । मजनु कीन्ह परम सुख पावा ॥

देखी सुंदर तरुवर छाया । बौठ अगुज सहित खुराया ॥

तहुं पुनि सकल देव मुनि आए । अखलि करि निज धाम सिधाए ॥

बौठ परम प्रसन्न कृपाल । कहत अगुज सन कथा रसासा ॥

निरद्वंद्व भगवतहि देखी । गारद मन भा सोन विसेयी ॥

तत्र नारद मन इत्येव अत्रि प्रभु परं वाच्यत माय ॥ ४२ (ख) ॥
 पंचमस्तु मुनि मन कहेव केषा भिद्य रजिमाय ।

अपर नाम उज्ज्वल विमल वसहू भगत उरज्याम ॥ ४२ (क) ॥
 शो-श्रीका रानी भगति तत्र राम नाम सोई सोम ।

राम सकल नामह वै अधिका । होइ माय अत्र खग मन योगिका
 ज्ञाप्रि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कहे अधिका एक नै एका ॥
 तत्र नारद बोले इत्याह । अस पर मागडू कहुं लिटाह ॥
 जन कहूँ कहुं अदेय नाहै मोर । अस विस्वास तजहै जनि मोर ॥
 कवन वस्तु अत्रि प्रिय मोहै जगती । जो मुनिपर न सकहै गुनह मागि
 जानहै मुनि गुनह मोर सुभाज । जन मन कयहूँ कि कहुं वैराज
 देहै एक पर मागडू स्वामी । ज्ञाप्रि जानन अंतरजामी ॥
 सुनिह उदार सहेव रजिमायक । मुंदर आस भुगम पर दायक ॥
 नारद बोले बचन तत्र जोरि सराहै पानि ॥ ४१ ॥

शो-नाग विवि विनती करि प्रभु प्रसन्न भियुं जानि ।

स्वगत पूछि निकट बैठे । लछिमन सादर चरन पखारे ॥
 करत दंडवत लिप उठाह । बोले बह्वै तत्र उर लाह ॥
 गावत राम चरित मूढ़ जानी । प्रेम सहेव बहूँ भावि बखानी ॥
 पर विचारि नारद कर शीना । गए जहाँ प्रभु सुख आनिना ॥
 ऐसे प्रभुहै बिलोकहुं जाह । पुनि न जानिहै अस अवसर आह ॥
 मोर सग करि अंगीकार । सहेव राम नामा देख भाग ॥

अति प्रसन्न खूनाथहि जानी। पुनि नारद बोले महुं जानी ॥
 राम जगहि प्रेउ निज माया। मोहिहुं माहि सुनहुं खुराया ॥
 तब बिगहि मैं चाहउँ कौन्हा। प्रभु कहि कारन कौं न दीन्हा ॥
 सुन सुनि गीहि कहेउं सहरोषा। भजहि जे माहि तनि सकल भरोष
 करउँ सदा निन्द कै रखवारी। जिमि जालक राखइ महंतारी ॥
 गहि सिंसु गच्छ अनल अहि धाई। तहुं राखइ जननी अगगई ॥
 प्राई भएँ तेहि सुत पर माता। प्राति करइ नहि पाछिलि जाता ॥
 मोरै प्राई तनय सम ग्यानी। बालक सुत सम दास अमानि ॥
 जगहि मोर बल निज बल लाही। दुहुं कहै काम कोष रिपु आही ॥
 यह बिचारि पंडित मोहि भजही। पाएहुं ग्यान भगति नहि तजही ॥
 दौं-काम कोष लोभादि मद प्रबल मोहि कै धारि ।
 निन्द महँ अति दास दुखद मायाकपी नारि ॥ ४३ ॥
 सुन सुनि कहै पुरान अति संता। मोहि बिपिन कहँ नारि बसंत ॥
 जग तप नेम जलअय झारी। होइ शीघ्रम सोषइ सब नारी ॥
 काम कोष मद मत्सर भेका। इन्हहि हेरगपद गरषा एका ॥
 दुर्वासना कुमुद कहै सरद सदा सुखदाई ॥
 धर्म सकल सरसीकहे बंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा
 पुनि ममता जवास गहुंदाई। पछइह नारि सिंसि रिपु पाई ॥
 एग उलक निकर सुखकारी। नारि निगइ रजनी अधिआरी ॥
 बुधि बल बील सत्य सब मीना। जननी सम विष कहहि प्रवीना ॥

१०-अथान भूल सुलभद प्रमदा सब द्रव खानि ।

वाते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह निषू जानि ॥ ४४ ॥

नि रघुपति के बचन सुहाए । मुनि तन पुलक नयन भरे आए

कहू कवन प्रभु कै आसि सीती । सेवक पर समता अक प्रीती ॥

न भजहि अस प्रभु भ्रम लगी । ग्यान रंक नर भद अमगी ॥

नि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम विन्यान विसारद ॥

तन के लज्जन रघुवीरा । कहहु नाथ भव भजन भीरा ॥

उनु मुनि संतनू के गुन कहूँ । जिनहे ते मैं उन्द के बस रहूँ ॥

तद्विकारजित अनव अकामा । अवल आर्कचन मुनि सुखधामा

अमितबोध अनीह भितभोगी । सत्यसार कवि कोविद जोगी ॥

अवधान मानद भदहीना । धीर धर्म गति परम प्रवीना ॥

श्री०-गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह ।

रवि सम चरन सरोज प्रिय लिनू कहूँ देह न रोह ॥ ४५ ॥

निज गुन श्रवण सुनत सकुचाही । परगुन सुनत अधिक हृदयाही

सम सीतल नहि त्यागहि नीती । सरल सुमात्र सचाहि सन प्रीती ॥

जग तप शत दम संजम नेमा । गुरु गोविंद प्रिय पर प्रेमा ॥

श्रद्धा छमा भयनी दया । सुदिला सम पर प्रीति अमाया ॥

निरति निबेक निनय विन्याना । बोध जगदध वेद पुराना ॥

दंभ मान मद कारहि न काज । भूल न देहि कुमारग पाज ॥

यागहि सुनहि सदा सम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ॥



(अनुपकाण्ड समाप्त)

वैश्वः सौमनः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानसं सकलकलिकल्पविशेषं

मासपरायण, बर्हिषदा विनाम

अत्र हि राम तत्र काम मदं करोति सदा सततम् ॥ ४३ (ख) ॥

द्वीप सिखा समं युवाति तत्र मनं तत्र द्वीपे पतंग ।

राम भगतिं दृष्टं पारहिं विबुधं विरामं जपं जोग ॥ ४३ (क) ॥

द्वीप-राजगतिं जपं पवनं गच्छतिं सुगतिं वै जोग ।

वै धन्यं पुत्रसीदास आस विहाहं वै द्विष्टं दूतं ॥

सिद्धं नाहं बाराहिं वारं चरन्तिहं ब्रह्मपुरं नारदं गम् ।

असं दीनवत्तुं कृपात्तुं अपने भगवत्तुं निजं सुखं कहे ॥

छं-कहिं संकं न सारदं सेव नारदं सुगतं परं पंकजगहे ।

भुवि सुखं साधुदं के गुनं वैते । कहिं न सकहिं सारदं भुवि वैते ॥

* रामचरितमानस *

४१०



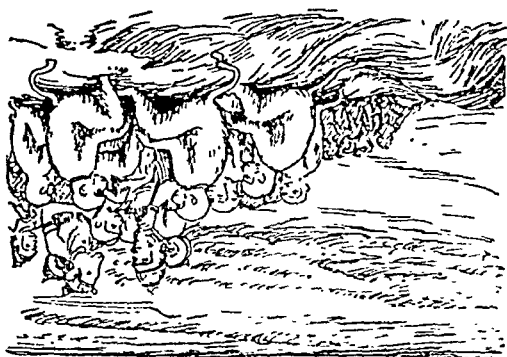
श्रीवेंकटेश्वर

श्रीवेंकटेश्वर

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ डोसक हरे हरे भक्त रहे
 है करि सग रंग डसई ॥

। डोसक रंग विमानक रंग भक्त



(सुप्रसन्न) — (सुप्रसन्न)

। इत्युक्तं प्रमाणम् ।

प्रमाणानुसारेण च कालिदासस्य च

सुनिश्चयतयसु पश्चात् आकृष्टं तै ह ॥ १ ॥

ਸਾਮਾਜਿਕ ਸੁਧਾਰੀ ਸੰਗਤਾਂ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विज्ञानमयम्
विज्ञानमयम्

生也

(201511245015)

ᐱᐱᐱᐱ ᐱᐱᐱ

ዘይዘይገይዘይገይ

ප්‍රකාශන මධ්‍යස්ථානය

ᐅᐅ ᐅᐅᐅᐅᐅᐅᐅ

संसारमयभेषज सुखकर श्रीजानकीजीवन

धन्यास्ते कतिनः पितृनि सततं श्रीरामनामास्तुतम् ॥ २ ॥

सौं-मुक्ति जन्म माहे जानि ज्ञान खानि अथ होनिकर ।

जहूँ बस संसु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥

जगत सकल सुरहुँद विषम गरल जेहिं पान किय ।

तेहि न भजिस मन मंद को कपल संकर ससि ॥

आगे चले बहिरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत निअराया ॥
तहूँ रहे सचिव सहित सुग्रीवा । आगत देखि अतुल बल सीवा ॥
आति सपीत कहसुनु देउमाना । पुकष ज्वाल बल रूप निधाना ॥
धरि बहूँ रूप देखि तूँ जाई । कहैसुं जानि निरूप सयन बुझाई ॥
धरि रूप धरि कपि तहूँ गयऊ । माय नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम्ह स्वामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहुँ बन गौरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गाम्भी । कवन हेतु निचरहुँ बन स्वामी ॥
सहुँल मनीहरे सुंदर गाला । सहत दुसह बन आतप जाला ॥
को तुम्ह तीनि देव सहूँ कोऊ । नर नारायण को तुम्ह दोऊ ॥
दो०-जग कारन बारन भव भजन परेनी भार ।

को तुम्ह आखिल भुवन परित लीन्ह मज्ज अवतार ॥ १ ॥

कोसलेस दसरथ के जाए । हेम पितृ भवन मानि जन आए ॥

नाम राम लछिमन दोउ भई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥

दीपि पगजत पति अकुल । इदं दृग गीरी सग सुल ॥

ॐ शंकर सवसव रूप साधि भावत ॥ ३ ॥
श्री-श्री अनन्त गङ्गा अति मति न दह दृग्मन ।

समदरही मोहि करे सग कोक । शंकर प्रिय अनल्यति शोक ॥

सुख कति विषु भगति जनि कन । ते सग प्रिय ललितन ते दूना ॥

तम सुधाति उदर उर लला । निज लीजन सब धीनि बुझना

अस करि परे नरन अकुल । निज ननु प्रगटि प्रीति उर उर

शंकर सुत पति मातु भगि । दह अनन्त भनइ प्रपु पति ॥

रा रा ॐ सुधीर दीन । जानइ नहि करे भजन उपाहि ॥

नाम जोन तम भाग्य मोक्ष । शनिस्तद दुःखहि छेद ॥

उदरि नाम नहि अयुन भरे । शंकर प्रगटि परे जनि भरे ॥

पति प्रपु मोहि विचारत दीन भय भगवान ॥ २ ॥

श्री-एक ॐ शंकर मोक्षम फलित इदं अयान ।

तम भाग्य सब निरुद्ध भुवन । रा ॐ ॐ नहि प्रपु पतिना ॥

भार नार ॐ प्रेता भरे । उर उर उर उर उर उर ॥

पुनि धीन प्रीति अलित कीर्ति । इत इदं निज नामहि चोटी

पुलित तम सुख अलन भवना । इत तनित नर के राना ॥

प्रपु पतिना प्रपु पति नागा । नो सुख उभा नहि मोहि भना ॥

आपन नित कन दम गह । इदं प्रिय निज कया बुझा ॥

इत इत निमित्त नहि । प्रिय निहि दम लोभ नहि ॥

नाथ सैल पर कपिपति रहै। सो सुग्रीव दास तब अहै
 तेहि सन नाथ मयजी कीजे। दीन जानि तेहि अमय करीजे
 सो सीता कर खोज करइहि। जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि
 एहि विधि सकल कथा समझाई। लिपि द्रुआँ जन पाठि चढ़ाई
 जन सुग्रीव राम कहूँ देवा। अतिसय जन्म धन्य करि लेवा
 सादर मिलेउ नहि पद साधा। भूँटेउ अजुज सहित खिनाया
 कपि कर मन विचार एहि सीता। करिहै विधि सो सन ए प्रीति
 दी०-तब हनुमंत उभय दिशि की सब कथा सुनाइ।

पावक साखी देइ करि जोसी प्रीति दृढ़ाई ॥ ४ ॥
 कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा। लछिमन राम चरित सब भाष
 कह सुग्रीव नयन भरी गरी। मिलिहि नाथ मिथिलसकुमारी।
 भोजन्ह सहित डहौँ एक बारा। बैठ रहैँ मैं करत विचारा।
 गगन पंथ देखी मैं जात। परबस परी बहृत विजयता।
 राम राम हो राम पुकारो। हमहि देखि दीन्हैउ पट डारी॥
 सागा राम जेत तेहि दीन्हा। पट उर लाइ सोच अति कौन्हा॥
 कह सुग्रीव सुनहु खिचीरा। तजहु सोच मन आनहु धीरा॥
 सब प्रकार करिहैँ सेवकाई। जेहि विधि मिलिहि जानकी आई
 दी०-सखा वचन सुनि हरेष कपसिधु बलसीव।
 कारन कवन बसहु वन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥
 नाथ बलि अफ मैं हो भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई॥

देव देव मन वक न पदं । यत् अमुमान सदा हित कर्तुं ॥
 कुप्य निवारि कुप्य वदता । गुन प्राप्ते अमुनिहृदि ॥
 निन्द कं अति सदेव न आर्त्त । ते सदा कत देहि कत निन्दे
 निन्द देव निदि अम न कति जाग । निन्दक दुःख यत् अम समाना
 ते न निन्द देव देहि देवनि । निन्दे निन्दक पाक भानि ॥

मम दम् अममान गम् न उपाहि मान ॥ ३ ॥

३०-पुत्र सुमान माहिदेव आदिहृदि पदार्थ मान ।

पुनि वक देव दीनदयाला । पदार्थ उदा दे मुजा निमाना ॥
 देवो सदा यत् अमन नार्त्त । सदा अमन नार्त्त मान नार्त्त ॥
 नार्त्त अम नार्त्त । अकल मुनय न निन्दे निमाना ॥
 निन्द अम नार्त्त नार्त्त अति नार्त्त । देवि नार्त्त नार्त्त अम नार्त्त
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥
 नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त । नार्त्त नार्त्त नार्त्त नार्त्त ॥

विपति काल कर सतगुन नेह । श्रुति कह संत मित्र गुन एह ॥
 आगे कह मुई बचन बगई । पाछे अनहित मन कुटिलई ॥
 जा कर चित आहै गति सम भाई । अस कीमज परिहरेहै भलई ॥
 सेवक सठ रूप केपन केनारी । कपटी मित्र सँल सम चारी ॥
 सखा सोच लगानई बल मोरे । सब निषि घट्य काज मै मोरे ॥
 कह सुग्रीव सुनई रघुबीरा । गालि महेबल अति रनधोरा ॥
 दुईद्विअ आसि बाल देखराए । विनु प्रयास रघुनाथ ठहराए ॥
 देखि अभिन बल बाढ़ी प्रीती । गालि बधव डेह भई परतीती ॥
 बार बार नावई एद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरय कपीसा ॥
 उपजा ज्ञान बचन तब बोला । नाथ क्यूँ मन मयउ अलोल ॥
 सुख संपति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहउ सेवकाई ॥
 ए सब राम भगति के रावक । कहहै संत तब एद अवराधक ॥
 सब मित्र सुख दुख जग माहौ । माया केत परमारथ नाहौ ॥
 बालि परम हित जासु प्रसादा । भिलेहु राम वुह समन विषादा ॥
 सपन जेहि सन होइ लराई । जगो समुझत मन सकुचाई ॥
 अब प्रभु केप कइ एहि भाँती । सब तनि भजन करौ दिन राती ॥
 सुनि विरामा संजत कपियानी । बोले बिहसि राम धनुषानी ॥
 जो कहु कहैहै सत्य सब सोई । सखा बचन सम सुषा न होई ॥
 नट मरकट डेव सगहै नचावत । राम खोसि बेट अस गावत ॥
 ले सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप साधक गहि होथा ॥
 तब रघुपति सुग्रीव पठाया । गजैस जाइ निकट बल पाया ॥

১১৪

मैं पैरा सुग्रीव प्रियाग। अवगुन कवन नाथ मोहि मार॥
 अनुजगद्वै भगिनी सुतनारी। सुतु सठ कन्या सम ए चारी॥
 इन्हैहि कुट्टहि बिजोकइ जहि। ताहि वधै कछु एष न होई॥
 मूर्छ होहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना
 सम भुज बल आश्रित होहि जानी। मार चढ़सि अथम अभिमानी॥
 द्रो-कुनई राम स्वामी सन बल न चाहिो मारि ।
 प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति होरि ॥ ९ ॥
 सुनत राम अति कोमल गानी। गालि सीस परसेउ निज पानी॥
 अचल करौ तनु राखई प्राना। गालि कइ सुतु कृपाणिधाना॥
 जनम जनम मुनि जतनु कराही। अंत राम कहि आवत नाही॥
 जासु नाम बल संकर कासी। देत सदाहि सम गति अविनासी॥
 सम लेवन गोचर सोइ आग। बहुरि कि प्रभु अस गनिहि जनग
 छं-सो नयन गोचर जासु गुन निव बेति कहि श्रुति गावही ।
 जित पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावही ॥
 मोहि जानि अति अभिमान वस प्रभु कहेउ राखु सरीरही ।
 अस कवन सठ हठि काटि सुरतह गारि करिहि वधरही ॥ १॥
 अब नाथ करि करेना बिजोकइ देई जो वर मागऊ ।
 होहि जोनि जन्मौ कसु वस वहुँ राम पद अचुरागऊ ॥
 यह तनय सम सम विनय बल कल्याणमद प्रभु लीजै ॥
 गहि बौह सुर वर नाह आपन दास अंगद कीजै ॥ २॥

मैं कैसी सुग्रीव प्रियाग। अकपुन कवन नाथ मोहि मार।
 अनुजगद्वर्ष भगिनी। सुन सठ कन्या सम ए चारी॥
 इन्हहि कुट्टहि बिलोकइ जाई। ताहि ब्रह्म कह्यु पाप न होई॥
 भूढ़ ताहि अतिसय अपिममान। नारि सिखावन करसि न काना
 सम मुन बल आश्रित होइ जानी। मार चढ़सि अपम अपिमानी॥
 द्रो०-सुनई राम स्वामी मन बल न चावैसी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अब काल गति होरि ॥ ९ ॥
 सुनत राम अति कोमल बानी। बोलि सीस परसेउ निज पानी॥
 अवल करौ तब राजहू प्रान। बोलि कहे सुन कृपानिधान॥
 जनम जनम मुनि जतवु कराही। अब राम कहि आवत नही॥
 जासु नाम बल संकर कासी। होत सगहि सम गति अविनासी॥
 सम लेवन गीचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि जनावा
 छं०-सो नयन गीचर जासु गुन निव बेनि कहि श्रुति गावही ।
 जित पवन मन गो निरस करि गुनि ध्यान कबहुँक पावही॥
 मोहि जानि अति अपिममान बस प्रभु कहैउ राखु सरीरही ।
 अस कवन सठ हठि काटि सुरवर बारी करिहि बरवही॥ १॥
 अब नाथ करि कहेना बिलोकइ देहु जो बर मागहु ।
 जाहि जानि जन्मौ कहुँ बस वहुँ राम पद अचरणाहुँ ॥
 यह नयन सम सम विनय बल कल्याणमद प्रभु लीजिये ।
 गहि बूढ़ सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिये ॥ २॥

पुनि सुग्रीवहि लीन्ह दोलई। यह प्र
 जानतहूँ अस प्रभु परितेहरी। काहे न विपति ज
 सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिलक। अति कपिल स्वयंर सुभक्त ॥
 बालि धाम व्यकुल दिन राती। तन वहइ जन चित्तु जर छाती ॥
 सुर नर मुनि सब कै यह रोती। स्वयंर अति कसहि सब प्रीती ॥
 उभा राम सम हित जग माही। गुरपितु मातु बंधु प्रभु माही ॥
 राज दीन्ह सुग्रीव कहूँ अंगद कहूँ बुजबाज ॥ ११ ॥

टी०-लक्ष्मन वरत बोल्यो पुरजन विष समाज ।
 स्वयंपति चरन नाइ करि माया। चले सकल प्रीत रच्यमाया ॥
 राम कहे अजबहि समझाई। राज देह सुग्रीवहि जाई ॥
 तब सुग्रीवहि आयस दीन्ह। मृतक कर्म विधिवत सब कीन्ह ॥
 उभा दाक जोगित की नाई। सगहि नचावत राम गोसाई ॥
 उज्जवा यान चरन तब लगि। लीन्हैस परम भाति नर मागी ॥
 प्राट सो तब तब आगो सेव। जीव नित्य कहि लहि वृन्द रोवा ॥
 छिति जल पावक गगन समीर। पंच रचित अति अधम सरि ॥
 तारा विकल देखि रघुराया। दीन्ह यान हेरि लीन्है माया ॥
 नाग विषि विजग कर तारा। छूटे कैस न देह सुभारा ॥
 राम बालि निज धाम पठावा। नगर लीग सब व्यकुल बावा ॥
 सुमन माल जामि कंठ ते निरत न जानई नाग ॥ १० ॥

टी०-राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तब यथा ।

कहै प्रभु सुनु सुधीन देखीस। पुर न जाउँ दस चारि बरसीस॥
 गत श्रीपद जग्या रिजु आई। रहैदेऊ निकट सैल पर छाई॥
 अंगद सहित करहु जगद राज। सतत हृदय धरहु मम काज॥
 जग सुधीन भवन फिरि आए। राम प्रवरगन निरि पर छाए॥
 टी०-प्रथमहि देवन्ह निरि गृह। राजेउ रक्षित बनाइ ।

राम कृपानिधि कछु दिन बास करहि नो आई ॥ १२ ॥
 सुंदर मन कुसुमित आति सोभा। गुंजत मधुप निकर मधु लोभा॥
 कंद मूल फल पत्र सुहाए। मए बहृत जग ते प्रभु आए॥
 देखि मनोहर सैल अनूप। रहे तहुँ अजुन सहित सुरभूप॥
 मधुकर जग मया तनु धरि देवा। करहि सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा॥
 मंगलरूप भयउ मन नय ते। कीन्ह निवास रामपति जग ते॥
 फटिक सिल आति सुध सुहाई। सुख आसीन तहुँ दौ भाई॥
 कहेत अजुन मन कथा अनेका। भगति निरति नयनीति निवेका॥
 बरपा काल भेष नम छाए। गरजत जगत परम सुहाए॥
 टी०-लछिमान देखि सोर गन नाचत वारिद पवि ।

गृही निरति रत हरेष जस विजुभात कहूँ देखि ॥ १३ ॥
 मन धमद नम गरजत धोरा। प्रिया होन हरपत मन सोरा॥
 दामिनि दमक रह न मन भाई। खल कै प्रीति जया फिर नाई॥
 बरपहि जलद भूमि निअराए। जया नवाहि बुध विद्या पाए॥
 बूढ़ अघात सहहि निरि कैस। खल के नचन संत सहै कैस॥

१०-कसई प्रबल वह मातल जाई तहँ मेव बिजहि ।

जाई तहँ रहे पथिक थकि नाग । जिम् इंदिय गन उपल गगन ॥
 विविध जंतु संकुल माई भोज । प्रजा गढ़ जिम् पढ़ सुराज ॥
 ऊपर गगन गहन नहि जासा । जिम् हरिजन हिउँ उपल न कामा ॥
 दीखअत चक्रवाक खग नहि । कलिहि पढ़ जिम् धर्म पदाई ॥
 कभी निरावहि चरु किंसना । जिम् बुध तजहि मोह मद माना ॥
 महाद्वि चलि फेडि किआरी । जिम् सुतन भए निराहि नारी ॥
 निमि तम धन खचीत निराजा । जनु दंभन कर मिल समजा ॥
 ससि संपन्न सोह माई कसी । उपकारी कै संपति बैसी ॥
 खोजत कतहुँ मिलइ नहि धूरी । करइ कोष जिम् धरमाई दूरी ॥
 अक जगस पात विनु मयक । जस सुराज खल उद्यम गयक ॥
 नव पण्डव भए विदप अनेका । साधक मन जस मिल विवेका ॥
 दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । वेद पढ़हि जनु नद समुदाई ॥
 जिम् पावड बाद ते गुप्त होहि सदांभ ॥ १४ ॥

१०-दोरी भूमि गहन संकुल समुझि परहि नहि पंथ ।

सरिता जल जलनिधि माई जाई । होइ अचल जिम् जिव होरि पाई ॥
 समिटि समिटि जल मरहि तलावा । जिम् सदगुन सजन पाई आवा ॥
 भूमि परत भा टावर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ॥
 छुद नदी मरि चली तोराई । जस योरेई धन खल इतराई ॥

* किष्किन्धकाण्ड *

कथहुँ दिवस महुँ निविहं तम कवहुँक प्रगट पवंत ।

बिनसहुँ उपजहुँ त्थान जिय पाहुँ कंसंग सुसंग ॥ १५ (ख) ॥
 भयगु जियत सरद रिनु आहुँ । लजिमन देखहुँ परम सुहृदुँ ॥
 फूलै कास सकल महिँ छाहुँ । जनु भरपूँ कृत प्रगट बुझहुँ ॥
 उदित अगसि पंध जल सोपा । जिय लोमहिँ सोषहुँ संतोपा ॥
 सरिता सर निमूल जल सोहो । संत हृदय जस गत मर मोहो ॥
 रस रस सुख सरित सर पानी । ममता त्याग करिहुँ जिय त्थानी ॥
 जानि सरद रिनु जंजन आए । पाहुँ समय जिय सुकृत सुहाए ॥
 एक न देख सोहो असि धरनी । नीति निपुन जेप कै जासि करनी ॥
 जल संकोच निकल महुँ मीना । अश्रुध कुटुंबी जिय धनहीना ॥
 विनु धन निमूल सोहो अकास । हरिजन देव परिहरि सब आस ॥
 कहूँ कहूँ बृहि सारदी थरी । कोउ एक पव भगति जिय मोरी ॥

दो०-चले हरिष बलि नगर दूष वापस वनिक भिखारि ।

जिय हरि भगति पाहुँ भ्रम बजाहुँ आभसी चारि ॥ १६ ।

सुखी मीन जे नीर अभापा । जिय हरि सरन न एकउ गपा ॥
 फूलै कमल सोहो सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ वैसा ॥
 गुंजत मधुकर मुखर अनपा । सुंदर खग खग नागा रुपा ॥
 चक्रवाक मन दुख निविषेखी । जिय दुर्जन पर संपति देखी ॥
 चातक रतन वेपा अति ओही । जिय सुख लहेइ न संकाइही ॥
 सरदातप निवि ससि अपहरहुँ । संत दरस जिय पावक दरु ॥

तव हेतुमत बोलाए दूता। सब कर करि सममान बहता ॥
 कहै पाख महुँ आवन जोई। मोरे कर ताकर यव होई ॥
 अगु माकतसुत दूत समुदा। पठवहु जहँ तहँ गानर जहँ ॥
 सुनि सुधीव परम मय माना। विषयु मोरे हरि लीनेउ ग्याना ॥
 निकट जाइ चरनहि सिख नावा। चारिह विधि तेहि कहि समुझावा ॥
 इहौ पवनसुत हँदयु विचारा। राम काज सुधीव विचारा ॥
 मय देखाइ ले आवहु तात सखा सुधीव ॥ १८ ॥

टी०-तव अनुजहि समुझावा खपति करेना सीव ।

लछिमन कोषवत मय जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर गाना ॥
 जानहि यह चरित्र सुनि ग्यानी। जिनह खचीर चरन रति मानी ॥
 जासु कपू छुटहि मर मोहा। ता कहूँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥
 जेहि सपक मारा मैं बाली। तेहि सर दूतौ मरुँ कहै काली ॥
 सुधीवहुँ सुधि मोरि विचारा। एवा राज कोष पुर नारी ॥
 कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई। तात जतन करि आनउ सोई ॥
 एक बार कैसेहुँ सुधि जानौ। कालहुँ जीति निमेष महुँ आनौ ॥
 बरपा गत निमल रिउ आइ। सुधि न तात सीता कै पाइ ॥
 सदायर मिल जाहि लिस संसय अस समुदाइ ॥ १० ॥

टी०-सुमि जीव संकुल रहे गप सदा रिउ पाइ ।

मसक दंस बीते हिम जासा। जलम द्विज द्रोह किछु कुल नासा ॥
 दोष इहुँ चकोर समुदाइ। चितवहि लिस हरिजन हरि पाइ ॥

कजहुँ दिवस महुँ निविड तम कबहुँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ ग्यान जिसि पाइ कुसंग सुखंग ॥ १५ (ख) ॥

अरुग निगत सरद रिउ आहुँ । लछिमन देखहुँ परम सुहृदहुँ ॥

फूलै कास सकल महि छाहुँ । जनु गरुषाँ कत प्रगट जुहंहुँ ॥

उदित अगस्त पंथ जल सोग । जिसि लोमहि सोपइ सुतोग ॥

सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥

रसरस सख सरित सर पानी । ममता त्याग करहि जिसि ग्यानी ॥

जानि सरद रिउ खंजन आए । पाइ समय जिसि सुकत सुहाए ॥

एक न रेनु सोह आसि धरनी । नीति निपुन रूप कै बलि करनी ॥

जल संकास निकल महुँ मीना । अद्युध कुटुंबी जिसि धनहीना ॥

विनु वन निर्मल सोह अकास । हरिजन देव परिहरि सय आस ॥

कहुँ कहुँ वृष्टि सरदी थरी । कोउ एक पव भगति जिसि मोरी ॥

दो०-चले हरिष तनि नगर नृप तापस वनिक भिखारि ।

जिसि हरि भगति पाइ अस तजहि आशमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाध । जिसि हरि सरन न एकउ बाध ॥

फूलै कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म समन भए बैसा ॥

गुंजत मधुकर मुखर अनूप । सुंदर लग्य रव नाना रूप ॥

चक्रवाक मन दुख निषि पेखी । जिसि दुर्जन पर सपति देखी ॥

चातक रटत वेधा अति ओही । जिसि सुख लहइ न संकटोही ॥

सरदातप निषि सवि अपहरेहुँ । संत दरस जिसि पातक टरेहुँ ॥

देहि इह चकोर समुदाह । शिवहि जिन हरिजन हरि पाई ॥
मरक देस गीते हिम गंगा । जिन द्विज द्वेह किए कुल नाश ॥

सदगुर मिल जाई जिन ससय अस समुदाह ॥ १० ॥

यस्या गत निर्मल रिउ आई । सुधि न तार सीता कै पाई ॥
एक बार कैवर्त सुधि जानी । कालहु जीति निमिष महुँ आनी ॥
कवहुँ रदउ जाँ जायति होई । तार जवन करि आनउ सोई ॥
सुधावहुँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोष पुर नारी ॥
वैहि बापक मारा मँ गाली । तेहि सर हवीं मूढ कहुँ काली ॥
जाहु कपूँ झूटहि मर मोहा । ता कहुँ उमा कि सपनहुँ कोहा ॥
जानहि यह चरित्र सुनि यानी । जिन खेरीर चरन रति मानी ॥

लहिमन कोषवत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर याना ॥

दो-तब अजुगहि समुझावा खपति कलना संव ।

अथ देखाइ है आवहुँ तार सखा सुधाव ॥ १८ ॥

इहो पवनमुख हृदयुँ निचारा । राम काज सुधीवुँ बिसारा ॥
निकट जाइ चरननिहै छिठ नाया । चारिहुँ निधि तेहि कहि समुझावा
सुनि सुधीवुँ परम भय माना । विषयुँ मोर हरि लीन्हैउ याना ॥
अथ साधवत देव समुदाह । पठवहुँ जहूँ तहूँ जानर जहूँ ॥
कहहुँ पाव महुँ आवन जोई । मोर कर ताकर अथ होई ॥
तब हनुमत बोलाए देवा । सब कर करि समान बहोता ॥

कवहुँ दिवस महुँ निविडं तम कवहुँक प्रगट पवंग ।

बिनसहुँ उपजहुँ ग्यान जिसि पाइ कुसंग सुखंग ॥ १५ (ख) ॥
 बरग्य निगत सरद रिउ अहुँ । लजिमान देखहुँ परम सुदहुँ ॥
 फुलै कास सकल महि छाहुँ । जनु परग्य केल प्रगट बुदहुँ ॥
 उदित अगसि पंथ जल सोपा । जिसि लोमहि सोपहुँ संतोपा ॥
 सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गान मद मोहा ॥
 रसरस सुख सरित सर पानी । ममता त्याग करहि जिसि ग्यानी ॥
 जानि सरद रिउ खंजन आए । पाइ समय जिसि सुकल सुहाए ॥
 एक न रेनु सोहै आसि धरनी । नीति निपुन नृप कै आसि करनी ॥
 जल संकोच निकल महुँ मीना । अग्रुध कुटुंबी जिसि धनहीना ॥
 विनु वन निर्मल सोहै अकासा । हरिजन देव परिहरि सब आसा ॥
 कहूँ कहूँ बहिर सरदी धोरी । कोउ एक पत्र भगति जिसि मोरी ॥

दो०—बड़े हरिष तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिसि हरि भगति पाइ भ्रम तजहि आशमी चारि ॥ १६ ॥
 सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिसि हरि सरन न एकउ थापा ॥
 फुलै कमल सोहै सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भए जैसा ॥
 गुंजत मधुकर मुखर अनूप । सुंदर लग्य रज नाना रूप ॥
 चक्रवाक मन दुख निधि पेली । जिसि दुर्जन पर संपति देखी ॥
 चातक रतन पेषा अति ओही । जिसि सुख लंदहुँ न सकाही ॥
 सरदाग्य निधि सखि अपहरहुँ । संत दरस जिसि पातक टरहुँ ॥

तब हनुमत बोलाए दूता । सब कर करि सममान बहता ॥
 कहहु पाव महुँ आवन जाई । मोर कर ताकर यथ होई ॥
 अब मारतसुत दूत समूह । पठवहु जहँ तहँ जानर जहँ ॥
 सुनि सुधीव परम भय माना । विषय मोर हरि लीन्है उभयाना ॥
 निकट जाइ चरनहि सिख नावा । चारिहु विधि तेहि कहि समझावा ॥
 इहौ पवनसुत हँदयुँ विचार । राम काज सुधीव विभार ॥
 भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुधीव ॥ १८ ॥

टी०-तब अजुजहि समझावा खपति कपना सीव ।

लछिमान कोषवत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर जाना ॥
 जानहि यह चरित्र सुनि यानी । जिन खचीर चरन रति मानी ॥
 जाहि कपू छूटहि मर मोह । ता कहूँ उभा कि सपनहुँ कोह ॥
 जाहि सायक मारा मैं बाली । तेहि सर हतौँ मूढ कहूँ काली ॥
 सुधीवहुँ सुधि मोरि विभारी । पावा राज कोष पुर नारी ॥
 कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई । तात जतन करि आनउ सोई ॥
 एक बार कैसेहुँ सुधि जानौ । कालहुँ जीति निमेष महुँ आनौ ॥
 बरषा गत निमल रिउ आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
 सदगुर मिले जाहिं जामि संसय अस समुदाई ॥ १७ ॥

टी०-भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रिउ पाई ।

मसक दंस बीते हिम जासा । जामि द्विज द्रोह किछु कुल नासा ॥
 देखि इंदु चकोर समुदाई । निवतवाहिं जामि हरिजन हरि पाई ॥

* किरियाकाण्ड *

पुनः अत्र प्रीति नीति देख्योई । चले सकल चरननिंदे सिर नाई ॥
हि अवसर लछिमान पुर आए । कोष देखि जहँ तहँ कपि पाए ॥

१०-धनुष चढ़ाई कहे तब जाहि करहुँ पुर छार ।
व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार ॥ १९ ॥

चरन नाई सिर निनवी कीन्दी । लछिमान अग्रय गौह तेहि दीन्दी ॥
कोषवत लछिमान सुनि काना । कह कपीस अति भय अकुलाना ॥
सुनु हनुमंत संग ले राग । करि निनवी समुझाउ कुमार ॥
मुज हनुमंत जाई हनुमाना । चरन बंदि प्रभु मुजस बखाना ॥
राग सहित जाई हनुमाना । चरन पवारि पल्ला बैठए ॥
करि निनवी मंदिर ले आए । चरन पवारि पल्ला बैठए ॥
तब कपीस चरननिंदे सिर नागा । गहि मुज लछिमान कंठ लगावा ॥
नाथ निपय सम मर कहूँ नहि । मुनि मन मोह करइ छन मारी ॥
सुनत निनीत बचन मुख पावा । लछिमान तेहि बहूँ निधि समुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनई । जहि निधि गए दूत समुदाई ॥
२०-हरषि चले सुमीव तब अंगदादि कपि साथ ।
रामावुज आगे करि आए जहँ रखनाथ ॥ २० ॥
नाई चरन सिर कह कर जेरी । नाथ मोहि कहूँ नाहिन खेरी
अतिवय प्रबल देव तब माया । छुटै राम करहुँ जौ दया
निपय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मू पावै परस कपि अति कामी
नारि नयन सर जाहिन लगाना । घोर कोष तम निधि जे जगना
जोय पावै जहि गार न बूधाया । सो नर उग्रह समान रखरा

दी०-वचन सुनत सब वानर जाहूँ तहूँ चले पुरंत ।
 तब सुग्रीव बोलाए अंगद नल हेनुमत ॥ २२ ॥
 सुनहुँ नील अंगद हेनुमान । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
 सकल सुमत मिमलि दृष्टिजन जाहूँ । सीता सुधि पूछेहुँ सब काहूँ ॥
 मन कम बचन सो जननि चिचारेहुँ । रामचंद्र कर काख सुवारेहुँ ॥
 मान पाति सेइअ उर आगि । स्वामिहि सब भाव छल त्यागि ॥
 तजि माया सेइअ परलोका । मिटहि सकल भवसंभव सोका ॥

अग्राध मति जो विनु सुधि पाए । आवइ वनिहि सो मोहि मराए ॥
 जनकसुता कहूँ खोजहुँ जाहूँ । मास दिवस महुँ आएहुँ माहूँ ॥
 राम काख अक मोर निहोरा । वानर जंघ जाहुँ चहुँ ओरा ॥
 ठाहूँ जहूँ तहूँ आपसु पाहूँ । कह सुग्रीव सबहि समझाहूँ ॥
 यह कह्यु नहि प्रसु कह अधिकारहूँ । निस्वरूप आपक रखारहूँ ॥
 अस कपि एक न सेना माही । राम कुसल कहि पूछी नाही ॥
 आहूँ राम पद नावहि माया । निरखि बदन सब होहि सनाया ॥
 वानर कटक उमा भैं देखा । सो भूकख जो करन चह लेखा ॥
 नाना वरन सकल दिशि देखिअ कोस वख्य ॥ २१ ॥

दी०-एहि विधि होत वनकही आए वानर जंघ ।
 अज सोइ जतनु करहुँ मन लाहूँ । जहि विधि सीता कै सुधि पाहूँ ॥
 तब खपति बोल मुसुकाहूँ । पुनह प्रिय मोहि मरत जियि माहूँ ॥
 यह गुन साधन तैं नाहि होइ । पुनही कपू पाव कोइ कोइ ॥

* रामचरितमानस *

८७
 ह धरे कर यह फल माई। मज्जि राम सब काम बिहोई ॥
 आसु माणि चरन सिद्ध नाई। जो खिन्न चरन अनुगामी ॥
 यह गुन्य सोई बड़मानी। जो खिन्न चरन अनुगामी ॥
 परसा सोस सरोरह पानी। करमुद्रिका दीन्ह जन जानी ॥
 बहुत प्रवत तनय सिद्ध नाया। जानि काज प्रभु निकट बोलवा ॥
 हेतुमत जन्म सुफल करि माना। चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना ॥
 जद्यपि प्रभु जानत सब याता। राजनीति राखत सुरयाता ॥
 द्यौ-चले सकल बन खोजत सरिता सर निरि खोह ।
 कतहुँ होइ निषिद्ध से भय। प्रान लेहि एक एक चपेट
 बहुत प्रकार निरि कानन हेरहि। कोउ मुनि मिलइ ताहि सब धे
 लानि देया आसिष्य अकुलाने। मिलइ न जल वन गहन सुख
 मन हेतुमान कीन्ह अनुमाना। भूमि निजर एक कौविज
 चहिं निरि सिद्ध चहुँ दिशि देखा। भूमि निजर एक कौविज
 चकचाक चक हेस उड़ाई। बहुतक लग प्राप्ति होइ वेहि
 निरि ते उत्तरि पवनसुत आगा। सब कहूँ है सोइ निजर दे
 आगो है हेतुमाताहि लीन। पड़े निजर निजु न
 द्यौ-दीख जाइ उपवन वर सर विगसित बहु कं
 मंदिर एक सोर वहुँ वैठि नारि तपसु

अस कहि लखनिधि तट जाई। बैसे कपि सग जगु बसाई ॥
 हम सीता कै सुधि लीन्हें विना। नहि बैसे बुझाज प्रीति ॥
 उन एक सोच मान होइ रहे। पुनि अस नचन करत सग भए ॥
 अंगद नचन सुनत कपि गोरा। बोलि न सकहि नयन बह नीरा ॥
 पुनि पुनि अंगद कह सग पाई। मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥
 पिता बध पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही ॥
 इहौ न सुधि सीता कै पाई। उहौ गाँ मारिहि कपिराई ॥
 कह अंगद लोचन भरी। दुई प्रकार भई मृत्यु हेमारी ॥
 सग मिलि कहहि परस्पर दाता। निज सुधि लए करन का आता ॥
 इहौ निचरहि कपि मन माहौ। बीती अवधि काज कछु नाहौ ॥
 उर धरि राम चरन जुग जे दंदत अज हैस ॥ २५ ॥

दो-चदरीवन कहुँ सो गई प्रभु आया धरि सीस ।

नाना भाँति विनय तेहि कीन्है। अनपायनी भगति प्रभु दीन्है ॥
 सो पुनि गई जहौ खिनाया। जाइ कमल पर नाएषि माया ॥
 नयन मूँद पुनि देखहि दीरा। ठहैं सकल सिंधु कै तीरा ॥
 मूँदई नयन निजर तजि जाई। पैहई सीताहि जनि पछिताई ॥
 तेहि सग आपनि कथा सुनाई। सँ अज जाव जहौ खिराई ॥
 मजनु कीन्हें मयूर फल खाए। तासु निकट पुनि सग चलि आए ॥
 तेहि तब कहाँ कहि जल पाना। खाई सुरस सुंदर फल नाना ॥
 दूरे ते ताहि सगहि देखि नाया। पहुँचि निज वचन सुनाया ॥

* रामचरितमानस *

अंगद दुख देखी। कहीं कथा उपदेश विसेयी ॥
म कहूँ नर जान मानहु। निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥
य सेवक आति बड़भागी। संतत समुन ब्रह्म अनुसरणी ॥

निरइच्छा प्रभु अवतरहु सुरमहि गोहि जल लाति ।
समुन उपासक संग तहूँ रहहि मोच्छ सब त्यागि ॥ २३ ॥

है शिष कथा कहीहु बहू भौती। गिरि कंदरा सुनी संपाती ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥

है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥

है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥

है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥

है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥

है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥

है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥
है शिष कथा कहीहु बहू कोसा। मोहि अहर दीन्ह जादीसा ॥



(BLH 2014-12-14)

। : २।५५ : ५।५५ : ५।५५

ප්‍රධාන මණ්ඩලයේ සේවයේ සහභාගීත්වයෙන් ප්‍රධාන

ମାସପାଟଣା, ଗୁରୁଗ୍ରାମ

सुनिभ वासि गुन प्राम जासि नाम अथ खग वधिषक॥३०(ब)॥

1. கருவக நயுந் துக்கு மாக மாக உப லாபமு-01

॥(क)० ३॥ ऐतदस्यैव कश्चिन्मत्तं सत्यं यथा त्वत्पुत्रोऽयम्

। शुभे पक्षे शुभे दिने शुभे वृत्ते शुभे लगे शुभे भवे-०।



शिवन कुल्लु कुनि आवुन प्रमु भवन भवमीर ।
आहि आहि आगि देन सन सुवद खिमीर ॥

भगवान् विष्णु

सद्यं वदामि च भवानिच्छिन्नतरोत्तम ।

न्या स्पष्टा रघुपते हृदयेऽस्मदीये

वन्देऽहं कल्याणकरं रघुवं अर्पणवर्द्धनमस्मिन् ॥ १ ॥

सामान्यं जगदीश्वरं सुखिहं माधामय्यं हरिं

ब्रह्मादिसृष्टिकर्तान्देवैर्यमानिदां वेदान्तवेद्यं विभुम् ।

दानं शाश्वतमयममननं निर्वर्ण्योन्नतमदं

श्लोक



(सुन्दरकाण्ड)

पञ्चम सर्गः



श्रीरामचरितमानस

श्रीजानकीवल्लभा विजयते

वसः श्रीगणेशाय नमः

भक्तिं प्रपन्नं रघुपुङ्गव निभूयं मे

कामादिदोषराहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥

अवितलवलयमं हेमश्रीजयदेहं

द्विजवमकेदारुं शोनिनामप्रगणयम् ।

सकलगुणानिधानं वानराणामधीशं

रघुपतिप्रियमक्तं वातजालं तमामि ॥ ३ ॥

जामवंत के यवन सुहाए । सुनि हनुमंत हृदय अलि मा

तय ललि माहि परिचेहु तुम्ह माई । सहि दुख कंद मूल फल खा

वन ललि आवौ सीताहि देखी । होइहि देखी काजु माहि हरष विसेव

यह कहि नाइ सगन्हि कहूँ माया । चलेउ हरषि हिँसु धरि रघुनाथ

सिधु तीर एक भूधर सुंदर । कौतुक कैंदि चहेंउ ता ऊपर

भार भार रघुवीर सुभासी । तरकेउ पवनतनय बल भासी

जहि गिरि चरन देइ हनुमंता । चलेउ सो गा पाताल वुरंता

जिमि अमोघ रघुपति कर वाना । एही भाँति चलेउ हनुमाना

जलनिधि रघुपति वृत निचासी । तँ भूनाक होहि अमहासी

दी०—हनुमान होहि पररा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

राम काजु कीन्हें धियु माहि कहौ विश्राम ॥ १ ॥

जाल पवनसुत देवन्ह देखी । जानै कहूँ यल बुद्धि विसैया

सुरसा नाम अहिन कै माता । पठइन्हि आई कही होहि वाता

आजु सुन्है माहि दीन्ह अहारा । सुगत यवन कहे पवनकेमारा ॥

तम काञ्च करि फिरि मैं आवौ । सीता कहि सुविप्र सुजायौ ॥
 तब तब यदन पैठिहैतु आई । सत्य कहैतु मोहि जान दे माई ॥
 कवनहुँ जवन देइ नाहि जाना । प्रसविन मोहि कहैतु हनुमाना ॥
 बोजन भरी तेहि यदनु प्रसरा । कपि वनु कौन्है दृगुन विभारा ॥
 भरेहै बोजन मुख तेहि टंगक । तुरत पवनसुत बचिस भयक ॥
 अस अस सुरसा यदनु यदंवा । तसु दैन कपि रूप देखवा ॥
 सब बोजन तेहि आनन कीन्है । आन लख रूप पवनसुत कीन्है ॥
 यदन पड़ैतु पुनि यदोर अवा । मागा विदा ताहि भिन्न नवा ॥
 मोहि सुरन्है जोहि लगि पठवा । बुधि बल माय तोर मैं पवा ॥

टी०-राम काञ्च सब करिहैतु पुनह बल बुद्धि निधान ।

आसिष देइ गढ़ै सो हरिष चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निविचरि एक सिधु महुँ रहै । करि माया नय के खग गहै ॥
 बीध जंघु जे गगन उड़है । जल विखेरि कितहै कै परिछहै ॥
 गहै छहै सक सो न उड़है । एहि विधि सदा गगन चर जाई ॥
 सोहै छल हनुमान कहै कीन्है । तसु कपट करि तुरतहि चोन्है ॥
 ताहि माहि माकतसुत योग । गोरिष पर गपउ मतियोग ॥
 तहौ जाइ देखी वन सोभा । गुंजत चंचरीक मयु लोभा ॥
 नाना तब फल फूल सुहाए । खग मुग बुंद देखि मन भाए ॥
 सैल विषाल देखि एक अग । ता पर जाइ चहैउ भय लागे ॥
 उमान कह्यु करि कै अधिकार । प्रभु प्रताप जो कालहि छाई ॥

गिरि पर चढ़ि लंका देखी । कहि न जाइ आनि दुर्ग विसेयी ॥
 आनि उतंग जलनिधि चढ़ि पास । कनक कोट कर परम प्रकाश ॥
 छं-कनक कोट विविध मनि केव सुंदरपवन धना ।
 चउदह दह सुवट दीयाँ चार पुर बड़ विधि बना ॥
 राज बानि खचर निकर पदचर रथ वस्त्रयनि को मानै ।
 बड़रूप निसिचर ज्यै आविबल सेन वरनव नहि वनै ॥ १ ॥
 बन बना उपवन बाटिका सर केष बाणौ सोहै ॥
 नर नाग सुर राक्षस कन्या रूप मुनि मन मोहै ॥
 कहुँ माल देह विमाल सैल समान आविबल गावै ॥
 नागा अखारेन्ह मिगहि बड़ विधि एक एकन्ह तजौ ॥ २ ॥
 करि जवन भट कोटन्ह विकट वन नगर चहुँ दिस रज्जौ ।
 कहुँ माहेष मानुष धनु खर अज खल निसाचर भजौ ॥
 पहुँछाणि पुलसीदास इन्ह को कथा कछु एक है कहै ।
 रघुवीर सर वीरथ सरीरनिह त्यागि गति पहुँछि सही ॥ ३ ॥
 टी०-पुर रखवारे देखि बड़ कपि मन कीन्ह विचार ।
 आनि लख रूप धरौ निसि नगर करौ पड़सार ॥ ३ ॥
 मरक समान रूप कपि धरी । लंकाहि चलेउ सुगिरि नरदरी ॥
 नाम लंकानी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
 जानैह नहौ मरु सठ मोरा । मोर अहार जहौ लजि चोरा ॥
 मुठिका एक महा कपि हनी । वधिर वमत धरनी दनमनी ॥

विष लघ धरि बचन बुनार । सुनत विभीषन उठि रहै आए
 करि प्रणाम पूछी कुलछाई । विप्र कहै निज कथा बुझाई ॥
 की वृन्ह हरिदासन्ह सहै कोइ । सोरें दृढ्य प्रीति आवि होई ॥
 की वृन्ह राउ दीन अग्रगणी । आपहु मोहि करन बड़भाणी ॥
 दी०-वध द्रुमंभ कही सब राम कथा निज नाम ।

सुनत कुशल जन पुलक मन मगन सुमिरि गुन प्राम ॥ ३ ॥
 सुनहि पवनसुत रहनि देसारी । निमिदलनन्हि नहु जीम विचारी
 जात कबहुँ मोहि जानि अनाया । कहिहहि कथा भागुकुल जाया ॥
 नामर तनु कहुँ लाधन नाहो । प्रीति न पर लयेन मन माहो ॥
 अथ मोहि या भयो द्रुमंभ । विप्र हरे कथा मिलहि मोहि वरा
 " सुवर्ग अग्रयह कीन्ह । लो वृन्ह मोहि दूरु होउ दीन्ह ॥
 विभीषन प्रभु कै रीति । कयहिं वदा वेचक पर प्रीति ॥
 कहै कवन न परम कुलाना । कपि बचल वचहो विविष होना ॥
 मात छेइ जो नाम देसाय । रोहि दिन राहि न मिल अहोय ॥
 दी०-अस सँ अधम सखा सुत मोह पर रघुवीर ।

कोन्ही कथा सुमिरि गुन भरे विजोवन नीर ॥ ८ ॥
 जानवहुँ अथ स्वामि विचारी । फिरिहो व काहे न होहि दुखारी ॥
 एहि विविष कहत राम गुन प्रामा । एवा अनिवाज्य विआमा ॥
 पुनि वध कथा विभीषन कही । कहि विविष जनकसुता रहै रही ॥
 वध द्रुमंभ कही उग्र आवा । देखी बहै जनकी माता ॥

गुह्यं विधीयते सकलं सुगहं । चलेत् प्रवृत्तं विद्यां कदाहं ॥
 रिषे च यथा यथा पुनः वदेत् । यत् अनेकं वीरा हं वदेत् ॥
 विषमं नहि मूढं कदाहं प्रवृत्तं । वदेत् वीरा जितं विजितं ॥
 स त्वं वीरा यदा एकं वीरा । जयति वदेत् यथा यथा ॥

॥-निज परं नयनं विदुः मनसि परं कथयन् वीरा ।

परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥

॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥
 ॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥

॥-आहुतिं सुनिजं वीरां सा परमपरा वीरा ॥ ८ ॥

परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥

॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥

॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥

॥ परमं वीरां सा परमपरा वीरा जगती वीरा ॥ ८ ॥

सो भुज कंठ कि तव आसि धोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
 चंद्रहास हरे मम परिताप । रखपति निरह अनल संजात ॥
 सीतल निशित बहसि भर धारा । कहै सीता हरे मम दुख भारा ॥
 सुनत वचन पुनि मारन धारा । मयतनया कहि नीति बुझावा ॥
 कहैसि सकल निमिचरिन्ह दोलाई । सीताहि बहू विधि जोसहु जाई ॥
 मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ सँ मारनि काहिं कपाना ॥

टी०—भवत गगन दसकंधर इहौ प्रसाविनि इंद्र ।

सीताहि आस देखावहिं धरहिं रूप बहू भद्र ॥ १० ॥

विजटा नाम राज्ञसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥
 सज्जही बोलि सुनएसि सपना । सीताहि सैह करहु हित अपना ॥
 सपनं गानर लंका जगि । जगुवान सेना सब मारी ॥
 चर आकटं गानन दसवीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
 एहिं विधि सो दक्षिण दिक्षि जाई । लंका मनहुँ विभीषन पाई ॥
 नगर पियी खचीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
 पर सपना सँ कहैतु पुकारी । होइहि सत्य गए दिन चारी ॥
 तसु वचन सुनि ते सब डरी । जनकसुता के चरनहि परी ॥

टी०—जहूँ तहूँ गहूँ सकल तब सीता कर मन सोच ।

मास दिवस वीरौ मोहि मारिहि निमिचर पोच ॥ ११ ॥

विजटा सन बोली कर जोरी । मातु विपति संनिनि तँ मोरी ॥
 राजौ देह कर बेगि उपाई । दुखह निरह अत्र गहि सहि जाई ॥

तत्र देवमूर्त निरुक्त चालि गयक । फिरि बैठा मर
 अवनामूर जेहि कथा सुहाई । कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
 जगहि सुनै अवन मन लई । आदिहूँ ते सब कथा सुनाई ॥
 रामचंद्र गुन बरनै लगाना । सुनतहि सीता कर दुख भगाना ॥
 सीता मन विचार कर नाना । मधुर वचन बोलै उ हनुमाना ॥
 जीति को सकइ अजय खुराई । माया ते अवि रति नाई जाई ॥
 चरित चितव मुदरी पहिचानी । देख विषाद हृदय अकुलानी ॥
 तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
 जय असोक अंगार दीन्ह हरेरिष उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

सो—कपि करि हृदय विचार दीन्ह मुद्रिका डारि तब ।

देख परम विरहोक्ति सीता । सो जन कपिहि कल्प सम बीता ॥
 नैन किमल्य अनल समाना । देखे अगनि जनि करहि निदाना ॥
 सुनहि विनय मम विनय असोका । सत्य नाम कर हरे मम सोका ॥
 पावकमय ससि खेत न अगनि । मानहुँ मोहि जानि हृतमानी ॥
 देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥
 कहे सीता विधि भा प्रतिकूल । मिलिहि न पावक मिलिहि न सुल ॥
 निशि न अनल मिलि सुख सुख मारी । अस कहि सो निज भवन विषा ॥
 सुनत वचन पर गहि समझाए । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाए ॥
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को अवन सुल सम यानी ॥
 आनि काठ रचि चिता बनई । माव अनल पुनि देखि लगई ॥

राम दूत मैं मातृ जानकी। सत्य सपथ ककना निधान की॥
 यह सुद्रिका मातृ मैं आनी। दीन्ह राम तुम्ह कहूँ सहिदानी॥
 नर वानरहि संग कहुँ कैसे। कही कथा यह संगति जैसे॥
 टी०—कवि के बचन सद्यो सुनि उपजा मन विस्वास ।

जाना मन कम बचन यह कथासिंधु कर दास ॥ १३ ॥

होजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकवालि बाढ़ी॥
 बूढ़त बिरह जलधि दनुमाना। भयहूँ तार मो कहुँ जलजाना॥
 अथ कहुँ कुसल जाऊँ बलिदारी। अजब सहित सुख भवन खरायी॥
 कोमलचित्त कपाल खराई। कवि केहि हेतु धरी निदुराई॥
 सहेज गानि सेवक सुख दायक। कबहुँक सुरति करत खनयक॥
 नयन मम सीतल तारा। होइहोई निरखि स्वाम मरुँ गारा॥
 बचनु न आव नयन भरे थरी। अहरे नाथ हौँ निपट बिसारी॥
 देखि परम बिरहकुल सीता। बोल कवि मरुँ बचन चिनीता॥
 मातृ कुसल प्रभु अजब समेत। तब देख दृष्टी सुकपा निकेत॥
 जानि जननी मानहुँ जियूँ ऊना। तुम्ह ते प्रभु राम कै दूना॥
 टी०—खुपति कर सहेसु अब सुनि जननी धरि धीर ।

अस कहि कवि गद्गाद भयउ भरे बिबेचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम वियोग तब सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥
 नव तर किसलय मनहुँ कसना। कालनिषा सम निषि ससिमान॥
 कुशल्य विपिन कुंत मन सरिसा। गारिद तपत तेल जनु बरिसा॥

न हित रहे करत तेइ पाया । उरग स्वप्न सम त्रिविध समीपा
 कहैं तैं कह्यु दुख घटि होई । कहि कहैं यह जान न कोई ॥
 तब प्रेम कर मम अक तोरा । जानत प्रिया एक मनु मोरा ॥
 सो मनु सदा रहत तोहि पाहै । जान प्रीति रस एतनेहि माहै ॥
 प्रभु सहेसु सुनत ब्रह्मदेही । मान प्रेम तन मुखि नहि तेही ॥
 कहे कपि हेदयु वीर धर माता । सुमिर राम सेवक सुखदाता ॥
 उर आनहि खणित प्रभुताहै । सुनि मम गचन तजहु कदराहै ॥

श्लोक-निखिचर निकर पतंग सम खणित जान केमाव ।

जानी हेदयु वीर धर करे निखाचर जाव ॥ १५ ॥

जौ खगोर होति मुखि पाहै । करत नहि बिछड़ खराहै ॥

राम जान राख उर जानकी । तम गुरु नहि जाविधान की ॥

अवाहै माहि मैं जाउ लवाहै । प्रभु आगसु नहि राम दोहाहै ॥

कहुँ क दिवस जननी धर धारा । कपिनह सहित अहहहै खगोरा ॥

निखिचर माहि तोहि लै जाहै । तहुँ पुर नारदादि जसु भौहाहै ॥

है सुत कपि सग गुहाहै समाना । जाविधान अति मर वलवाना ॥

मारो हृदय परम सदेह । सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥

कनक भूषणकार सरास । समर भयंकर अतिबल बारा ॥

सोता मन भरोस तज भयक । पुनि लख रूप पवनसुत लयक ॥

श्लोक-सुख माता साक्षात् नहि बल ब्रह्म विमल ।

प्रभु प्रताप तैं गच्छहै खाइ परम लख अल ॥ १६ ॥

कछु पुनि जाई पुकारे प्रभु सकट बल भूषि ॥ १८ ॥
 टी०—कछु मारिष कछु मरुसि कछु मिळयसि धरि धरि ।
 आवत देखि निरुप गहि तज्ज । ताहि निपाति महाधुनि राज्ज ॥
 पुनि पठयउ होहि अञ्जकुमार । चला संग ले सुभट अणार ॥
 सब राजनीचर कपि संधार । गए पुकारत कछु अथमार ॥
 सुनि रावन पठए भट नाना । तिनहहि देखि राज्जउ हनुमाना ॥
 जाएषि फल अरु निरुप उणारे । रञ्जक मरि मरि माहि डारे ॥
 नाथ एक आवा कपि मारी । होहि असोक गटिका उजारी ॥
 रहे तहाँ बहू भट रखवारे । कछु मारिष कछु जाई पुकारे ॥
 चलेउ नाइ सिद्ध पहुँउ जागा । फल जाएषि तब तौरु लग्गा ॥
 रघुपति चरन हरेदू धरि ताल मधुर फल खाई ॥ १७ ॥

टी०—देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानका जाई ।

तिन्ह कर भय माता मोहि नाहो । जो गुन्ह सुख मानहु मन माहो ॥
 सुत सुत करहि विपिन रखवारी । परम सुभट राजनीचर मारी ॥
 सुनहु माहु मोहि अतिथय भूषा । जगि देखि सुंदर फल रुखा ॥
 अथ केतकल्य मयउ मै माता । आसिष तव अमोघ निरुपाता ॥
 वार वार नाएषि पद सीसा । बोल बचन जोरि कर कीसा ॥
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भय प्रेम भगन हनुमाना ॥
 अजर अमर गुननिधि सुत होई । करहुँ बहूत रघुनाथक छोई ॥
 आसिष दीन्ह रामप्रिय जाना । होई ताल बल सील निधाना ॥
 मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥

सुत बध सुखि कीन्ह प्रीति उपजा हृदय विषाद ॥ २० ॥

दो-कपिहि बिजोकि दसानन बिहसा कहि दुखी ॥

देखि प्रताप न कपि मन सका । जिमि अहिमान महुँ पाकई असुख
कर जोरुँ सुर दिखिष बिनीता । मुकुटि बिजोकर सकल समीता
दसमुख समा दीखि कपि जाई । कहि न जाई कछु अति प्रसुताई
कपि बंधन सुनि निरिचर थाए । कौतिक लागि समा सब आए ॥
तासु दूत कि बंध तब आवा । प्रभु कारज लागि कपिहि बंधावा
जासु नाम जापि सुनहु मयानी । भव बंधन काटहि नर यानी ॥
तेहि देखी कपि मुकुटिल मयक । नामपास बांधिसि लै मयक ॥
ब्रह्मवान कपि कहूँ तेहि मारा । परतिहुँ मर कटकु संवारा ॥
जौ न ब्रह्मसर मानहुँ महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

दो-ब्रह्म अख तेहिँ सौधा कपि मन कीन्ह विचार ।

उठि बहोरि कीन्हिष बहूँ माया । जीति न जाई प्रमंजन जाया ॥
मुठिका मारि चढ़ा तब जाई । ताहि एक छन मुकुटा आई ॥
तिन्हिहि निपाति ताहि सन राजा । निरु जुगल मानहुँ राजराजा ॥
रहे महामत ताके संगी । गहि गहि कपि मरुई निज अंगी ॥
आति बिसाल तब एक उपारा । विरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
कपि देखा दाहन भट आवा । कटकटाई गजौ अरु थावा ॥
चला इंद्रजित अगुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा कोधा ॥
मारिस जानि सुत बांधिस ताही । देखिअ कपिहि कहौ कर आही ॥
सुनि सुत बध लंकेस रिखाना । पउएषि मेघनाद बलवाना ॥

* सुन्दरकाण्ड *

कह लंकेस कवन तैं कीसा । कहि कै बल धालिहि नन खीसा ॥
 की धौं शवन सुजेहि नहि मोही । देखउँ अति असंक मठ बोही ॥
 मारे निधिवर कहि अपराधा । कहूँ सर तोहि न मान कह बाधा ॥
 सुनु रावन प्रधांड निकषा । पाइ जासु बल निरचति माया ॥
 जाकै बल निरन्धि हरि कैसा । पावत सुजत हरत दसवीसा ॥
 जा बल सीस धरत सहस्रानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
 धरइ जो विविध देह सुर जाल । तुम्ह से सठन्ह सिखावतु दाल ॥
 हर कोदंड कठिन जेहि भंजा । तेहि समेत नृप दल मद भंजा ॥
 हर दूधन निधिसा अक बाली । बध सकल अवलित बलसाली ॥

दो०—जाके बल लवलेस तैं जितेहुँ चराचर झारि ।
 तसु दैव मैं जा करि हेरि आनेहुँ प्रिय नारि ॥ २१ ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहस्रगहूँ सन परी लराई ॥
 समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कवि बचन विहसि विहसवा ॥
 लपट फल प्रभु लगानी भूखा । कपि सुभाव ते तोरेहुँ लखा ॥
 सब कै देह परम प्रिय स्वामी । मारहि मोहि कुमारग गामी ॥
 जिनह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बांधेऊँ तनय तुम्हारे ॥
 मोहि न कह्यु बांधे कह लज्जा । कीन्ह चहैऊँ निज प्रभु कर काजा ॥
 विनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहुँ मान तजि मोर सिखानन ॥
 देखहुँ तुम्ह निज कुलहि विचारी । अस तजि भजहुँ भगत भयहारी ॥

नाइ सोस करि विनय अर्हता । नीति विरोध न मारिअ दूता ॥
 सुगत निराचार मारन धार । सचिवन्ह सहित विभीषन आए
 सुनि कपि बचन अर्हत विरसिआना । बेला न देरई मूर्ख कर प्राना ॥
 उलटा दोड़हि कहे देउमाना । मतिअस तोर प्रगट सैं जाना ॥
 मर्यु निकट आई खल दोही । लोरोस अयम सिखवत मोही ॥
 बोलि विहरिस महे अभिमानी । मिलइ हमहि कपि गुर बड़ यानी
 जदपि कही कपि अति हित जानी । मगति विवेक विरति नय सानी ॥
 भजई राम रघुनाथक केषा सिंधु अरावान ॥ २३ ॥

दो०—मोहिमूल बहू मूल प्रद त्यागई तम अभिमान ।

संकर सहस विजु अज दोही । सकहि न राखि राम कर दोही ॥
 सुनु दरसकंठ कहूँ एन रोपी । विमुख राम जाला नहि कोपी ॥
 सजल मूल जिनह सतिनह नोही । मरवि गारु पुनि तबहि सुखाही ॥
 राम विमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई विनु पाई ॥
 बसन दोन नहि सोह सुरारी । सब भूषन भूषित जर नारी ॥
 राम नाम विजु निरा न सोहो । देखि विचारि त्यागि मद मोहो ॥
 विधि पुलकि जसु विमल मयका । रोहि ससि महुँ जानि होई कलंका ॥
 राम चरन पंकज उर धरई । लंका अचल राज गुनह करई ॥
 गहूँ सरन प्रभु राखिहैं तब अपराध विचारि ॥ २४ ॥

दो०—प्रगतपाल रघुनाथक ककेना सिंधु खराति ।

राखे बयक कबहुँ नहि कीजै । मारे कहे जानकी दीजै ।

आन दंड कछु करिअ गोसाईं । सजदीं कही मंत्र मल भाई ॥
 सुनत विदेसि बोल दसकंधर । अंग भांग करि पठइअ वंदर ॥

दी०—कपि के समाना पूँछ पर सवाहि कहतु समुझाई ।

तेज बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु जगाई ॥ २४ ॥

पूँछदीन जानर तहैं जाइहैं । तब सठ निज भायाहि लइ आइहैं
 जिन्ह के कीन्हिहैंसि बहूत बड़ाई । देखतु मैं जिन्ह के प्रभुताई ॥
 बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहेय भारद मैं जाना ॥
 जाबिधान सुनि रावन बचना । जगो रसैं भूँद सोइ रचना ॥
 रही न नगर बसन पैत लेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
 कौतिक कहूँ आए पुरवासी । मारहि चरन कारहि बहूँ दोसी ॥
 बाजाहिं होल देहिं सग तारी । नगर करि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
 एक जगत देहिब हनुमंता । मयउ परम लखरूप तुरा ॥
 निबुकि चहैउ कपि कनक अटारी । भइ समीत निषाचर नारी ॥

दी०—हरि प्रीति देहि अवसर चले मरत उतवास ।

अदहस कसि गजा कपि बाँधि जग अकास ॥ २५ ॥
 देह विखल परम देरआई । मंदिर ते मंदिर चहूँ धाई ॥
 जइ नगर भा लोभा बिहोला । झपट लपट बहूँ कोटि कराला ॥
 ताल मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर की हमहि उबार ॥
 हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरै सुर कोई ॥
 सावि अवस्था कर फछ ऐसा । जइ नगर अनाथ कर जैसा ॥

मया नामक निमिष एक माहो । एक विभीषन कर गृह नहो ॥
 कर दूत अनल जेहि सिखाजा । जग न सो तेहि कारन निराजा ॥
 पलटि पलटि लंका सब जगो । कौटि परा पुनि सिधु मझगो ॥
 १०-पूछ बुझाई खोइ अम धरि लख रूप बहोसि ।

जनकसुता कौ आगो ठाढ़ भयव कर जोसि ॥ २६ ॥
 गाह माहि दीजे कछु चीन्हा । जैसै खगनायक माहि दीन्हा ॥
 बुझामनि उतारि तब दयक । हरष समेत पवनसुत लयक ॥
 कहै तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरेनकामा ॥
 निन दयाल बिचिहँ संभारी । हरहु नाथ मम सकट भारी ॥
 तात सकसित कथा सुनाएहु । जान प्रताप प्रभुहि समझाएहु ॥
 सास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि माहि जिअत नहि पावा ॥
 कहै कपि केहि बिधि राखौ प्राना । गुनहँ तात कहैत अज जाना ॥
 गाहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहुँ सोइ दिवु सो राती ॥
 १०-जनकसुतहि समझाई करि बहँ बिधि धीरु दीन्हा ।

वरन कमल सिर नइ कपि गवव राम पहि कोन्ह ॥ २७ ॥
 खलत महाधुनि गजौस भारी । गम खवाहँ सुनि निमिचर नारी ॥
 पावि सिधु पाहि पारहि आवा । सबद किळिकिळा कपिन्ह सुनाव ॥
 रवे सब बिजोकि दनुमाना । नरेन जन्म कपिन्ह तज जाना ॥
 मुख प्रसन्न तन तेज निराजा । कीन्हैसि रामचंद्र कर काजा ॥
 मले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि भारी ॥

चले हरषि खनायक पास। पूँछत कहत नवल इतिहास ॥
तब मधुवन भीतर सब आए। अंगद समत मधु फल खाए ॥
रखवारे जग भरजन लगे। मुहि प्रहर हनत सब भोगे ॥
दो०—जाइ पुराते ते सब बन उजार जुवराज ।

सुनि सुधीव हरष कवि आए प्रभु काज ॥ २८ ॥
जौ न होति सीता सुधि पाई। मधुवन के फल सकाहे कि खार्ह
एहि निषम निचार कर राजा। आइ गए कवि सहित समाजा ॥
आइ सगनि नावा पद सीसा। मिलेउ सगनि अति प्रेम कपसी
पूँछी कुसल कुसल पद देखी। राम कपूँ मा काख निसेषी ॥
नाथ काख कीन्हैउ हनुमान। राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुधीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित खपति एहि चलेउ
राम कपिन्ह जग आवत देखी। किपूँ काख मन हरष निसेषा ॥
फटिक सिखा बैसे हौ मारि। परे सकल कपि चरनहि जाइ ॥
दो०—भीति सहित सब भेटे खपति करन पुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुन खुराया। जा पर नाथ कहइ पुन्ह दया ॥
ताहि सदा सुम कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिजई गुन समार। तासु सुजसु बौलोक उजागर ॥
प्रभु की कृपा भयउ सब काख। जन्म हेमार सुफल मा आख ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जौ करनी। सबसहै सुख न जाइ सो बरनी ॥

कैतिक यात प्रभु जातिवान की। रिपुहि जीति आनिगी जानकी
 कहे देवमत विपति प्रभु सोई। जय तव सुमिरन भजन न होई
 वचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुँ ब्रह्मविपति कि लोही
 सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयन। भरी आए जल राजिव नयन॥
 वीरि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३९ ॥

श्री०-निमिष निमिष करेनानिधि जाहिँ कलय सम वीति ।

सीता कै अति विपति विषाख। विनहिँ कहे भलि दीनदयाल॥
 नयन सवाहे जछ निज हित लगि। जूँ न पाव देह बिरहगि ॥
 फिरहे अगिनि तज तैल समीर। स्वास जरइ छन माहिँ सीर ॥
 नाथ सो नयनहिँ की अपराधा। निभरत प्रान करहिँ दृढि याथा॥
 अवगुन एक मोर भूँ मान। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयान॥
 मन कम वचन चरन अनुरगि। कहिँ अपराध नाथ होँ लगि ॥
 अनुज समेत गहैहुँ प्रभु चरन। दीन बंधु प्रानतरति हरन॥
 नाथ जगल लोचन भरी वारी। वचन कहे कछु जनककुमारी॥
 बलत मोहि चूड़ाभनि दीन्है। खिपति दृढ़द्यूँ लइ सोइ लीन्है
 लोचन निज पद जंजित जाहिँ प्रान कहिँ बाट ॥ ३० ॥

श्री०-नाम पादक द्विवस निधिस दयान पुनहर कपाट ।

कहैहुँ तार कहिँ भूति जानकी। रहति करति रञ्ज स्वयान की
 सुनत कपानिधि मन अति भाए। पुनि देवमान हरषि हियँ लाए॥
 पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत खिपतिहिँ सुभाए॥

सुख कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि वनधारी
 प्रति उपकार करौ का तोरा । मनमुख होइ न सकत मन मोरा
 सुख सुख तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउं करि निचार मन माहीं ॥
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरजाता । लोचन नीर पुलक अति गाता
 टी०—सुनि प्रभु वचन बिबेकि मुख गाल हरषि हेनुमंत ।

चरन परेउ प्रभाकल गाहि गाहि भावत ॥ ३२ ॥

बार बार प्रभु चहै उठावा । प्रेम मान तेहि उठव न भावा ॥
 प्रभु कर पंकज कपि के सीमा । सुमिरि सो दसा मान गौरा ॥
 सावधान मन करि पुनि संकर । लगे कहेन कथा अति सुंदर ॥
 कपि उठाइ प्रभु हेतवूँ लगाय । कर गाहि परम निकट बैठाय ॥
 कह्य कपि रावन पालित लंका । कहि विधि दहेहुँ दूग अति बंका
 प्रभु प्रसन्न जाना हेनुमान । बोल वचन विगत अभिमान ॥
 साक्षात्प्रा के गहिं मनसहि । साखा ते साखा पर जाई ॥
 नाथि सिंधु होटकपुर जारा । निविचर मान गधि विपिन उजारा
 सो सब तब प्रताप खरिवाई । नाथ न कह्य मोहि प्रसुताई ॥
 टी०—ता कह्य प्रभु कह्य अगम नाहिं जा पर वृंह अवकल ।

तब प्रभाव बड़वानलहिं जारि सकइ लख लख ॥ ३३ ॥
 नाथ भगति आति सुखदायी । देहुँ कथा करि अनपयनी ॥
 सुनि प्रभु परम सरल कपि गानी । एवमख तब कहेउ भवानी ॥
 उभा राम सुभाउ जहिं जाना । ताहिं भजव लीज भाव न आना ॥

कटकटहिं मकट मकट मट बटु कोटि कोटिन्ह धावहि ।

जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहि ॥ ११ ॥

सहि सक न मार उदार अहिपति वार वारहिं सोहई ।

गह दसन पुलि पुलि कमठ पट कठोर सो किमि सोहई ॥

रघुवीर दीश्वर प्रमान प्रस्थिति जानि परम सुहवनी ।

जय कमठ खपूर सपराज सो लिखत अविचल पावनी ॥ १२ ॥

दो०-एहि विधि आई केषानिधि उतर समार वीर ।

जहूँ बहूँ लगे खान फल भोजि विपुल कपि वीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निमन्त्र रदहिं ससंका । जय ते जाहि गणउ कपि लंका ॥

निज निज गहूँ सब करहिं निचारा । नहिं निमन्त्र कुल कर उचारा

जामु दैव बल गरि न जाई । तेहि आहुँ पुर कवन भोजई ॥

रौतन्ह सन सुनि पुरजन वानी । मंदोदरी अधिक् अकुलानी ॥

रदहिं जाहि कर पति पग लगानी । बोलि बचन नीति रस पावनी ॥

कंठ करम हरि सन परिहरई । मार कदा आति हित हियुं धरई ॥

समुझत जासु दैव कइ करनी । खवाहैं गम रचनीचर धरनी ॥

वासि नारि निज सन्निव बोलइ । पठवहु कंठ जो चहई भोजइ ॥

तब कुल कमल निपन दुखदाई । सीता सीत निभा सम धाई ॥

सुनहु नाथ सीता विनु दीन्ह । हित न उद्वेग सुं अज कीन्ह ॥

दो०-राम बान अहि गन ससिष निकर निमन्त्र भेक ।

जय ललि प्रसन्न न तब ललि जलसु करहु वलि डेक ॥ ३६ ॥

युन समर नागर नर लोक । अलख लोक नर

बौद्ध भवन एक पति होई । भूतद्वैत विद्वत् ॥

सो परनाति लिखत गोपनी । वनत वनति नर नरि ॥

जो आपन चाहे कल्याण । सुख सुख सुख सुख सुख नाना ॥

जो कपाल पूछिहो मोहि जात । मति अनुत्तर कहै दिन जात ॥

पुनि सिद्ध नाई वैठ निज आसन । बोल बचन पाई अनुत्तर ॥

अवसर जानि निमीषण आवा । आता चरन धीसु होई जावा ॥

सोई रावन कहूँ नगी सहई । अत्यन्त करिहो सुनाई सुनाई ॥

राज धर्म वन वीनि कर होई बेगोही नास ॥ ३० ॥

३०-सचिव वैद्य गुर वीनि जो प्रिय बोलहि मय आस ।

जिहो सुख सुख तब अम नाहो । नर नगर कोहि लेखे मारी ॥

बुद्धि सचिव उचित मत कहै । ते सब हूँ सब करि रहै ॥

बैठत समीपवर्ति अति पाई । सिधु पार सेना सब आई ॥

मंदोदरी हृदय कर चिता । मयउ कंत पर विधि विपरीत ॥

अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ समीपवर्ति अधिकारी ॥

कंपाई लोक जगदीश । तासु गति समीपवर्ति होषा ॥

जो आवई मकट कटकाई । जिअहि बिचारे निषिद्ध लाई ॥

समय सुमाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ मय मन अति काचा ॥

अवन सुनी सठ ता करि बानी । बिहसा जात बिदित अपिमाणी ॥

४५७ * सुन्दरकाण्ड *

टी०—काम कोय मरुं लोभ सब बाध नरक के पथ ।

सब परिहरि रघुवीरहि भजहुं भजहिं जहि संत ॥ ३८ ॥
 वात राम नहिं नर भूपाज । सुवनेसर कालहुं कर काज ॥
 बहो अनामय राज भावता । व्यापक अजित अनदि अनता ॥
 गो दिज धनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मान्य तनुधारी ॥
 जन रंजन भजन खल भाला । वेद धर्म रच्छक सुत आला ॥
 ताहि नयक लजि नाइअ माया । प्रनतरति भजन खिनाया ॥
 देहुं नाथ प्रभु कहूँ बौदेही । भजहुं राम विजु हेतु सनेही ॥
 सरन गपूँ प्रभु राहुं न त्यागा । निख द्रोह केत अप जहिं लगा ॥
 जासु नाम नथ तप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझि निधुं रावन
 टी०—बार बार पद लगाउ विनय करउ दससीस ।
 परिहरि मान मोह मरुं भजहुं कोसलाधीस ॥ ३९ (क) ॥
 सुनि पुलसि निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
 उरत सो भू प्रभु सन कहौ पाइ सुअवसर वात ॥ ३९ (ख) ॥
 मात्सवंत अति सचिव स्याता । तसि नचन सुनि अति सुख माना
 वात अजुज तव नीतिनिर्भूषण । सो उर धरहुं जो कहत निभीषण ॥
 रिपु उत्तराय कहत सठ दोक । धरि न करहुं डेहो डेह कोक ॥
 मात्सवंत यह गणउ बहोरी । कहइ निभीषण पुनि कर जोरी ॥
 सुमति कुमति सब कैं उर रहौ । नाथ पुरान निगम अस कहौ ॥
 जहौं सुमति तहैं संपति नागा । जहौं कुमति तहैं विपति निदागा ॥

तत्र उर ऊर्मसि बभौ निपरीता । हित अनहित मानहं रिपु प्रीता ॥
कालराति निमिषर ऊल क्री । वेदि सीता पर प्रीति धनेयी ॥

टी०-तत्र चरन गहि मानहुँ राखहुँ मोर दुखार ।

सीता देहुँ राम कहूँ अहित न होइ दुखार ॥ ४० ॥

बुध पुरान श्रुति संमत जानी । कही विभीषन नीति बखानी ॥

सुनत दसनन उठारुँ रिसाहुँ । खल बोहि निकट मृत्यु अब आहुँ

जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढं बोहि भाना ॥

कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं ॥

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिछ जाइ निन्हि कहूँ नीती

अस कहि कीन्हिसि चरन प्रदारा । अनेज गहे पद गराहिं गारा ॥

उमा संत कहूँ इहइं वडाहुँ । मंद करत जो करइ भलाहुँ ॥

गुह पिपु सरिस भलेहि मोहि भारा । राम भजै हित नाथ गुहारा ॥

सचिव संग लै नय पथ रायक । सगहि सुनइ कहत अस मयक ॥

टी०-राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालवस बोधि ।

मैं रघुवीर सरन अब जाहुँ देहुँ जनि खोधि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला विभीषन जगहीं । आगुहोन भए सब लगहीं ॥

साधु अवस्था गुन भवानी । कर कल्याण अखिल कै देनी ॥

रावन जगहि विभीषन त्यागा । भयउ विभव विनु तजहि अभाग

चलेउ हेरिषि खिनमक पाहीं । करत मनोरथ यह मन माहीं ॥

देहिबहुँ जाइ चरन जलजाता । अवन मूर्ख सेवक सुखदाता ॥

जे पद परसि तरी रिपिनरी । दंडक कानन पावनकारी ॥
 जे पद जनकसुता उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥
 हेर उर सर सर सरोज पद जेई । अहो माय मै देखिहैउं तेई ॥

टी०-जिनह पायन्ह के पादुकिन्ह भरि रहै मन लाहै ।

जे पद आजु बिछोकिहैउं हेन्ह नयननिहै अब जाहै ॥ ४२ ॥

एहि बिधि करत सधेम विचारा । आयउ सपदि सिधु एहि परा ॥
 कपन्ह रिमपिपु आगत देखी । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥
 ताहि राखि कपीस एहि आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥
 कह सुग्रीव सुनई खुराई । आवा मिलन दसनन भई ॥
 कह प्रभु सखा ब्रह्मिणै काश । कहइ कपीस सुनई नरनाश ॥

जानि न जाइ निराचर मया । कामरूप कहि करन आया ॥
 भेद हेमार जेन सठ आवा । राखिअ ग्रीषु मोहि अस मया ॥
 सखा नीति तुम्ह नीति विचारी । मम पन सरनागत भयहारी ॥
 सुनि प्रभु नचन हेरु मना । सरनागत गच्छल भगवाना ॥

टी०-सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहिल अनुमानि ।

जे नर पावैर पापमय निन्हहि बिछोकर होनि ॥ ४३ ॥

कोटि विष बध लगहि जाई । आएँ सरन तजऊं नहिं ताई ॥
 सनमुख हेइ जीव मोहि जगदी । जन्म कोटि अब नासहिं तजौ ॥
 पापगत कर सहज सुभाऊ । भजतु मीर तेहि भवन काऊ ॥
 जौ पै दुष्टदृष्ट्य सोइ होई । मीर सनमुख आव कि सोई ॥

कहिं लंकेस साहेत परिवासा । कुसल कुठार वास गुहारा ॥
 अज सहेत मिलिहि वावैठारि । बोले बचन भगत भगवैठारि ॥
 दौन बचन सुनि प्रस मन भग । सुज निमल गहि हृदय लभावा ॥
 अस कहि करत दंडवत देख । गुरत उठे प्रस हेरष निसेष ॥
 गहि गहि आरति हेरन सरन सुखद रघुवीर ॥ ४५ ॥

दो०—अवन सुजसु सुनि अपठ प्रस भजन भव भौर ।
 सहज पापप्रिय तामस देह । जया उलंकेहि तम पर नेह ॥
 नाथ दसनन कर मैं आता । निषेचर बंस जनम सुरजाता ॥
 नयन नीर पुलकित आति गाता । मन धरि धौर कही महुं गाता ॥
 सिष कंध आपत उर सोहा । आनन आभत मदन मन मोहा ॥
 भुज प्रलंब कंजवन लोचन । स्नामल गात प्रनत भय मोचन ॥
 बहुरि राम छवि धाम बिलोकी । रहैउ ठट्ठिक एकटक पल रोकी ॥
 दूरिहि ते देखे हो आता । नयनानंद दान के दाना ॥
 सादर तेहि आग करि गानर । चले जहाँ रघुपति कवनकर ॥
 जय कृपाल कहि कवि चले आगद हन सभत ॥ ४४ ॥

दो०—उभय भाँति तेहि आनद हँसि कह कृपानिकेत ।
 जो सभति आवा सरनाई । रविहनुं ताहि प्रान की नाई ॥
 जग महुं सखा निषाचर जे । लछिमन हनइ निमिष महुं तेरे ॥
 भद लेन पठवा दसवीसा । तजहुं न कह्यु भय होनि कपुसा ॥
 निमूल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भवा ॥

अथ कै ममता ताना गदगो । मम पद मनहि गौष गरि डोरी ॥
 ममदरसी डेखी कहु नारो । हरष सोक मय नहि मन मारो ॥
 अथ सजन मम उर गव कैरौ । लोभाई दूदूँ बसइ धनु जैरौ ॥
 गुरइ सारिखे संत प्रिय मोरौ । परउ देह नहि आन निहोरौ ॥

टी०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दुई नेम ।

ते नर प्रान समान मम चिन्ह के द्विज पद प्रेम ॥ ४८ ॥

सुन लंकेश सकल गुन तोरे । तारौ गुनइ आसिष्य प्रिय मोरे ॥
 राम बचन सुनि जानर जंघा । सकल कहैरे जय केषा गरुया ॥
 सुनत प्रियगुन प्रभु कै जानी । नहि अघात अवनाम्यत जानी ॥
 पद अंजलि गहि गरहि गारा । दूदूँ समान न प्रभु अपारा ॥
 सुनई देव सनराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
 उर कहु प्रथम वासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो गही ॥
 अथ केषाल निज भगति पावनी । देई सदा सिव मन भावनी ॥
 एवमस्तु कहि प्रभु रनधारा । मागा वरत सिंधु कर नोरा ॥
 जदहि सखा तब डेखी नारो । मोर दरसु अमोघ जग मारो ॥
 अथ कहि राम तिलक वेदि सारा । सुमन बौध नम भई अपारा ॥

टी०—रावन कोय अनल निज स्वामि समीर प्रचंड ।

वरत विभीषणु राखेउ दीन्हैउ राज अखंड ॥ ४९ (क) ॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिपूँ दंस माय ।

सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रखिनाथ ॥ ४९ (ख) ॥

प्रभु गुन हृदय सगहहि सरनागत पर नैह ॥ ५९ ॥

॥ ५९ ॥ सकल चरित लिखे देखे धरै कपट कपि देखे ।

॥ ५९ ॥ चरित विभीषण प्रभु पाहै आए । पाछे रावन दूत पठाए ॥

॥ ५९ ॥ प्रथम प्रनाम कौन देखे सिध नहि । नहि पुनि तट दूत उपाहै ॥

॥ ५९ ॥ प्रथम कहि प्रभु अजहहि समझाहै । सिध समीप आए खुराहै ॥

॥ ५९ ॥ प्रथम विदेहि गेले खुराहा । ऐसहि कर धरहु मन धारि ॥

॥ ५९ ॥ कपट मन कहूँ एक अघार । दैव दैव आलसी प्रकाश ॥

॥ ५९ ॥ प्रथम दैव कर कवन भरोसा । सीध सिध करिअ मन रोसा ॥

॥ ५९ ॥ न पढ़े लखि मन मन भाग । राम बचन सुनि आति दुख पाव ॥

॥ ५९ ॥ प्रथम कहि गुह नौक उपाहै । करिअ दैव नौ दौह सहाहै ॥

॥ ५९ ॥ प्रिय प्रयास सागर तरहि सकल भाखि कपि धारि ॥ ५० ॥

॥ ५० ॥ प्रभु गुहारे कुलपुत्र जलधि कहिहि उपाय विचारि ।

॥ ५० ॥ प्रथम तटपि नौक आनि गार्ह । विनय करिअ सागर मन गार्ह ॥

॥ ५० ॥ कहि लंकेश सुनहु खनयक । कौटि सिध सीपक तव सपक ॥

॥ ५० ॥ कुल मकर उरग क्षम जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाती ॥

॥ ५० ॥ प्रभु कपीस लंकपाति धारि । कहि विधि तरिअ जलधि गंधारि ॥

॥ ५० ॥ कहि बचन नौक प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल बालक ॥

॥ ५० ॥ प्रभु सवैया सव उर बासी । सवैया सब रहित उदासी ॥

॥ ५० ॥ नैन जन जानि लहि अपनारा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भाव ॥

॥ ५० ॥ प्रभु जहि भजहि न आना । ते नर पसु विनु पूछि विधाना ॥

कहेसि न रिपु दल लेल बल बहेत चरित चित तोर ॥ ५३ ॥

दो०-की भई भूट कि फिरि गए अवन सुजसि सुनि सोर ।

कहु तपसिन्ह कै बात बहेरी । जिन्ह के हरेयु नाम अति मोरी ।
जिन्ह के जीवन कर रखवारा । भयउ महुल चित सिधु विचारा ।
पुनि कहु माछ कोस कटकई । कठिन काल प्रेरित चलि आई ।
करत राज लंका सह जगती । होइहि जव कर कीट अमानि ।
पुनि कहु खबरि विभीषन को । जाहि मरु आई अति नेरी ॥
विहसि दसानन पूछी बात । कहेसि न सुक आपनि कुसलता ॥
कहेत राम जसु लंका आए । रावन चरन सीस लिन्ह नाए ॥
उरत गइ लछिमन पद माया । चले दूर परनत गुन गाथा ॥
सीता देइ मिलइ न त आवा कछि उम्हार ॥ ५२ ॥

दो०-कहेइ मुखार भूँट सन सम सदेसु उदार ।

रावन कर दीजइ यह पाती । लछिमन बचन गचु कुलधारी ॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लाना हैसि उरत छोड़ाए ॥
जो हेमार हरे नामा काना । तेहि कोसलधोस कै आना ॥
बहु प्रकार मारन कपि जाने । दीन पुकारत तदपि न ज्ञाने ॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बौध कटक चहु पास फिराए ॥
कहे सुग्रीव सुनइ सब वानर । अंग भाग करि पठवहु निषिचर ॥
रिपु के दूर कपिन्ह लग जाने । सकल बौध कपीस पहिँ आने ॥
प्राट बखानहि राम सुभाऊ । आति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥

* सिन्दूरकाण्ड *

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ५४ ॥ ॥ ५४ ॥

ए कपि सव सुग्रीव समान । इन सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
राम कपूँ अतुलित बल तिन्होँ । तेन समान ब्रैलोकहि गनहोँ ॥
अस मँ सुना अवन दसकंधर । पदुम अठारह ज्येष ऋदर ॥
नाथ कटक महुँ सो कपि गहोँ । जो न गुनहहि जीवै न मारोँ ॥
परम कोष मीजाहि सव दाय । आवसुँ पै न देहि खिनाया ॥
सोषहि सिंधु सहित क्षय व्याला । पुरहि न त मरि ऊपर बिसाला ॥
महि गढ़ मिलवाहि दससीसा । ऐसेइ गजम, कहहि सव कीसा ॥
गजहि गजहि सहेज असंका । मानहुँ गसन चहत रहि लंका ॥
दो०—सहेज सूर कपि भाछि सब पुनि सिंहर पर गम ।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संगाम ॥ ५५ ॥

तम तेज बल श्रुति श्रुत्युत्तमं । सप्त सप्त सप्त सप्तकर्म न गतं ॥

एक सप्त एक सौष्टि सप्त सप्त । तत्र आत्माहं पूजित नय नगर ॥

आदि बचनं सुनि सप्त सप्त । मागत पश्य कथा मन भाति ॥

सुनि बचनं विदुषा दससुषा । ज्ञां श्रुति मति सप्त सप्त कौशा

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

सप्त सप्त सप्त सप्त । सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त सप्त

जनकसुता रघुनाथहि दीजे। एतना कहा भरे प्रभु कीजे॥
 जय तैहि कहा देन ब्रैदेही। चरन प्रहर कीन्ह सठ वैही॥
 नाइ चरन सिक चला सो तहौ। कथा सिंधु रघुनाथक जहौ॥
 करि प्रताप निज कथा सुनाई। राम कथा आपनि गति पाई॥
 रिपु अगस्ति की साप भवानी। राखस भयउ रहौ मुनि ग्यानी॥
 ब्रंदि राम पद पारहिं बारा। मुनिनिज आश्रम कहूँ पगु धारा॥

टी०-विनय न मानत जलधि जइ गपु जीनि दिन बीति ।

बोले राम सकीप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लछिमन गान सरासन आन। सोपौ गारिधि बिसिख कसान्॥

सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती। सहेज कंपन सन सुंदर नीती॥

समता रत सन ग्यान कहेनी। अति लोभी सन निरति बखानी॥

कोधिहि सम कागिमाहि दैरे कथा। ऊसर बीज बहूँ फल जया॥

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। पढ़े मत लछिमन के मन भावा॥

संधानेउ प्रभु बिसिख करावा। उठी उदधि उर अंतर ब्यावा॥

मकर उरग झप गान अकुलाने। जराव जंवे जलनिधि जग जाने॥

कनक थार भरी मीन गान नागा। विष रूप आपउ तलि माना॥

टी०-काटेहि पढ़े कदरी फरइ कीटि जवन कोउ सोच ।

विनय न मान खोस सिनु डाटेहि पढ़े नव नीच ॥५८॥

समय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। लुमई नाथ सन अवगिन भेरे॥

गान समीर अनल जल धरनी। इन्है कहै नाथ सहेज जइ करनी॥

तव प्रिये मायाँ उपजाए। सहि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
 प्रभु आपसु जेहि कहूँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहै सुख लहई ॥
 प्रभु भल कीन्ह सोहि सिख दीन्है। मरजादा पुनि गुहरी कीन्है ॥
 दौल गवरूँ सँद पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
 प्रभु प्रताप मैं जान सुखाई। उतरिहि कटक न सोरि बड़ाई ॥
 प्रभु अग्या अपुल श्रुति गाई। करौ सो बेग जो गुहरी सोहाई ॥

टी०—सुनत विनीत बचन अति कह कृपाल सुसुकाई ।

जेहि बिधि उतरै कपि कटक बात सो कहई उपाई ॥५९॥

नाथ नील नल कपि द्यौ मई। लरिकारुँ रिपि आसिष पाई ॥
 तिनहँ के परस किएँ निरि मरे। तरिदहिँ जलधि प्रताप गुहरे ॥
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिदहुँ बल अनुमान सहाई ॥
 एहिँ विधि नाथ प्याधि बूधाईअ। जेहिँ यहँ सुजसु लोक तिहँ गाईअ
 एहिँ सर मम उत्तर तट बारी। देतहुँ नाथ खल नर अथ रासी ॥
 सुनि कृपाल समार मन पीरा। गुतराई द्यौ राम रनधीरा ॥
 देखि राम बल पौकप मारी। हरिष प्यानिधि मयउ सुखारी ॥
 सकल चरित कहि प्रभुहिँ सुनवा। चरन बंदि पाथीधि सिधवा ॥

छं०—निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यहँ मत मायक ।

यहँ चरित कलि मलहर जयमालि दंगस गुलसी मायक ॥

सुख भवन संसय समन दंगन विषाद रघुपति गुन गाना ।

तलि सकल आस भरोस गावहिँ सिनहिँ संतत सह मगाना ॥



(የዘወትር መግለጫ)

[illegible]

உள்ளுயிர்நிகழ்ச்சிகளையுள்ள உயிர்நிகழ்ச்சிகளையுள்ள

ਮਾਨਵਰੀ ਸੁਭਾਵ, ਸਮਾਜਿਕਤਾ

॥ ६० ॥

॥ मा भव कदापि कदाचिदपि ॥

*** ዘይዘህጋዊዘ ***



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीगणेशाय नमः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



(सुन्दरकाण्ड समाप्त)

पञ्चमः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासहिते सकलकालिकलक्षणविशेषे

माधवपरायण, चैतन्यसर्व विद्या

सादर सुनहिं हे नरहिं भव सिद्धि विना ब्रजगण ॥ ६० ॥

श्री-सकल सुभाषित दायक रघुनाथक गुण गात ।

* रामचरितमानस *

४७०



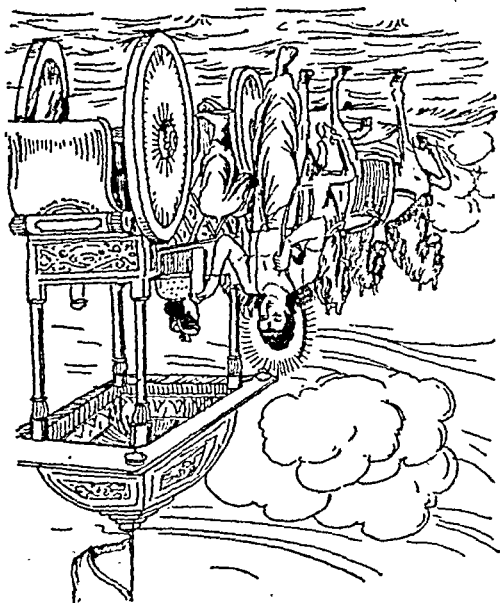
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



राधे नमो भगवते वासुदेवाय

काशीयां कलिकल्पपादशसनं कल्याणकल्पद्वयं
 नौमीज्यं निरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥२॥
 यो ददाति सर्वां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
 खलानां दण्डकेष्टोऽसौ शङ्करः शं तनोति मे ॥ ३ ॥

टी०—उव निमेष परमायु जुग वरष कल्प सर चर ।

भजति न मन वेहि राम को काळि जासु कोदंड ॥

सो०—सिंधु बचन सुनि राम सविब बोलि प्रभु अस कहैव ।

अव बिछुव कहि काम करहुं सेव उतरे कटके ॥

सुनहुं भावु कुल केव जामवत कर जोरि कहै ।

नाथ नाम तव सेव नर चरिं अब सागर तरहिं ॥

० लखु जलधि तरत कति वारा । अस सुनि पुनि कहै पवनकुमार
 व विरु नारि कदन जल धारा । भरेउ बहोरि भयउ वेहिं जारा ॥
 निं अति उक्ति पवनसुत कैरी । देरु कपि खपति तन हेरी ॥
 जामवत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥
 तस प्रताप सुनिमरि मन माही । करहुं सेव प्रयास कहुं नाही ॥
 लि लिप कपि निकर बहोरि । सकल सुनहुं विनती कहुं मोरी ॥
 तस चरन पंकज उर धरि । कौतुक एक भाळ कपि करहुं ।
 वहुं सकुट विकट बलधा । आनहुं विदप निरिन्ह के बंधा ॥
 निं कपि भाळ चले करि हँहा । जय खपीर प्रताप समुहा ॥

महिमा यह न जलधि कइ भरनी। पावन गुन न कपिन कह करनी।
 टी०—श्री रघुवीर प्रताप ते सिंधु ते पाषाण ।

ते मतिमंद जे राम वलि भजहि जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

गूँधि सेव अति सुदर बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा।
 चली सेन कहु गरुन न जाई। गजहिं सकट भट समुदाई।
 सेवबंध जिग चहिं रखराई। चितव कृपाल सिंधु बहिराई।
 देखन कहूँ प्रभु करना कंदा। प्राट भए सब जलवर बुंदा।

सकर नक नागा झग व्याज। सब जोजन तन परम विमल।
 अइवउ एक तिनदहि जे छाहीं। एकन्ह के उर तीप डेराहीं।

प्रभुहि जिलोकहिं टरहिं न टर। मन हरिषत सब भए सुखर।
 तिनदे की ओट न देखिअ गरी। मगन भए हरि रूप निहारी।

चला कटक प्रभु आयसु पाई। की कहिसक कपि दल विपुलदाई।
 टी०—सेवबंध भई मोर अलि कपि नभ पंथ उदाहिं ।

अपर जलचरनिह ऊपर चहिं चहिं पराहिं जाहिं ॥ ४ ॥

अस कौतिक तिलोकि हो भाई। निहंसि चले कृपाल रखराई।

सेन सहित उतरे रखीरा। कहि न जाइ कपि बंधु भूरा ॥

सिंधु पर प्रभु डेरा कीन्दा। सकल कपिन कहूँ आयसु दीन्दा।
 खाई जाइ फल फूल सुहाए। सुनत भाल कपि जाई तहै थाए ॥

सब तर फे राम हित जगती। त्रिभु अरु कृपित काल गति नगती।
 खाई मधुर फल निदय देखवाई। लंका समुख सिखर चलवाई ॥

सुव कहै आसि नीति दसानन । चौधपन जाइहै यय कानन ॥
 चाहेअ करन सो सब करि गीते । पुनह सुर असुर चराचर जीते ॥
 नाथ दीन दयाल खिराई । बाघउ सममुख गहूँ न छाई ॥
 सुव कहूँ राज समधि बन जाई मजिअ रघुनाथ ॥ ३ ॥

टी०—रासाहि सौमि जानकी नाई कमल पद माथ ।

तासु विरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाके दया ॥
 जाई गलि गौधि सहसमुख माया । सोई अवतरेउ हरन माहि माया ॥
 आतिथल मयु कैटभ जाई मारे । महेवीर दिनिमुख संधारे ॥
 पुनहहि खपतिहै अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि बैसा ॥
 नाथ ग्यर कीजे ताही सो । बुधियल सकिअ जीति जाही सो ॥
 बरन नाई सिक्क अंचलु रोपा । सुनहुँ बचन मिय परिहरि कोपा ॥
 कर गाहि पतिहै भवन निज अनी । बोली परम मनोहर गानी ॥
 मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकहो पायोधि ब्रह्मयो ॥
 निज विकलता बिचारि बहोरी । बिहोसि गपउ गइ करि भय भोरी ॥
 सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि बहोस ॥ ५ ॥

टी०—ब्रह्मयो ब्रह्मनिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।

सुनत भवन गोरिधि बंधाना । दस मुख बोलिउठा अकुलाना ॥
 जिनह कर नासा कान निपाता । तिनह रावनहि कही सब गता ॥
 दसनहि कानि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहि तय जाना ॥
 जहूँ कहूँ फिरत निराचर पगारि । धरि सकल गहुँ नाम नचावहि ॥

तासु भजतु कीजिय तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
 सोहै खुरीर प्रगत अवतरणी । भजहँ नाथ समता सब त्यागी ॥
 सुनिअर अवतु कयहि जोहै लगनी । भूष राखु तजि होहि विरानी ॥
 सोहै कोसलधोसि खुरीया । आपउ करन तोहि पर दया ॥
 जो पिय मानहँ मोर सिखावन । सुजसु होहै तिरुँ पुर आति पावन ॥
 द्रो०—अस कहि नयन नीर मरि गहि पद कपित गात ।

नाथ भजहँ रघुनाथहि अचल होहै अहिबाल ॥ ७ ॥

तब रावन भयसुता उठहँ । कहै लगल खल निज प्रभुताहँ ॥
 सुनु तै प्रिया वृथा भय माना । जग जोधा की मोहि समाना ॥
 यवन कुँवर पवन जम काला । भुज बल जितेउ सकल दिगपाला
 देव दनुज नर सब बस मोर । कवन हैतु उपजा भय तोर ॥
 नाना विधि बेहि कहेसि बुझाहँ । सम्रा बहोरि बैठ सो जाहँ ॥
 मंदोदरी हैदय अस जग । काल बस उपजा अभिमाना ॥
 सम्रा आहँ भणिन्ह तोहि बूझा । करन कवन विधि तिरुँ से बूझा ॥
 कहहि सचिव सुनु निरिचर नादा । नार नार भय पूछहँ काहँ ॥
 कहहि कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भलि अहार हमार ॥
 द्रो०—सब के बचन श्रवन सुनि कहै प्रहस कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ भय भणिन्ह मति अति थारि ॥ ८ ॥

कहहि सचिव सठ ठकरसोदाती । नाथ न पर आव एहि भूती ॥
 शारिषि नाथि एक कपि आया । तासु चरित मन भहँ सब गाया ॥

जगहि ताल पखज जीना । दय करहि अपछरा प
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन । जगि किनर गुन मन रावन ॥
 लंका सिखर उपर आगरा । अति विचित्र तहै होइ अखरा ॥
 संख्या सम्य जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा
 हित मत तेहि न लगत कैस । काल विषय कहूँ भयज जैस ॥
 सुनि पियु गिरा पक्ष अति धीरा । चला भवन कहि भवन कठोरा ॥
 अवहौ ते उर संस्य होइ । येनुमूल सुत भयइ भयोइ ॥
 सुत मन कह दसकंठ रिखाइ । आस मति सठ कहि तेहि सिखाइ
 पदे मत जौ मानइ प्रभु भोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तेरा ॥
 गहि वसन्मुख समर महि ताल करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥
 १०-गारि पाइ किनि जाहि जौ सो न बड़ाइअ मारि ।
 प्रथम बसीठ पठउ सुत नीती । सीता देख करइ पुनि प्रीती ॥
 भवन परम हित सुनत कठोर । सुनहि जे कहहि ते नर प्रभु भोरे
 प्रिय बानी जे सुनहि जे कहहि । ऐसे नर निकाम जग अहोरे ॥
 ताल भवन मम सुत आत आदर । जनि मन गुनइ मोहि करि कादर
 सो भव भुज खाय हम माइ । भवन कहहि सज गाल फलाइ ॥
 जहि गरीस ब्रधपउ हैला । उतरै सेन समेत सुबेला ॥
 सुनत नीक आगे दूख पाया । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनाव
 छुधा न रही गुनहारे तन काई । जारत नगर कस न धरि लाई ॥

दो०-अस कहि नयन नीर मरि गहि पद कंथित गाव ।

जौ पिय मानई मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अलि पवन ॥
 सोइ कोसलाधीस खुरपाया । आपउ करन गोहि पर दया ॥
 मुनिवर जतनु करहि जोहि जगती । भूप राज बलि होहि बिरगती ॥
 सोइ खुरपीर मनत अनुगामी । भजई नाथ समता सब त्यागी ॥
 तासु भजन कीजिय तहूँ भरी । जौ कर्ता पालक बहरी ॥

नाथ भजई खुरपायहि अचल होइ अहिवाल ॥ ७ ॥

तब रावन मयसुता उठई । कहै जग खल निज प्रभुताई ॥
 सुनु तै प्रिया वृथा भय माना । जग जोया की मोहि समाना ॥
 यवन केवर पवन जम काल । भुज बल जितेउ सकल दिगपाल ॥

देव दनुज नर सब बस मोर । कवन हैतु उपजा भय वोर ॥

नागा विधि वेहि कहैसि बुझाई । समी बहोरि बैठ सो जाई ॥

मंदोदरी हृदय अस जाना । काल बस उपजा अभिमाना ॥

समी आइ मंजिर होइ ब्रह्मा । करन कवन विधि विपु से ब्रह्मा ॥

कहैसि सचिव सुनु निबिचर नाह । बार बार प्रभु पूछै काह ॥

कहै कवन भय करिअ निचारा । नर कपि माछ अहार हेमारा ॥

दो०-सब के बचन अवन सुनि कह प्रहस कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंजिर होइ मति अलि थोरि ॥ ८ ॥

कहैसि सचिव सब ठकुरसोहोली । नाथ न पर आव एहि मारी ॥

गारिधि नाथि एक कपि आवा । तासु चरित मन मरुँ सर

छुधा न रही गुह्य है तब कहूँ । जारत नग कस न धरि लाई ॥
 सुनत नौक आगें द्रुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनवा
 जहि वारीस ब्रह्मपुत्र हैला । उतरैउ सेन समेत सुबेला ॥
 सो भयु मनुज खग दस भाई । बचन कहहि सब गाल फलाई ॥
 तब बचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि काद
 प्रिय जानी जे सुनहि जे कहैही । ऐसे नर निकाम जा अहैही ॥
 बचन परम हित सुनत कठोरि । सुनहि जे कहैहि ते नर प्रभु अपे
 प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीली । सीता देखै करहु पुनि प्रीती ।
 द्रो-चारि पाइ फिरि जाहिं जौ नै न बड़ाइअ राति ।
 नहिं त समुख समर माहि तब करिअ हठि माति ॥ ९ ॥
 तह मत जौ मानहु प्रभु मोरा । उमय प्रकार सुजसु जा तोरा ॥
 हुन सन कहै दसकंठ रिसाई । अरिस मति सठ कहि तोहि सिखाई
 अबाही ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहु धमाई ।
 सुनि भिनु गिरा पक्ष अति धोरा । चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
 हित मत तोहि न लगत कैस । काल बिगस कहूँ भयज जैसे ।
 संख्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहै होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहि भंडिर रावन । लोको किनर गुन गन गावन ।
 जाहि ताल पलाउज बीना । दस्य करहि अपछरा प्रवीना ॥

धा न रद्वी तुष्टाहं तत्र काहं । जारत नगर कस न धारि खाहं ॥
 नत नौक आगो दुख पावा । सचिवन अस मत प्रसुहि सुनावा
 हिं वारीस ब्रधमउ हेला । उतरेउ सेन समेत सुबेला ॥
 मनु मनुज खात्र हम माहं । बचन कटहिं सब गाल फलाहं ॥
 त बचन मम सुनु आनि आदर । जनि मन गुनहुं मोहि करि कादर
 प्रय वानी जे सुनहिं जे कटहौ । ऐसे नर निकाम जग अहहौ ॥
 चन परम हित सुनत कठोर । सुनहिं जे कटहिं ते नर प्रभु थोरि ॥
 मम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देख करहुं पुनि प्रीती ॥
 १०-नारि पाइ किनि जाहिं जाँ दो न बधइअ राति ।
 नहिं वस-सुख समर माहि ताव करिअ हठि माति ॥ ९ ॥
 मर मत जाँ मानहुं प्रभु मोरा । उमय प्रकार सुजसु जग तोरा ॥
 सुत मन कह दसकंठ रिसाहं । अंसि मति सठ केहिं तोहिं सिखाहं
 अथही ते उर संसय होइ । वैजुमूल सुत भयहुं धमोहं ॥
 सुनि भिनु निरा पक्ष अति धोरा । बला भवन कहि बचन कठोरा ॥
 हित मत तोहि न लगत कैसे । काल बिगस कहूँ भयज जैसे ॥
 सख्या समय जानि दससाँसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
 लंका सिखर उपर आगाया । अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहिं भितर रावन । लगे किनर गुन गन गावन ॥
 जाहिं ताल पखोउज बीना । नृत्य करहिं अपञ्जरा प्रवीना ॥

तसि भजतु कीजिअ तहैं भरी। जो कर्ष पाळक संहरी ॥
 सोई रखीर प्रगत अनुरगी। भजई नान्य समता सब लगि ॥
 सुनिअर जतन करहि जोहि लगि। भूय राजु तजि होहि निरगि ॥
 सोई कोसलधोस खरपा। आपउ करन तोहि पर दया ॥
 जो पिय मानई मोर सिखावन। सुजसु होइ तहैं पुर आनि पवन ॥

टी०—अस कहि नयन नीर मरि गहि पद कंषित गाल ।

नाथ भजई रखनाथहि अचंच होइ अहिवाल ॥ ७ ॥

तन रावन मयसुता उठई। कहै लग खल निज प्रभुताई ॥
 सुनु तै प्रिया वृथा मय मान। जग जोधा को मोहि समान ॥
 भवन कुँवर पवन जम काल। भुज बल जितेउ सकल दियपाल ॥
 देव दनुज नर सब बस मोरे। कवन हेतु उपजा मय तोरे ॥
 नाना विधि तोहि कहिसि बुझाई। समी गहोरे बैठ सो जाई ॥
 मंदोदरी हेतुँ अस जान। काल बल्य उपजा अभिमान ॥
 समी आइ मंजुहरे तोहि बुझा। करन कवन विधि रिपु सै जझा ॥
 कहै सचिब सुनु निरिचर नाइ। बार बार मय पूछेइ काइ ॥
 कहै कवन मय करिअ निचारा। नर कपि माछ अहोर हेमारा ॥

टी०—सब के बचन श्रवण सुनि कह प्रहस कर जोरि ।

नीति विरोध न करिअ प्रभु मंजुहरे मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहै सचिब सठ उकुसोहाती। नाथ न परे आव एहि माती ॥
 गारिधि नाथि एक कपि आवा। तासि चरित मन मई सुख गावा ॥

धा न रही तुम्हारे तब कहूँ । जगत न्याय कस न धरि खरूँ ॥
 नर नीक आगे दूख पाया । सन्निवन अस मत प्रभुहि सुनया
 हि वारीस बंधावत डेला । उत्तर सेन समेत सुवेला ॥
 मनु मनुज खाय हम भाई । वचन कहहि सब गाल फलाई ॥
 तब वचन सम सुन आति आदर । जान मन गुनहु मोहि करि कादर
 प्रय गनी जे सुनहि जे कहहि । ऐसे नर निकम जग अहरी ॥
 वचन परम हित सुनत कठोर । सुनहि जे कहहि ते नर प्रभु भोरि ॥
 प्रथम बसीठ पठउ सुन नीली । सीता देख करहु पुनि प्रीती ॥
 शो-नारि पाई फिरि जाहि जौ तौ न बधाइअ गारि ।
 नहि वसन्तुख समर महि ताव करिय दडि मारि ॥ ९ ॥
 यह मत जौ मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग लेरा ॥
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई । आसि मति सठ कहि रोहि सिखाई
 अवहो ते उर संसय होई । वेनुमूल सुत भयहु बभाई ॥
 सुनि पितु निरा पक्ष अति घोरा । चला भवन कहि वचन कठोरा ॥
 हित मत रोहि न लगत कैस । काल विषय कहूँ भयज जैस ॥
 संख्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भुज बीसा ॥
 लंका सिखर उपर आगारा । अति विचित्र तहूँ होइ अखारा ॥
 बूठ जाइ रोहि मंदिर रावन । जगो किनर गुन गन गावन ॥
 राजहि ताल पखवाज बीना । नृत्य करहि अपठरा प्रवीना ॥

अस कौतुक करि राम सर प्रविसेउ आई निपंग ।

रावन समी ससंक सब डंकि मही रस भंग ॥ १३ (ख)

कंप न भूमि न मरत प्रियेण । अख सख कछु नयन न देखे
 सोचहि सब निज हेरय मझागि । असगिन भयउ भयंकर भरी
 दसमुख देखि समी भय पाई । बिदेसि बचन कहै जुगिति जन
 सिरउ गिरे सतत सुम जाई । मुकेट परे कस असगिन जाई
 समन कहै निज निज गइ जाई । गयने भवन सकल सिर नाई
 मंदोदरी सोच उर बसेऊ । जग ते भवनपूर महि खसेऊ
 सजल नयन कहै जुग कर जोरी । सुनई प्रानपति विनवी मारी
 कंत राम विरोध परिरहै । जानि मनुज जानि हेठ मन धर

दो०-विस्मयेय खुबसमानि करई बचन विस्वास ।

लोक कल्पना वेद कर भंग भंग भंग जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा । अपर लोक भूग अंग विभामा
 भुक्ति विदास भयंकर काळ । नयन दिवाकर कंच घन माला
 जासु धान अस्त्रनीकुमार । निशि अरु दिवस निमेष अपार
 भवन दिक्षा देस वेद बखानी । मारत खास निगम निज यान
 अपर लोक जम देसन कराल । माया होस गहै दिगपाल
 आनन आनल अंजुपति जोइ । उतपति पालन प्रलय समीह
 राम गति अष्टादश भरा । अस्त्रि सुल सारिवा नस जरा
 उदर उदरि अथवा । जगमय प्रसु को गहै कल्पना ॥

टी०—अहंकार निव बुद्धि अज मन ससि चित्त महेन ।

मनुज बास सत्त्वाचर रूप राम भगवान् ॥ १५ (क) ॥

अस विचारि सुख प्राप्तपति प्रभु सन बधक विहाई ।

प्रीति करई रघुवीर पद मम अहिबात न जाई ॥ १५ (ख) ॥

विहैसा नारि बचन सुनि काना । अहो मोह माहेमा बलवाना ॥

नारि सुभाउ सत्य सज कहैही । अवगुन आठ सदा उर रहैही ॥

साहेस अवत चपलता माया । मय अतिबेक असौच अदाया ॥

रिपु कर रूप सकल तै गाया । अति बिसाल मय मोहि सुनाया

सो सज प्रिया सहज बस मोरे । समुझि परा प्रसाद अज तोरे ॥

जानिऊ प्रिया तोरि चतुराई । एहि बिधि कहई मोरि प्रभुताई

तब अतकही पाई मयालोचनि । समुझत सुखद सुगत मय मोचनि

मंदोदरि मन महुँ अस उयक । पियाई काल बस मतिअम मयउ

टी०—एहि बिधि करत विनोद बहू पाव पाट दसकंध ।

सहेज असंकलंकपति समी गयउ मंद अंध ॥ १६ (क) ॥

सो—फूलई फरई न बेत जदपि सुया बरषहि जलद ।

मूकस हृदय न बेत जौ गुर मिलहि बिरोचि सम ॥ १६ (ख) ॥

इहौ पात जानो खुराई । पूछा मत सय सचिब बोलई ॥

कहई बेनि का करिअ उपाई । जामवंत कह पर सिक्क नाई ॥

सुख सभ्य सकल उर बासी । बुध बल बेज धर्म गुन रासी ॥

भंन कहेउ निज मति अजुषाया । दूत पठाइअ बालिकुमारा ॥

श्री०-प्रभु अग्या धरि सीस चरन वंदि अंगद उठेउ ।
 सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करई ॥ १७० (क) ॥
 स्वयं सिद्ध सब काल नाथ मोहि आदर दिखउ ।
 अस विचारि जुगसाज नन पुलकित हरषित हियउ ॥ १७१ (ख) ॥
 वंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सगहि सिर नाई ॥
 प्रभु प्रताप उर सहेज असंका । रन गोकुल गालिमुत वंका ॥
 पुर पैठत रावन कर बेटा । खिलत रहो सो होइ गे भेटा ॥
 गालाई गाल करय गहि आई । जुगल अगुल गल पुनि तननाई ॥
 तैहि अंगद कहूँ लग उठाई । गहि पद पदकेउ भूमि भयाई ॥
 निमिचर निकर देखि भट भरी । जहँ तहँ चले न सकहि पुकारि ॥
 एक एक सन मरसु न कहटी । समुझि तासु ग्रथ चुप करि रहटी ॥
 भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जहि गरी ॥
 अज धौ कटा करिहि करतारा । अति समीत सब करहि निचारा ॥
 निजु पछै मायु देखि दिखाई । जहि जिलोक सोइ जाइ मुखाई ॥

श्री०-गयउ समा दरबार तब सुनिारि राम पद कंज ।
 सिंह उबनि डोल उत चितव धीर धीर बल पुंज ॥ १७२ ॥

धर्मसौलगा तव जग जगती। पण तरे ह्मई ब्रह्मजगती।
 कान नाक विजु मगिनि निहारी। उमा कीन्हि तुम्ह धर्म निचारी।
 देखी नयन दूत रजवारी। बौद्ध न मरई धर्म जत धारी।
 कह कपि धर्मसौलगा तोरी। ह्मई सुनी कत पर विष चोरी।
 खल तव कठिन बचन सब सहैऊ। नीति धर्म सै जानत अहैऊ।
 सुनि कठोर बानी कपि कैरी। कहत दखान नयन तोरी।
 तासु दूत होइ ह्म कुल योग। अइसिहै मात उर निहर न तोरी।
 सिव विरंचि सुर मनि समुदाई। चाहत आसु चरन सेवकाई॥
 अघउ वधिर न अस कहहि नयन कान तव बीस॥ २१ ॥

टी०-हमकुल धालक सख तुम्ह कुल पालक दससीस।

सुजु सठ भेद होइ मन ताके। श्रीविघ्नोर ह्मई नहि जाके॥
 राम विरोध कुसल जासि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई॥
 दिन दस गाँ गालि पाई जाई। ब्रह्महि कुसल सखा उर लाई॥
 अब कह कुसल गालि कहै अहै। निहैसि बचन तव अंगद कहै॥
 गामु न गायई अथु तुम्ह जायई। निज मुख तापस दूत कहायई॥
 अंगद तही गालि कर पालक। उपजई बंस अनल कुल पालक॥
 अंगद बचन सुनत सकुचाना। रही गालि गानर सै जाना॥
 अंगद नाम गालि कर बैटा। तासो कबहुँ मई हो भेटा॥
 कहि निज नाम जनक कर मई। केहि नाँ मातिए मिताई॥
 रे कपि पौत गोलु संभारी। मूँ न जानैहि मोहि सुगरी॥

॥ १ ॥ श्री भगवति वयं भुङ्क्ते अलं किं कर्तुं कोच ताहि ॥ २३ ॥
 धीति विरोध समान सन करिअ नीति अलि आहि ।
 कोच न हेमारे कटक अस तो सन जराव जो सोह ॥ २३ ॥ (ख)
 सत्य कहेहि दसकं सव मोहि न सुनि कछु कोह ।
 फिरि न गयउ सुगोव पाहिं तेहिं मय रहा जुकाइ ॥ २३ ॥ (क)
 टी०—सत्य नगर कपि जारेउ विनु प्रभु आयसि पाइ ।
 चलइ बहव सो धीर न होइ । पठवा खगरी जैन हम सोइ ॥
 जो अलि सुमट सराहेहि रावन । सो सुगोव कर लख धावन ॥
 रावन नगर अत्य कपि दहइ । सुनि अस वचन सत्य को कहेइ ॥
 सत्य वचन कहुं निमिचर नाह । साँचेहुं कीस कीन्ह पुर दाह ॥
 आवा प्रथम नगर जेहिं जाय । सुनत वचन कहे बालिक मार ॥
 सिलिय कम जानाहि नल नीला । है कपि एक महा बलसीला ॥
 जामवंत मजी अलि बूढ़ । सो कि होइ अब समराकटा ॥
 उरइ सुगोव कौलदुम दोक । अजुज हमार भीर अलि सोक ॥
 तव प्रभु नारि भिरह बलहीना । अजुज तासु दुख दुखी मलीना ॥
 उरहरे कटक माझ सुत अंगद । मो सन निमरिह कवन जोधा बट ॥
 सोमत मयउ मराल इव संभु सहित कैलास ॥ २४ ॥ (ख)
 पुनि नम सर मम कर निकर कमलहि पर करि बास ।
 लोकपाल बल विपुल ससि प्रसन हेतु सब राई ॥ २४ ॥ (क)
 टी०—धीन जल्पसि जहं जहं कपि सठ विलोकि मम बाई ।

जगति लघुता राम कहूँ तोहि वधु बध दोष ।

वदंति कठिन दसकंठ सुख दुःख जानि कर रोष ॥२३॥ (घ)

वक उक्ति धनु वचन सर हृदय दूहेउ विपु कीस ।

प्रतिउत्तर सङ्क्षिप्त-ह मनुहुँ कांत भट दससीस ॥२३॥ (ङ)

हूँसि बोलैउ दसमौलि तब कपि कर वध गुन एक ।

जो प्रतिपादइ वासु हित करइ उपाय अनेक ॥२३॥ (च)

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहूँ तहूँ नाचइ परिहरि लाजा ॥

नाचि कूँटि करि लोम रिझाई । पात हित करइ धर्म निपुनहूँ ॥

अंगद स्वामिसक तब जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि मूर्खी

मैं गुन गाहक परम सुजाना । तब कटि रटनि करडूँ नहिँ काना

कहे कपि तब गुन गाहकवाहूँ । सत्य पवनसुत मोहि सुनाहूँ ॥

वन निधुंषि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तोहिँ कछु कृत अपकारा

सहइ निचरि तब प्रकटि सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि दिठहूँ ॥

देखैउ आइ जो कछु कपि मापा । तुम्हरेँ लाज न रोष न माखा ॥

जो आसि मति प्रिय खाए कीसा । कहि अस नचन हूँसा दससीसा ॥

पितरहि खाइ खातेउँ पुनि बोही । अगहौँ समुझि परा कछु मोही ॥

गालि रिमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहिँ अवस अपिमानी

कहुँ रावन रावन जग कैले । मैं निज श्वन सुने सुन कैले ॥

बलिहिँ जिन एक गपउ पतला । राखैउ गौंषि विमुक्त हवखाला

खेलाइ बालक मारहिँ जाई । दया लागि बलि दीन्ह छेड़ाई ॥

पसु सुधेनु कल्पत कला । अथ दान अथ पुण्येण ॥
 राम मनुज कस रे सठ वंश । धन्यी काम नदी पुनि गंगा ॥
 तामि गनुं जेहि देखत भगना । सो नर क्यो दससीस अभगना ॥
 जसि पसु सगर खर धारा । वडै नप अमानित वडै गारा ॥
 सहस्रवार्द्धि भुज गहन अपरा । दहन अनल सम जसि कुठारा ॥
 सुनि अंगद सकोप कह गानी । बोलि सुभासि अवध अभिमानी ॥
 रे कवि वधूर खल खल अव जाना तव ग्यान ॥ २५ ॥

टी०-जेहि रावन कहूँ लखे कहसि नर कर करसि बखान ।
 सोइ रावन जग विदित प्रतापी । सुनिहे न भवन अलोक प्रतापी ।
 जसि चलत डोलति डोमि धरनी । चढत मत्त गज जसि लखे तरनी ।
 जिनहे कै दसन कराल न फेटे । उर लागत मूलक इव टेटे ॥
 जानहि दिग्गज उर कठिनार्द्ध । जग जग निमरु जेहि गतिआर्द्ध ॥
 भुज त्रिकुस जानहि दिग्गजाल । सठ अजहूँ जिनहे कै उर साल ॥
 सिर सरज निज करिहे उतारी । पूजेहुँ अमित वार त्रिपुरारी ॥
 जान उभापति जसि सुरार्द्ध । पूजेहुँ जेहि सिर सुमन चढार्द्ध ॥
 सुन सठ सोइ रावन बलसील । हेरगिरि जान जसि भुजलाल ॥
 इन्हें महुँ रावन तै कवन सख वदहि तजि माख ॥ २४ ॥

टी०-एक कहत मोहि सकुच अति रहा वालि काँख ।
 कौतुक लागि भवन तै आवा । सो पुलकि सुनि जाइ छोडावा ॥
 एक बडेरि सहस भुज देख । धाई धरा जसि जेहि त्रिसेवा ॥

बैनलेय खा अहि सहेखानन । चिंतामान पुनि उपल दखानन ॥
 सुनु मतिमंद लोक कैकुंठा । जाम कि खणित भगति अकुंठा ॥
 दो०-सेन सहित तव मान माथि बन उजारी पुर जारि ।

कस रे सठ हनुमान कीप गणव जो वव सुत माहि ॥ २६ ॥
 सुनु रावन पारिहारि चवुराई । भजसि न कृपा सिधु खुराई ॥
 जाँ खल भएहि राम कर दोही । बस कर सक राखि न दोही ॥
 मूढ़ वधा जानि मारसि गाला । राम बपर अस होइहि होला ॥
 तव सिर निकर कपिनद के आगे । पारिहोई परनि राम सर जगे ॥
 ते तव सिर कटुक सम गाना । खलिहोई भलि कौस चौगाना ॥
 जयहि समर कोपहि खिनायक । छिटिहोई आति कराल बह सायक ॥
 तब कि चलिहि अस गाल कुंदारा । अस निचारी भुज राम उदारा ॥
 सुनत बचन रावन परजरा । जगत महेनल जनु धृत परा ॥
 दो०-कुंभकरन अस बंधु मम सुत मासिद सकारि ।
 मोर पराक्रम नाहि सुनेहि जितेऊ बगवत माहि ॥ २७ ॥

सठ साजामुग जोरि सहाई । बाधा सिधु हरेई प्रभुताई ॥
 नापाहि खा अनेक वारीसा । सर न होहि ते सुनु सब कौसा ॥
 मम भुज सागर बल जल पूरा । जहूँ बूढ़े बहूँ सुर नर सुरा ॥
 बौस पयोधि अगाध अपरा । को अस वीर जो पाइहि परा ॥
 दिगपालन्हें मं नीर मरावा । भूप सुजस खल मोहि बुनावा ॥
 जाँ पै समर सुमट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा ॥

मन महुँ समुझि बचन प्रसु करे । सहैउ कठोर बचन सठ जेरे ॥
 बार बार अस कहै कपला । नहिं राजारि जसु बधुँ सकला ॥
 दसमुख सैं न बसीठी आपउ । अस बिचारि खीरि पठायउ ॥
 अथ जानि गतवदं वल करही । सुनु मम बचन मान परिहरही ॥
 ते नहिं सूर कहारहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ २९ ॥

दो०-जरहिं पता मोह बस भार बहहिं खर बुंद ।
 इंद्रजालि कहूँ कहिअ न बीरा । कटह निज कर सकल सीरा ॥
 सुनु मतिमंद देखि अथ पूरा । काटै सीस कि होइअ सूर ॥
 सी मुखवल राखैउ उर घाली । जीतेहुँ सहसबाहुँ बलि बाली ॥
 सिर अकसैल कथा चित रही । ताते बार बीस तैं कही ॥
 लजवत तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसिन काउ ॥
 कह अंगार सलज जग माही । रावन तोहि समान कोउ नाही ॥
 आन बीर बल सठ मम आग । पुनि पुनि कहसि लज पाति त्याग ॥
 सीउ मन समुझि बास नहिं मरे । लिखा बिरचि जरठ मति मरे ॥
 नर कै कर आपन बध बाँची । हसैउ जानि बिधि निरा असूँची ॥
 जरत बिलोकैउ जगहिं कपला । बिधि के लिखे अंक निज भाला ॥
 हुन अनल अति हरष बहू बार साखि गौरीस ॥ २८ ॥

दो०-सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।
 हरिगिरि मथन निरखु मम बाहु । पुनि सठ कपि निज प्रमुहि सराहु ॥
 तौ बसीठ पठवत कहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लजा ॥

नाहि त करि मुख भंजन तोरा । छै जातेउ सीताहि परजोरा ॥
 जानेउ तव बल अथम सुरासी । सुनै हरि आनिहि परनासी ॥
 तैं निखिचर पति गार्थ बहैता । सैं खण्डति सेवक कर दूता ॥
 जाँ न राम अपमानहि डरु । तोहि देखत अस कौतुक करु ॥

टी०—सोहि पटक माहि सेन होति चौपट करि तव गाउँ ।

तव जुबान्ह सभत सठ जनकसुताहि छै जाउँ ॥ ३० ॥

जाँ अस करौ तदपि न बडहि । सुएहि बधु नहि कछु मजुबहि ॥
 कौल कामगुप्त कृपिन विमूर्ता । अति दखि अजसी अति बूढ़ा ॥
 सदा योग्यस सतत कोधी । विप्र विमुख श्रुति संत विरोधी ॥
 पोषक निदक अधबानी । जीवत सब सम चौदह प्रानी ॥
 अस विचारि खल बधु न तोही । अत्र जनि रिस उपजावसि मोही ॥
 सुनि सकोप कहै निखिचर नाथा । अपर दसन दासि मीजत होथा ॥

रे कपि अथम मरन अत्र चहैसी । छोटि बदन गात बडि कहेसी ॥
 कहु जगपति जह कपि बल जाके । बल प्रताप बुधि तेज न ताके ॥

टी०—अगुन अमान जानि तेहि टीन्ह पिता बनवास ।

सो दुख अह जुबानी बिरह पुनि निखि दिन मम आस ॥ ३१ (क) ॥

जिन्ह के बल कर गार्थ तोहि अइसे मयुज अनेक ।

खाहि निखाचर दिवस निखि भूँद समुझ वलि टेक ॥ ३१ (ख) ॥

जग तेहि कीन्ह राम कै निदा । कोषवत तव मयउ कर्पिदा ॥

हरि हर निदा सुनइ जो काना । होइ एप गोपाल समाना ॥

रास मन्त्र बोलत आसि बानी । निरहि न तव रसना अभिमानी ॥
 याको फल पावहिगी आगे । बानर माछ चोटहि लग्यो ॥
 सत्यपात जल्पसि दुर्बोदा । मरुसि कालजस खल मन्त्रजादा ॥
 रे त्रिय चोर के मारग गामी । खल मल रासि मंदमति कामी ॥
 मक मर काटि निजज कुलधारी । बल बिलोकि बिहरति नहि छाती ॥
 पुनि सकोप बोलेउ जुरजा । गाल बजावत तोहि न लजा ॥
 मकुटहीन करहि माहि जाई । जियत धरहि तपस हो माहि ॥
 एहि विधि बेगि सुभट सब धावहु । खरि माछ कपि जहूँ जहूँ पावहु ॥
 धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुखकाइ ॥ ३२ (ख) ॥

उठौ सकोप दसानन सब सन कहत रिसाई ।

कौतिक देखहि माछ कपि दिनकर सरिस प्रकास ॥ ३२ (क) ॥

दो-तरोकि पवनसुत कर गहै आनि धरे प्रभु पास ।

ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालिनय के प्रे ॥
 कह प्रभु होसि जानि हृदय हेराई । एक न असनि केव नहि राई ॥
 की रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ॥
 आवत मुकुट देखि कपि भगो । दिनहो एक परन बिधि लग्यो ॥
 कछु बेहि है निज सिरिन्ह सुवार । कछु अंगद प्रभु पास पवार ॥
 निरत सुभारि उठा दसकंधर । भूतल पर मुकुट आति सुंदर ॥
 डोलत धरनि समसद खसे । चले माजि भय माकत भसे ॥
 कटकटान कपिकुंजर मारी । दुई मुजदह तमकि माहि मारी ॥

* लंकाकाण्ड *

गिरिदेहि रसना संख्य गार्ही । सिरिन्हे समेत समर माहि माही ॥
 सो-सो नर क्यो दसकंध वालि बरयो जेहि एक सर ।

बीसहुँ लोचन अंध धिया तव जन्म कुंजालि जइ ॥ ३३ (क) ॥
 तव सोनित की प्यास दीधित राम सायक निकर ।

तजउ तोहि बेहि आस कहुँ जलपक निखिचर अधम ॥ ३३ (ख)

मैं तव दसन तोरिबे लपक । आपसु मोहि न दीन्ह रह्योपक ॥
 आस रिस होति दखउ मुख तोरौ । लंका गहि समुद्र महुँ बोरौ ॥
 गालरि फल समान तव लंका । बसहुँ मध्य गुप्त जन्तु असंका ॥
 मैं गानर फल खात न बारा । आपसु दीन्ह न राम उदारा ॥
 ब्रुगति सुनत रावन मुसुकाइ । मूर्छ सिखिहि कहै बहृत छुठाइ ॥
 बालि न कबहुँ गाल अस मारा । मिलि लपसहुँ वै भएसि लजारा ॥
 साँचेहुँ मैं लजार भुजगीदा । जौ न उषारिउ तव दस जीदा ॥
 समुद्रि राम प्रताप कधि कोपा । समी माझ पन कधि पद रोपा ॥
 जौ मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहि राम सीता मैं डारी ॥
 सुनहुँ सुमत सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहुँ कीसा ॥
 इंद्रजीत आदि क बलवाना । हरिप उठे जहूँ तहूँ मत नाना ॥
 क्षपटहि कधि बल विपुल उषाई । पद न टरइ बौठहि सिख नहि ॥
 पुनि उठि क्षपटहि सुर आराती । टरइ न कीस चरन एहि मारी ॥
 पुरुष कुंजोनी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहि सकहि उषारी ॥

साक्ष जानि दसकंधर भवन गयउ विजवाह ।

मंदोदरी रावनहि बहुरि कहा समुझाह ॥ ३५ (ख)

कत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर गुनहि खपतिही ।
 रामानुज लख रेख खचाह । सोउ नहि नाबहु आसि मनुष ।
 प्रिय गुनह तहि जितव संगमा । जाके दूत कर यह कामा ॥
 कौतुक सिंधु नाधि तव लंका । आपउ कपि केहरी असंका ॥
 रखवारे दति विपिन उजारा । देखत तहि अञ्ज तहि मारा ॥
 जारि सकल पुर कीन्हैस छारा । कहा रहा तव गुनगारा ॥
 अग पति मया गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु ददुं विचारहु ।
 पति खपतिहि नपति जनि मानहु । अग जग नाथ अगुलज जानहु ॥
 दान प्रताप जान मारीचा । तसि कहा नहि मानहि नीचा ॥
 जनक समू अमानित भूषाला । रहै गुनहउ तव अगुल निखाला ॥
 भलि धनुष जानकी विआही । तव संगमा जितहु किन ताही ॥
 सुरपति सुत जानहु तव थोरा । राखा जितव आसि गहि थोरा ॥
 संपनखा कै गलि गुनह देखी । तदपि ददुं नहि लजनि ॥

दो-बाध विराध खर दूषनहि लीला देखी कवच ।

बालि एक सर मारयो तहि जानहु दसकंध

जहि जलनाथ दूषापउ होला । उतरे प्रभु दल सहित

कान्तीक दिनकर कुल कैल । दूत पठायउ त

सया माझ जहि तव तल मया । करि यकथ महु

[illegible][illegible]

କୃପାସ୍ଥିର ସ୍ବନାଥ ମନି ନାଥ ବିମଳ ଗମ୍ଭ ଓହ୍ଲେ ॥ ୧୭ ॥
 ନାରି ବସନ ସୁନି ବ୍ରହ୍ମିକ୍ଷ ସମାଗା । ସମ୍ପା ମୟୁତ ଓଡି ହୋଇ ଧିରେନା ।
 ବୈଠ ଜାହେ ସିଦ୍ଧାସନ ଫୁଲି । ଅତି ଅଧିମାଗ ବାଘ ସମ୍ଭୟେ ।
 ଓହ୍ଲେ ସାମ ଅମାଦହି ବୋଲଗା । ଆହେ ଚରନ ପକ୍ଷୀ ସିନ୍ଧୁ ନାଗା ।
 ଅତି ଆଦର ସମୀପ ବୈଠାସି । ବୋଲେ ବିହୃଷି କ୍ରମାତ ଉପାସି ॥
 ବାଲିବନ୍ୟ କୈବଳ୍ୟ ଅତି ମୋହି । ଗାତ ସମ୍ଭୟ କହୁ ପୁଣ୍ୟ ବୋଧି ।
 ରାସୁ ଗାଦିସାନ କୁଳ ଟୋକା । ମୁଗମ୍ଭଲ ଗାଦି ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧିକ ।
 ଗାନ୍ଧି ମୁକ୍ତ ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି । କହୁଛି ଗାନ୍ଧି କାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି ॥
 ସୁନୁ ସନ୍ଧ୍ୟା ମନେ ମୁଗକାନ୍ଧି । ମୁକ୍ତ ନ ହୋଇ ଅମ୍ଭ ମୁଗ ଗାନ୍ଧି ॥
 ସାମ ଦାନ ଅବ ଦେବ ମିମେଦ । ଦେବ ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି କହୁଛି ବୋଧ ॥
 ନୀତି ସମ୍ଭୟ କେ ଚରନ ମୁଗକାନ୍ଧି । ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି ଗାନ୍ଧି ॥

ਸ੍ਰੀ-ਕੁੰਤੀ ਜੀ ਮਾਂ ਦੇ ਦਿਲ ਦੇ ਪਾਸੇ ਹੋ ।

अनाद हेतुमत अनुवर जाके। रन बाँकले नीर अलि बाँके
तेहि कहूँ निष पुनि पुनि नर कहूँ । सुधा मान समता मत चहूँ
अहरे कंत केत राम निरीया । काल निवस मन उपज न दोष
काल दंड गहि कहूँ न मारा । हरई धर्म बल बुद्धि निजारा
निकट काल जेहि आवत साहूँ । तेहि अम देइ ठेठ निदि गाहूँ

परम चतुरता भवन सुनि बिहसे राम उदर ।

समाचार पुनि सब कहे गढ़ के बालिकुमार ॥ ३८ (ख) ॥
 रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलि ॥
 लंका बाँके चारि दुआरा । केहि बिधि लामिअ करहु निचार ॥
 तब कपीस रिन्हेस विभीषन । सुमिरि दृढ़द्यू दिनकर कुल भूषन ॥
 करि निचार तिनहे मंत्र दहवा । चारि अनी कपि कटक बनवा ॥
 जयजामा सेनापति कोन्है । ज्येष सकल बोलि तब लीन्है ॥
 प्रभु प्रताप कहि सब समझाए । सुनि कपि सिवनाद करि पाए ॥
 हरिष राम चरन सिर नावहि । गहि गिरि सिखर भीर सब धावहि ॥
 जाहि तजहि माछ कपीसा । जय खुरीर कोसलाधीसा ॥
 जानत परम दूरी अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले अवका ॥
 घटाये करि चहुँ दिशि धेरी । मुखहि निगन बजावहि भेरी ॥
 द्यौ-जयति राम जय जय लहिमन जय कपीस सुधीव ।

गजहि सिवनाद कपि माछ महे सब सौव ॥ ३९ ॥
 लंका भयउ कोलाहल भरी । सुना दखनन अति अहंकारी ॥
 देखहु बनन्ह कैरि छिटाई । बिहसि निराचर सेन बोलि ॥
 आए कपीस काल के भेरे । छुवावत सब निराचर भेरे ॥
 अस कहि अटहस सठ कीन्त । गढ़ बँडै अहर निधि दीन्त ॥
 सुभट सकल चारिहुँ दिशि जाई । धरि धरि माछ कपीस सब छाई ॥
 जग रावनहि अस अपिमाना । जिनिस टिहिम खग सब उजाना ॥

ऊपर आठ है मट निगिहें धरति पर आह ॥ ४

टी०-एक एक निमिचर गहि पुनि कपि चले पगहें ।

कपि आछि चहिं मंदिरेन्ह जहूँ तहूँ राम जसु गावत भए ॥

अति तरल तरन प्रताप तरपहिं तमकि गहं चहिं चहिं गए ॥

अपटहिं चरन गहि पटकि महि भनि चखत चहुँति पचारहें ॥

छं-धरि कुंभर खंड प्रचंड मकंद आछि गहं पर जारहें ।

निमिचर सिखर समूहें ठहैगहें । कौटि धरहिं कपि करि चखगहें

उत रावन डेत राम दोहैं । जयति जयति जय परी लरहें ॥

कटकटहिं कोटिन्ह मट गजहिं । दसन ओठ काटहिं अति तजहिं

धावहिं गनहिं न अवधट घटा । पर्वत फीरे कसहिं गहिं जाटा ॥

देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठइ । अति निमाल तनु आछि सुमझ

गजहिं भरे नफीरे अगग । सुनि काटर उर जहिं दसरा ॥

गजहिं टोल निमान बुझाऊ । सुनि बुनि होइ मटहिं मन चाऊ

कोट कूर्योनिहें सोहैं । कैसे । मेर के सुगनि जनु धन बैसे ॥

कोट कूर्योनिहें चहिं गए कोटि रनधीरे ॥ ४० ॥

टी०-नानाशुभ सर चाप धर जायजान बल धीरे ।

बाँच भंग दुख निहैं न सुझा । विमि धाए मनुजाइ अर्द्धझा ॥

जिमि अकनोपल निकर निहारी । धावहिं सठ खग मांस अहारी ॥

तोमार सुंदर परसु प्रचंड । सैल कपान पविष निरिखंड ॥

चले निमिचर आयसु मागी । गहिं कर निमिचल जर सौगी ॥

राम प्रताप प्रजल कपिजया । मर्दहि निरिचर सुमट बरया ॥
 चहै दुर्ग पुनि जहै तहै गानर । जय खड़ीर प्रताप दिवाकर ॥
 बलै निराचर निकर पराई । प्रजलपवन बिमिषन समुदाई ॥
 डोहाकार भयउ पुर भासी । रोवहि बालक आठर नासी ॥
 सब मिथि देखै रावनाहि गारी । राज करत एहि मनु दूकारी ॥
 निज दल बिचल सुनी बेहि काना । करि सुमट लंकैस रिसाना ॥
 जो रन विमुख सुना सैं काना । सो सैं देवब कराल कपाना ॥
 सबुसि खाइ भोग करि नाना । समर भूमि गए बल्लभ प्राना ॥
 उग्र बचन सुनि सकल डेराने । चले कोष करि सुमट लजाने ॥
 समुख मारन गौर कै सोभा । तज निन्ह लजा प्रान कर लोभा ॥

६ आयुष घर सुमट सब निमरि पचारि पचारि ।

व्याकुल किए भाउ कपि परिय बिसलन्हि मारि ॥ ४२ ॥
 मय आठर कपि भगान लगे । जयापि उमा जीतिहेहि आगे ॥
 कोउ कह कहै अंगद हनुमता । कहै नल नौल दुखिद बलवता ॥
 निज दल निकल सुना हनुमाना । पल्लिम दूर रहा बलवाना ॥
 मेघनाद तहै कारइ लयाई । दूट न दूर परम कठिनाई ॥
 पवनतनय मन भा अति कोषा । गजउ प्रजल काल सम जोषा ॥
 कौटिलक गहं ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कह्यै धावा ॥
 भुंजउ रघु सारथी निपाता । ताहि दृढदय भहुँ मारीब लाता ॥
 दुसरै सब निकल बेहि जाना । स्पंदन धालि बुरत यह आना ॥

नि-अंगद सुना पवनसुत गहं पर गयउ अकैल ।

रन वृक्षग बालिसुत तरुकि चहैउ कपि खेल ॥ ४३ ॥

कुछ निरुद्ध फेड़ हौ बंदर । राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥

पवन भवन चहै हौ धाई । कपिहैं कोसलवासीस दोहोई ॥

कलस सहित गहि भवन ठहोवा । देखि निराचरपति भय पावा ॥

गहि बंद कर पीटहि छली । अथ दूइ कपि आए उत्तपाली ॥

कोपलीला करि तिन्हहि डेरवाहि । रामचंद्र कर सुजसु सुनावहि ॥

पुनि कर गहि कंचन के खंभा । कहेतिन्ह करिय उत्तपाल अरंभा ॥

गलि परे रिपु कटक मझगि । जगो मरै भुज बल भरी ॥

काहहि जल चपेटनिन्ह केह । भजहु न रामहि सो फल लेहै ॥

दो-एक एक सौ मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।

रावन आगे परहिं ते जगु फेटहिं दीध कूंड ॥ ४४ ॥

महा महा मुखिया ते पवाहिं । ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥

कहेइ विभीषणु तिन्ह के नामा । देहिं राम तिन्हहै निज धामा ॥

खल भुजबाद दिजामिष भोगी । पवाहिं गति जो जाचत जोगी ॥

उमा राम मर्दुचित करनकार । जगु भाव सुमिरत मोहि निसिचर ॥

देहिं परम गति सो जिअ जानी । अस ऊपल को कहैह भवानी ॥

अस प्रभु सुनि न भजहिं अस त्यागी । नर मतिमंद ते परम अमगी ॥

अंगद अह दनुमत प्रवेश । कीन्हहुं अंग अस कह अवधेस ॥

लंका हौ कपि सोहहिं कैस । मथहिं सिंधु दूइ मंदर जैस ॥

दो०-मुन बल रिउ दल दलमलि देखि दिवस कर अव ।

कैं जगल बिगत भम आए जहँ भगवंत ॥ ४५ ॥

प्रभु पर कमल सौं निहै नाए । देखि सुभट खण्ड मन भाए ॥

राम कैय करि जगल निहारै । भए बिगतभम परम सुखारै ॥

गाए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भाछ मकूट भट नाना ॥

जातिधान प्रदोष बल पाई । धाए करि देखसौं दोहाई ॥

निशिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ लहँ कटकटह भट फिरे ॥

दो दल प्रबल पचारि पचारि । लरत सुभट नहिँ मानहिँ होरि ॥

महोगौर निशिचर सब करे । नाना बरन बलीमुख भरे ॥

सबल जगल दल समबल जाया । कौतिक करत लरत करि कोषा ॥

प्रागट सरद पयाद धरे । लरत मनहुँ माकत के प्रे ॥

अनिप अकंपन अर अतिक्रिया । निचलत सेन कीन्है इन्है माया ॥

भयउ निमिष महुँ अति आविधमा । बृष्टि होइ बधिरोपल छाया ॥

दो०-देखि निविड तम दसहुँ दिखि कपि दल भयउ खमार ।

एकहिँ एक न देखई जहँ लहँ करहिँ पुकार ॥ ४६ ॥

सकल मरु खनिगयक जाना । लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥

समाचार सब कहि समझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥

पुनि कैपाल देखि चाप चढ़ावा । एवक सयक सपदि चलावा ॥

भयउ प्रकास कनहुँ तम नार्है । म्यान उदयु बिमि संभय जाहँ ॥

भाछ बलीमुख पाइ प्रकास । धाए देखि बिगत भम कोषा ॥

तोकै बचन बान सम लगे। करिआ मुह करि जाहि अपमने
 परिरहि बधक देहु बूढ़ेही। भजहु केषानिष परम सनेही॥
 सिव विरंचि जेहि सेवहि तसो कवन विरोध ॥ ४८८ (ख) ॥
 कालरूप लल बन दहन गुनगार धनबोध ।

मासपारपण पचसिवा विजय

जेहि मारे सोइ अवतरेउ केषा सिंधु भगवान ॥ ४८८ (क) ॥
 दो०-हिरण्यक आता सहित मधु कैटभ बलवान ।
 वेद पुरान जसु जसु गायो। राम विमुख कहूँ न मुख पायो॥
 जग ते गुनह सीता हरि आनी। असुगुन होहि न जाहि बखानी।
 बोलो बचन नीति अति पावन। सुनहु तात कहूँ मोर सिखावन
 मायवंत अति जग निषावर। रावन मातु पिता मजी बर॥
 आधा कटक कपिल संघार। कहहुँ बेना का करिअ विचार
 उहो दसानन सचिव हुँकरे। सब सन कहेसि सुमट जे मारे॥
 राम केषा करि चितवा सज्जो। भए निगतअम बानर वज्जो।
 निषा जानि कोप चारिउ अनी। आए जहो कोसलाधनी।
 गजहिँ भालु बलीमुख विरु दल बल विचलाइ ॥ ४९० ॥
 दो०-कछु मारे कछु बायल कछु गहं चहै पराई ।

गहि पद डारहिँ सगर माही। मकर उरग झप धरि धरि खाहै
 भगत भट पटकहिँ धरि धरनी। करहिँ भालु कोप अद्भुत करनी
 हनुमान अंगद रन गाजे। हूँक सुनत रजनीचर भाजे॥

ब्रह्मं मण्डि न त मरतेउं तीरै । अथ जनि नयन देखावसि मोहै
 तेहि अपने मन अस अजुमाना । जखी चहत एहि कृपाणिधाना ॥
 सो उठि गयउ कहेत दुर्वादा । तब सकीष बोलैउ धननादा ॥
 कौतिक प्राप्त देखिअहु मोरा । करिदेउ बहूत कहौं का थोरा ॥
 सुनि सुत वचन मरोषा आवा । प्रीति समेत अंक बैठवा ॥
 करत निचार मयउ भिनुसारा । जगो कपि पुनि चहुँहुँ अगारा ॥
 कोपि कपिन्ह दृष्ट दृष्ट गार् । नगर कोलाहल मयउ धनोरा ॥
 निविधायिध धर निविचर धार । गार् ते पर्वत सिखर दहोरा ॥
 छं-छाहे महीधर सिखर कोटिन्ह विविध विविध गोला चले ।
 धरयात निमि पविपगत गजैत जनु प्रलय के बाढ़ले ॥
 मकट विकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर मय ।
 गहि सैल बेहि गार् पर चलावहि जहुँ सो तहुँ निविचर हय ॥
 धं०-मेघनाद सुनि अवन अस गार्हुँ पुनि छका आई ।
 उतरयो धीर दृगै ते सन्मुख चलयो बजाइ ॥ ४९ ॥

कहूँ कोसलधीस द्वै आता । धन्यी सकल लोक विज्याता ॥
 कहूँ नल नील दुविद सुयोगा । अंगार देवमंत बल सीवा ॥
 कहूँ निमीषणु आतादोही । आबु सवाहि देहि मारउ ओही ॥
 अस कहि कठिन वान संधाने । अतिसय कोष अवन लजि लाने
 सर समूह सो छाई जगा । जनु सपत्न्य धावहि बहूँ नगा ॥
 जहुँ तहुँ परत देखिअहि वानर । समुख होइ न सके तेहि अवसर

कौतिक देखि राम मुसुकाने । भए समीप सकल कपि जाने ॥
 कपि अकलाने माया देखे । सब कर मरन नानाएहि देखे ॥
 बरि धूर्ति कौनैहि अविधायी । संके न आपन ह्यय पसाय ॥
 निरा पय कपि र कच हाडा । बरषइ कचहुँ उपल वडु छाडा ॥
 नाना भाँति पिपाच पिपाची । माक काटि धुनि बोझहि नानी ॥
 नम चाहि बरष विपुल अंगारा । माहि ते प्रयाट होहि जलधारा ॥
 बाहि दिखावइ निस्चर निज माया माहि खोट ॥ ५१ ॥

टी०—आसु प्रबल माया बस सिव विरिचि बडु छोट ।
 निजि कोउ करै गरुड सै खेला । हरपावै माहि स्वल्प सपेला ॥
 देखि प्रताप भूँट विविधमाना । करै जना माया निधि नाना ॥
 अख सख आयुध सब डारे । कौतिकही प्रभु काटि निवारे ॥
 रघुपति निकट गयउ धननादा । नाना भाँति करेसि दुबादा ॥
 वार वार पचारे हनुमाना । निकट न आव मरमु सो जाना ॥
 आवत देखि गयउ नम सेह । रघु सारथी तुरग सब खेह ॥
 महासैल एक तुरत उभार । अतिरिस भेषनाद पर डार ॥
 देखि पवनसुत कटक बिहाला । कोषवंत जन धायउ काला ॥
 सिंहनाद करि गार्ज भेषनाद बल धीर ॥ ५० ॥

टी०—दस दस सर सब मारिस परे भूमि कपि धीर ।
 सो कपि माछ न रन महुँ देखा । कौनैहि जेहि न प्रान अवसेपा ॥
 जहुँ तहुँ भागि चले कपि रीछ । निधारी सगहि जुद्ध कै ईछा ॥

धीरधार्मिणी छविहि सँग। तेज पुंज लछिमन उर लगनी ॥
मुकुटा भई सकि के लग। तब बलि गपउ निकट भय त्याग

॥ ५४ ॥

जगदाधार सेष किमि उरि चले विविधअह ॥ ५४ ॥

सुख निरिजा कोषानल जसु। जगइ भुवन चारिदस आसु ॥

सक संगम जीति को ताही। सेवहि सुर नर अग जग जाही ॥

पह कैतरेल जानइ सोई। जा पर कपा राम कै होई ॥

संख्या भई फिरि दौ याहीनी। लगै सुभारन निज निज अनी ॥

अपक प्रह अजित भुवनेस्वर। लछिमन कहौ ब्रह्म करनकार

तब ली लै आपउ हेनुमान। अगुज देखि प्रभु अति दुख माना

जामवंत कह ब्रह्म सुवेना। लंका रहइ को पठई लेना ॥

धरि लख रूप गपउ हेनुमान। आनेउ भवन समेत तुरता ॥

॥ ५५ ॥

कहो नाम निरि औषधी जाइ पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभुजनसुत बल भाषी ॥

उहाँ दूत एक मारु जनावा। रावउ कालनेमि गइ आवा ॥

दसमुख कहो मारु तेहि सुना। पुनि पुनि कालनेमि सिक धुना ॥

देखत त्रुहहि नाक जेहि जाय। तासु पंथ को रोकन पाय ॥

मजि रखपति कर हित आपना। छुँइहु नाथ भूषा जयना ॥

नील कंज तब सुंदर स्वामा। हृदय राखु लेचनामिरामा ॥

एक बान काटी सय माया । जिम दिनकर हर विभर निकषा
 कपाटहि कपि भाछि बिलोक । भए प्रबल रन रहि न रोके ॥
 दो०—आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले कुँद होइ बान सरासन होय ॥ ५२ ॥

छतन नयन उर गार्ह बिसाल ॥ हिमतिरि निम तन कछु एक लाला

इहो दसनन सुमट पठाए । नाना अख सख गहि धाए ॥

भूधर नख चिटपायुध धारी । धाए कपि जय राम पुकारी ॥

भिर सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहि थोरी ॥

मुठिकन्ह लगन्ह दातन्ह काटहि । कपि जयसील भारि पुनि डाटहि

माक माक धक धक धक धक । सीस तोरि गहि भुजा उपर ॥

आसि रव पुरि रही नव खंडा । धावहि जहूँ तहें बंड प्रबंडा ॥

देखहि कौतुक नम सुर वंदा । कनहुँक बिसमय कनहुँ अनंदा ॥

दो०—सुधर गाइं भरि भरि जग्यो ऊपर धूरि उडाइ ।

जय भूगार गालिन्ह पर सुतक धूम रह्यो छाइ ॥ ५३ ॥

धायल वीर भिराजहि कैसे । कुसुमिमत किमुक के तब जैसे ॥

लछिमन भवनाद हो जोगा । भिरहिं परस्पर करि अति कोधा

एकहि एक सकइ नहि जीती । निसिचर छल बल करइ अनोती

कोधवंत तब भयउ अनंता । भजेउ रथ सारथी तुरंता ॥

नाना विधि प्रहार कर सेना । राख्यस भयउ मान अवसेषा ॥

रावनसुत निज मन अजमाना । सकठ भयउ देखिहि मम प्राना ॥

नील कंज तनु सुंदर स्नामा । हृदय राखि लोचनानिमित्तमा ॥
 मणि खण्डित कर हित आपना । छाँड़ि नाथ मुग्धा जल्पना ॥
 देखत देखहि नगर जेहि जाय । ताख पंथ को रोकन पाय ॥
 दसमुख कहे मरु जेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिद्ध हुना ॥
 उहाँ दूत एक मरु जनावा । रावत कालनेमि गढ़ आवा ॥
 राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभुजनसुत बल भाषी ॥
 कहे नाम निरि औषधी जाई पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

दो-राम पदारविंद निर नाथ आइ सुधेन ।

धरि लख रूप नाथ रहनुभा । आनेउ भवन समेत पुरेता ॥
 जामवंत कहे ब्रह्म सुधेना । लंका रहै को पठई लेना ॥
 तब लीला है आपउ रहनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ॥
 व्यापक प्रहल आनि भुवनेसर । लछिमन कहे ब्रह्म ककनाकर ॥
 संझा भई निरि हो गइनी । लोचनमय निज निज अनी ॥
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम कै होई ॥
 सक संगम जीति को ताही । खवाह सुर नर अंग जग जाही ॥
 सुनु निरिजा कीधानल जासु । जाइ भुवन चारिदस आसु ॥
 जगदाधार सेष किम उठै चले विविधआइ ॥ ५४ ॥

दो-सुखनाद सम कोटि सर जोधा रहे उठाइ ।

मुकजा भई सकि के लगे । तब चलि गयउ निकट भय लगे ॥
 धीरपातिनी जाहिंसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लगी ॥

* लंकाकाण्ड *

सुं तै मोर भूँला लग्यो । महा मोह निशि सुत जाग्यो ॥
काल व्याज कर मच्छक जोई । सपनहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥

दो०—सुनि दसकं विमान अति तेहिं मन कीन्ह विचार ।

राम दूत कर मरौ वरु यह खल रत मल भार ॥५६॥

अस कहि चला रीचिअ मग माया । सर भंडिर वर गगन बनाया ॥

माकतसुत देखी सुम आश्रम । मुनिहि वृद्धिजल पिप्यौ जाइ अम

राजस कपट वेध तहूँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥

जाइ पवनसुत नयउ माया । लग्यो सो कहै राम गुन गाया ॥

होत महा रत रावन रामहि । जितिहोई राम न संसय या माहि ॥

इहौ मरुँ मै देखउ माहि । प्यानदहि बल मोहि अधिकहि ॥

माया जल तेहिं दीन्ह कमंडल । कहै कपि नहि अघाउ थोरु जल ॥

सर मजन करि आवर आवहु । दिच्छा देखु प्यान तेहिं पवहु ॥

दो०—सर पैठत कपि पद गाहा सकौं तव अकुलान ।

मायी सो धारि दिव्य वनु चली गगन चरि जान ॥५७॥

कपि तव दरस भइउ निष्पाप । मिटा ताल मुनिवर कर साप ॥

मुनि न होइ यह निषिचर धोरा । मानहुँ सत्य वचन कपि मोरा ॥

अस कहि गइ अपछरा जगहौ । निषिचर निकट गयउ कपि तजहौ ॥

कहै कपि मुनि गुरदछिना लेहै । पाछे हमहि भंज वुह देखै ॥

सिर लग्यै लपेटि पछरा । निज वनु ग्राहहि मरौ गोरा ॥

राम राम कहि छाईसि गगन । सुनि मन देखी चलेउ हनुमान ॥

चहँ मम सायक सैल समेत । पठवौं तोहि जहँ कृपानिकेत ॥
 तब गहर दौड़हि तोहि जात । कछु नसाइहि होत प्रभात ॥
 जानि कुअवसर मन धरि धरि । पुनि कपि सन बोले बलवीर ॥
 अहँ देव मैं कत जग जगजु । प्रभु के एकहु काल न आयु ॥
 कपि सब चरित समास बखाने । भए दुखी मन महुँ पछिताने ॥
 तब कुसल कहूँ सुखनिधान की । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
 प्रीति न दृढ़ ममाइ सुमिरि राम रखिकल तिलक ॥ ५९ ॥

सो-जाने कपिहि उर जाइ पुलकित तब लोचन समल ।
 सुनत बचन उठि बैठ कपीस । कहि जग जगति कोमलबोस ॥
 तौ कपि होउ विगत भ्रम सुख । जौ मो पर रघुपति अनुकूल ॥
 जौ मोरे मन बच अरु कथा । प्रीति राम पद कमल अमया ॥
 जेहि बिधि राम विमुख मोहि कीन्है । तोहि पुनि यह दारुन दुख दोन्है ॥
 मुख मलीन मन भए दुखारी । कहत बचन भरे लोचन गरी ॥
 विकलबिलोकि कीस उर जग । जानत नहि यह प्रीति जगया ॥
 सुनि प्रिय बचन भरत तब धाए । कपि समीप अति आवुर आए ॥
 परे मुकछि मोहि लगत सायक । सुमिरत राम राम रविनाथक ॥
 बिचु कर सायक मारेउ चाप भवन जगि तानि ॥ ६० ॥

दो-देख भरत बिखल अति निमिचर मन अनुमानि ।
 गहै निरि निमि नम धावत भयक । अवधपुरी ऊपर कपि गयक ॥
 देखै सैल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उगारि निरि लीन्हा ॥

सुनि कपि मन उपजा अपिमाना । मोरें भार चलिहि किमि बाना ॥
 राम प्रभाष निचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥
 टी०—तब प्रताप उर राखि प्रभु जैहूँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आगसि पाई पद बंदि चलेउ हेतुमंत ॥६० (क) ॥
 भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहेत पुलि पुलि पवनकुमार ॥६० (ख) ॥

उहाँ राम लछिमनहि निहोरी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥
 अर्ध राति गइ कहि कपि नहि आपउ । राम उठइ अजुज उर लपउ
 सकहुँ न दृखित देखि मोहि काक । बंधु सदा तब महुँल सुभाक ॥

॥ : हित जाना तजेइ प्रिय माता । सहेइ विपिन हिम आतप जाता
 सो अनुसारा कहाँ अत्र माई । उठहुँ न सुनि मम बच निकलइ
 जौ जनतेउ वन बंधु बिछोई । पिता वचन मनतेउ नहि ओई ॥

सुत ब्रित नारि भवन परिवारा । होई जाहि जाग जाहि बारा ॥
 अस निचारि जियु जगहुँ ताता । मिलइ न जात सहेदर जाता ॥

जया पंख बिजु खग अति दीना । मनि बिजु फनि करिअर कार होना
 अस मम जिवन बंधु बिजु बोही । जौ जइ दैव जियावै मोही ॥
 जैहूँ अवध कौन महुँ लाई । नारि हेतु प्रिय माइ माँवाई ॥

वक अपजस सहेतु जा माही । नारि होनि बिषय छति नाही ॥
 अत्र अपलोक सोकु सुत बोरा । सहिहि निहुर कठोर उर मोरा ॥

निज जानी के एक कुमारा । तात तासु तुरह मान अधारा ॥

जादूबा हेरि आनि अब सठ चाहेत कल्याण ॥ २

२१०-सुनि दसकंधर वचन सब कुंभकरन विछोखन ।

अपर महेदर आदिक धीरा । परे समर महि सब रजवीरा ॥
 दुर्मुख सुरिपु मनुज अहेरी । मर आतिकाय अकपन मारी ॥
 तात कपिन्ह सब निमिचर मारे । महे महे जीया संघारे ॥
 कथा कही सब तेहि अमिमानी । जेहि प्रकार सीता हेरि आनी ॥
 कुंभकरन बंधा कहु महु । काहे तब मुख रहे सुखाई ॥
 जग निमिचर देखिअ कैसा । मानहु काछ देहे धरि बैसा ॥
 व्याकुल कुंभकरन पाहे आवा । विविध जतन करि ताहि जगावा ॥
 यह वृत्तांत दखानन सुनेऊ । अति विषाद पुनि पुनि धिर धुनेऊ ॥
 कपि पुनि भैर तहौ पहुँचावा । जेहि विविध तयहि ताहि लड़े आवा ॥
 हेरुँ लड़े प्रभु भेटेऊ आता । हेरुँ सकल माल कपिआता ॥
 वरत भैर तब कीन्ह उपाई । उठि भैर लजिमान हेरवाई ॥
 हेरि राम भेटेऊ हेरुमाना । अति कृतम्यप्रभु परम सुजाना ॥
 आइ गायड हेरुमान जिय कहेना महु वीर रस ॥ ३१ ॥

३०-प्रभु प्रताप सुनि कान बिकल भए बानर निकर ।

उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाळ देखी ॥
 यह विविध सोचत सोच विमोचन । खयत सलिल रोजिब दल लोचन ॥
 उतक काह हैरुँ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु मारी ॥
 सौं पसि मोहि गुहहि गहि पानी । सब विविध सुखद परम हित जानी ॥

मल न कीन्ह तै निषिचर नाह। अब मोहि आइ जगएहि काह।
 अजहँ तात त्यागि अभिमाना। भजहु राम होइहि कल्याणा॥
 हँ दसवीस मनुज खिनयक। जाके हनमान से पायक॥
 अहरे बंधु तै कीन्हि खोटाई। प्रथमहि मोहि न सुनाएहि आई
 कीन्हहु प्रभु निरोध तैहि देवक। सिव निरंजि सुख जाके सेवक॥
 नारद मुनि मोहि यान जो कहे। कहैतेउ तौहि समय निरयहो॥
 अब भरि अंक भूँट मोहि भाई। लोचन सुफल करौ मैं जाई॥
 त्याग गात सरसीरह लोचन। देखौ जाइ ताप नय मोचन॥

टी०-राम रूप गुन सुमिरत मान भयउ डन एक।
 रावन मातउ कोटि घट मद् अरु मोहिष अनेक॥ ६३॥

महिष खडि करि मटिया पाना। गजौ ब्रजधात समाना॥
 कुंभकरन दुभेद रन रंगा। बला दुराँ तजि सेन न संगी॥
 देखि विभीषण आगो आपउ। परउ चरन निज नाम सुनायउ॥
 अजुज उठाइ दृढयुँ तैहि लया। खपति भक्त जानि मन मायो॥
 तात जत रावन मोहि मारा। कहत परम हित मंत्रविचारा॥
 तैहि गजानि खपति पहि आपउ। देखि दीन प्रभु के मन आयउ॥
 सुनु सुत भयउ कालयस रावन। सो कि मान अब परम सिखावन
 धन्य धन्य तै धन्य विभीषन। भयहु तात निषिचर कुल भूषन
 बंधु बंधु तै कीन्ह उजगर। भजहु राम सीमा सुख सागर॥

टी०-बचन कर्म मन कपट तजि भजहु राम रनधीर।
 जाहु न निज पर सँभ मोहि भयउ कालयस बीर॥ ६४॥

पुनि आपउ प्रभु पहि बलवाना । जयति जयति जय केपनिधाना ॥
 गहउ चरन गहि भूमि पछरा । अति लाघव उठि पुनि तेहि मारा
 काटहि दसन नासिका काना । गरीज अकास चलेउ तेहि जाना
 सुग्रीवहि कै मुकछा गीती । निबुकि गयउ तेहि सतक प्रतीती
 मुकछा गइ माकतसुत जगगा । सुग्रीवहि तब खोजन लगगा ॥
 जग पावनि कीरति बिस्तारिहहि । गइ गइ भवनिधि नर तारिहहि
 भुकिटि भंग जो कालहि खाई । तारिहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥
 उमा करत खिपाति नरलीला । खेलत गइइ जिमि अहिशन मौला

काख दावि कपिराज कहूँ चला आसत बल सौव ॥ ६५ ॥

दो०-अंभादाहि कपि मुहजित करि समेत सुग्रीव ।

चली बलीमुख सेन पराई । अति भय बसित न कोउ समुहहि ॥
 पुनि नल नीलहि अवनि पछारिस । जहै तहै पटकि पटकि भट बहोरिस
 पुनि उठि तेहि मारेउ दनुमता । धिमुत भैल परउ वुरता ॥
 तब माकतसुत मुठिका हेल्यो । परगो परनि व्याकुलसिर बुन्यो
 सुरगो न मनु तनु टरगो न टरगो । जिमि गज अकफलनि को मारगो
 कोटि कोटि निगुरि सिखर प्रहरा । करहि भलि कपि एक एक गारा
 लिहउठाइ बिटप अक भैर । कटकटाइ डरहि ता ऊपर ॥
 एतना कपिन्ह सुना जय काना । किलकिछाई धाए बलवाना ॥
 नाथ भैरवाकार सरार । कुंभकरन आवत रनधीरा ॥
 बंधु बचन सुनि चला निभीषन । आपउ जहै बौलेक निभैषन ॥

* लंकाकाण्ड *

राम सेन निज पाछे धाली। चले सकीप महे बलसाली ॥
 सकसेन बचन सुनत भगवाना। चले सुधारि सरासन गाना ॥
 कृपा आदिधर राम खरारी। पाहि पाहि प्रनतगति हारी ॥
 यह निबिचर दुकाल सम अहई। कपिकुल देस परन अज चहई ॥
 चले भगि कपि भालि भगानी। बिकल पुकारत आरत गानी ॥
 भगि भालि बलीमुख जंघा। बृक बिलोकि जिय भग बरुधा ॥
 माहि पटकई राजराज डेव सपथ करई दसवीस ॥ ६९ ॥

दौ०—महेनाद कदि राजा कोटि कोटि माहि कीस ।
 बिकल बिलोकि भालि कपि धाप। ब्रह्मसा जगहि निकट कपि आप।
 सोनित खवल सोह तन करे। जनु कजाल बिचि गेक पनारे ॥
 तनु महुँ प्रविधि निबिचर सर जाही। जिय दामिनि धन माझ समाही ॥
 पुनि धनु तानि कोपि खनयक। छुई अति कयाल गह सपक ॥
 आवत देखि सैल प्रभु मारे। सरहि काटि राज सम कदि जारे ॥
 कोपि महीधर लेई उपासी। जारइ जहै मकट भट भारी ॥
 भा अति क्रुद्ध महेबल बीरा। कियो मुगनायक नाद गीरीरा ॥
 कुंभकरन मन दीख बिचारी। हति छन माझ निबिचर धारी ॥
 पुनि रघुवीर निषाग महुँ प्रविसे सब नाराच ॥ ६८ ॥

दौ०—छन महुँ प्रभु के सायकान्ह काटि बिकट पिसाच ।
 कंड प्रचंड मुंड निज धावहि। धर धर माक माक धुनि गावहि ॥
 लगत वान जलद जिय गजहि। बहूतक देखि कठिन सर भालि ॥

नाक कान कोटि जिह्व जगि । फिरा कोष करि भई मन लजनी ॥
सहेज भीम पुनि विजु अति नासा । देखत कपि दल उपजी नासा ॥

दो-जय जय जय रघुवंसमनि धार कपि है हूँ ॥
एकहि बार वासु पर छावैन्हि निरि तर जहूँ ॥ ६३ ॥

कुंभकरन रन रंग विकटा । समुख चला काल जनु कुटा ॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि छाई । जनु टीढ़ी निरि गुहौ समाई ॥
कोटिन्ह गहि सरि सन मदी । कोटिन्ह मोजि मिलव महि गदी ॥
मुख नासा अवनिह की गाटा । निसरि पराहि भाउ कपि ठाटा ॥
रन मद मत निराचर दया । निख ग्रसिह जनु एहि विधि अपा
मुने सुमत सब फिरि न करे । सूझ न नयन सुनाहि नहि रेरे ॥
कुंभकरन कपि फौज विहारी । सुनि धाई रजनीचर धारी ॥
देखी राम विकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो-सुख सुभीत विभीषन अजुन समारिहूँ सेन ।
मैं देखूँ खल बल दलहि बोलै गोजिवनेन ॥ ६४ ॥

कर सारंग साज कटि माथा । अरि दल दलन चले खनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टूकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सेरा
सयसंघ छाई सर लज्जा । कालसर्प जनु चले सपज्जा ॥
जहूँ तहूँ चले विपुल नाराचा । लो कटन मत विकट पिशाचा ॥
कटहि चरन उर सिर भुजदंडा । बहवक और होहि सब खंडा
बुझि बुझि बायल सहि परही । उठि संभारि सुमत पुनि लखही ॥

॥ गङ्गाधरसिंहजी महाराज । आपणें याचें अर्थ

॥ ८७ ॥ भाद्रपद शुक्ल द्वितीया ॥

१०-सुखनादं मायामयं त्वं चक्षुः शब्दं अकारं ।

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ कृष्ण भक्ति काल सप्त शीरा । उत रत्नोत्तर आति रत्नोत्तर ॥

॥ गङ्गा नदी सदा शुद्ध । चतुर्दश याम्यं विद्यते ॥

॥ इति श्री भगवत्पाद श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जसमुवासे अष्टमोऽध्यायः ॥


॥ वरुणं कालिं मारि मनुष्यम् । अथर्वं शक्तिं का कस्य वरुणम् ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



|| ॥३ ॥३ ३२५३ ३३ २५३ || ॥३ ३३ ३३॥ ॥३ ५ ३३॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कह दंत प्रियसा कहि न सक छवि सेष लेहि आन पने ॥

ਸੁਖਾਯਾ ਕਰ ਸਰ-ਸਰਸਰ ਮਾਯ ਕਾਧਿ ਵਡੇ ਪਿੰਡਿ ਰਵੇ ।

अम विद् मुख एजीव जीवन अखे नन एनिन कर्ण ॥

ॐ—सदासुखं भव भवितुं शक्तं सर्वदा ।

डारइ परस परस पाषाण। लगेउ बूढि कै बहू गेना ॥
 दस दिखि रहे गेन नम छहै। मानहुँ मया मेघ झरि लहै ॥
 धक धक माक सुनिअ धुनि काना। जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥
 गहि गिरि तरु अकास कपि धाबहि। देखहि तेहि न दुखिअ किहि आवहि ॥
 अवधट घाट घाट गिरि कंदर। माया यल कीन्हैस सर पंजर ॥
 जाहि कहौ व्याकुल भए बंदर। सुरपति बंदि परे जनु मंदर ॥
 माकलसुत अंगद नल बोज। कीन्हैसि निषकल सकल बलसीला ॥
 पुनि लछिमन सुग्रीव निभामन। सरनि मारि कीन्हैस जंजर तन ॥
 पुनि खपति सैं बूझै जग। सर छूँछइ होइ लगहि नगा ॥
 ब्याल पास पास भए खरापी। स्वयस अनंत एक अधिकारी ॥
 नट डेव कपट चरित कर नाना। सदा स्वतंत्र एक भावाना ॥
 रन सीमा लगे प्रभुहि बूधयो। नानापास देवद भय पायो ॥

दो०-गिरिजा आसु नाम जपि मुनि कटहि भव पास।

सो कि बंध वर आवइ व्यापक बिस्व निवास ॥ ७३ ॥

चरित राम के समुन भयानी। तर्कि न जाहि बुद्धि यल गानी ॥
 अस निचारि जे तय निरानी। रामहि भजहि तर्क सब त्यागी ॥
 व्याकुल कटक कीन्ह धननाथ। पुनि मा प्रगट कहइ दुर्गोथ ॥
 जामवंत कहै खल रहै ठाढ़। सुनि करि जाहि कोष अति याढ़ ॥
 बहूँ जानि सट छूँछइ बोझ। लगसि अपम पचरि मोह ॥
 अस कहि तरल निरखल चलायो। जामवंत कर गहि सोइ पायो ॥

प्रभु प्रताप उर धरि स्तवीरा । बोलि जन देव निरा गीमिया ॥
 जब खड़ीर दीनिह अजुवासन । कटि निषाग कसि साजि सरासन
 जामवंत सुधीव निमीषन । सेन समेत रहेहु लीनिउ जन ॥
 मारिहु तेहि बल ब्रिह उगर्ह । बेहि छीज निषिचर सुनु मारि ॥
 उग्रह लछिमन मारिहु रन ओही । देखि समग्र सुर दुख अति मोही ॥
 लछिमन संग जाहु सब मारि । करहु निषेस जग कर जाहु ॥
 सुनि सुगति आतस्य सुख माना । बोलि अंगदादि कपि माना ॥
 जो प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । नाथ बेनि पुनि जीति न जाइहि ॥
 मेघनाद मख करइ अपावन । बल सायाजी देव सतावन ॥
 इहौ निमीषन मंत्र निचारा । सुनहु नाथ बल अवल उदारा ॥
 उरत गपउ निरिचर कंदरा । कसौ अजग मख अस मन धरा ॥
 मेघनाद कै मुरछा जगति । पिरहि विलोकि लज अति लगति ॥
 बले तमीचर विकलतर गह पर चरै पराई ॥ ७४ ॥ (ब)

गहि निरि पादप उपल नख धारु कौस निराइ ।

साया विगत भय सब देखे जानर ज्ये ॥ ७५ ॥ (क)

श्री-जगपति सब धरि धारु साया नाग बह्य ।

इहौ देवनिष गच्छ पठायो । राम समीप सगदि सो आयो ।
 पर प्रसाद सो मारइ न मारा । तब गहि पद लंका पर डारा ।
 पुनि रिखान गहि चरन फिरायो । मदि पछारि निज बल देखरायो ।
 मारिष मेघनाद कै छाती । परा भूमि दुर्गति सुरवाती ।

दो-रघुपति चरन नाइ निरु चलेउ वरत अनत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुमट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिनहे सी देखा बैसा । आहुति देत वीर अरु भूषा ॥

कीन्ह कपिनहे सब जग विधवा । जग न उठइ तब करहि प्रसवा ॥

तदपि न उठइ धरिह कच जाई । जालन्ह देति चले पराई ॥

है निखल धावा कपि भगो । आयै जहँ रामानुज आगे ॥

आवा परम कोष कर मारा । गर्ज धोर रव गारहि आरा ॥

कोपि मकरमुख अंगद धाए । देति निखल उर धरनि विराए ॥

प्रभु कहै छुड़ैसि सल प्रचंड । सर देति केत अनंत जग खंडा ॥

उठि गहोरि माकलि जगरजा । देवाहै कोपि तेहि घाउ न गजा ॥

फिरे वीर रिपु मरइ न मारा । तब धावा करि धोर चिकारा ॥

आगत देखि भुंइ जग काल । लछिमन छाई विविध कराला ॥

देखेसि आगत पति सम जाना । वुरत मयउ खल अंतरधाना ॥

विविध वैष धरि करइ लराई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥

देखि अजय रिपु डरये कीसा । परम कुंड तब मयउ अहीसा ॥

लछिमन मन अस मंज दंडावा । एहि पतिहि मंज दंडत खेलावा ॥

सुनिमि कोसलाधीस प्रताप । सर संधान कीन्ह करि दापा ॥

छाई जान माझ उर जगामा । मरती मार कपट सब त्यागा ॥

चले वीर सब अखिलत गली । जन कजल कै आँधी चली ॥
 अस कहि मकर वीर राय साजा । बाजे सकल उद्दाम राजा ॥
 निज भुज बल सँ बंधक बंधावा । देखै उतर जो रिपु चरि आवा ॥
 भी अजहो बर जाउ पराई । सज्जग विमुख मरु न मलाई ॥
 सुमर बोलै दसानन बोल । रन समुख जा कर मन डोल ॥
 निजा सिरानि मयउ मिजुसारा । लो माछ कपि चारिहुँ दारा ॥
 मर उपदेस कुसल बहुरे । जे आचरहि ते नर न धरै ॥
 तेनहि स्थान उपदेसा रावन । आपुन मद कथा सुम पावन ॥
 नखर रूप जगत सब देखै देखै बिचारि ॥ ७७ ॥

१०-वध दसकंठ विविध विधि समुझाई सब गारि ।

मार लोम सब व्याकुल सोचा । सकल कहै दसकंधर पोचा ॥
 मरि मरि कर मारी । उर ताड़न बहै मारि पुरारी ॥
 मरि मरि सुना दसानन जगही । मुकलित मयउ परे मरि तबही ॥
 मरि मरि करि सुर सिद्ध सिधाए । लछमन कृपासिंधु पढ़ि आए ॥
 मरि अनंत जय जगदाधारा । तुम्ह प्रभु सब देखि निसारा ॥
 मरि सुमन दुहुँ मी बजावहि । श्रीरघुनाथ प्रियल जस गावहि ॥
 मरि मरन सुनि सुर राधा । चरि बिमान आए नम सदा ॥
 मरि प्रयास देजमान उठायो । लंका दारराखि पुनि आयो ॥
 धन्य धन्य तब जननी कहै आनंद देखमान ॥ ७८ ॥

१०-रासावुज कहै राम कहै अस कहै जूहेसि प्रान ।

असुनि अमित होहि बेहि काल ॥ गनइ न मुज बल गनु बिबाज ॥
 छं—अलि गव गनइ न समुन असुनि खबहि आयुष होय ते ।
 भट निरत रय ते बाजि गज चिकरत आजाहि सय ते ॥
 गोमाय गीय कराल खर रव खान बोजहि अलि धन ।
 जनु कालदैन उलक बोजहि वचन परम भयावने ॥
 द्रो—बाहि कि संपति समुन सुख सपनहुँ मन बिधाम ।
 भूष होइ रत मोहवस राम विमुख रति काम ॥ ७८ ॥

बलेउ निभार कटकु अपरा । चतुरनिनी अनी बह धारा ॥
 विविध भाति गहन रय जाना । विपुल वरन पलाक खज नाना ॥
 चले सत गज बूँध वनो । प्राविट जलद सकत जनु भोरे ॥
 वरन वरन विरदैत निकाया । समर सर जानहि बह माया ॥
 अलि विचित्र बाहिनी विराजा । वीर वसंत सेन जनु सजा ॥
 बलत कटक दिगसिधुर जगहो । छुमिअत पयोधि कुपर जगमाहो ॥
 उठो रेनु रीध गयउ छपाई । मकत थाकिव वसुधा अकुलहि ॥
 पनव निभान धोर रव बाजाहि । प्रलय समय के धन जनु गाजाहि ॥
 भेरि नफीरि राज सहनहि । मारु राना सुभट सुखदाहि ॥
 केहरिनाद वीर सव करहो । निज निज बल पौकष उचरहो ॥
 कहरइ दसानन सुनइ सुमझ । मरहइ भाल कपिन के ठडा ॥
 हो माहिहूँ भूष हो । हो माहि । अस कहि समुल पौन रूमाहि ॥
 महे सुनि सकल कपिनइ जग पाहै । पाए करि रघुवीर दोहाहि ॥

४०-धार् विद्याल कराल सकट आनि काल समान ते ।

मानहुँ सपच्छ उडाहिँ भूधर बुढ़ नाग बान ते ॥

नल दसन सैल महाहिँमायुष सबल सक न मानही ।

जय राम रावन मत्त गज संगराज सुजसु बलवानही ॥

४१-हुँहुँ विषि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।

मिरे बीर डोल रामहि उत रावनहि बलानि ॥ ७१ ॥

रावण रघुा विरथ रघुबीरा । देखि विभीषन भयउ अधीरा ।

अधिक प्रीति मन भा सदेह । बंदि चरन कहे सहित सनेह ।

नाथ न रथ नाहिँ तन पद गंगा । कहिँ विधि विनय बीर बलवान

सुनहुँ सखा कहे कृपानिधाना । जहिँ जय होइ सो स्यंदन आन

सौख्य धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दह ध्वजा पताका ।

बल विवेक दम परहित धीरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ।

हुँस भजन सरणी सुजाना । विरति चम सतीष कृपाना ।

दान परसु वृषि सत्कि प्रचंडा । गर विद्यान कठिन कोण्डा ।

अमल अचल मन जौन समाना । सम जस नियम सिद्धिमुख नान

कवच ओम्ह विष गुर पूजा । एहिँ सम विजय उपाय न दूजा ।

सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीवन कहुँ न कतहुँ रिपु नाके ।

४२-महा अजय संसार रिपु जीति सकहे सो बीर ।

जाके अस रथ होइ दह सुनहुँ सखा मातिधीर ॥ ८० ॥ (क)

सुनि प्रभु बचन विभीषन हेरिष गहे पद कंज ।

एहिँ मित्र मोहिँ उपदेसहुँ राम कृपा सुख पुंज ॥ ८० ॥ (ख)

उत पचन दसकधर देव आद देवमान ।

उत निराचर भुजि कपि निज निज प्रभु आन ॥ ८० (ग) ॥

सुर प्रजापति सिद्ध मुनि गाना । देखत रन नम चहै विमाना ॥
 हमहूँ उमा रहे गोहिं सभा । देखत राम चरित रन रंगा ॥
 सुमत समर रस दुहुँ दिखि माते । कपि जयसील राम बल गते ॥
 एक एक सन निरहि पचारहि । एकन्ह एक मरि मरि पारहि ॥
 मारहि काटहि धरहि पछारहि । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहि ॥
 उतर बिदारहि भुजा उधारहि । गहि पद अवाजि पटक मट जारहि ॥
 मट मरि मारहि भाइ । ऊपर ठारि देखि मरि मरि बाल ॥
 धीर जलमुख जुद्ध निकट । देखिअत त्रिपुल काल जनु कैट

७०-कैट कृतान्त समान कपि रन खवत सोनिन राजहो ।

मरिहि निराचर कटक भट बलवत धन निमि गाजहो ॥

मारहि चपटन्ह डारि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहो ।

बिकरहि मकट भुजि डल बल करहि बेहि खल छीजहो ॥ १ ॥

धरि गाल फारहि उर बिदारहि गाल आवाजि मोजहो ।

प्रह्लादपति जनु बिबिध वनु धरि समर आन खोजहो ॥

धरु मारु काटि पछार धोर निरा गान मरि मरि रही ।

जय राम जो रन ते कलिस कर कलिस ते कर रन सहो ॥ २ ॥

दो-निज रन बिचलत देखिनि बीस भुजा दस बाण ।

रम बाहि चलेउ दसमान फिटि फिटि करि दण ॥ ८१ ॥

सब सब सर सर दस भाला । गिरि छंगाई जनु प्रनिषहि ब्याला ।
 पुनि निजवान्हे कान्हे पहेरा । स्पंदन भोजि सरयी मारा ।
 कोटिन्हे आयुध रावन डरे । तिल प्रवान करि कोटि निघारे ।
 अस कहि छाडिनि वान प्रचंडा । लछिमन किए सकल सब खंडा ।
 खोजत रहेउ गौहि सुतवाती । आबु निपाति जुडवउ छाती ।
 रे खल का मरिसि कपि भाले । मोहि निखोजि तेर मै काळे ।
 लछिमन चले कैद होइ नाइ राम पद माथ ॥ ८२ ॥

श्री०-निज दल निकल देसि कटि करि निपग वजु दाय ।
 रघुवीर करन सिधु आन वधु जन रच्छक होरे ॥
 भयो अलि कोलाहल विकल कपि दल भाले बोलीहि आनरे ।
 रहे पुरि सर धरनी गगन दिसि बिदिंसि कहूँ कपि भगदोरे ॥
 छ०-संधानि वजु सर निकर छाडिंसि उरग जिमि उडि लगदोरे ।
 तेहि देखे कपि सकल पराने । दसहुँ चाप-सायक संधाने ॥
 पाहि पाहि रघुवीर गोसाई । पहे खल खाइ काल की नाई ॥
 चले पराई भाले कपि नाग । गहि गहि अंगद हेनुमाना ॥
 डोल उत झपटि दपटि कपि जोधा । मई लग मयउ अलि कोधा ॥
 चला न अवल रहा रघु रोपी । रन दुमुद रावन अलि कोपी ॥
 लगहि सैल वज्र तन तास । खंड खंड होइ फुटहि आस ॥
 गहि कर पादप उपल पहेरा । जगनिह ता पर एकाहि चारा ॥
 धावउ परम कैद दसकंधर । समुख चले हूँ ते बंदर ॥

पुनि सत सर मरा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं ॥
 उठा प्रबल पुनि मुकछा जगि । जहिंसि ब्रह्म दीन्हि जो सगि ॥
 छं-सौ ब्रह्म दंस प्रचंड सक्ति अनंत उर जगि सही ।
 परगो वीर बिकल उठाव दंसमुख अवल बल महीमा रही ॥
 ब्रह्मांड भवन विराज आकें एक सिर जिन राज कनी ।
 तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं विमुअन धनी ॥

टी०-देखि पवनसुत धामउ बोलत बचन कठोर ।

आवन कपहि हन्यो तेहिं सुनि प्रहार प्रघोर ॥८३॥

देकि कपि भूमि न निरा । उठा सूमारि बहूत विष मरा ॥
 एक ताहि कपि मरा । परेउ सैल जगु ब्रज प्रहरा ॥
 मुकछा गे बहोरि सो जगि । कपि बल विपुल सराहन जगि ॥

धिया धिया मम पौकप धिया मोही । जाँ ते बिअव रहेसि सुदोही ॥
 अस कहि लछिमन कहूँ कपि त्यागो । देखि दसानन विषमय पायो

कह खीर समुख जिय आवा । तुम्ह कताव मच्छक मुर जाला ॥
 सुनत बचन उठि बैठ कपाल । माई गानन सो सकति कपाल ॥

पुनि कोदंड गान गहि धाए । रिपु समुज आनि आतिर आए

छं-आतिर बहोरि विभंजि स्पंदन सुन हति व्याकुल किया ।

निगयो धरनि दंसकंधर बिकलतर गान सत बेधयो हियो ॥

सारथी दंसर धालि रथ तेहि वुरत लंका ले गया ।
 खीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि मयु चरनहि नयो ॥

१०-उहाँ दसानन जानि करि करै लग्न कछु जग्य ।

राम विरोध विजय चहै सठ हठ वस अति अय ॥८४॥

हैं विभीषन सब सुधि पाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥

प्र करइ रावन एक जाग । सिद्ध भए नहि मरिहि असमाग ॥

ठहड़ि नाथ बैगि भट भंटर । करहि विधस आव दसकंधर ॥

त होत प्रभु सुभट पठाए । दनुमदादि अंगद सब धाए ॥

वैदिक कैंदि चहै कापि लंका । पैंठ रावन भवन असंका ॥

प्र करत जगहैं सो देखी । सकल कपिन्ह मा कोष बिसेग ॥

न ते निजज भोजि गइ आग । इहौ आइ नकस्थान लगाय ॥

प्रस कहि अंगद भारा लगल । चितवन सठ स्वरथ मन राता

१०-नहिं चितव जव करि कोप कपि गहि दंसन लातन्ह मारहैं

धरि कंस गारि निकारि बाहरै बेलिदोन पुकारहैं ॥

तब उठउ कृद फलित सम गहि चरन बाहर जारहैं ।

एहि बीच कपिन्ह विधंस फल भव देवि मन महुँ हारहैं ॥

१०-जग्य विधंसि कुसल कापि आप रघुपति पास ।

चलेउ निमाचर कृद होइ लग्यनि जिवन कै आस ॥८५॥

चलत होहि अति असुम भयंकर । बौठहि गीध उड़ाइ सिरन्ह पर ॥

भयउ कालवस काहु न भाग । कहेसि राजावहु बुद्ध निमाना ॥

बली तभीचर अनी अपारा । गहुँ राजरथ पदाति असवारा ॥

प्रभु समुख धाए खल कैसै । सजम समूह अनल कहै जैसै ॥

वानर निषाचर निकर मर्दहिं राम वल दंष्ट्रिं भए ।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरहिं हए ॥

दो०-रावन दंडू विचारा आ निषाचर संगर ।

सु अकेल कपि भाछि बहू माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवद प्रभुहि प्यादे देवा । उज्जवा उर अति छेप निषेग ॥

सुरपति निज रथ उरत पठवा । हेरथ सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अर्जुण । हेरथ चहै कोसलपुर भूषण ॥

बचल व्रता मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥

रथाकट रथियाहि देखी । धाए कपि बछ पाइ निषेग ॥

सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया बिसारी ॥

सो माया रथियाहि गौची । लछिमन कपिन्ह सो मानी सौची ॥

देखी कपिन्ह निषाचर अनी । अनुज सहित बहू कोसलधनी ॥

छं-बहू राम लछिमन देखि मकंद भाछि मन अति अपहरे ।

जय विजय लखित समेत लछिमन जहूँ सो बहूँ चितवहिं सरे ॥

निज सेन चकित बिछोकि हूँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।

माया हरी हरि निमिष महुँ हेरपी सकल मकंद अनी ॥

दो०-बहूँ राम सब तन चितवै बोले बचन गौरी ।

दंडूज बहूँ सकल अमित भए अति बीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रथियाय चलावा । निप चरन पंकज सिंद नावा ॥

तब लंकेश कोष उर छावा । गजित वज्रित समुल धावा ॥

शिष्टे जे मट संजुग माहीं। सुनु तापस मै पितृ सम माहीं ॥
 जवन नाम जगत जस जाना। लोकप जाके बंदीखाना ॥
 वर दूषन विराध गुनह मारा। बंधेहुँ व्याध डेव गालि निचारा ॥
 नसिचर निकर सुमट संघारेहुँ। कुंभकरन धननादहि मारेहुँ ॥
 आहु अयक सब जेउं निबाही। जाँन भूष माजि नाहि जाही ॥
 आहु करतुँ खड्ग काल देवाले। परेहुँ कठिन रावन के पाले ॥
 सुनि दुर्वचन काल अस जाना। बिहूँसि बचन कहे कृपा निधाना ॥
 सत्य सत्य सब तब प्रभुताई। जल्पसि जानि देखत मनुसाई ॥
 छं०-जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनाहि करहि छमा।
 संसार महुँ पूरेष विविध पाटल रसातल पनस समा ॥
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल जागही।
 एक कहहि कहहि करहि अपर एक करहि कहत न बागही ॥
 दी०-रास बचन सुनि बिहूँसा मोहि सिखावत यान।

बयक करत नाहि तब डरे अब जाये प्रिय प्रान ॥ १० ॥
 काहे दुर्वचन कहुँ दसकंधर। कुलिस सम न लग जाई सर ॥
 नानाकार सिलीमुख धाप। दिसि अरु। नदिसि गगन माहि छापा
 पावक सर छाईउ रघुबीरा। छन महुँ जरे निसाचर बीरा ॥
 छाईसि तीव्र सति विरसिआई। गगन संग प्रभु फेरि चलाई ॥
 कोटिन्ह चक निखल प्यारै। बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥
 निफल होहि रावन सर कैसै। खल के सकल मनोरथ जैसै ॥

तत्र सप्त गान सारथी मारुति । पुरेउ भूमि जय राम पुकारिषि ।
 राम कथा करि सत्त उठवा । तत्र प्रभु परम कीध कहूँ पण ।
 ४०-भए कुँइ बिहूँ रघुपति गोन सायक कसमसे ।
 कोइँइ धुनि अलि चंड सुनि मज्जवाइ सब मान्य भसे ॥
 मंदोदरी उर कं पणव कमाउ भूँ भूँपर भसे ।
 निहरीहि दिगज दंसन गहि माहि देखि कौटुक सुरहसे ॥
 दौ०-तानीउ चाप भवन जगि छुई बिबिध कराल ।

राम मारान गन चले लहेलहेल जनु द्याल ॥ ११ ॥
 चले गान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहि देवेउ सारथी दुरगा ॥
 रथ निभंजि देति केवु पताका । गजार् अति अंतर गेल याका ॥
 दुरत आन रथ चोइ बिबिध आना । अख सख छुईहि बिधि नाना
 विफल होइ सज उद्यम ताके । बिनि पर्योइ निरत मनसा के ॥
 तत्र रावन दस सूल चलावा । गोजि चारि माहि मारि निरावा
 दुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खैचि सरसन छुई सायक ॥
 रावन सिर सरोज गनचारी । चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥
 दस दस गान भाल दस मारे । निरसि गए चले कौपर पनारे ॥
 खवल कौपर धायउ गेलवाना । प्रभु पुनि केत धनु सर संधाना ॥
 तीस तीस रघुवीर पनारे । भुजनिह समेत सीस माहि पारे ॥
 काटवटो पुनि भए नगोने । राम गहोरे भुज सिर छीने ॥
 प्रभु बहूँ बार बहूँ सिर हए । कटत क्षीटिनि पुनि गोन भए ॥

पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । आनि कौतुकी कोमलधाषा ॥
 रहे छाड़े नय सिर अक गार्ह । मानहुँ आभित कुहु अक राहुँ ॥
 छं-जनु राहुँ कुहु अनेक नय पय सवत सोनित धारही ।
 रघुवीर तीर पचंड जगहिँ भूमि सिरन न पावही ॥
 एक एक सर सिर निकर छेदे नय उज्जव इंसि सोहही ।
 जनु कौपि दिनकर कर निकर जहुँ नहुँ विधुवृन्द पावही ॥
 द्यौं-ललिम ललिम प्रभु हर रासु सिर ललिम ललिम होहिँ अपार ।
 सेवत विषय विषय ललिम निव निव नूनन मार ॥ १२ ॥
 दसमुख देखि सिरन्ह कै गार्ही । विस्मा मरन भई रिम गार्ही ॥
 गजेंद्र भई महा अपिमान्नी । जगज्ज दसहुँ सगहन लानी ॥
 सम भूमि दसकंधर कोल्पा । गरुड गान रघुपति रय लोल्पा ॥
 दंड एक रय देखि न परेऊ । जनु निहार भई दिनकर हरेऊ ॥
 दंडाकार सुरन्ह जय कोन्हा । तय प्रभु कौपि करमुख लोन्हा ॥
 सर निवारि रिपु कै सिर काटे । ते दिवि विदिति गगन महि पाटे
 काटे सिर नय मारग धावहि । जय जय धुनि करि मय उपजावहि
 कहै ललिमन सुधीव कपीसा । कहै रघुवीर कोमलधाषा ॥
 छं-कहूँ रासु कहि सिर निकर धाए देखि मकंद भनि चले ।
 संधानि धनु रघुवंसमानि हूँति सरनिह सिर बेधे भले ॥
 सिर माँझका कर काँझका गहि हरे हरेदन्हि वहुँ भिछाँ ।
 करि संधिर संधि मजनु भनहुँ संध्याम वट पूजन चली ॥

दी०-पुन दसकं ऋद्धं दौहं छाँडी सक्ति प्रवृद्ध ।

बली विभीषण सम्युख मनहुँ काल कर दंड ॥९३॥

आगत दैखि सक्ति अति धीरा । प्रनगरति भंजन एन मोरा ॥

व्रत विभीषण पाछे भेला । समुख राम सहैउ सोइ सेला ॥

लगा सक्ति मुखला कछु भई । प्रभु ऊन खल सुरह निकलई ॥

दैखि विभीषण प्रभु अम पायो । गहि कर पादा कुद्ध होइ पायो ॥

रे कुमान्य सठ भंद कुबुद्ध । तँ सुर नर मुनि नामा भिबुद्ध ॥

सादर सिव कहूँ सोस चढ़ाए । एक एक के कोटिन्ह पाए ॥

बैहिकारन खल अग लगी गौआ । अग तव कालि सोस पर गौआ ॥

राम विमुख सठ चढ़ेसि संपदा । अस कहि दौनिस माझ उर गादा ॥

छ०-उर माझ गादा प्रहार धोर कठोर जगत माहि परयो ।

दंस वदन सोनिन खबर पुनि संभारि धाया बिस मयो ॥

हौँ मिरे अतिबल मखुज्ज बिहद । एऊँ एकहि हने ॥

रघुबीर बल दंपुन विभीषणु धालि बहिँ वा कहूँ गनै ॥

दी०-उमा विभीषणु रावनहि सम्युख चित्रव कि काउ ।

सो अब भिरव काल जगु श्रीरघुबीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा अमित विभीषणु भयो । धाएउ दनमान गिरि धायो ॥

रथ वुरंग सारथी निपाता । दुरथ माझ बौह मारिष जता ॥

ठाढ़ रदा अति कंठित गाता । मणउ विभीषणु जहै जनगाता ॥

पुनि रावन कपि हनेउ पचायो । चलेउ गगन कपि पूँछ पचायो ॥

ॐ-संसारि श्रीरघुवीर धीर पचाहि कपि रावतु हन्या ।
 माहि परत पुनि उठि जखत द्वावन्ह जगाल कहूँ जय जय मन्गो ॥
 हनुमंत संकट दूहि मकूट माछि कोषावर चले ।
 रत मत्त रावन सकल सिधत प्रवृत्त भुज बल दंलमले ॥
 ॐ-जाना प्रताप ते रहे निभूष कपिन्ह निरुमाने करे ।
 षडे विचलि मकूट माछि सकल केषाल पाहि मयावरे ॥
 राहिष पूछ कपि सहेत उदंता पुनि फिरि भिसेउ प्रबल हनुमाना
 जखत अकास जगाल सम जोषा । एकहि एकु हेतव करि कोषा ॥
 सोहरे नम जल जल बहूँ करहो । कज्जलगिरि सुमेरु जनु ज्योही ॥
 बुध बल निविचर परहे न पारयो । तज माकतसुत प्रभु संभारयो ॥
 अंतरधान भयउ जन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥
 रघुपति कटक माछि कपि जेते । जहूँ तहूँ प्रगट दसनान तेते ॥
 देवे कपिन्ह आमत दसवीसा । जहूँ तहूँ भजे माछि अक कोषा ॥
 भाना जानर धरहि न धीरा । जाहि जाहि जलिमन खड्गोरा ॥
 दहूँ दिशि धावहि कोटिन्ह रावन । जाहिं धोर कठोर भयावन ॥
 डरे बकल भुज चले पराहे । जय कै आस तजहूँ अज भहे ॥
 सब भुज जिने एक दसकंधर । अज बहूँ भए त कहूँ निरि कंदर ॥
 रहे विरंचि भुंभु मुनि गगनी । जिन्ह जिन्ह प्रभु माहेमा कहूँ जान ॥
 ॐ-जाना प्रताप ते रहे निभूष कपिन्ह निरुमाने करे ।
 षडे विचलि मकूट माछि सकल केषाल पाहि मयावरे ॥

हनुमंत आगद नील नल आविबल लल रल बाँकुरे ।
 मरंहि दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥
 दो०—सुर वानर देखे बिकल हँस्यो कोसलाधीस ।

सजि सारा एक सर हरे सकल दसवीस ॥ १६ ॥
 प्रभु जन महुँ माया सब काटी । जिमि रति उए जाहि तम पाटी ।
 रावजू एक देखि सुर हस्यो । फिरे सुमन बहू प्रभु पर बरस्यो ॥
 भुज उठह रघुपति कपि फेरे । फिरे एक एक एकन्ह तब देखे ॥
 प्रभु बल पाइ माछ कपि धाए । तरल तमकि संजुग महि आए ॥
 अखिल करत देवगन्ह देखे । भयउ एक सँ इन्ह केलेखे ॥
 सठह सदा तबह मोर मरगल । अस कहि कोपि गगन पर धायल ॥
 होहोकार करत सुर भगो । खलहु जाहु कहूँ मोरु आगे ॥
 देखि बिकल सुर अंगद धायो । केहि चरन गहि भूमि निरायो ॥
 छ०—गहि भूमि पारयो जल मारयो बालिखुव प्रभु पहि गयो ।

दो०—तब रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।
 काट बहल बहै पुलि जिमि तीरथ कर पाप ॥ १७ ॥

संभारि उठि दसकंठ धोर कठोर रव गजब भयो ॥
 करि दप चाप चढ़ाई दस संधानि सर बहै बरषाई ।
 किपु सकल भट धायल भयाकुल देखि निज बल हारषाई ॥

सिर भुज बाहि देखि रिपु कपी । माछ कपिन्ह रिष महुँ धनोरी ॥
 मारन महुँ कटेहूँ भुज सीसा । धाए कोपि माछ भट कीसा ॥

निधिवर सकल रावनहि वेरि रहे अलि राम ॥१८॥

दो०-सुखटा निगत भाछि कपि सब आप प्रभु पास ।

निधि जानि स्वयंदा रणीलि वेरि तब सर्व जलज करत आयो ॥

सुखित विजयिक बहोरि पद हनि भाछिपति प्रभु पहरि गयो ।

गहि भाछि वीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निधिसुखकर ॥

छ०-उर जात घात प्रचंड जगत विकल रथ ते महि पयो ।

देखि भाछिपति निज दल घाला । कोपि माझ उर मारोसि जाला ॥

अथउ केछ रावन बलवाना । गहि पद महि पदकइ मर नाना ॥

सग भाछि अथर तर धारी । मान लो पचारि पचारि ॥

सुखित देखि सकल कपि गौर । जामवंत धायउ रनधौर ॥

हेतुमदादि सुखित करि बंदर । पाइ प्रदोष हेतुप दसकंधर ॥

गुनसकोप दस धनु कर लीन्है । सरन्हि मारि धायल कपि कीन्है ॥

कोपि कोदि द्यौ धरोसि बहोरि । महि पदकत भजे भुजा मारि ॥

गहे न जाहि करन्हि पर फिरही । जन जुग मधुप कमल जन चरही ॥

रधिर देखि विषाद उर मारि । तिनहहि धरन कहूँ भुजा पसारि ॥

तब नल नील सिरन्हि चरिं गयऊ । नखन्हि लिखार विदारत मयउ ॥

एक नखन्हि रिपु वधुष विदारी । भागि चलिहैं एक जलन्है मारि ॥

त्रिदश महीधर कयहि प्रहरा । सोइ निगिर तर गहि कपिन्है सो मारा ॥

गालितन्य मारति नल नीला । गनरराज दुनिद बलसीला ॥

तेही निधि सीता पाई जाई । बिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥
 सिर भुज गाहि सुनत रिपु कैरी । सीता उर भई ग्रास धरौ ॥
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । बिजटा सन बोली तब सीता ॥
 रोइहि कहा कहसि किन माता । कहि निधि मरिहि निख दुखदाता ॥
 रघुपति सर सिर कटि न मरई । निधि निपरीत चरित सब करई ॥
 मोर अमन्य जिआवत ओही । जेहि हो हरि पर कमल निछोही ॥
 जेहि कल कपट कनक मृग झूठा । अजहूँ सो देव मोहि पर लठा ॥
 जेहि निधि मोहि दुख दुख सहै । लछिमन कहूँ कहुँ बचन कहै ॥
 रघुपति निरह सविष सर मारी । तकि तकि मार मार गहूँ मारी ॥
 ऐसहुँ दुख जो राख मम प्राना । सोइ निधि ताहि जिआव न आना ॥
 गहूँ निधि कर निलाप जानकी । करि करि सुरति कथा निधान की ॥
 कह बिजटा सुन राजकुमारी । उर सर लगात मरई सुरी ॥
 प्रभु ताते उर हतई न तेही । एहि के हृदय बसति बैदेही ॥

४०-एहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम बास है ।
 मम उदर भुजन अनेक लगात बान सब कर नास है ॥
 सुनि बचन हरष विषाद मन अति देखि पुनि बिजटा कहा ।
 अब मारी रिपु एहि निधि सुबहि सुंदरि तजहि संसय मटा ॥

४१-काटत सिर रोइहि निकल छुटि जाइहि तब ध्यान ।
 तब रावणहि हृदय महुँ मरिहहि राख सुजान ॥ ४१ ॥
 अब कहि गहत माति समझाई । पुनि बिजटा निज भवन विधाई

राम सुमात्र सुमिरि ब्रह्मेही । उपजीविरह विद्या अति वेही ॥
निषिद्धि सखिह निंदति बहू भूती । जुगुप्सु मई सिरति न राती
करति बिलप मनहि मन भरी । राम बिरह जानकी दुखारी ॥
जग अति भयउ बिरह उर दाहू । फरकेउ नाम नयन अक बाहू ॥
सगुन विचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहि कपाल रघुवीरा
इहौ अवनिनिष राधु जगगा । निज सरथि सन लोक्षन लगा
सठ रनभूमि उडाइसि मोही । धिया धिया अयम मदमति वेही
वेहि पर गहि बहू विधि समुझावा । मोक भूरेय चहि पुनि धावा
सुनि आगवजु दसनन केरा । कपिदल खरभर भयउ धनेरा
जहूँ तहूँ भूरे ब्रिदप उपारी । धाए कटकटाइ मट भारी ॥

छं-धाए जो मकट बिकट भलि कराळ कर भूरे धरा ।
अति कोप करहि प्रहार मारत भलि चले रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवत कीसन्ह धीरे पुनि रावजु लियो ।
बहूँ दिसि चपेटन्ह मारि नखन्ह बिठारि नख व्याकुल कियो

छं-देखि महा मकट भवत रावन कीन्ह विचार ।

अंतरहित होइ निमेष महुँ ऊँत माया बिखार ॥ १०० ॥

छं-जब कीन्ह वेहि पावड । भए प्रगट जहुँ प्रचंड ॥

बोलाउ भूँत प्रियसच । कर धरु धरु नाराच ॥

जोगनि गहूँ कराळ । एक होथ मनुज कपाल ॥

कारि सब सोनिन पान । नाचहि करहि ॥

धरु मारु बोलहि धरे । राहि पूरि पुलि चहुँ ओर ॥ ३
 मुख बाहे पावहि खान । तब लगे कोस परान ॥ ४
 जहँ जाहि मकूट भानि । तहँ वरत देखहि आनि ॥ ५
 भए विकल वानर भानि । पुलि लगे बरषै बानि ॥ ६
 जहँ तहँ भक्ति कर कोस । गजव बहुरि दसवीस ॥ ७
 लछिमन कपीस समीप । भए सकल वीर अश्वेत ॥ ८
 हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट सीताहि होथ ॥ ९
 पहुँचि विष सकल बल वीर । बौहि कौन कपट बहोरि ॥ १०
 प्राटहि विपुल हनुमान । धारु राहे पावान ॥ ११
 निन्ह राम धरे धरे । चहुँ दिशि बल्य वनह ॥ १२
 मारहु परहु जान जाइ । कटकटाहि पूछ वडाइ ॥ १३
 दहुँ दिशि लंगूर विराज । बौहि मध्य कोसलराज ॥ १४
 ॐ-बौहि मध्य कोसलराज सुंदर स्वाम नन सोभा लहै ।
 जनु इंदवजुष अनेक की बर वारि गुंग वमालहै ॥
 प्रभु देखि हरष विषाद उर सुर वदन जय जय करी ।
 रघुवीर एकहि वीर कोषि निमेष महुँ माया देरी ॥ १५
 माया विगत कपि भानि हरष विपुल निरि गाहि सब किये ।
 सर निकर छाहँ राम रावन बाहुँ सिर पुलि मारि निरे ॥
 श्रीराम रावन समर वारि अनेक कल्प ओ गवाहै ।
 सब सेष सारइ निगम कलि तेज वरुणि पार न पावहै ॥ १६

श्री-वाक्ये गुन गान कञ्चु कहै जइमलि तुलसीदास ।

लिमि निज बल अचरुप ते माछी उडइ अकास ॥ १०१ (क) ॥

काटि सिर भुज बार बड मरत न भट लंकैस ।

प्रभु कीवत सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलैस ॥ १०१ (ख) ॥

काटत बटहि सीस समुद्रहुँ । लिमि प्रति जग जेम अधिकाहुँ

मरइ न रिपु अस मयउ विसेष । राम विभीषन जन तब देखी ॥

उमा काल मर जाकी डैछी । सी प्रभु जन कर प्राति परीछी ॥

सुत सरयय चराचर नायक । प्रनतपाल सुर मुनि सुखदायक

नामिकुंड रिपुष्य बस याकै । नाथ जिअत राजु गल वाकै ॥

मुनत विभीषन बचन कथाला । हरिय गइ कर जन कराला ॥

असुम होन जगो तब नागा । रोवहि खर सुकाल बड खाना

बोलहि खा जग अंगरति हैव । प्राट मर नम जइ तहुँ कैव ॥

दस दिशि दाह होन अति जगा । मयउ परब विजु रति उपरागा

मदोदरि उर कंपति मारी । प्रतिमा खचहि नयन मग मारी ॥

छं-प्रतिमा रुदहि पविपात नम अति बात बड डोलति मही ।

बराहहि बलाहक दीपूर कच रज असुम आनि सक को कही ॥

उतपात अमित बिबेकि नम सुर विकल बोलहि जग जग ।

सुर समग्र जानि कथाल रघुपति चाप सर जोरत मर ॥

श्री-छवि सरासन भवन जगि जइ सर एकवीस ।

खिनयक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥ १०२ ॥

सपक एक नाथ सर सीध। अपर लो मुज निर करि रोष॥
 है निर गढ़ चले नरनाच। निर मुज हीन कंठ माहे नाचा॥
 धरनि धसई धर धाव प्रचंड। तब सर होत प्रभु कृत दुई खंडा
 गजैउ मारत धोर रव मारी। कहौ राम रन होत पचासी॥
 डोलौ भूमि गिरत दसकंधर। छुनिमत सिधु सरि दिगज भूधर
 धरनि परेउ हो खंड गढ़ाई। चाप भाँज सकट समुदाई॥
 मंदोदरि आगो मुज सीधा। धरि सर चले जहाँ जगदीश॥
 प्रविसे सब निगम महुँ जाई। देखि सुरद दुहुमाँ जाई॥
 तब तेज समान प्रभु आनन। देखे देखि सभ चहियानन॥
 जय जय धुनि पूरी प्रसंदा। जय खगौर प्रबल मुजंददा॥
 नरघाई सुमन देव मुनि बंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा॥
 छं-जय कृपा कंद मुकुंद दंद दंद सरन सुखप्रद प्रभा।
 खल दल विदारन परम कारन कारनीक सदा विभा॥
 सुर सुमन वरघाई देख सकल बाज दुहुनि गहगहौ।
 संध्याम आनन राम अंग अंग। बहू सोभा लहौ॥१॥
 निर जटा मुकुट प्रसन विच विच अलि मनोहर गजहौ।
 जय नील निरि पर वडित पटल समेत उडगान आबहौ॥
 मुजंदद सर कोदंड करत रथीर कन वन अलि बने।
 जय राघमुनी तमाज पर बूढी विपुल सुख आपने॥२॥

भाँज कीस सब देखे जय सुख धाम मुकुंद॥१०२॥

टी०-कृपादाहि करि बूढि प्रभु अमय किण सुर बूढ।

एति सिर देखत मंदोदरी । मुकलित बिकल धरनि धरिपरी ॥
 जुगति बंद रोवत उठि धाई । तेहि उठाइ रागत एहि आई ॥
 एति गति देखि ते कहि पुकारा । छुई कच गहि गपुप सुगारा ॥
 उर लाइना कहि ब्रिधि नाना । रोवत करहि प्रताप अहारा ॥
 तब बल नाथ डोलि नित धरनी । तेजहीन एवक धरि तरनी ॥
 सेष कमठ सहि सकहि न भारा । सो तब भूमि परेउ धरि अहारा ॥
 बरन कुबेर सुखे समीरा । रनसमुख धरि कहि न धीरा ॥
 भुज बल जितेहि काल जम साई । आबु पसेइ अगाध की साई ॥
 जात बिदित गुहादि प्रभुतहि । सुत परितन बल भरनि न आई ॥
 राम विमुख अस डोल गुहारा । रक्ष न कीउ कुल रोवनिहारा ॥
 तब बस विधि प्रपंच सब नाथा । सम्य दिगिधरि नित गजहि भाथा ॥
 अथ तब सिर भुज जंकुल छाई । राम विमुख यह अविनिगोई ॥
 काल विवस एति कही न माना । आग जग नाथु मज्जित कहि जाना ॥
 डं-जान्या मज्जित कहि दंडुज कानन दंडुन पावत धरि सदा ॥
 तेहि नमन विव दण्डी । सुरेपिय मनेई गौड़ कल्याण ॥
 आजन्म ते परदेहि रत पापविम्वर तब मनु आय ॥
 तुमहे दिव्यो नित धाम राम नामसि अह निगम्य ॥

टी०-अहेइ नाथ दंडुनाथ सम ऊंचा दिव्य गौड़ आय ॥

गोवि बंद देउस गति गौड़ दीनि पावत ॥ १०२ ॥

मंदोदरी बचन भनि काना । सु मनि निह सखिदे सुख भाना ॥

अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिनर परमात्मजादी ॥
 भूरि लोचन खण्डितहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥
 कदन करत देखी सब नारी । गणउ विभीषण मन दुख भारी ॥
 बंधु दत्ता विज्ञानिक दुख कीन्हे । तब प्रभु अजुवाहि आपसु दीन्हे
 लछिमन वेदि बहू विधि समझायो । बहूरि विभीषन प्रभु पढ़ि आयो
 कथा दहि प्रभु ताहि बिलोका । करहु किया पारिहरि सब सोका ॥
 कीन्ह किया प्रभु आपसु मानी । विधिवत देस काल बिष जानी ॥

दो०—संदोहरी आदि सब देहे बिलंबलि चहि ।

भवन गहूँ खण्डित गुन गन बरनत मन माहि ॥ १०५ ॥
 आहु विभीषन पुनि निरु नायो । कृपासिंधु तब अजुज बोलायो ।
 पुन्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत माकति नयबीला ।
 सब मिलि जाहु विभीषन साधा । सारेहु बिलक कहैउ रथनाथा ।
 पिता बचन मैं नगर न आवहु । आयु ससिस कपि अजुज पठवु ।
 वरत चले कपि मुनि प्रभु बचन । कीन्हे जाइ बिलक की रचना
 सादर सिंहासन बैठारी । बिलक सारि अखंडि अजुजारी
 जोरि पानि सज्जही सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पढ़ि आए
 तब खचीर गोलि कपि लोन्हे । कहि प्रिय बचन सुखी सब कीने
 छं—किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल गुहारे निरु हयो
 पायो विभीषन राज लिहूँ पुर जसु गुहारे निरु नयो

अब महेस नारद सनकादी । जे मुनिनर परमपरमगोपी ॥
 भरी लोचन खपतिहि निहरी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥
 कदन करत देखी सब गारी । गवउ विनीपन मन कृख मारी ॥
 बंधु दसा बिजोकि कृख कीन्दी । तब प्रभु अनुजहि आपसु दीन्दी
 लछिमन बेहि गहु बिधि समझायो । गर्दनि विनीपन प्रभु पहिँ आयो
 केपा दहि प्रभु लीहै बिजोका । करहुँ किया परिदेहि सब सोका ॥
 कीन्है किया प्रभु आपसु मानी । बिधिवत देस काल जिय जानी ॥
 दो०—मंदोदरी आदि सब देइ लिलंजलि राहि ।
 भवन गहूँ खपति गुन गन बरनत मन माहि ॥ १०५ ॥
 आइ विनीपन पुनि सिक नयो । कृपासिंधु तब अनुज बोलयो ॥
 पुनह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत माकति नयसीला ॥
 सब मिलि जाइ विनीपन साया । सारहुँ लिळक कहेउ खिनया ॥
 पिता बचन सँ नगर न आवउँ । आयु सरेस कपि अनुज पठावउँ
 पुनत चले कपि सुनि प्रभु बचना । कीन्दी जाइ लिळक की रचना ॥
 सादर सिंहासन बैठरी । लिळक सारि अखलि अनुसारी ॥
 जोरि पानि सज्जही सिर नार । सहित विनीपन प्रभु पहिँ आए ॥
 तब खचिगिर गोलि कपि लीन्है । कहि प्रिय बचन सुली सब कीन्है ॥
 छ०—किपु सुली कहि बानी सुधा सम बल पुनहरे पिपु हयो ।
 पायो विनीपन राज लिहूँ पुर जस पुनहरो निर नयो ॥

॥ १० ॥
 तत्र देवमान राम पतिं जाई । जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥
 अत्र सीत जवन करई पुनः ताला । देखौ नयन स्वाम मई गाला ॥
 सावित्र कुल कोसलपति रहई समेत अनंत ॥ १० ॥
 टी०—सुख सुख सद्यः सकल तव देव बसई देवमंत ।
 रत्न जीति निरु दल बंधु जल पस्यामि राममनामय ॥
 सुख मातु मं पायो आखिल जग राख अख न संसय ।
 का देव तोहि डैलक मई कपि किमपि नहिं बानी समा ॥
 छं—अति हरष मन मन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा
 आनिचल राज निमीषन पायो । सुनि कपि बचन हरष उर जयो ॥
 सख निधि कुसल कोसलधीसा । मातु समर जीयो दससीसा ॥
 कहई ताल प्रभु कथा निकला । कुसल अजुन कपि सेन समेत ॥
 दूहिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । रखपति दैव जानका चीन्हा ॥
 भई प्रकार निन्ह पूजा कीन्ही । जनकसुता देखई पुनि दीन्ही ॥
 तत्र देवमंत नगर मई आए । सुनि निषिचरी निषाचर घाए ॥
 समाचार जानकिहि सुनावई । रास कुसल लै पुनः चलि आवई ॥
 पुनि प्रभु बोलि लिखत देवमाना । लंका जाई कहैउ भगवाना ॥
 बार बार फिर जावहिं गह्वरिं सकल पद कंज ॥ १० ॥
 टी०—प्रभु के बचन श्रवण सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।
 संसार सिंधु अपार पार प्रयास निरु नर पाइई ॥
 मोहि सहित सुख कीसति पुनः हीन परम प्रीति जो गाइई ।
 * लंकाकाण्ड *
 ५४५

सुनि सदेसु मायुक्लभूपन । गोलि लिपु जगत्तज निमीषन ॥
 मावतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥
 पुतरहि सकल गए जहु सीता । सुवहि वन निविषय विनीता ॥
 बेगि निमीषन तिनहि सिखायो । तिनहु बहू बिधि मजन करवायो ॥
 बहू प्रकार भूपन पहिराए । विचित्रा चरित्र चालि पुनि ल्याए ॥
 ता पर हरि चरी बैसेही । सुनिअ राम पुत्र धाम सनेही ॥
 वेतपाणि रज्जुक चहुँ पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥
 देखन माछ कोस सन आए । रज्जुक कोषि निवारन धाए ॥
 कह रघुबीर कहा सम मानहु । सीताहि सखा प्यादु आनहु ॥
 देखहुँ कोष जननी की नाहु । बिहसि कहा रघुनाथ गोसाहु ॥
 सुनि प्रभु बचन माछ कोष हरये । नमहि मन बहू वरये ॥
 सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रभा

जौ मन बच कम मम उर माहीं। लजि खीर आन गति नही॥
तौ कसलु सब कै गति जाना। मो कहूँ होउ श्रीखंड समाना॥

३०-श्रीखंड सम पावक प्रवेश किया सुमिरि प्रभु मैथली।

जय कोसलेस महेस बाँटव चरन रति आनि निमोली॥
प्रतिविंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महुँ जौ।

प्रभु चरित काहुँ न लखे नम सुर सिद्ध मुनि देखहि खरे॥१॥
धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रित जाग विदित जौ।

जिमि शीरसागर डेढ़िया रामहि समर्पौ आनि सो॥
सो राम नाम विद्याग राजति खिचर अलि सोभा भली।

नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली॥२॥

दो०-वरपाहिँ सुमन हरौष सुर बाजहिँ गगन निमान।

गावहिँ किंनर सुरवधूँ नचाहिँ चर्छी विमान॥१०९(क)॥

जनकसुता समेत प्रभु सोभा आमत अपर।

देहिष भाछि कपि हरष जय खपति सुख सार॥१०९(ख)॥

तब खपति अनुसासन पाई। मालिच चलेउ चरन निरक नाई।

आए देव सदा स्वरधी। बचन कहहिँ जनु परमारधी॥

दौन बंधु दयाल खुराया। देव कीन्हिँ देवन्ह पर दया॥

निख डोह रत यह खल कामी। निज अव गपउ केमारगामा

ब्रह्म समक्ष प्रह्व अतिनासी। सदा एकरस सहज उदासी॥

एकल अगुन अज अनव अनामय। अजित अमोघसक्ति करुनाम

मीन कमठ सुकर नरहरी। बामन परचुराम वपु धरी ॥
जब जब नाथ सुरन्ह दृष्ट पायो। नाना तज धरि गुहहूँ नसयो ॥
यह खल माइन सदा सुरद्रोही। काम लोभ मद रत आति कोही ॥
अधम सिरामनि तब पद पावा। यह हेमूँ मन निषमय आवा ॥
हेम देवता परम अधिकारी। स्वरथ रत प्रभु भगति निषारी ॥
भव प्रवाहूँ संतत हेम परे। अन्न प्रभु पाहिँ सरन अनुसरे ॥
दो०—करि विनती सुर सिद्ध सब रहे जाहूँ तहूँ कर जोरि।

आति सप्रभ तन पुलकि विधि अस्वित करत बहोरि ॥ ११० ॥
छं—जय राम सदा सुखयाम हरे। रघुनाथक सायक चाप धरे ॥
बारन दारन सिद्ध प्रभो। गुन सगार नगर नाथ बिभो ॥
ना. काम अनेक अनप छवी। गुन गावन सिद्ध मुनींद्र कवी ॥
जसु पावन रावन नाग सदा। खगनाथ जया करि कोप राहा ॥
जन रंजन भंजन लोक भय। गलकोष सदा प्रभु बोधमय ॥
अवतार उदार अपार गुन। महि भार बिभंजन ग्यानधन ॥
अन व्यापकभूमकमनादि सदा। कफनाकर राम नमामि मुदा ॥
रखिबस विमोघन दूषन हरे। ऊँत भूप बिभीषन दोन रहे ॥
गुन ग्यान निधान अमान अज। नित राम नमामि विभुं विरज ॥
मुजदंड प्रबह प्रताप बल। खल बंद निकट महा कुसल ॥
विबु कारन दोन दयालु हित। इति राम नमामि रामा सहित ॥
भव तारन कारन काज परे। मन संभव दान दोष हरे ॥
सर चाप मनोहर जीन धरे। जलजालेन लोचन भूपवरे ॥

१०-अबुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाश्रम-
 सोमा देवि देवि मन अखिल कर सु-

वार वार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ देवि गए सुरधामा ॥
 सगुनोपासक मोछ न छेई । निन्द कहूँ राम भगति निज देई ॥
 ताते उमा मोछ नहि पाये । दसरथ भेद भगति मन लये ॥
 खपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितवहि पतिहि दीन्है उदं याना ॥
 सुनि सुत वचन प्रीति अति वाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥
 तात सकल तब पुन्य प्रभाऊ । जीयाँ अजय निराचर राऊ ॥
 अबुज सहित प्रभु वंदन कीन्त । आसिरवाद पिलाँ तब दीन्त ॥
 तेहि अगसर दसरथ तहँ आए । तनय विजोकि नयन जल जाए ॥
 सोमासिंधु विजोकर लोचन नहिँ अघात ॥ ११ ॥

१०-विनय कीन्हि चरितानन प्रेम पुलक अति गात ।

नृप नायक हे वरदंननिभं । चरनांजल प्रभु सदा सुभदं ॥
 खल खंडन मंडन रम्य जमा । पद पंकज सेवित समु उमा ॥
 जाहि ते विपरीत बिद्या करिपु । दुख सो सुख मानि सुखी चरिपु ॥
 अब दीनदयाल दया करिपु । मात माति निभेदकरी करिपु ॥
 विग जीवन देव सरीर हेरे । तब भक्ति बिना भव भूलि परे ॥
 कृतकृत्य बिभो सब वानर पु । निरखलि तवानन सादर पु ॥
 डोलि डोलि बढति न दंतकथा । रीव आलप भिन्नमभिन्न जथा ॥
 अनवध अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होइ न गो ॥
 सुख मंदिर सुंदर श्रीरामन । मंद मार सुधा समता समन ॥

छं-अथ राम सीमा धाम । दायक प्रवत विशाम ॥
 एत शीत वर सर चाप । मुजदंढ प्रवत प्रवाम ॥ १ ॥
 जय दूषणारि खरारि । मर्दन निषावर धारि ॥
 यह दंड मारिउ नाथ । अप दैव सकल सनाथ ॥ २ ॥
 जय वरेन धरनी धार । महिमा उदार अपार ॥
 जय रावणारि कृपाळ । किणु जातिघन विहाळ ॥ ३ ॥
 लंकेश आनि वल गवू । किणु वल सुर गववू ॥
 मुनि सिद्ध गरुडा नाग । हठि पंथ सब कू जाग ॥ ४ ॥
 परदंडे रत आनि दंड । पायो सो फळ पापिण्ड ॥
 अब सुनई दीन दयाळ । गजीव नयन विखाळ ॥ ५ ॥
 मोहि रहा आनि अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥
 अब दंडेलि मयु पद कंज । गत मान प्रदं दंडपुंज ॥ ६ ॥
 कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अद्यक जेहि श्रुति गाव ॥
 मोहि भाव कोसल भूष । श्रीराम सगुन सख ॥ ७ ॥
 वैदेहि अजुज समेत । मम दंदयु करई निकेत ॥
 मोहि जानिउ निज दास । दै भक्ति रमानिवास ॥ ८ ॥
 छं-दै भक्ति रमानिवास । गल हरेन सरन सुखदायक ॥
 सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनाथक ॥
 सुर वृंद रंजन दंद भजन मयुज ववु अवलिखवळ ॥
 ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करेना कोमळ ॥

दो०-अब करि कृपा विछोकि मोहि आयसु देई कृपाल ।

काहे कसौ सुनि प्रिय वचन बोले दीनदयाल ॥ ११३ ॥

सुन सुनपति कपि भालि देखारे । परे भूमि निसिचरहि जे मारे ॥

मम हित लगी तजे इन्ह प्राना । सकल लिआउ सुख सुजाना ॥
सुख लगेस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहि मुनि यानी ॥

प्रभु सक विभूषन मारि लिआई । केवल सकहि दीन्हि भंडाई ॥

सुधा वरषि कपि भालि लिआए । देखि उठे सब प्रभु पाई आए ॥

सुधा वहि भूई दल ऊपर । लिए भालि कपि नहि रजनीचर ॥

रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छुटै भव बंधन ॥

सुर अंगिक सब कपि अक दीछा । लिए सकल रघुपति की दंडा ॥

राम ससिस को दीन हितकारी । कीन्हि मुकुट निषाचर झारी ॥

वल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिचर पावन ॥

दो०-सुमान वरषि सब सुर चले चलि चलि सचिरे विमान ।

दीखि सुअवसर प्रभु पाई आयउ सभ सुजान ॥ ११४ (क) ॥

परम प्रीति कर जोरि जग नानि नयन मारि वारि ।

पुलकिव तन गदगद गिरा विनय करत विप्रगिरि ॥ ११४ (ख) ॥

७०-सामाभिरक्षय रघुकिउ नायकावन वर चाप सचिरे कर सायक ॥

मोहि मही वन पटल प्रभजन । संसय विधिअ अनल सुर रंजन ॥

अगुन समुन गुन मंदिर सुंदर । अस तम प्रवल प्रताप दिवाकर ॥

काम कोष मंद गज पंचानन । बसई निरंतर जन मन कानन ॥ ११५ ॥

विषय मनोरथ पुंज कंज वन । प्रबल त्रुपार उदार पार मन ॥
 भव गारिषि मंदर परम दूर । वारय लारय संसति दुस्तर ॥ ३ ॥
 काम गाल राजीव बिजोचन । दीन बंधु प्रनाराति सोचन ॥
 अमृत आनकी सहित निरंतर । बसहु राम चंप सम उर अंतर ॥ ४ ॥
 सुनि रंजन माहि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु नाम बिबुडन ॥ ५ ॥

टी०-नाथ जबहि कोसलपुत्री होइहि तिलक तुम्हार ।

कृपासिंधु मैं आउव देवन चरित उदार ॥ १५ ॥

करि विनती जब संधु सिधाए । तब प्रभु निकट विभीषण आए

नाइ चरन सिद्ध कह मुहु गानी । विनय सुनहु प्रभु सारूपाणी ॥

सकुल सदल प्रभु रावन मारयो । पवन जब प्रियुवन बिलारयो

दीन महीन दीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्ह बहू माती ॥

अव जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मज्जन करिअ समर भ्रम छीजे ॥

देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहूँ मुदा ॥

सब विधि नाथ माहि अपनइअ । पुनि माहि सहित अवधपुर जाइअ

सुगत वचन मुहु दीनदयाल । सबल भए दौ नयन बिसाल ॥

टी०-तीर कोस गृह मोर सब सत्य वचन सुन आत ।

भरत दुःख सुमिरत माहि निमिष कल्प सम आत ॥ १६ (क) ॥

राघव शेष गाल कंस अपत निरंतर माहि ।

देखी बेगि सो जगज कर सखा निहोरूँ गोहि ॥ १६ (ख) ॥

वीरौ अवधि जाडू जौ निअव न पावडू वीर ।

(ग) सुमिरत अजुज प्रीति प्रभु पुलि पुलि पुलक सरीर ॥ ११६ (ग)

करुई कल्प भनि राज प्रभु मोहि सुमिरुई मन माहि ।

(घ) पुलि सम धाम पाइरुई जहाँ सब सब जाहिं ॥ ११६ (घ)

नत विभीषन बचन राम के । हेरपि गहै पद कृपाधाम के ॥

नर भाउ सकल हेरधाने । गहि प्रभु पद गुन निमल बखाने

हैरि विभीषन भवन सिधायो । मनि यान बसन विमान भरायो ॥

पुष्पक प्रभु धाम राख । हैसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥

हिं विमान सुतु सखा विभीषन । गगन जाइ भरपहु पट भूषन ॥

म पर जाइ विभीषन तबही । बरषि दिए मनि अंगर सजही ॥

इ जेइ मन भावइ सोइ जेही । मनि मुख मोलि जारि करि देही

व राम श्री अजुज समेता । परम कौटुकी कृपा निकेता ॥

०-सुनि जेहि ध्यान न पावहिं नेलि नेलि कह वेद ।

(क) कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक बिनोद ॥ ११७ (क)

उमा जीग जप दान तप नाना मख जन नेम ।

(ख) राम कृपा नाहिं करहिं बसि बसि निरंकुश प्रेम ॥ ११७ (ख)

छ कपिन्ह पट भूषन पाए । पहिरि पहिरि खियनि पाहिं आए ॥

ना जिनस देखि सब कीसा । पुलि पुलि हैसल कोसलधीसा ॥

वतइ सगहिं पर कौटुकी दाया । बोले महुल बचन खुराया ॥

हरे बल मैं रावजु मारयो । तिलक विभीषन कहै गुनि सारयो

निज निज गृह अब गृह सब जाई । सुनिगई मोहि डरपई जानि काई
 सुनत वचन प्रभाकल जानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥
 प्रभु जोइ कहइ गृहहि सब सोइ । हमरु होत वचन सुनि मोइ ॥
 दीन जानि कपि किए समाधा । गृहइ कैलोक इंस खिनाधा ॥
 सुनि प्रभु वचन लज हम मारौ । मरक कहुँ खगपति हित कारौ ॥
 देखि राम कख जानर दीछ । प्रेम मान गहि गृह कै ईछ ॥
 टी०-प्रभु श्रुति कपि आछु सब राम रूप उर राखि ।

(क) हरष विषाद सहित चले विनय विविध विधि माधि ॥ ११८ (क)
 कपिपति नील दीप्यति अंगद नल हनुमान ।
 सहित विनीषन अपर जे ब्रूयप कपि बलवान ॥ ११८ (ख)
 कहि न सकहि कछु प्रेम वस माधि मरि लोचन धारि ।
 समुल निववहि राम जन नयन निमेष निवारि ॥ ११८ (ग)

आसिष्य प्रीति देखि खुराई । लीन्है सकल विमान चढ़ाई ॥
 मन महुँ विष चरन विर नया । उत्तर दिशिहि विमान चलया ॥
 चलत विमान कोलाहल होई । जय खुरार कहइ सब कोई ॥
 सिंहासन आनि उख मनोहर । श्री समेत प्रभु बैठे ता पर ॥
 राजत राम सहित माहिनी । मेक सुग जग घन दामिनी ॥
 कवि विमान चलेउ आनि आवर । कीन्है सुमन घोड़ि हरष खुर ॥
 परम सुखद चलि विविध नया । सागर सर मरि निर्मल गयी ॥
 सगुन होहि सुंदर चहुँ पाखा । मन प्रसन्न निर्मल नम आखा ॥

कपिन्ह संहित विग्रह कहूँ दान विविध विधि दीन्ह ॥ १२० (ख) ।
 पुनि प्रभु आहूँ निवेनीं हरिधर भजवु कीन्ह ।

सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरिधर राम ॥ १२० (क) ॥
 टी०—सीता सहित अवध कहूँ कीन्ह केपाल प्रनाम ।
 पुनि देखे अवधपुरी अति पावनि । विविध तप भव रोमा नसवानि ॥
 देखे परम पावनि पुनि वेनी । हरिनि सोक हरि लोक निसेनी ॥
 तीरथपात पुनि देखे प्रयागा । निरखत जन्म कोटि अव भयागा ॥
 पुनि देखी सुरसरी पुनीता । राम कहा प्रनाम कर सीता ॥
 बहुरि राम जानिकहि देखे ॥ जमुना कलि मल हरनि सुदेह ॥
 तहूँ करि मुनिन्ह कर संतोषा । चला विमान तहूँ ते चोखा ॥
 सकल विधिन्ह सन पाइ असीसा । निचकैट आए जगदीसा ॥
 कुंभजादि मुनिनाथक नाग । गए राम सब के अस्थाना ॥
 उत्तर विमान तहूँ चलि आया । दंडक वन जहूँ परम सुदेवा ॥
 सकल देखाए जानिकहि कहे सबन्हि के नाम ॥ ११९ (ख) ॥
 जहूँ जहूँ केपासिंघ वन कीन्ह वास विश्राम ।

सीता सहित केपानाथ समुहि कीन्ह प्रनाम ॥ ११९ (क) ॥
 टी०—इहो सेतु ब्रह्मा अरे थापेहूँ सिव मुख धाम ।

कुंभकरन रावन हो भाई । इहो हवे सुर मुनि दुखदाई ॥
 हनुमान अंगद के मारे । रन माहि परे निराचर मारे ॥
 कहे खिचोर देखे रन सीता । लछिमन इहो हन्यो इंदजीता ॥

प्रभु हेमन्तहि कहा बुझाई। धरि नई रूप अवधपुर जाई ॥
 भरतहि कुसल हेमरि सुनाएई। समानार लै वृषह चलि आएई ॥
 वृष पवनसित गवनत भयक। तब प्रभु भरदोज पहि गयक ॥
 नाना विधि सुनि पूजा कीन्है। अखिल करि पुनि आशिष दीन्है
 सुनि पद बंदि जुगल कर जोरि। चढ़ि विमान प्रभु चले नइहि ॥
 इहौ निषाद सुना प्रभु आए। नाव नाव कहूँ लोग बोलए ॥
 कुसरि नाथ जान तब आयो। उतरै तट प्रभु आयसु पायो ॥
 तब सीता पूजा सुरसरी। नई प्रकार पुनि चरनहि पायो ॥
 १० असीस हरि मन गागा। सुंदरि तब आइवाल अभंगा ॥
 सुनत गृहो धावउ प्रभाकुल। आयउ निकट परम सुख संकुल
 प्रभुहि सहित बिलोकि नैदेही। परउ अवाति तन सुधि नहि नैही
 प्रीति परम बिलोकि खुराई। हरणि उठई लियो उर लाई ॥
 छं-लियो हेतूँ लाई कृपा निधान सुजान रायू रमापती।
 ब्रह्मरि परम समीप ब्रह्मी कुसल सो कर वीनती ॥
 अब कुसल पद पंकज बिलोकि विरंचि संकर सेव्य है।
 सुख धाम परनकाम राम नमामि राम नमामि है ॥ ११ ॥
 सब भाँति अवध निषाद सो हरि भरत ज्यो उर लाईयो।
 मलिनद विलसीदांस सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
 यह रावनाहि चारुन पावन राम पद रतिप्रद सदा।
 कामादिहर विद्यानकर सुर सिद्ध सुनि गानहि सुदा ॥ १२ ॥



(लंकाकाण्ड समाप्त)

षष्ठः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमदमरचरितमानसे सकलकविकण्ठविश्वंसे

मासपरायण, सप्तद्वैतसर्व विश्राम

श्रीरघुनाथ नाम तत्रि तद्विना आन अथार ॥ १२९ (ख) ॥

यह कलिकाल मलयवन मन करि देखि विचार ।

विजय विभूक विभूति निव निन्दहि देखि भगवान् ॥ १२९ (क) ॥

श्री०-समर विजय रघुवीर के चरित जे सुनिहि सुजान ।

* लंकाकाण्ड *

॥ जगज्जोता मिले सगहि कपाल ॥

अग्निव रूप पाटे रोहि काल ।



गणेश प्रणाम

केकीकामनीं सुरवलिखसिद्धपादांजलिह
 शोभाय पीतवखं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
 पाणी नाराचवापं कपिनिकरयुतं वन्द्यना सेव्यमानं
 नौमीक्यं जानकीदां रघुवत्सनिदां पुष्पकादरोमम् ॥ १
 कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुली कोमलवज्रमहेदोवन्दनी ।
 जानकीकरसरोजालिनी चित्रकस्य मलयङ्गसङ्घिनी ॥ २

श्लोक

(उत्तरकाण्ड)

सप्तमोऽध्यायः

—ॐ—

श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीजानकीपञ्चमी विजयते

नमः श्रीगणेशाय नमः

सुनि भरत बचन विनीत अति कवि गुलिकि वन चरनहि परयो ॥
 छं-निज दास ज्या खिबसभेवन कबहुँ मम सुमिरन करयो ।
 कहुँ कवि कबहुँ कृपाल गोसाहूँ । सुमिराहुँ मोहि दास की नाहूँ ॥
 तन हनुमंत नाहूँ पद माया । कहै सकल खिपति गुन माया ॥
 नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनावहुँ मोही ॥
 एहि सदेस सरिस जग माहौ । करि निचार देखेउ कहुँ नाहौ ॥
 बार बार बूझी कुसलाता । तो कहूँ देखूँ कह सुन आता ॥
 कपितव दरस सकल दुख बीजे । मिले आखि मोहि राम पिये ॥
 मिलत प्रेम नाहूँ हृदय समान । नयन खवल जल पुलकित गात ॥
 दीन बंधु खिपति कर किकर । सुनत भरत भेदेउ उठि सादर ॥
 मागत सुत मैं कवि हनुमान । नाम मोर सुन कृपा निधान ॥
 को गुनह तात कहाँ ते आए । मोहि परम प्रिय बचन सुनाए ॥
 सुनत बचन निबसै सब दुख । वेधावंत जिमि पाइ प्रियुषा ॥
 प्रियु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अगुज प्रभु आवत ॥
 खिकल तिलक मुजन मुखदाता । आपउ कुसल देख मुनि जाता ॥
 जासु निरहूँ सोचहुँ दिन राती । रटहुँ निरंतर गुन गन पाती ॥
 मन माहूँ बहृत माँति मुख मानी । बोलैउ श्रवन सुधा सम गानी ॥
 देखत हनुमान आति हरेषेउ । पुलक गात लेचन जल बरषेउ ॥
 राम राम खिपति जगत खवल नयन जळजात ॥ १ (ख) ॥

रघुवीरनिज मुख जासु पुन मन कहैत अगजग बाध जो
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सबहुन सिधु सो

दो०—रासमान प्रिय बाध कहै सब बचन सम तल ।

पुनि पुनि मित्र भएत सनि हेरष न हेर्यु समात ॥२॥ (क)

सो०—भएत चरन सिरे नाइ छुटि गयउ कोष राम पहि ।

कही कसल सब जाइ हेरषि चलेउ प्रभु जान चहि ॥२॥ (ख)

हेरषि भएत कोसलपुर आए । समाचार सब गुरहि सुनाए ।

पुनि माँदर माँ बाल जनहि । आवत नगर कसल खराइ ।

सुनत सकल जननी उठि धाई । कहि प्रभु कसल भएत समझाई ।

समाचार पुरवाहिन्ह आए । नर अक नारि हेरषि सब धाए ॥

दाँधि दुर्गा रोचन फल फूल । नव तुलसीदल मंगल भूला ॥

भरि भरि हेम धार भाँसनी । गावत चलि सिधुगामिनी ॥

जो बैसेहि तैसेहि उठि धावाहि । बाल बद्ध काँहें संग न लावाहि ॥

एक एकन्ह कहैं बँझाहि माँ । जह देखे दयाल खराइ ॥

अवधपुरी प्रभु आवत जानी । माँ सकल सोमा कै खानी ॥

बहइ सुहेवन त्रिविध समीप । माँ सरज आनि निर्मल नीप ॥

दो०—हेरषि गुर पवित्रन अजुन भूसुर बँद समेत ।

चले भएत मन प्रेम अलि समुख कृपानिकेत ॥३॥ (क)

बहुतक चर्छी अटारिन्ह निरखहि गगन विमान ।

दंलि मधुर सुर हेरषि कयहि सुमंगल गान ॥३॥ (ख)

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

શ્રી-અવતરેશ્વરજી સ્વાસ્થ્ય સર્વ કૃપા પ્રિય મનાવત ।

याका सति यद्यपि न हि संविद्विद्वत् ।

*** 2014222 ***

एहि विधि सगहि सुखी करि राम । आगि चले सोल गुन धाम ॥
 उन माहि सगहि मिले भावान । उमा मरम यह कहूँ न जान ॥
 कृपा दहि खीरि मिलेकी । किए सकल नर नारि विशेषी ॥
 आसन रूप प्राटे रोहि काल । जयाजोग मिले सगहि कृपाल ॥
 प्रभावर सब लेग निहरी । कौतुक कौन कह्यो लखरी ॥
 प्रभु मिलेकी दूरी पुरवासी । जानि विषम विपति सब नारी ॥
 सीता चरन मरत फिर नारा । अगुज समेत परम सुख प्रा ॥
 मरतगुज लखिमन पुनि भेटे । दुखह निरह समवर्द्ध भेटे ॥
 लखिमन मरत मिले तब परम प्रेम दोख भाई ॥ ५ ॥

टी०-पुनि प्रभु हरि सगहन भेटे हेतुं उगाई ।

वृंदत निरह वारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥ २
 अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।
 सुख सिवा सो सुख बचन मन ते मिल जान जो पावई ॥
 वृंदा कृपानिधि कुसल मरतहि बचन बोली न आवई ।
 अब प्रेम अक सिंगार तब धरि मिले बर सुपमा कह्यो ॥ ३
 प्रभु मिलत अबुजहि सोह मो पाई जानि नहि उपमा कह्यो ॥
 अति प्रेम हेतुं उगाई अबुजहि मिले प्रभु निमुअन धनी ॥
 छ०-राजीव लोचन खवत जल तन लखित पुलकावलि बनी ।

स्वामल गाल रोम भए ठाई । नवराजीव नयन जल गेई ॥
 पर भूमि नहि उठत उठाए । नर करि कृपासिंधु उर लाए ॥

पुर सोभा संपति कल्याण। निगम सेष समदा प्रखान।
 कहि आरती आरतिहर के। रघुकुल कमल विपिन दिनकर
 कंचन थार आरती नाना। जगतो सब कहि सुम गाना।
 जहै तहै नारि निछावरि करही। देखि असीस हरष उर मरही॥
 नाना भाँति सुमंगल सजि। हरष नार निमान गह गोजे॥
 वीथी सकल सुगंध सिंघाई। गजमनि रनि गह चौक पुराई॥
 बंदनवार पताका केत। सगनिह बनए मंगल हेत॥
 कंचन कलस विचित्र सुँवार। सगहि धरे सजि निज निज द्वार॥
 चण्डी अटारिन्ह देखहि नार नारि नर बंद॥ ८(ख)॥

सुमन बहिन नम सकुल भवन चले सुखकंद ।

आसिष दीन्है हरषि पुन्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥ ८(क)॥

दी०-कौसल्या के चरननिह पुनि निन्ह नाथउ माथ ।

सुनि प्रभु नचन मगन सब भए। निमिष निमिष उपजत सुख नए॥
 मम हिल लागि जन्म डन्ह हरे। भएतहु ते मोहि अधिक प्रियारे
 ए सब सखा सुनहु सुनि मेरे। भए समर समार कहूँ भेरे॥
 गुर बसिष्ठ कुल पूज्य हेमारे। डन्ह की कृपा दनुज रन मारे॥
 पुनि खपति सब सखा बोलए। सुनि पद लगहु सकल सिखाए
 देखि नगरवासिन्ह कै सीती। सकल सराहहि प्रभु पद प्रीती॥
 भरत सनेह सोल अत नेमा। सादर सब बरनहि अति प्रेमा॥
 हनुमदादि सब गानर वीरा। धरे मनोहर मनुज सरीरा॥

राम कहे। सेवकन्ह बुलाई। प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई॥
 सुनत गचन जाई तहैं जन धाए। सुग्रीवादि। तुरत अन्हवाए॥
 पुनि कवननिधि भरत हूँकरे। निज कर राम जय निरुआरे॥
 अन्हवाए प्रभु तौनिउ भाई। भगत बछल कपाल खुराई॥
 भरत भग्य प्रभु कोमलताई। सेप कोटि सत सकाई न गाई॥
 पुनि निज जय राम विजराए। गुर अजससन माणि नहाए॥
 करि मजन प्रभु भूषन साजे। अंग अंग देवि सत लाजे॥
 टी०-सासुन्ह सादर जानिकहि मजन तुरत कराई।
 दिव्य वसन वर भूषन अंग अंग सजे वनाई ॥ ११(क)॥
 राम राम दिवसि सोभाति रमा रूप गेन जानि।
 देखि मातु सब हरपां जन्म सुफल निज जानि ॥ ११(ख)॥
 सुनि जगस बेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृद्ध।
 चरिं विमान आए सब सुर देखन सुखकंद ॥ ११(ग)॥
 प्रभु त्रिलोक मुनि मन अजरागा। तुरत दिव्य सिंघासन मगा॥
 राखि सम तेज सो गरुनि न जाई। बौठे राम दिजन्ह सिव नाई॥
 जनकमुता समत खुराई। पविष प्रदरष मुनि समुदाई॥
 वेद मंत्र तत्र दिजन्ह उचारे। नम सुर मुनि जय जयति पुकारे॥
 प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्ह। पुनि सब विग्रह आयसु दीन्ह॥
 सुत त्रिलोक हरपां महेतारी। वार वार आरती उतारी॥
 विग्रह दान विविध विधि दीन्ह। जन्मक सकल अजानक कीन्ह॥

तव विषम माया बस सुरासुर नाग नर आ जग हरे ।
 भव पंथ अमर आमत दिवस नित्य काळ कर्म गुननि भरे ॥
 ते नाथ करि कलना बिजोके बिबिध दुख ते निबरे ।

भव खेद छेदन दूख हम कहुँ रूख राम नमामहे ॥ २१ ॥

जे यान मान बिमत तव भव हेरनि भक्ति न आदरी ।

ते पाहें सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ॥

विस्वास करि सब आस पतिहरे दंड तव जे होइ रहे ।

जपि नाम तव बिबु अस तयहिं भव नाथ सो समरामहे ॥ २३ ॥

जे चरन निव अज पूज्य राज सुभ परसि मुनिपतिनी वरी ।

तब निर्गुना मुनि बंदिता कैलोक पावन सुरसरी ॥

द्वज फलिस अंकुस कंज जुव बन फिरत कटक किन छे ।

पद कंज हंड मुकुट राम रमैस नित्य भजामहे ॥ २४ ॥

अन्यकर्मलमगहिं तरे खच चारि निगमागम भरी ।

पद कंथ साखा पंच वीस अनेक पर्न सुमन घरी ॥

फल जुगल बिबिध कट मयूर बैलि अकेलि बैहि आशित रहे ।

पछित फूलत नवल नित संधार विटप नमामहे ॥ २५ ॥

जे बह्म अजमहैवमजुमवाम्य मनपर व्यावही ।

ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन अस नित गावही ॥

कलनायान भुषि सद्योनाकर देव यह वर मागही ।

मान पवन कर्म बिकार वीज तव चरन हम अचुरागही ॥ २६ ॥

श्री-सब के देखत देखत बिजली कीन्ह उदार ।

अवधान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥१३॥ (क)

बैनतैय सुख संसु तब आए जाहूँ रखवारे ।

बिनय करत गढ़गढ़ गिरा पुरित पुलक सरौर ॥१३॥ (ख)

छं-जय राम रामरामनं समनं । भव ताप अथाकुल पाहि जनं ॥

अवधेस सुरेस रामेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥

दसदीस बिनासन बीस भुजा । कैंत दूरि महा महि भूरि कजा ॥

रानीचर बूढ़ पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥

महिमंडल मंडन चाकतरे । धर सायक चाप निधंग बरे ॥

मदं मोहि महा समता खनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥

मनजाल किरात निपात किए । मंग लोम कुंभोम सरन हिए ॥

हलि नाथ अनाथानि पाहि हरे । बिषया वन पावुर भूलि परे ॥

बहु सोम विद्योगिन्ह लोम हरे । भवदंति निरादर के फल परे ॥

भव सिंधु अगाध परे नरे । परं पंकज प्रेम न जे करे ॥

अति दीन मलीन दुखी निवहो । निन्ह के परं पंकज प्रीति नहो ॥

अवलंब भवत कथा निन्ह के । प्रिय संत अनंत सदा निन्ह के ॥

गहि रंग न लोभ न मान मदा । निन्ह के सम वैभव वा विपदा ॥

पुहि ते तब सेवक होत मुदा । सुनि ख्यात जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर बेम लिपू । परं पंकज सेवत सुख हिए ॥

सम मानि निरादर आदरहो । सब संत सुखी बिचरति महो ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रत्नवीर अज ॥
 तब नाम जपामि नमामि हरे । भव योग महानंद मान अरी ॥
 गुन सौल केपा परमाश्रयन । प्रनमामि निरंतर श्रीरामन ॥
 रघुनंद निकंदय दंडधन । सहिपाल बिलोकय दीन जन ॥
 टी०-बार बार बार मागडु हरेपि देहु श्रीरंग ।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥ १४ (क) ॥
 बरनि उमापति राम गुन हरेपि गए कैलास ।

तब प्रभु कपिनंद दिवाणु सब बिधि सुखप्रद बास ॥ १४ (ख) ॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी । बिबिध तप भव भव दाननी ॥
 महाराज कर सुभ अपिभक्ता । सुनत लट्ठी है नर विरति बिभेका ॥
 जे सकाम नर सुनहि जे गावहि । सुख संपति नाना बिधि पावहि ॥
 सुरदुर्लभ सुख करि जग माही । अंतकाल खपति पुर आही ॥
 सुनहि बिभुक्त विरत अरु बिषई । लट्ठी है भगति गति संपति नई ॥
 खगपति राम कथा सै बरनी । समति बिलस बास दुख हरेनी ॥
 विरति बिभेक भगति हट करनी । मोह नदी कहूँ सुंदर तरनी ॥
 निव नय भाल कौसलपुरी । हरेपिब रहहि जोग सब कुरी ॥
 निव नई प्रीति राम पद पंकज । सब कैजिन्हहि नमत सिव मुनि अज ॥

भंगन यह प्रकार पहिराए । दिजन्ह दान नाना बिधि पाए ॥
 टी०-ब्रह्मनंद मान कपि सब कं प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्ह गए भास पट बीति ॥ १५ ॥

धरै यह सपनेई सुधि नहि । जिन परदेह संत मन मारी ॥
 ज रघुपति सब सखा बोलि । आइ सबहि सादर सिद्ध नाए ॥
 राम प्रीति समीप बैठार । भगत मुखद मई बचन उचार
 मई अति कीन्ह मोरि सेवकाई । मुख पर कोहि बिधि करी बड़ाई
 ता मोहि गुन अति प्रिय लगे । सम हित लागि भवन मुख लगे
 अज राज संपति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
 अम प्रिय नहि गुनहि समान । सेवा न कहेऊ मोर यह जाना ॥
 अ क प्रिय सेवक यह नीती । मोर अधिक दास पर प्रीती ॥

श्लोक-अब गृहे जाई सखा सब भजेई मोहि दृढ़ नेम ।

सदा सर्वगत सबहित जानि करेई अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु बचन मान सब गए । को हम कहे बिचरि तन गए ॥

एकटक रहे जोरि कर आगे । सकाई न कछु कहि अति अनुरागे

राम प्रेम तिनहे कर प्रभु देखा । कहे बिबिध बिधि ज्यन बिषेष्

प्रभु समुख कछु कहेन न पारहि । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहि

अब प्रभु भवन बसन मगाए । नाना रंग अर्प सुहाए ॥

सुधीवहि प्रथमहि पहिराए । बसन भरत निज हाथ बनार ॥

प्रभु प्रीति लछिमन पहिराए । लंकपति रघुपति मन माए ॥

अंगार बैठ रहा नहि डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥
 श्लोक-आमंत्र नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।
 द्विष्ट पति राम कप सब चले नार पद माथ ॥ १७ (क) ॥

* रामचरितमानस *

तव अंगद उठि नाहँ सिरे सजल नयन कर जोरि ॥ १७० (ख) ॥
 अति विनीत बोलै बचन मनहुँ प्रेमस बोरि ॥ १७० (ख) ॥
 सुनु सवैया कथा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥
 मारती केर नाथ मोहि बाली । मयउ गुहारिहि कोछे बाली ॥
 असन सन निरहुँ संभारी । मोहि जनि तजहुँ भगत हितकारी ॥
 मोरि गुह प्रभु गुर पिउ माता । जाउ कहौ तजि पद जलजाता ॥
 गुहारि निचारि कहहुँ नरनाथा । प्रभु तजि भवन कज मम काहा ॥
 बालक भान बुद्धि बल होना । राखहुँ सन नाथ जन दीना ॥
 नीचि टहल गहँ कै सज करिहँ ॥ पद पंकज बिलोकि भव तरिहँ ॥
 अस कहि चरन पोर प्रभु पाही । अग जनि नाथ कहहुँ गहँ जाही ॥
 दौ०—अंगद बचन विनीत सुनि रघुपति कहेना सीव ।
 प्रभु उठाहँ उर जगज सजल नयन सोजीव ॥ १७० (क) ॥
 निज उर माल वसन मनि बालितनय पहि साहँ ।
 विदा कीन्हि भगवान तब बहूँ प्रकार समुझाहँ ॥ १७० (ख) ॥
 भरत अगुज सौमित्र समेता । पठवन चले भगत ऊत चेत ।
 अंगद हँदयुँ प्रेम नहि धोरा । फिरि फिरि चितव राम की ओ ।
 बार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रदन कहहि मोहि रा ।
 राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत होसि मि ।
 प्रभु कव देखि विनय बहूँ भाषी । चलेउ हँदयुँ पद पंकज राख ।
 अति आदर सज कधि पहुँचाए । भाइहँ सहित भरत पुनि अ ।

तत्र सुशील चरन गहि गाना । माति विनय कीन्है हनुमाना ॥
 दिन दस करि खण्डित पद सेवा । पुनि तब चरन देखिबहुँ देवा ॥
 पुन्य पुन पुन पवनकुमार । सेवहुँ जाइ कथा आगास ॥
 अस कहि कपि सब चले वृंता । अंगद कहै सुनहुँ हनुमान ॥
 श्री० कहैहुँ दंडवत प्रभु सै गुनहहि कहवुँ कर जोरि ।

बार बार रघुनाथकहि सुरति करायहुँ मोरि ॥ १९(क) ॥
 अस कहि चलेउ बालिपुर निरि आयउ हनुमान ।
 वासि माति प्रभु सन कही सगन भए भावत ॥ १९(ख) ॥
 कलिमहुँ चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहुँ चाहि ।

चित खोस राम कर समुझि परहुँ कहि ॥ १९(ग) ॥
 पुनि कपल लिप्यो गोल निषादा । दीन्है भूषन वसन प्रसादा ॥
 जाइ भवन मम सुमिरन करै । मन कम वचन धनु अजुखै ॥
 गुनह मम सखा भएत सम भाला । सदा रहैहुँ पुर आवत जाला ॥
 वचन सुनत उपजा सुख भरी । परेउ चरन भरी लोचन भरी ॥
 चरन नलिन उर धरि गइ आवा । प्रभु सुभाउ परिजनहि सुभावा
 खण्डित चरित देखि पुरजासी । पुनि पुनि कहैहुँ धन्य सुखरासी
 राम राज कैनेँ कैलाका । देखिबत भए गए सब सोका ॥
 भयक न कर कहै सन कोइ । राम प्रताप विषमता खोइ ॥

श्री०-बराधम निज निज धरम निरत वेद पय लोम ।

बलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोम ॥ २० ॥

उमा रमा प्रह्लादि ब्रह्मिणी । जगदंभा संतममनिदिता ॥

दी०-जासि कैपा कटाखु सुद साहेत चितव न सोइ ।

राम पदाराविंद रति करति सुखावहिं जोइ ॥ २४ ॥

सेवाहिं सानकूल सब भाई । राम चरन रति आति आधिकारि
प्रभु मुख कमल बिभोकात रहै । कबहुँ केषल हमहिं कछु कहै

राम कहिं आनंद पर प्रीति । नाना भाँति सिखावहिं नीति ॥

हरीपत रहै नगर के लीला । कसहिं सकल सुर दुल्लभ मोला ॥

अहनिनिषि निषादि मनोवत रहै । श्रीरघुवीर चरन रति चहै ॥

हुइ सुत सुंदर सीता जाए । लवकुश बेट प्रयानन्ह जाए ॥

दोउ बिजई निनई गुन भंडिर । हरि प्रलोक्य मनहुँ आति सुंदर

हुइ हुइ सुत सब आनन्ह को । भए रूप गुन सील धनै ॥

दी०-आन निरा गोपीत अज साया मन गुन पार ।

सोइ सविधानंद वन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरक करि मजन । बेटहिं समा संग दिज सजन ॥

बेट प्रयान गीषव बखानहिं । सुनहिं राम अश्लेष सब जानहिं

अनजनन्ह संजत भोजन करै । देखि सकल जननी मुख मारै

भरत सज्जन दोनउ भाई । साहेत पवनसुत उपवन जाई ॥

बैसाहिं बैठि राम गुन गावै । कहइ देवमान सुमति अगवावै ॥

सुनत विमल गुन अति मुख पामहिं । बहुरि बहुरि करि विनय कहावहिं ॥

सब कैं यह यह होहिं प्रयान । राम चरित पवन विधि गान ॥

नर अरु नारि राम गुन गानहि । करहि दिवस निसि जात न जानि
 द्यौं-अवधपुत्रीबानिन्ह कर सुख संपदा समाज ।

सहस्र सेष नहि कहि सकहि जहूँ नृप राम विराज ॥ २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीषा । दरसन जोगि कोसलधौषा ॥
 दिन प्रति सकल अजोष्या आवाहि । देखि नारा विरग्य विरग्यवाहि ॥

जातज्य मनि रचित अटारी । नाना रंग कवि रंग रटारी ॥

पुर चहुँ पास कोट आति सुंदर । रत्न कूर्पारा रंग रंग रंग ॥

नव ग्रह निकर अनीक बनाई । जगु बेसी असरवाति आई ॥

महि चहुँ रंग रचित रंग कूर्पा । जो बिलोकि मुनिवर मन नाचा ॥

धवल धाम ऊपर नम चुंबत । कलस मनहुँ रंग ससि हुति निंदत

चहुँ मनि रचित झरोखा आजाहि । ग्रह ग्रह प्रति मनि दीप विराजाहि

छं-मनि दीप राजाहि भवन आजाहि देहरी बिहस रची ।

मनि खंय मति विरंचि विरची कनक मनि मरकत खची ॥

सुंदर मनोहर मंदिरागत अजिर दसिर फटिक रचे ।

प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाई चहुँ बजनिह खचे ॥

द्यौं-चार विजसाला ग्रह ग्रह प्रति लिखे बनाई ।

रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहि चोराह ॥ २७ ॥

सुमन गटिका सवाहि जगाई । विविध मति करि जतन बनाई ॥

लता ललित चहुँ जाति सुहाई । फूलहि सदा यशत कि नाई ॥

गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । माकत विविध सदा यश सुंदर ॥

उमा राम प्रह्लादि ब्रह्मिनी । जगदंश संततमनिदिता ॥

श्री०-वासु केषा कटाख्य सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदार्थिद रति करति सुभावहि सोइ ॥ २४ ॥

सेवहि सानकैल सग भाई । राम चरन रति अति अधिकभाई

प्रभु मुख कमल तिलोक्त रहै । कबहुँ केषल हमहि कहूँ कहै

राम कहहि आनन्द पर प्रीती । नाना भाति सिखावहि नौती ॥

देरपित रहै नगर के लीला । कहहि सकल सुर दुर्लभ योगी ॥

अहनिनिषि निषिहि मनावत रहै । श्रीरघुवीर चरन रति चहै ॥

हुइ सुत सुंदर सीता जाए । लव कुस श्वेद प्रयानन्द गाए ॥

दोउ विजई विनई गुन भंडिर । हरि प्रतिनिज मनहुँ अति सुंदर

हुइ हुइ सुत सग आनन्द करे । भए रूप गुन सील धरै ॥

श्री०-मान निरा गोतीव अज साया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद धन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरक करि मजन । बैठहि सभा संग दिज सजन ॥

श्वेद प्रयान वसिष्ठ बखानहि । सुनहि राम जगहि सग जानहि

अनुजन्द सुगत भोजन करै । देखि सकल जननी मुख भारै ॥

भरत सज्जन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥

ब्रह्महि बैठ राम गुन गाइ । कहइ द्रुपद मन सुमति अवाइ ॥

सुगत विमल गुन अति सुख पावहि । बहुरि बहुरि करि विनय कथावहि ॥

सग के गइ गइ होहि प्रयान । राम चरित पावन निधि गोता ॥

नाग खग बालकन्हि लिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥
 मोर हंस सारस पारवत। भवनी पर सोभा अति पावत ॥
 जहूँ तहूँ देखहि निज परिछाहीं। बहूँ विधि कैंजहि दल कराहीं ॥
 सुक सारिका पढ़ावहि बालक। कहहुँ राम खपति जनपालक ॥
 राज दुआर सकल विधि चार। बीयाँ चौहट कंचि बजार ॥
 छं-बाजार खिचर न बनइ बरनत वरतु विनु गय पाइए।
 जहूँ भूप रमानवास तहूँ की संपदा किमि गाइए ॥
 बहूँ बज्जल सरफ बनि क अनेक मनहुँ कहेर है।
 सब सुखी सब सचरित सुंदर नारि नर सिखि जग है ॥

दो-उत्तर दिस सरजू बह निमूँल जल गोभीर ।

बौध घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २८

दूरि फराक कंचि सो घाटा। जहूँ जल पिआहि गति राज ठा
 पनघट परम मनोहर नाना। तहूँ न पुरुष करहि अजाना
 राजघाट सब विधि सुंदर बर। मजहि तहूँ बन चारिउ नर
 तीर तीर देखह के भांदर। नहुँ दिसि तिनह के उपवन सु
 कहूँ कहूँ सारिती तीर उदासी। बसहि आन रत मुनि संन्यासी
 तीर तीर तुलसिका सुहाई। बंद बंद बहूँ मुनिह लग
 पुर सोभा कहूँ गरुन न जाई। बाहेर नगर परम कंचि

देखत पुरी अखिल अवभागा। अन उपवन बापिका तड़ा

जिन्हहि सोक ते कहउँ गखानी । प्रथम अविद्या निषा नसनी ॥
 अब उल्लेख जहूँ तहाँ छकाने । काम कोष कैय सबकुचने ॥
 विविध कर्म गुन काल सुभाज । ए चकोर सुख लहहि न काज ॥
 मत्सर मान मोह मद चोरा । ईन्ह करहु न कबनिहुँ ओरा ॥
 धरम लड़ाग यान विद्याना । ए पंकज विकसे विधि नाना ॥
 सुख संतोष विराम विवेका । निगत सोक ए कोक अनेका ॥

दो०—यह प्रताप रवि जाकेँ उर जब करह प्रकास ।

पछिले बाजहि प्रथम जे कहै ते पवारहि नास ॥ ३९ ॥

आनन्ह सहित राम एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
 सुंदर उपगता देखन गए । सब तक कुसुमित पछव गए ॥
 जानि समग्र सनकादिक आए । तेज पुंज गुन सील सुहाए ॥
 प्रह्लाद सदा लयलीना । देखत बालक बह्मकालीना ॥
 रूप धरुँ जगु चारिउ वेदा । समदरसी मुनि विगत निमोदा ॥
 आसा बसन व्यसन यह तिन्हही । रघुपति चरित होइ तहूँ सुनही ॥
 तहाँ रहे सनकादि भगानी । जहूँ धरसंभव मुनिवर यानी ॥
 राम कथा सुनिगर बहूँ बरनी । यान जौनि पावक विनि अरनी ॥
 दो०—देखि राम मुनि आवत हरेषि दंडवत कीन्ह ।
 स्वागत पूछि पीत पद प्रभु बैसन कहूँ दीन्ह ॥ ३२ ॥
 मुनि रघुपति छवि अवल कोरी । भए मान मन सके न रोकी ॥

ममल गाल सरोकह लोचन । सुंदरता भंडिर भव मोचन ॥
कटक रहे निमेष न लगवाहि । प्रभु कर जोरौ सीस नवावहि ॥
मन्द कै दसा देखि रघुबीरा । खवल नयन जल पुलक सरीरा ॥
र गहि प्रभु मुनिवर बैठारे । परम मनोहर बचन उचारे ॥
गजु वन्य भैं सुनहु सुनीसा । गुहरे दरस जाहि अथ खोसा ॥
हिं भग पाइव सरसंगा । बिनहि प्रयास होहि भव भंगा ॥

॥१०-संत संत अपवर्ग कर कामी भव कर पथ ।

कहेहि संत काबि कोविद श्रुति पुरान सद्ग्रंथ ॥ ३३ ॥

नि प्रभु बचन देखि मुनि चारी । पुलकित तन अखलि अनुसारी ॥
भय भावत अनंत अनामय । अनय अनेक एक ककनमय ॥
भय निगुन जय जय गुन सागर । सुख भंडिर सुंदर आनि नगर ॥
भय डंडिरा रसन जय भूवर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
भयन निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान बेट वद ॥
भय केलय अम्यता भजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
भय सङ्गात सर्व उरालय । बससि सदा हम कहुँ परिपालय ॥
सुंदर विपति भव फंद विमंजय । हरि बसि राम काम भद्र गंजय ॥

॥१०-परमानंद कृपाधन मन परिपूर्ण काम ।

प्रम भगति अनपायनी देहु हेमाहि श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहु भगति रघुपति आनि पवनि । विविधि ताप भव दाय नखावनि ॥
मनल काम सुरधनु कलपतर । होइ प्रसन्न दीजे प्रभु यह वर ॥

भव गारिषि कृमज खिन्नयक। सेवत सुलभ सकल सुख दायक ॥
 मन संभव दाकन दुख दायक। दीनबंधु समता निस्कारय ॥
 आस आस इरिषादि निवारक। विनय विवेक निरति निस्कारक ॥
 भूष मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सर तरनी ॥
 मुनि मन मानस हंस निरंतर। चरन कमल बांदि अज संकर ॥
 रघुकल केवु सेवु अति रुच्छक। काल करम सुमात्र गुन भच्छक ॥
 तारन तरन हरन सज दूषन। तुलसिदास प्रभु विभूषन भूषन ॥
 दी०-वार वार अस्तित करि प्रेम सहित सिद्ध नाह ।
 ब्रह्म भवन सनकादि ते अति अभीष्ट बर पाह ॥ ३५ ॥
 सनकादिक विधि लोक सिधाय। आनन्द राम चरन सिद्ध नाए ॥
 पूछत प्रभुहि सकल सकुचाही। चितवहि सज साकरसुत पाही ॥
 सुनी चहहि प्रभु मुख कै गानी। जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥
 अंतरजामी प्रभु सम जाना। ब्रह्मत कहहु कहहु हेतुमाना ॥
 जोरि पानि कह तज हेतुभाता। सुनहु दीनदयाल भावाता ॥
 नाथ भगत कहूँ पूछन चहहि। प्रसा करत मन सकुचत अहहि ॥
 तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाज। भगतिहि मोहि कहूँ अंतर काज ॥
 सुनि प्रभु भवन भगत गहि चरना। सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥
 दी०-नाथ न मोहि संहै कहूँ सपनेहुँ सोक न मोह ।
 केवल कथा तुम्हारेहि कथानंद संहै ॥ ३६ ॥
 करहुँ कथानिधि एक दिठहि। मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाहि ॥

सुनहु असतन्ह केर सुभाऊ । भुलैहुँ संगति करिअ न काऊ ॥

ते सजन सम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज ॥ ३८ ॥

दो०-निंदो अखलि उभय सम समता सम पद कंज ।

सम दम नियम नीति नहि डोलाई । पदव वचन कवहुँ नहि बोलै
ए सज लखन वसहि जासु उर । जानैहुँ तात संत संत कुर ॥
सीतलता सरलता मयगी । दिज पद प्रीति धर्म जनयगी ॥
विगत काम सम नाम परायन । सीति विरति विनती मुदितायन ॥
सबहि मानपद आपु अमानि । भरत प्रान सम सम ते प्रानी ॥
कोमलचित दीनन्ह पर दायी । मन बच काम सम भगति अमायी ॥
सम अर्भतरिपु विमद विरगी । लोभामारय हरप मम त्यागी ॥
विषय अलपट सील गुनाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
अनल दाहि पीटत वनहि परसु वंदन यह दंड ॥ ३९ ॥

दो०-साते सुर सीसन्ह चंदत जाग बखस श्रीखंड ।

काटइ परसु मलय सुन भाई । निज गुन देइ सुभाष वसाई ॥
संत असतन्हि कै आस करनी । जिमि ऊठर चंदन आचरनी ॥
धतन्ह के लखन सुन आता । अमानित श्रुति पुरान निरख्याता ॥
संत असत भेद विळगई । प्रनतपाळ मोहि कहहुँ बुझाई ॥
जग चहुँ प्रभु तिनहे कर लखन । कृपासिधु गुन ध्यान निचखन
श्रीमुख गुनहुँ पुनि कीन्हि नई । तिनहे पर प्रभुहि प्रीति अधिकई
तिन्ह कै सहिमा खुराई । बहू विधि वेद पुरानन्ह गाई ॥

* उत्तरकाण्ड *

निन्द कर सं सदा दुखदाई । विनि कपलहि घालइ हरदाई ।
 खलन्ह हृदय अति तप निसेषी । जरहि सदा पर संपति देखी ।
 जहँ कहूँ निदा सुनाई । हरपहि मनहुँ परी निधि पाई ।
 काम कोष भर लोभ परापन । निर्दय कपटी कुटिल मलयन ।
 नयन अकारन सब कहूँ सो । जो कर हित अनहित लाई सो ।
 झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ।
 जोलहि मयुर वचन विनि मोरा । खाइ महा आहि हृदय कठोरा ।
 दो०-पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपवाद ।

ते नर पावर पापमय देह धरु मज्जाइ ॥ ३९ ॥
 लोभइ ओदन लोभइ जलन । सिखोदर पर लमपुरवास न ।
 काहँ की जाँ सुनाइ बड़ाई । खास लेहि जनु जूझी आइ ॥
 जन काहँ कै देखहि विपती । सुखी भए मानहुँ जग चपती ॥
 स्वाम्य रत परिचार निरोधी । लपट काम लोभ अति कोषी ॥
 मातु पिता गुर विष न मानहि । आपु गए अरु घालहि आनहि ॥
 करहि मोह नस द्रोह परावा । संत संन हरि कथा न भवा ॥
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । वेद विद्वक्क परधन स्वामी ॥
 विष द्रोह पर द्रोह निसेषा । दंभ कपट विष धरु सुवेपा ॥
 दो०-ऐसे अवस मनुज खल कुतलुग जेवाँ चाहि ।
 द्वापर कष्टक बुंद बहूँ होइहहि कलिजग माहि ॥ ४० ॥
 पर हित सारस धनुँ चाहि माहि । पर पीडा सम चाहि अपमाहि ॥

निर्णय सकल पुरान वेद कर । कहेउ तात जानहि कोविद नर ॥
नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहि ते सहेहि मइ भव भीरा ॥
करहि मोह बस नर अब जाना । खरथ रत फलोक नसना ॥
कालख्य तिनहे कहै मै आता । सुभ अक असुभ कर्म फल दाता ॥
अस विचारि जे परम स्याने । भजहि मोहि संसत दुख जाने ॥
आगाहि कर्म सुभासुम दायक । भजहि मोहि सुर नर मुनि नायक ॥
अत असंतह के गुन भाषे । ते न परहि भव जिनहे छलि राखे ॥

टी०—सुनहु तात माया केत गुन अह दोष अनेक ।

गुन यह उभय न देखिअहि देखिअ सो अविचेक ॥ ४१ ॥

भीमुख बचन सुनत सब भाई । देखे प्रेम न हेदय समझै ॥
करहि विनय अति वारहि वारा । हेनमान हिय देख अपरा ॥
गुनि खपति निज मंदिर गाए । एहि निधि चरित करत निर नए ॥
गार गार नारद मेनि आवहि । चरित पुनीत राम के गावहि ॥
नर नव चरित देखि मुनि जाही । ब्रह्मलोक सब कथा कहेही ॥
गुनि निरखि आतिसय सुख मानहि । पुनि पुनि तात कहै गुनगाना ॥
नकादिक नारदहि सराहहि । जगपि ब्रह्म निरत मुनि आहहि ॥
मुनि गुन गान समाय विधायी । सादर सुनहि परम अधिकारी ॥

टी०—जीवनमुक्त अक्षर चरित सुनहि बलि द्यात ।

जे हरिकथा न करहि रति तिनहे के दिव्य पाषाण ॥ ४२ ॥

एक बार खीनाथ बोलाए । गुर दिज पुरवासी सब आए ॥

शेठ गुर मुनि अरु द्विज सजन । दोल बचन भगत भव भजन ॥
 सुनहु सकल पुरजन मम यानी । कहउँ न कह्यु ममता उर आनी
 नहि अनति नहि कह्यु मयताई । सुनहु करहु जो गुनहहि सोहोई ॥
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसामन मानै जोई ॥
 जो अनति कह्यु मायां माई । तौ मोहि परजहु मय विभरहि ॥
 गइ मग मग्य तनु पवा । सु दुलैय सब ग्रंथहि गवा ॥
 सपन धाम मोछ कर दारा । पाइ न जोहि परलोक सुवारा ॥

टी०-सो परज दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कमाहि दुस्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि वन कर फल विषम न माई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
 नर तनु पाइ विषम मन देई । फलहि सुधा ते सठ विष लेई ॥
 ताहि कगहु मल कटइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
 आकर चारि लच्छं चौरासी । जोनि भगत गइ जिव अनिमोही
 फिरत सदा मग्य कर भेरा । काल कर्म सुभाव गुन भेरा ॥
 कगहुँ क करि कबना नरदेही । देव ईस विजु हेतु सनेही ॥
 नर तनु भव गारिषि कह्यु बेरा । समुख मकल अनुग्रह भेरा ॥
 करनधार सदगुर दंड नावा । दुलैय साज सुलभ कसि पावा ॥

टी०-जो न तरे भव सागर नर समाज अस पाइ ।

सो केव निंदक मंदमति आभावन गति जाइ ॥ ४४ ॥

जो परलोक दूरी सुख चहै । सुनि मम बचन दूरे दूरे पाइ ॥

मामवलोक्य पंक्त लोचन । केषु निजलोकनि सोच विमोचन ॥
 नील ताम्रस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।
 जातुधान वल्य वल भजन । मुनि सजन रंजन अथ गंजन ।
 भूँसुर ससि नव बंद यलहक । असुरन सरन दीन जन ग्राहक ।
 भुज बल विपुल भार महि खंडित । खर दूषन विराध यथ पंडित ॥
 रावनादि सुखरूप भूषण । जय दसरथ कैल कुमुद सुधाकार ॥
 सुजस पुरान विदित निगमगाम । गावत सुर मुनि संत समगाम ॥
 काकीनाक व्यलीक मद खंडन । सय विधि कुसल कोसला भंडन ॥
 कलि मल मथन नाम समताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

द्रो०—प्रम सहित मुनि नारद वरनि राम गुन ग्राम ।

सोभासिंघु हृदय धरि गए जहाँ विधि ग्राम ॥ ५९ ॥

निरिजा सुनई निरद यह कथा । मैं सय कहौ मोरि मात जथा ॥
 राम चरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न भरनै परा ॥
 राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥
 जल सीकर महि रज गनि जाहौ । खिपति चरित न भरनि सिराहौ ॥
 विमल कथा हरि पर दायनी । भगति होइ मुनि अनपायनी ॥
 उमा कहिउ सय कथा सुहाई । जो भुसुहि खगपातिहै सुनाई ॥
 उमा कहिउ सय कथा सुहाई । जो भुसुहि खगपातिहै सुनाई ॥
 कछु राम गुन कहैउ बखानी । अथ का कहौ सो कहैउ भवानी ॥
 सुनि सुम कथा उमा हरषानी । बोलौ अति विनीत महु बानी ॥
 धन्य धन्य मैं धन्य पुरी । सुनेउ राम पुन भव भय हारी ॥

६०-पुनर्ही कृपा कृपापवन अथ कृतकृत्य न भवे ।

जानेहूँ राम प्रताप प्रभु विद्यार्तदं संशेह ॥ ५२ (क) ॥

नाथ तवानन सति खल कथा सुभा रघुवीर ।

अवन पुनर्ही मन पान करि नहिं अवात भातिशूर ॥ ५२ (ख) ॥

राम चरित है सुनत अवाहो । रस विशेष जाना निन्दे नाहीं ॥

जीवनमुक्त महाभूमि जेऊ । हरि गुन सुनहिं निरंतर बेऊ ॥

प्रथ समार चहे पार जो पावा । राम कथा ता कहूँ हूँ नावा ॥

विपदने कहूँ पुनि हरि गुन ग्रामा । अवन सुखद अरु मन अभिरामा ॥

अवनवत अस को जग माहो । जाहि न रघुपति चरित सोहाहो ॥

ते जई जीव निजगतमक वाही । जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाही ॥

हरिचरित्रमानस हूँह नावा । सुनि भू नाथ अमिति सुख पवा ॥

हूँह जो कही यह कथा सुहाहो । कानामसुखि गणई प्रति गाहो ॥

६०-विरोति ग्यान विग्यान हूँ राम चरन अलिनेह ।

बाधस तन रघुपति भगति मोहि परम सहेह ॥ ५३ ॥

नर सहेह मूँ सुनहूँ पुराण । कोट एक होइ धर्म अलवाण ॥

धर्मसिंह कोटिक मूँ कहो । विषय विमुख विराम राहो ॥

कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहो । सम्यक ग्यान सकल कोटि कहो ॥

ग्यानवत कोटिक मूँ कोऊ । जीवनमुक्त सकल जग ॥

निन्दे सहेह मूँ सब सुख जानी । दुर्लभ अखलीन ॥

धर्मसिंह विरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त अखल ॥

सब ते सो दुलैम सुरैया। राम भगति रत गत भद माया॥
 सो हरिभगति काम किमि पाई। बिखनैय मोहि कहइ बुझाई॥
 टी०-राम परायन ज्ञान रत गुनगार मति धीर ।

नाथ कहइ कैहि कारन पायउ काक सरीर ॥ ५४ ॥
 यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा। कहइ केपल काम कहै पावा॥
 गुनइ कहि भाँति सुग मदनगरी। कहइ मोहि अति कौतुक भारी
 गणइ महेय्यानी गुन राखी। हरि सेवक अति निकट निवासी
 तेहि कहि हेतु काम सन जाई। सुनी कथा सुनि निकर बिहाई॥
 कहइ कवन बिधि या संजादा। दोउ हरिभगत काम उरजादा॥
 गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई। बोलै सिव सादर सुख पाई॥
 धन्य सती पावन मति बेरी। रघुपति चरन पाति नहि बेरी॥
 सुनइ परम पुनीत इतिहास। जो सुनि सकल लोक भ्रम नास
 उपजइ राम चरन बिखास। भवनिधि तर नर विनहि प्रयास
 टी०-ऐसिख प्रस बिहंगपति कोन्हि काम सन जाइ ।

सो सब सादर कहिहेतु सुनइ उमा मन जाइ ॥ ५५ ॥
 भू विमि कथा सुनी भव मोचनि। सो प्रसंग सुन सुसिख सुलचनि
 प्रथम देख्य गइ तब अवतरा। सती नाम तब रहा गुनहरा॥
 देख्य जग्य तब या अपमाना। गुनइ अति कोष तबे तब प्राना॥
 राम अनुचर कहै मख भंगा। जानइ गुनइ सो सकल प्रसंगा॥
 तब आति सोच पायउ मन मोरे। दुखी भयउ जियोग प्रिय तोरे॥

सुंदर जन गिरि सखि तइना । कौतुक देखत फिरतु बेरना ॥
 गिरि सुमेर उत्तर दिशि दूरी । नील सैल एक सुंदर भूमी ॥
 तासु कनकमय सिखर सुहाए । चारि चार भौ मन भाए ॥
 तिनह पर एक एक बिटप बिखाल । बट पीपर पाकरी रसाल ॥
 सैलपरि सर सुंदर सोहा । मन सोपान देखि मन मोहा ॥

श्लोक—सीतल अमल मधुर जल जलज विपुल बहुरंग ।

कलल कलरव हेस मान गुंजत मंजुल अंग ॥ ५३ ॥

तेहि गिरि वनिय बसइ खग सोई । तासु नास कल्यात न होई ॥
 माया कल गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अविबेका ॥

रहे व्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुं नहि जाहीं
 तहुं बसि हेरिहि भजइ जलम काना । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥

पीपर तक तर व्यान सो धरई । जग जग्य पाकरी तर करई ॥

आन छूह कर मानस पूजा । तजि हरि भजन काजु नहि दूजा ॥

बर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहि सुनिहि अनेक बिहेगा ॥

राम चरित विविध विधि जाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥

सुनिहि सकल मति विमल मराल । बसहि निरंतर जे तेहि काल ॥

जब मैं जाइ सो कौतुक देख । उर उमजा आनंद विसेष ॥

श्लोक—सब कछु काल मराल तब धरि तहुं कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रखपति गुन पुनि अपनै कैलास ॥ ५० ॥

गिरिजा कहेतु सो सब इतिहास । मैं जेहि समय गपतु खग पासा ॥

अब सो कथा सुनई जेहि है। गयउ कामा पहि खग कुल के
 जग रघुनाथ कीन्हि रन कीड़ा। समुझत चरित होति मोहि बीड़ा
 इंद्रजीत कर आपु ब्रूयायो। तब नारद मुनि गकड़ पठायो
 बंधन काटि गयो उरगादा। उपजा हृदय प्रचंड विषादा ॥
 बंधन काटि गयो उरगादा। करत विचार उरग आगती ॥
 प्रभु बंधन समुझत बहू भूती। करत विचार उरग आगती ॥
 व्यापक ब्रह्म फिरज गानीसा। माया मोह पर परमासा ॥
 सो अवतर सुनेउ जग माहीं। देखेउ सो प्रभाव कहू नहि ॥

टी०—भव बंधन ते इंद्रहि नर जपि जा कर नाम ।

खरु निराचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ ६८ ॥

नाम भूति मनहि समुझाया। प्रगट न ज्ञान हृदय अस ज्ञाया
 खेद विषय मन लकं बढाई। गयउ मोहयस गुह्यहि नहि ॥

व्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं। कहेसि जो संसय निज मन माहीं

सुनि नारदहि जगि अति दया। सुनु खग प्रबल राम कै मया ॥

जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई। गरिआई विमोह मन कारई ॥

जेहि बहू बार नचावा माहीं। सोइ ज्ञापी विहंगपति गोहीं ॥

महामोह उपजा उर तोरे। भिटहि न योनि कहै खग मोरे ॥

चतुरानन पाहि जाहि खगोसा। सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

टी०—अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान ।

हरे माया बल बरनत पुलि पुलि परम सुजान ॥ ५९ ॥

तब खगपति विरजि पाहि गयऊ। निज संदेह सुनावल भयऊ ॥

नि निरन्त्रि रामहि सिद्ध नवा । समुद्धि प्रताप प्रेम अति छावा ॥
न महुँ करइ बिचार विधावा । मया यस कवि कोविद म्पावा ॥
रि मया कर अमिति प्रमवा । विपुल वार जेहि मोहि नचावा ॥
मग जगमग जग मम उपराजा । नहि आचरज मोह जगराजा ॥
व बोले विधि निरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुवाहूँ ॥
ननेय संकर पाई । तात अनत पूछइ जानि कारु ॥
हूँ होइहि तव संसय दानी । चलेउ विहंग सुनत विधि वानी ॥

श्लोक-परमादिर विहंगपति आपउ तव मो पास ।

जात रहेउ कुचर गृह रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

बहिँ मम पद सादर सिद्ध नवा । पुनि आपन सहेइ सुनवा ॥
सुनि ता करि निनली महुँ वानी । प्रेम सहित सैं कहेउ भवानी ॥
मिलेहुँ गच्छं मारग महुँ मोही । कवन भाँति समुझावौं तोही ॥
तवाहिँ होइ सब संसय भंगा । जग गृह काल करिअ सबसंगा ॥
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति सुनिन्ह जो गार्ह ॥
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपद्य राम भगवाना ॥
निज हरि कथा होत जाई महुँ । पठनउ तहाँ सुनहुँ उग्रह जाई ॥
जाइहि सुनत सकल सहेइ । राम चरन होइहि अति नेह ॥

श्लोक-विभु सबसंग न हरि कथा वेदि विभु मोहि न भग ।

मोह गपुँ विभु राम पद होइ न दृढ अचरग ॥६१॥

मिलहि न खपति विभु अचरग । किपुँ जोग तम म्पान निरग ॥

उत्तर दिशि सुंदर निरि नीला । तहँ रह काकमुमुहि सुखीला ॥
 राम भगति पथ परम प्रवीणा । श्यानी गुन गह बहु कालीना ॥
 राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनहिं निबिध निहंनर ॥
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनिव दुख दूरी ॥
 मैं जब तेहि सग कहा बुझाई । चलेउ हरषि मम पद तिर नहिं ॥
 ताते उमा न मैं समझावा । रघुपति कथाँ मरु मैं पावा ॥
 होइहि कीन्ह कनहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
 कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समझइ खग खगदो कै भग्या ॥
 ५५ भग्या बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस श्यानी ॥
 दो०-श्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान ।

तहिं मोह माया नर पावुर करहिं गुमान ॥६२(क)॥
 मासपरायण, अट्टाईसवाँ विशास

शिव त्रिंवि कहुँ मोहइ को है वपुरा आन ।

अस त्रिषु जानि भजहिं मुनि माया पाति भगवान् ॥६२(ख)॥

रागउ राकड़ जहँ गसइ मुमुंछा । मति अकुंठ हरि भगति अवंछा
 देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । भग्या मोह सोच सब भयऊ ॥
 करि तर्जना मज्जन जलपाना । गट तर रागउ हँदयुँ हरपाना ॥
 बुद्ध बुद्ध निहंन तहँ आए । सुनै राम के चरित सुहाए ॥
 कथा अरुम कसै सोइ चाहा । तेही समय रागउ खगानाहा ॥
 आगत देखि सकल खगारजा । हरषेउ रागउ सहेत समाना ॥

विपिन गगन केवट अचरणा ॥ सुरसरि उत्तरे निवास प्रथमा ॥
 पुरवाभिन्द कर निरहे विषादा ॥ कहेसि राम लज्जित मन संघादा ॥
 बहिरि राम अभिषेक प्रसंगा ॥ पुनि वेष बचन राज रस मंगा ॥
 रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुवीर विवाह ॥ ६४ ॥
 टी०-बालचरित कहि विविध विधि मन महुँ परम उछाह ।

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ॥ तब सिमुचरित कहेसि मन लाई ॥
 पुनि नारद कर मोह अपरा ॥ कहेसि बहिरि रावन अवतारा ॥
 प्रथमाई अति अचरणा भवानी ॥ रामचरित सर कहेसि बखानी ॥
 भयउ तासु मन परम उछाह ॥ जग कहै खिपति गुन गाह ॥
 सुनत गकड़ कै निरा विनीता ॥ सरल सुगम सुखद सुपुनीता ॥
 सादर तात सुनवई मोही ॥ बार बार विनवउ प्रभु दोही ॥
 अब श्रीराम कथा अति पावनि ॥ सदा सुखद दुख पुंज नसवनि ॥
 देखि परम पावन तब आश्रम ॥ गयउ मोहै संसय नाना भ्रम ॥
 सुनई तात जेहि कारन आयऊ ॥ सो सब भयउ दरस तब पायऊ ॥
 जेहि कै अरुति सादर निज मुख कोटि महिस ॥ ६३ (ख) ॥
 सदा कैतारथ रूप गुन्ह कहै यह बचन खगोस ।

आयसु देई सो करो अब प्रभु आयई कैहि काज ॥ ६३ (क) ॥
 टी०-नाथ कैतारथ भयउ सै तब दरसन खगोस ।
 करि पूजा समेत अचरणा ॥ भयुर बचन तब बोलेउ कागा ॥
 अति आदर खगपति कर कीन्हा ॥ स्वगत पंडित सुआसन दीन्हा ॥

बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जलिन बसे भगवाना ॥
 सचिवाभावन नगर नृप मरना । मरतागवन प्रेम बह्य बरना ॥
 करि नृप क्रिया संग पुरवासी । भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी ॥
 पुनि खण्डित बह्य विधि समझाए । लै पारुका अवधपुर आए ॥
 भरत रहनि सुरपति सुत करनी । प्रभु अक अनि भेंट पुनि बरनी ॥
 द्रो०—कहि विराय बच जहि विधि देह लज्जा सरभंग ।

वरनि सुतीजन प्रीति पुनि प्रभु आगसि सतसंग ॥ ६५ ॥
 कहि दंडक बन पावनवाह्य । गीध मइजी पुनि लेहि गार्ह ॥
 पुनि प्रभु पंचवट्यो केत बासा । भोजी सकल मुनिन्ह की बासा ॥
 पुनि लछिमन उपदेस अनर्ण । संपनखा जलिस कीन्ह कुल्पा ॥
 खर दूषन बध बहुरि बखाना । जलिस सब मरसु दसानन जाना ॥
 दसकंधर मारीच बतकही । जहि विधि मई सी सब लेहि कही ॥
 पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुवीर निरह कछु बरना ॥
 पुनि प्रभु गीध क्रिया जलिस कीन्है । बधि कबंध सगुरिहि गति दीन्है ॥
 बहुरि निरह बरनत खणीया । जहि विधि गए सुरेजर तीरा ॥

द्रो०—प्रभु नारद संवाद कहि सादलि मिलन प्रभंग ।
 पुनि सुभाव भिलाई बालि मान कर भंग ॥ ६६ (क) ॥
 कपुहि लिखक कर्म प्रभु केत सैल प्रवरपन बास ।

वरनन बर्षा सरद अक राम रोष कपि बास ॥ ६६ (ख) ॥
 जहि विधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिशि धाए ॥

त्रिर प्रवेस कीन्द जैहि माँती । कपिन्द बहोरि भिन्न संपाती ॥
 सुनि सत्र कथा समीरकुमारा । नाथत भयउ पयोधि अपारा ॥
 लंकौ कपि प्रवेस जनिम कीन्द । पुनि सीतहि धीरजु जनिम दीन्द
 बन उजारि रावनहि प्रयोधी । पुर दहि नाथउ बहोरि पयोधी ॥
 आए कपि सत्र जहूँ रघुमाई । बौदेही की कुसल सुनहि ॥
 सेन समति जथा रघुबीरा । उतर जाइ गारिनिधि तीरा ॥
 भिन्न विभीषण जैहि विधि आई । सगर निग्रह कथा सुनहि ॥
 द्रो०-सेतु बौधि कपि सेन जनिम उतरी सगर पार ।

गयउ वसीठी वीरवर जैहि विधि वालिकुमार ॥ ६७ (क) ॥
 निसिचर कीस लराई बरनिधि विबिधि प्रकार ।
 कुंभकरन वननाद कर बल पौंसष संघार ॥ ६७ (ख) ॥

निसिचर निकर मरन विधि नाना । रघुपति राजन समर ब्रजाना ॥
 राजन अथ मंदोदरि सोका । राज विभीषण देव असोका ॥
 सीता रघुपति भिन्न बहोरि । सुरन्द कीन्द अस्तुति कर जौरी
 पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्द समेत । अवध चले प्रभु कथा निकेत ॥
 जैहि विधि राम नगर निज आए । गायस बिसद चरित सत्र गाए ॥
 कहसि बहोरि राम अभिषेका । पुर भरनत दपनीति अनेका ॥
 कथा समस्त सुसुद्ध बखानी । जो मै गुह सन कही भवानी ॥
 सुनि सत्र राम कथा खगनाइ । कहैत बचन मन परम उछाड़ि ॥

सो-गयउ मोर सदेह सुनेउ सकल रघुपति चरित ।

अयउ राम पद नेह तव प्रसाद बाधस लिख ॥६८(क)॥
 मोहि मयउ अलि मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि ।

चिदानंद सदेह राम बिकल कारन कवन ॥६८(ख)॥

देखि चरित अलि नर अनुसारी । मयउ हृदय मम संसय मारी ॥

सोह भ्रम अग्र दित करि सँभाना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

जो अलि आतप व्याकुल होई । तव छाया मुख जानइ सोई ॥

जौ नाहि होत मोह अलि मोही । मिलतेउ तत कवन बिधि जोही ॥

सुनेतुँ किमि हरि कथा सुहई । अलि बिचित्र बहूँ बिधि पुनइ गाई ॥

निगमनाम पुरान मत एही । कहई सिद्ध मुनि नाहि सदेह ॥

संतनिमुद्ध मिलहि परि वेही । चितवहि राम कथा करि वेही ॥

राम कथा तव दरसन भयउ । तव प्रसाद सब संसय भयउ ॥

दो-सुनि बिहंगपति बानी सहित विनय अनुसारा ।

पुलक गात लोचन सजल मन हेरयेउ अलि कला ॥६९(क)॥

ओता सुमति सुसील सुचि कथा रासिक हरिदास ।

पाइ उमा अलि गोप्यमणि सजन करहि प्रकास ॥६९(ख)॥

बोलेउ काकमसुंड बहोरौ । नमनानाथ पर प्रीति न थोरौ ॥

सब बिधि नाथ पूज्य पुनइ भरे । कृपापात्र रघुनाथक करे ॥

पुनइहि न संसय मोह न भया । मो पर नाथ कीन्ह पुनइ दया ॥

पठइ मोह भिस खगपति जोही । रघुपति दीन्ह बहई मोही ॥

गुह निज मोह कही खग साई । सो नहि कहु आचरज गोसाई
 नारद भव विरंचि सनकादी । ज मुनिनाथक आतमपादी
 मोह न अंध कीन्ह कहे कही । की जग काम नचव न जही
 तखाँ कहे न कीन्ह बौराहा । कहे कर दृढय कोष नहि दाहा ।
 दी०-यानी तापस पूर कवि कोविद गुन आगार ।

कहे कै लोभ विडवना कीन्ह न पहुँ संसार ॥७०॥ (क) ॥
 श्री मद वक्र न कीन्ह कहे प्रभुता वधिर न काहि ।

भुगलोजनि के नैन सर को अस जग न जाहि ॥७०॥ (ख) ॥

गुन केत सत्यपाल नहि कही । कोउ न मान मद तजेउ निबोही ॥
 जीवन उपर कहे नहि बलकावा । समता कहे कर जस न नसावा ॥
 मच्छर काहि कलंक न लावा । काहि न सोक समीर डोलवा ॥
 चिंता साँपनि को नहि खया । को जग जाहि न व्यापी मया ॥
 कीट मनोरथ दाक सरीरा । जहि न लगान को अस धीरा ॥
 सुत बिल लोक ईषना दीनी । कहे कै मति दूर केव न मलीनी ॥
 यह सब माया कर परिवारा । प्रबल अप्रति को बरनै परा ॥
 शिव चतुरानन जाहि डेराही । अपर जीव कहे लेखे माही ॥

दी०-ज्यापि रहैउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट बंध कपट पावड ॥७१॥ (क) ॥

सो दासी रघुवीर कै समुझि मिथ्या सोधि ।

कूट न राम कीया विनु नाथ कहेउ पर रोधि ॥७१॥ (ख)

जो मया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि कहूँ न पावा
 सोइ प्रभु भू विजस खाराजा । नाच नटी इव सहित समजा ॥
 सोइ सच्चिदानंद धन रामा । अज विद्यान रूप बल धामा ॥
 व्यापक व्याप्य अवंड अनंत । अखिल अमोघवर्षि मगंत ॥
 अगुन अदभ निग गीतीत । सबदरसी अनवर अजीत ॥
 निर्गुम निराकार निरमोह । नित्य निरंजन सुख सदाह ॥
 प्रकृति पार प्रभु सब उर गासी । ब्रह्म निरीह निरज अविनासी ॥
 देहो मोह कर कारन नाहो । रति समुख तम कनहूँ कि जाहो ॥

०-भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तबु भूष ।

किणु चरित पावन परम प्राकृत नर अनुकूप ॥७२(क)॥
 जया अनेक बेष धरि नृप करइ नट कोइ ।

सोइ सोइ भाव देखावइ आहुन होइ न सोइ ॥७२(ख)॥
 अरि खपति लीला उरगरी । दनुज विमोहिन जन सुखकारी ॥
 जे मति मलिन विषयस कामी । प्रभु पर मोह धरहि इमि खापी ॥
 नयन दोग जा कहूँ जग होइ । पीत नयन ससि कहूँ करि सोइ ॥
 जग जेहि दिदिषि भ्रम होइ खगोष । सो कह पच्छिम उपज दिनेष ॥
 नौकाखंड चलत जा देखा । अचल मोह बस आपुहि लेखा ॥
 बालक भ्रमहि न भ्रमहि गृहादी । कहहि परस्पर मिथ्यावादी ॥
 हरि विषयक अस मोह निहंगा । सपनेहुँ नहिँ अय्यान प्रवंगा ॥
 मायावस मतिमंद अमागी । इदंयुं जमनि का बहिनियि लगि ॥

सह दैव तस्य संस्रय करदौ । निज अग्र्यान् राम पर धरदौ ॥

टी०—काम कोष मद्र लोभ रत गुह्यसक्त दुखरूप ।

(क) वै किमि जानहि रघुपतिहि मूर्ख पर तम कप ॥७३॥

निगुन रूप सुलभ आवि सगुन जान नहि कोइ ।

(ख) सुगम आगम नाना चरित सुनि सुनि मन अम होइ ॥७३॥

मृजु खोस रघुपति प्रभुताई । कहेउ जयमालि कथा सुहाई ॥

कहि विधि मोइ मयउ प्रभु मोहौ । सोउ सय कथा सुनावउ तोहौ ॥

राम कथा भाजन ठुह लाल । हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाल ॥

मालि नहि कछु ठुहहि दुखवउ । परम रहस्य मनोहर गावउ ॥

मृजु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहि काऊ ॥

सुख मूल सुखद नाना । सकल लोक दायक अभिमान ॥

मालि कयहि कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अलि भूरी ॥

जामि सिंसु तन अन होइ गोसाई । माहि चिराय कठिन की नहि ॥

टी०—जदंति प्रथम दुख पावई रोवई बाल अधीर ।

(क) ब्याधि नास हित जननी गानवि न सो सिंसु पौर ॥७४॥

विमि रघुपति निज दास कर दहहि मान हित जामि ।

(ख) दुखसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजइ अम त्यागि ॥७४॥

राम कथा आपनि जहताई । कहेउ खोस सुनइ मन लहै ॥

जब जब राम मजुज तज धरदौ । भक्त हेतु लीला नहि करदौ ॥

तब तब अवधपुटी मैं जाऊँ । बालचरित विचित्रिक दूषाऊँ ॥

जन्म महोत्सव देखुं जाई। अरु पाँच तहै रहै लोभाई ॥
 इष्टदेव मम बालक राम। सोभा अरु कौटिल सब कामा ॥
 निज प्रभु अदन निहारि निहारी। लोचन सुफल करै उरगारी ॥
 लखु आपस अरु धरि हरि संग। देखै बालचरित यहै रंग ॥
 टी०-लोकार्थ जाहँ जाहँ फिरि जाहँ तहँ तहँ संग उड़ा ॥

(क) जँठनि परहँ अजिर महुँ सो उठाई करि खानै ॥७५॥
 एक बार अतिसय सब चरित किए रघुबीर ।
 सुमिरत प्रभु लीला सोई पुलकित भयउ सरीर ॥७५॥ (ख)

७२ महुँ सुनई खमानायक। रामचरित सेवक सुखदायक ॥
 वृषभर्षि सुंदर सब भाँती। खचित कनक मणि नाना जाती ॥
 गरुड न जाई कचिर अंगनाई। जाहँ खेलाहँ नित चरित मही ॥
 बालबनोद करत रघुराई। विचरत अजिर जननि सुखदाई ॥
 मरकत महुँल कलेवर स्वामा। अंग अंग प्रति छवि यहै कामा ॥
 नव राजीव अरुन महुँ चरना। पदज कचिर नख घनि टटि हरना ॥
 ललित अंक कुलसादक चारी। नूपुर चार मधुर रवकारी ॥
 चार पुरट मणि रचित गनाई। कटि किंकित कल मुखर सुहाई ॥
 टी०-देखा अय सुंदर उदर नाभी कचिर महीर ।

उर आयत आगत विविध बाल विभूषन चौर ॥ ७६ ॥
 अरुन पणि नख करज मनोहर। गह्वि विमल विभूषन सुंदर ॥
 कंध बाल केहरि दूर गीवा। चार चित्रक आनन छवि सीवा ॥

॥ या भूत जगति कृत भग्या । विभु देवि जगत् न कोटि उग्रया ॥
 ॥ रघुष जीव स्वयम् भगवता । जीव अनेक एक श्रीकृता ॥
 ॥ भग्या रघु जीव अभिमानी । देव रघु भग्या सुनखानी ॥
 ॥ श्री स्व कं दे भग्या । देव रघु जीव भूत कष्ट कृष ॥
 ॥ भग्या अर्चत एक सीतावर । भग्या रघु जीव सचराचर ॥
 ॥ भग्या देवी कष्ट कारन आना । सुनई सो सावधान देविजाना ॥
 ॥ श्री भग्या न दुखद मोहि कहौ । भग्या जीव देव सखत मोहि ॥
 ॥ एतना मन आनत खगला । रघुपति प्रेति आपी भग्या ॥
 ॥ कवन चरित करत प्रभु विद्वानंद सदाह ॥ ७८ (ख) ॥

प्राकृत सिद्ध देव लीला देवि भगवत मोहि मोह ।

जात समीप गहन पद किहि किहि चित दे पयाहि ॥ ७९ (क) ॥

॥ १०-आवत निकट हैसहि प्रभु आजत रुदन करहि ।

निकलकत मोहि परन जग धावहि । चलत भग्या वन पद देवजाहि ॥
 मोहि सन करहि विविध विविध क्रीडा । परनत मोहि होति अति प्रीति ॥
 रूप राशि नृप अतिर विदेसी । नाचहि निज प्रतिविम्ब निदेसी ॥
 पौत श्रीनि श्रुति तन सोही । निकलकति चितवनि भगवति मोही ॥
 निकट भुक्ति सम भवन सुंदर । कुंचित कच मेचक छवि छान ॥
 नील कंज लचन भव मोचन । आजत भाल तिलक गोरोचन ॥
 ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद भसि कर सम होसा ॥
 कलवल वचन अथर अकनर । दृढ़ दृढ़ दसन विषद नर नारी ॥

नम महोत्सव देखू जाई। ग्रय पाँच ठहै रहूँ लोभाई ॥
 छिदेव मम बालक राम। सोमा ग्रुष कोटि सत कामा ॥
 नज प्रसु ग्रदन निहारि निहारी। लोचन मुफल करूँ उरगारी ॥
 छु ग्रयस ग्रु धरि हरि संग। देखूँ बालचरित ग्रहै रंगा ॥
 श्री०-लरिकाईं जाईं जाईं किगहिं तहै तहै संग उड़ाई ॥

(क) ऊँठनि परहँ अजिर महुँ सो उठाइ कसि खाँ ॥७५॥
 एक बार अतिसय सब चरित किणु रखीर ।
 सुमिरत प्रसु लीला सोइ पुलकित मयउ सरीर ॥७५॥ (ख)

कहै मसुह सुनहँ खगनायक। रामचरित सेवक सुखदायक ॥
 दर सुंदर सब माँगी। खचित कनक मान माना जाती ॥
 न जाइ कचिर अमानाईं। जहै खेलाहँ नित चारिउ भाई ॥
 बालनिनोद करत रखीर। निचरत अजिर जननि सुखदाई ॥
 मरकत महुँल कलेवर लगाम। अंग अंग प्राति छवि ग्रहै कामा ॥
 नव राजीव अवन महुँ चरना। पदज कचिर नख ससि दृति हरना ॥
 अलित अंक कुलिसादिक चारी। नूपुर चार मधुर रवकारी ॥
 बाह पुरट मान रचित अनाईं। कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥
 श्री०-देखा अय सुंदर उदर नाभी कचिर माँगीर ।

उर आयत आगत विविधि बाल विमेषन चौर ॥ ७६ ॥
 अवन पाणि नख करज मनोहर। ग्रहै विषाल विमेषन सुंदर ॥
 कथ बाल केहरि दर ग्रीवा। चार चिचिक अंगन छवि संगी

३५। इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

प्राकृत तिसु डेव लीला डीहि भयव मोहि मोहि ।
 कवन चरित्र करत प्रभु चितानंद सहोह ॥ ७७ (ख) ॥
 रतना मन आनत खारया । रघुपति प्रीति आपी मया ॥
 मे मया न दुखद मोहि काहो । आन जीव डेव संसत नाहो ॥
 मय डहो कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥
 यान अवत एक सीतावर । माया बस्य जीव सचराचर ॥
 नो सब के रह यान एकरस । ईसर जीवहि भेद कहहु क
 माया बस्य जीव अपिमानी । डेस बस्य माया गुनछा
 परबस जीव स्वयस भगवत । जीव अनेक एक श्रीकर

॥(क)१०॥ शिवस्यै नमः ।

[illegible]

टी०-रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निबान ।

॥८८॥ (क) ॥

राकापति धौंस उआहिं तायान ससुदाइ ।

॥८९॥ (ख) ॥

ऐसेहि हरि विनु भजन खोसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥

हरि सेवकहि न आप आविया । प्रभु प्रियत आपइ वैहि बिया ॥

ताते नास न होइ दास कर । भद भगति यादइ बिहंगार ॥

भम तै चकित राम मोहि देखा । बिहसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥

वैहि कौतुक कर मरु न काहूँ । जाना अज न भावित्ति ॥

जनु पानि धाप मोहि धरना । त्यागल गाल अकन कर चरना ॥

तब सँ भगि चलेउ उरगारि । राम गहन कहूँ भुजा पसरि ॥

जिमि जिमि हरि उदाउ अकासा । तहँ भुज हरि देखै निज पास ॥

टी०-प्रसन्न होकर जाना गयूँ मैं चितपट्ट पाछ उदात ।

॥९०॥ (क) ॥

समावरन भद करि जहाँ लगे गति मोहि ।

॥९१॥ (ख) ॥

गयूँ तहाँ प्रभु भुज निरखि व्यक्त भयूँ बहोरि ॥९२॥ (ख) ॥

मूँदु नयन बसित जग भयूँ । पुनि चितवन कोसलपुर गयूँ ॥

मोहि बिलोक राम मुसुकाहौ । बिहसत हरत गयूँ मुख माहौ ॥

उदर माझ सुनु अंजन रागा । देखैउ बहूँ प्रसन्न निकया ॥

अति निश्चय तहँ लोक अनेका । रचना अधिक एक ते एका ॥

मुक्ता मुक्ता देवत फिरेत मोह समीर ॥ ८१ ॥ (ख) ॥
सोह सिमुपन सोह सोमा सोह कपाल रघुवीर ।

अमानित मुक्ता फिरेत प्रभु राम न देखेउ आन ॥ ८२ ॥ (क) ॥
दो-मिष मिष मं दीष सब अति विनिव हेरिजान ।

प्रति प्रदात राम अवतार । देखेउ बालनिनोद अपार ॥
दसरथ कौसल्या सुत ताता । विविध रूप भराति क आता ॥
अवधपुत्री प्रति मुक्ता निनारी । सरल मिष मिष नर नारी ॥
अंडकोष प्रति प्रति निज रूप । देखेउ जिनस अनेक अनूप ॥
महि सरि समार सर निरि नाग । सब प्रपंच तहूँ आनह आना ॥
देव दनुज गन नाग जाती । सकल जीव तहूँ आनहि माती ॥
नर गंधर्व भूत वेताल । किनर निषिन्धर पसु खग व्याल ॥
लोक लोक प्रति मिष विधाता । मिष विषु विष मनु दिविजाता ॥
एहि विविध देखत फिरेत मं अंड कटाह अनेक ॥ ८० ॥ (ख) ॥

एक एक प्रदात महुँ रहै बरष सर एक ।
सो सब अह्वर देखेउ बरनि कवनि विविध जाह ॥ ८० ॥ (क) ॥

दो-जो नहि देखा नहि सुना जो मनहूँ न समह ।
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥
समार सरि सर विषिन अपारा । नाग माति सुहि विखाता ॥
अमानित लोकपाल जम काल । अमानित भूधर भूमि विखाल ॥
कोटिन्ह चतुरानन गौरीष । अमानित उज्जैन रीर रजनीष ॥

अमल मोहि ब्रह्मांड अनेका। गोले मनहुं कल्प सत एका ॥
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउ। तहुं पुनि रहि कछु काल गाथाउ
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउ। निभूरे प्रेम हरि उठि पायउ ॥
 देखउ जन्म महेत्सव जाई। जेहि निधि प्रथम कहे मी गार्ह ॥
 राम उदर देखेउ जग गाना। देखत जनई न जाई यजना ॥
 तहुं पुनि देखेउ राम सुजाना। माया पाति कपाल भगवाना ॥
 करउ विचार बहोरि बहोरि। मोह कलिल व्यापित मति मारी ॥
 उभय घरी महुं मी सग देख। मयउ अभिमत मन मोह निसेषा ॥
 दो०—देखि कपाल विकल मोहि बिहूसे तब खेवीर ।

बिहूसतही मुख बाहेर आयउ सुख मतिवीर ॥८२(क)॥
 सोई लरिकार्ह मो सन करन लगे पुलि राम ।

कोटि भाति समुझावउ मय न लहई विश्राम ॥८२(ख)॥
 देखि चरित यह सो प्रगुतार्ह। समुझत देह दसा निरुतार्ह ॥
 धरनि परउ मुख आव न गता। गार्हि गार्हि आरत जन आता ॥
 प्रमाकिल प्रभु मोहि बिलोकी। निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
 कर सरोज प्रभु मम मिर धरेऊ। दीनदयाल सकल दुख दरेऊ ॥
 कीन्ह राम मोहि निगत निमोहा। सेवक सुखद कपा सदोहा ॥
 प्रभुता प्रथम निचारि निचारी। मन महुं दोह हरष आति मारी ॥
 भगत बल्लला प्रभु कै देखी। उजली मम उर प्रीति निसेषी ॥
 सजल नयन पुलकित कर जोरी। कीन्हैउ यह निधि निनय बहोरि

जो मुनि कोटि जन नहि लहेई । जे जग जोग अनल तन लहेई ।
 सब सुख खानि भगति है भगानि नहि जग कोउ रोहि सम बड़ भगानि
 सुख जायस है सबज भगाना । काहे न भगानि अस बरदाना ।
 परमसु कहि खिडिनायक । बोले बचन परम सुखदायक ।
 सोइ निज भगति मोहि भयु देई दया करि राम ॥८४॥ (ख)

भगत कल्पतरु मत हित कैय सिंधु सुख धाम ।
 रोहि खोजव जोगीस मुनि भयु प्रसाद कोउ पाव ॥८४॥ (क)
 टी०-अधिराज भगति विषुद्ध तव श्रुति पुराण जो गाव ।

मन भावत बर मागउ खामी । रोइ उदार उर अंतरजामी ।
 जो भयु होइ प्रसन्न बर देई । सो पर करहु कैय अरु नहि ।
 भजन हीन सुख कवने काजा । अस निचारि बोलेउ खगारजा ।
 भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन निना बहू बिजन जैसे ।
 भयु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ।
 मुनि भयु बचन अधिक अजरावो । मन अनुमान करन तब लगे ।
 आज देउ सब संसय नाही । भगि जो रोहि भाव मन माही ।
 श्याम विवेक विरति विद्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग जाना ।
 अनिमित्तिक सिंधि अपर सिंधि मोख सकल सुख खानि ॥८३॥ (ख)

काकभसुहि भगि बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।
 बचन सुखद गंभीर मुई बोले रमानवास ॥८३॥ (क)
 टी०-मुनि सनेस मन बानी देखि हीन निज दास ।

दो०—माया संभव अस सब अव न व्यापिहहिं तोहि ।

जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥८५(क)॥

मोहि भाग प्रिय संतत अस विचारि सुख काम ।

कल्य वचन मन मन पद करेसु अचल अचरान ॥८५(ख)॥

अब सुख परम विमल मन बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥

निज विद्वत सुनावउँ तोही । सुख मन धर सब तजि भजु मोही ॥

मैं माया संभव संसार । जीव चराचर विविध प्रकार ॥

सब मन प्रिय सब मन उषाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥

तिन्हें महुँ दिज दिज महुँ श्रुतिधारी । तिन्हें महुँ निगम परम अनुसारी ॥

तिन्हें महुँ प्रिय प्रिय प्रिय प्रिय पुनि यानी । यानिन्हें ते अति प्रिय विधानी ॥

तिन्हें ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जोहि गति मोरि न दूखि आसा ॥

पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाही । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाही ॥

भगति दीन विरंचि किन दोई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥

भगतिवंत अति नोचउ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय अहि सम बानी ॥

दो०—सुखि सुखील सेवक सुमति प्रिय कहूँ कहि न जग ।

श्रुति पुरान कहूँ नीति अहि सावधान सुख काम ॥८६॥

एक पिता के विपुल कुमारा । होहि प्रथक गुन सील अचारा ॥
 नीउ पंडित कीउ तापस आता । कीउ धनवंत सूर कीउ दाता ॥
 नीउ सगुन्य धर्मरत कोई । सब पर प्रताहि प्रीति सम होई ॥
 नीउ प्रिय प्रिय प्रिय प्रिय प्रान समाना । जगपि सो सब भाति अमाना ॥
 एहि विधि जीव चराचर जेते । विजा देव नर असुर समेते ॥
 अखिल बिस्व यह मोर उपया । सब पर मोहि बराबरी दया ॥
 तेन महुँ जो परितेहि मर माया । भवै मोहि मन बच अरु काया ॥

श्लो०-पुरुष बहुसक नारि वा जीव चराचर कोई ।

सब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोई ॥८७(क)॥

श्लो०-सत्य कहूँ जग तोहि सुवि सेवक सम प्रानप्रिय ।

अस विचारि भुज मोहि परितेहि अस भरोस सब ॥८७(ख)॥

कनहुँ काल न आनिहि तोही । सुमिरै भवै निरंतर मोही ॥

प्रभु बचनमृत सुनि न अधाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरेषाऊँ

सो सुख जानई मन अरु काना । नहि रसना पहि जाई बखाना ॥

प्रभु सोभा सुख जानहि नयना । कहि किमि सकहि निन्दहि नहि बयन

बहुँ विधि मोहि प्रबोधि सुख देई । जग करन विषु कौचि देई ॥

सजल नयन कछु मुख करि जखा । चितई मातु जगनी अति भूखा

देहि मातु आनर उठि धाई । कहि मरु बचन लिप उर जहाँ

गौर राखि कराय पय पाना । रघुपति चरित ललित कर गाना

सो०-हेहि सुख जाति पुरारि असुख बंध छव सिख सुखद ।

अवधपुटी नर नारि दोहि सुख महुँ संवत मान ॥८८(क)॥

सोई सुख लखलख लिनइ शरक सपनोहुँ लहेउ ।

ते नहिं गनहिं खोस ब्रह्मसुखहि सजान सुमति ॥८८(ख)॥

मैं पुनि अवध रहेऊ कछु काल । देखेऊ बालबिनोद रसाल ॥

राम प्रसाद भगति भर पावउँ । प्रभु पद बंदि निजाश्रम आपवउँ

तब ते मोहि न व्यापी माया । जब ते रघुनाथक अपनया ॥

पह सख गुप्त चरित मैं गावा । हरि मायाँ जिय मोहि नचावा

निज अगुमव अव कहउँ खोसा । बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा

राम कथा बिनु सुनु खगमई । जानि न जाइ राम प्रभुतई ॥

बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥

बिना नहिं भगति दिहंइ । जिय खगपति जब कै चिकनइ

सो०-बिनु गुर होइइ कि अ्यान अ्यान कि होइइ बिरग बिनु ।

गावहिं बेद पुरान सुख कि लहेउ हरि भगति बिनु ॥८९(क)॥

कोउ बिश्राम कि पाव ताव सहज संतोष बिनु ।

चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पवि पवि मरिअ ॥८९(ख)॥

बिनु संतोष न काम नसाही । काम अछत सुख सपनोहुँ जाही ॥

राम भजन बिनु भिटहि कि कामा । यल बिहीन तब कबहुँ कि जामा

बिनु विद्यान कि समता आपइ । कोउ अवकास कि नम बिनु पावइ

भदा बिना धर्म नहिं होई । बिनु मरिअंय कि पावइ कोई ॥

तु तप तेज कि कर विस्तार । जल विन रस कि होइ संसार ॥
 तल कि मल विन बुध सेवकाई । जलमि विन तेज न रूप गोसाई ॥
 तेज सुख विन मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
 जलनिउ सिद्ध कि विन विस्वास । विन होरे भजन न भव भय नास

१०-विन विस्वास भगति नहिं बेहि विन द्रवहिं न रास ।

रास केषा विन सपनेई जीव न लहे विधामि ॥१००(क)॥

१०-अस विचारि मतिधीर तजि कुतकें संसय सकल ।

भगई राम रघुवीर करेनाकर सुंदर सुखद ॥१००(ख)॥

तेज मति सरिस नाथ सैं गार्ई । प्रभु प्रताप महिमा खगारई ॥

कहेऊ न कछु करि ज्युति बिसेयी । यह सब सैं निज नयनहिं देखी

महिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रचिनाथा ॥

तेज निज मति मुनि होरे गुन गावहिं । निगम सेष सिव पार न पावहिं

महोई आदि खग मसक प्रजता । नम उदाहिं नहिं पावहिं अंता ॥

तेमि रघुपति महिमा अवगाहो । तात कबहुं कोउ पाव कि याहो

रास काम सर कोटि सुभा तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥

भक्त कोटि सर सरिस बिजसा । नम सर कोटि अमित अवकासा

१०-मरत कोटि सर विपुल बल गेबि सर कोटि प्रकास ।

ससि सर कोटि सुसीतल समन सकल भव रास ॥१०१(क)॥

काल कोटि सर सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुर्त ।

धूमकेतु सर कोटि सर दुर्गाधरष भगवत ॥१०१(ख)॥

प्रभु अगाध सब कोटि पताल । समन कोटि सब ससि कराल ॥

दीरघ अमल कोटि सम पवन । नाम अखिल अव पूरा नखवन ॥

हिमशिखर कोटि अचल खरीरा । सिंधु कोटि सब सम गंगीरा ॥

कामधेनु सब कोटि समान । सकल काम दायक भगवान् ॥

सारद कोटि अमल चतुर्द्व । शिथि सब कोटि सुहि निपुर्नद्व ॥

विजय कोटि सम पालन कर्ता । कद्र कोटि सब सम सहर्ता ॥

धनद कोटि सब सम धनवान् । माया कोटि प्रपंच निधान ॥

भार धरन सब कोटि अहंसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीश ॥

छं-निरुपम न उपमा आन राम समान राम । निरुपम कहै ॥

जिम कोटि सब खद्योत सम रंग कहत अति लघुता लहै ॥

पूहि भूति निज निज मति बिजलस मुनीस देहिहि बखानहीं ।

प्रभु भाव गहक अति केषाल सप्रम सुनि सुख मानहीं ॥

दो-राम अमल गुन सागर ग्राह कि पावह कहै ।

संतद सब जस किछु सुनेहु गुनदेहि सुनायहु सोइ ॥ १२ (क) ॥

सो-भाव वस्य भगवान् सुख निधान करेना भवन ।

तजि समता मद्र मान भोजन सदा सीतारवन ॥ १२ (ख) ॥

सुनि सुसुहि के जवन सुहाए । देखित खगपति पंख फलाए ॥

नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥

पाछिल भौह समुझि पछिताना । दस अनादि मनुज करि माना ॥

पुनि पुनि काम चरन छिद नावा । जानि राम सम प्रेम बढावा ॥

पुर निज भवनिष्ठ तरङ्ग न कोई। जौ निरन्त्रि संकर सम होई ॥
 संसर्ग स्रष्ट प्रसेउ मोहि ताता। दुखद लहरि कुतर्क बहू आता ॥
 तव सकल गाकिङ्ग खिनायक। मोहि जिआपउ जन सुखदयाव
 तव प्रसाद मम मोह नशाना। राम रहस्य अनर्पम जाना ॥
 टी०-ताहि प्रससि विविधि विधि सीस नाइ कर जोरि।

बचन बिनीत सप्रम महु बोलेउ गकड़ बहोरे ॥९३(क)॥
 प्रभु अपने अविबेक ते ब्रह्मरूप स्वामी वोहि।

कृपासिंधु सादर कहई जानि दास निज मोहि ॥९३(ख)॥

पुन्ह सर्वत्र तय तम पाया। सुमति सुशील सरल आचारा ॥
 यानि विरति विद्यान निवास। खिनायक के पुन्ह प्रिय दासा ॥
 कारन कवन देह यह पाई। तात सकल मोहि कहई बुझाई ॥

राम चरित सर सुंदर स्वामी। पायई कहौ कहई नमगामी ॥

नाथ सुना मै अस सिव पाहौ। महा प्रलयहु नास तव नाहौ ॥

सुधा बचन नाहि ईसर कहई। सीउ मोरे मन संस्र अहई ॥

अग जग जीव नाग नर देवा। नाथ सकल जग काल कलेवा ॥

अंड कटहि अमित लय कारी। काछ सदा हरिकम मारी ॥

सी०-पुन्हहि न व्यापत काल अलि कराल कारन कवन।

मोहि सी कहई कृपाल यान प्रभाव कि जोग बल ॥९४(क)॥

टी०-प्रभु तव आश्रम आहुँ मोरे मोह अस भाग।

कारन कवन सी नाथ सब कहई सहित अविद्या ॥९४(ख)॥

राकई गिरा सुनि देखेउ काग। बोलैउ उभा परम अनुमाना ॥
 धन्य धन्य तब मति उरगारी। प्रख गुह्यहि मोहि अति प्यारी ॥
 सुनि तब प्रख सप्रेम सुहाई। गह्वर जनम कै सुधि मोहि आई ॥
 सम निज कथा कहउँ मैं गार्ह। ताल सुनहुँ सादर मन लार्ह ॥
 जग तप मख सम दम दाना। निरति निबेक जोग विधाना ॥
 सब कर फल रखपति पद प्रेमा। तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा ॥
 एहि तन राम भगति मैं पढ़ै। तारे मोहि ममता अधिकाई ॥
 जेहि तैं कह्यु निज स्वरूप होई। तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो-पञ्चागारिअसि नीति श्रुति संमत सजान कहहि ।

अलि नीचहुँ सम प्रीति करिअ जानि निज परम दिव ॥१५५(क)॥

पाट कोट तैं होइ तेहि तैं पाटबर खीर ।

कृषि पालइ सब कोइ परम अपावन प्रान सम ॥१५५(ख)॥

स्वल्प सौच जीव कहुँ एहा। मन कम गवन राम पद नेहा ॥

सोइ पावन सोइ सुभा सरीरा। जो तज पाइ भविअ रखीरा ॥

राम विमुख जेहि विधि सम देखै। कवि कोनद न प्रसवहि वेष्टै ॥

राम भगति एहि तन उर जामी। तारे मोहि परम प्रिय स्वामी ॥

तजउ न तन निज इच्छा मरना। तन बिनु वेद भजन नहि बरना ॥

प्रथम मोहि मोहि गह्वर निगोवा। राम विमुख सुख क्यहुँ न सोवा ॥

नाना जनम कम पुनि नाना। किए जोग जग तप मख दाना ॥

कवन जोनि जनमेउ जहै गार्ह। मैं खोस अमि अमि जग मार्ह ॥

द्विज श्रुति वैचक भूय प्रजापत । कोटि नहिं मान निगम अगुवास
 वरन धर्म नहिं आश्रम धारी । श्रुति विरोध रत सब नर नापी
 सुप्रि हृदिजान यान निधि कहेहु कहुक कलिधर्म ॥ १७७ (ख) ॥
 भय लोभ सब मोहबल जेन भये सुख कर्म ।
 दंभिनहिं निज मति कलि कहे प्रगट किम बहू पय ॥ १७८ (क) ॥
 दौ०-कलि मल भये धर्म सब छिप भय सदांभय ।

सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परापन सब नर नापी ॥
 अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जव उर बसहिं राम धनुषानी ॥
 कवनहुं जन्म अवध बस जोई । राम परापन सो परे होई ॥
 अब जाना मैं अवध प्रभाव । निगमागम पुरान अब गावा ॥
 जदहिं रहै उ खपति रजधानी । तदपि न कहै महिमा तब जानी ॥
 धन मर मर परम बाचाल । उपब्रिद्ध उर दंभ निखाल ॥
 सिव सेवक मन कम अक गानी । आन देव निदक अभिमानी ॥
 तीरे कलिज्या कोसलपुर जाई । जगम भयउ सुद तनु पाई ॥
 नर अक नाहिं अवध रत सकल निगम प्रतिकूल ॥ १७९ (ख) ॥
 पूरे कल्य पूक प्रभु जग कलिज्या मल मूल ।

सुनि प्रभु परं रीति उपजइ आत मिटहिं कलेस ॥ १८० (क) ॥
 दौ०-प्रभु जन्म के चरित अब कहेहु सुनहुं विहारी ।
 सुनि मोहिं नय जन्म बहू कैरी । सिव प्रसाद मति मोहू न धेरी ।
 देवहुं कति सब करम गोसाईं । सुखी न भयउ अवहिं की नाई ।

* रामचरितमानस *

ग सोइ जा कहूँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥

यारंम दंम रा जाई । ता कहूँ संत कहेइ सब कोई ॥

इ सयान जो परधन हरी । जो कर दंम सो बड़ आचारी ॥

कहे झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ यानी सो बिरानी ॥

मराचार जो अति पय यानी । कलिजुग सोइ बिरानी ॥

जाके नख अक जटा बिभाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दो०-असुम वैष भूषन धरुं भवभामछ वै खाई ।

वेइ जोगी वेइ सिद्ध नर पूज्य वै कलिजुग माई ॥१८(क)॥

सो०-वै अपकारी चार लिन्ह कर गौरव मान्य वेइ ।

मनकम बचन लवार वेइ बकता कलिकाल महुं ॥१८(ख)॥

नारि विवस नर सकल गोसाईं । नाचहि नट मकट की नाई ॥

सूद दिजन्ह उपदेसहि याना । मलि जनेऊ लेहि कुदना ॥

सब नर काम लोम रात कोधी । देव विष अति संत बिराधी ॥

गुन मांदिर सुंदर पति लगनी । मजहि नारि पर पुरुष अमान ॥

सौमगिनी विभूषन होना । विषवन्ह के सिंगार नवीन ॥

गुर विष गौर अंध का लेला । एक न सुनइ एक नाई देख ॥

हरइ विष धन सोक न हरइ । सो गुर धोर नरक महुं पर ॥

मातु पिता बालकहि बोलवाहि । उदर भूँ सोइ धर्म सिखाव ॥

दो०-प्रसन्नमान विषु नारि नर कहहि न दसहि यात ।

कौही जालि लोम बस करहि विष गुर यात ॥१९॥

सुत मागहिं मातु पिता तव ज्यो। अवलानन दीख नहीं जव ज्यो
 कुलवंति निकारहिं नारि सती। गृहे आगहिं चोरि निवेरि गती
 तपसी धनवंत दरिद्र गृही। कलि कैतिक तात न जात कही
 छं-बहु दाम सुवारहिं धाम जती। विषया हरि ज्योहि न रहि बिर
 वेहिं न चळहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अवेक ॥१०००॥ (ख)

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजत विरति विवेक।

करहिं पाप पावहिं दुख भय रज सोक विषाग ॥१०००॥ (क)

दी०-भए वरन संकर कलि निवसेतु सब जोग।

सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न भरनि अनीति अपारा।
 सुद करहिं जप तप ब्रत नाग। बौठ बरासन कइहिं पुराना।
 विष निरञ्जर लोछिप कामी। निराचार सठ वृणली स्वामी।
 ते विषन सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज दाय न सजावहिं।
 नारि मुई गृह संपति नासी। मुई मुडाइ होहिं संन्यासी।
 जे वरनाथम वेलि कुहरा। स्वपच कियत कोल कलवारा।
 कल्प कल्प भए एक एक नरका। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका।
 आपु गए अरु तिनहूँ धालहिं। जे कहूँ सत मारग प्रतिपालहिं।
 तेइ अपेदवादी भ्यानी नर। देखो सैं चरित्र कलिज्या कर।
 पर विष लंपट कपट समाने। मोह द्रोह समता लपटाने।
 जानइ ब्रह्म सो विषयर आँख देखोवहिं जाहि ॥१०१॥ (ख)

वादहिं सुद द्विजह सन हेम पुनह ते कछु घाटि।

* उत्तरकाण्ड *

समुपारिपिआरिजानी जव तें । रिपुखण्ड कटंय मरु तव तें ॥
 मरु पाप परागन धमू नही । करि दंड विडंब प्रजा निवही ॥
 धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उवार तपी ॥
 नहि मान प्रयान न वेदहि जो । हरिसेवक संत सही कलिसे ॥
 कलि बुंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषक दात न कोपि गुनी ॥
 कलि आरहि बार दुकाल पूरे । विबु अन्न दुली सब जोग मरे ॥
 टी०—सुबु खोस कलि कण्ट हेऊ दंभ द्वेष पावड ।

मान मोहि मारादि मरु व्यापि रहै ब्रह्मंड ॥ १०१ (क) ॥
 रामस धमू करहि नरजप तप ब्रत सब दान ।
 देव न वरषहि धरनी वरु न जामहि धान ॥ १०१ (ख) ॥

ॐ—अवला कच भूषन भूरि दुःखा । धनहीन दुली समता बडुया
 सुख चाहेहि मूर्ख न धमू रता । मति थोरि करी न कोमलता ॥ ११ ॥
 नर पीडित रोग न भोग कही । अभिमान विरोध अकारनही ॥
 लवु जीवन सबहु पंच दंषा । कलपांत न नास गुमावु असा ॥ १२ ॥
 कलिकाल विह्वल किए मनुजा । नहि मानत को अजुजा तनुजा ॥
 नहि तीव्र विचार न सोतलता । सब जाति कुआलि मरु मगत ॥ १३ ॥
 देविपा पदपाच्छर लीखिपता । मति पूरे रहै समता बिगता ॥
 सब जोग विद्योग विमोक्त हण । वरनाशम धमू अचार मरु ॥ १४ ॥
 दंभ दान दया नहि जानपनी । जडता परबचनतलि धनी ॥

तव पोषक जाहि नरा सार । परनिंदक जे जग मो धार ॥ १५ ॥

०-सुमु ध्यातादि काळ कलि मल अवगुन आगार ।

गुनव वहुत कलिजग कर विमु प्रयास निहार ॥१०२(क)॥

कृतजुग जेवाँ हापर पूजा मल अरु जोग ।

जो गति होई सो कलि हरि नाम ते पावहि जोग ॥१०२(ख)॥

जुग सब जोगी विद्यानी । करि हरि ध्यान तरहि भव प्रानी

॥ विविध जग्य नर करही । प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरही ॥

पर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहि उपपन्न वृजा ॥

कलिजग केवल हरि गुन गाह । गावत नर पावहि भव याह ॥

कलिजग जोग न जग्य न यगना । एक अवधार राम गुन गाना ॥

भयरोष तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन प्रामहि ॥

है भव तर कछु संसय नाहीं । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ॥

लि कर एक पुनीत प्रताप । मानस पुन्य होहि नहि पाप ॥

०-कलिजग सम जुग आन नहि जाँ नर कर विस्वास ।

गाह राम गुन राम विमल भव तर विनहि प्रयास ॥१०३(क)॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।

जन कै न विधि दीन्है दान करह कल्याण ॥१०३(ख)॥

मत जुग धर्म होहि सब करे । हरि नाम माया के प्रे ॥

है सब समता विद्याना । केत प्रभाव प्रसन्न मन जग ॥

ल गहिर रज कछु रति कर्मा । सब विधि सुख जेता करहि धर्मा ॥

है रज स्वल्प सब कछु नामस । हापर धर्म देख भव मानस ॥

रामस बह्वल रजोगुन योग। कलि प्रभव विरोध चहुँ ओग ॥
 बुधजुग धर्म जानि मन माहौ। तजि अवधु रति धर्म कराहौ ॥
 काल धर्म नहिँ आपहिँ ताहौ। खपति चरन प्रीति अति जाहौ ॥
 नट कत विकट कपट खगारया। नट सेवकहिँ न व्यापइ माया ॥
 दो०—हरि माया कत दोष गुन बिबु हरि भजन न जाहिँ।

भजिअ राम तजि काम सब अस विचारि मन माहिँ ॥ १०४ (क) ॥
 तेहिँ कलिकाल बरष बहूँ बसेहुँ अवध बिहोस।

परेउ दुकाल विपति बस तब मैं गपहुँ बिदेस ॥ १०४ (ख) ॥

गपहुँ उजेनी सुत उरगारी। दीन मलीन दरिद दुखारी।
 गहूँ काल कछुँ संपति पाई। तहूँ पुनि करहुँ संसु सेवकाई ॥

प्रिय एक वैदिक सिव पूजा। करइ सदा तेहिँ काज न दूजा ॥

परम साधु परमारथ बिंदक। संसु उपासक नहिँ हरि निंदक ॥

तेहिँ सेवहुँ मैं कपट समेता। द्विज दयाल अति नीति निकेता ॥

बाहिज नम देविष मोहिँ साई। प्रिय पदाव पुत्र की नाई ॥

संसु मंत्र मोहिँ द्विजवर दीनार। सुम उपदेस विविध विधि कीनार ॥

जपहुँ मंत्र सिव मंदिर जाई। इदयुँ दंभ अहंमति अधिकाई ॥

दो०—सँखल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह।

हरि जन द्विज देखै जगहुँ करहुँ बिगुन कर दोह ॥ १०५ (क) ॥

सो०—गुर निज मोहिँ प्रबोध बुखित देखि आवतन मम।

मोहिँ उपजइ अति कोष वंशिमहिँ नीति कि भावई ॥ १०५ (ख) ॥

एक बार गुर लीन्हे बोलाई। मोहि नीति बहू माँति सिखाई ॥
 शिव सेवा कर फल सुत सोई। अतिरल भगति राम पद होई ॥
 रामहि भजहि तब सिव धारा। नर पावै कै कौतिक नारा ॥
 आसु चरन अज सिव अमरगामी। तासु द्रोह सुख चढहि अमरगामी ॥
 हर कहुँ हरि सेवक गुर कहैऊ। सुनि लगानाथ दूदय मम दहैऊ
 अधम जाति मैं बिद्या पाएँ। मयउँ जया अहि दूष पिआएँ ॥
 मानी कटिल कुमाराय कुजाली। गुर कर द्रोह करउँ दिनु राली ॥
 अति दयाल गुर स्वल्प न कोषा। पुनि पुनि मोहि सिखाव सुयोधा
 जाहि ते नीच बडाई पावा। सो प्रथमहि दूति ताहि नमरावा ॥
 धर्म अमल संभव सुनु भाई। तेहि बुझाव धन पदवी पाई ॥
 राज माग पती निरादर रहै। सब कर पद प्रहार नित सहै ॥
 मकर उड्याव प्रथम तेहि भ्राई। पुनि देव नयन किरौटनि रहै ॥
 सुनु लगपति अस समुझि प्रसंगा। बुध नाहि करहि अधम कर संगी ॥
 कवि कविद गारहि आसि नीती। खल सन कलह न भल नाहि प्रीति
 उदासीन नित रहैअ गोसाईं। खल परिहरिअ स्थान की नाई ॥
 मैं खल दूदय कपट कीटलाई। गुर हित कहै न मोहि सोहाई ॥

श्री०-एक बार हर भक्ति जगत रहेहुँ सिव नाम ।

गुर आपउ आनिमान न जति नाहि कोन्हे प्रनाम ॥ १०६ (क) ॥

सो दयाल नाहि कहैउ कछु उर न रोष लवलेस ।

अति अथ गुर अपमानना सोई नाहि सके महेस ॥ १०६ (ख) ॥

मंदिर माझ मई नमयानी रे हरेमन्य अम्य अभिमानी ॥
जगपि तव गुर कं नहि कोषा । अति कृपाल चित सत्पक बोधा ॥
तदपि साप सठ दैहई लोही । नीति विरोध सोहोइ न मोही ॥
जो नहि दंड करौ खल तोरा । अष्ट होइ अतिमान्य मोरा ॥
जे सठ गुर सन हरिमा करौ । रौरव नरक कोटि जुग परौ ॥
विजग जोनि पुनि धरिहैं सरिग । अजुव जन्म भरि पवहिं पौरा ॥
बैठ रहिसि अजगर देव पापी । सर्व होहिं खल मल मति व्यापी ॥
महा विटप कोटर मई जाई । रहि अवमान्य अवगति पाई ॥

दो०-होकार कीन्ह गुर दंस्न सुनि सिव साप ।

पित मोहि बिछोकि अति उर उपजा पवितप ॥ १०७ (क) ॥

करि दंडवत सप्रम द्विन सिव सन्मुख कर जोरि ।

विनय करत गदगद स्वर समुझि धोर गति मोरि ॥ १०७ (ख) ॥

नमामीशामीशान निर्वीणरूप । विभु व्यापक बहु वेदस्वरूप ॥

निज निगुनि निर्विकल्प निरीह । चिदाकाशमाकाशवास भजेहैं ॥

निराकारमोकारमूल विरीच । गिरा ज्ञान गोविन्दमीश निरीश ॥

कराल महाकाल काल कृपाल । गुणगार संसारपार नरोहैं ॥

पुष्यारिद्र संकाश गौर गभीर । मनोमूल कोटि प्रभा श्री शरीर ॥

रक्तमूर्त्ति कछोलिनी चार गंगा । लसदाजबालेन्ह कंठ सुजंगा ॥

बलकुंडल भू सुनेत्र विद्याल । प्रसन्नानन नीलकंठ दयाल ॥

सुगंधीशोचमानंदर मुण्डमाल । प्रिय शंकर सर्वनाथ भजामि ॥

प्रचरं प्रकटं प्रगल्भं परेष्टं । अखंडं अजं भविकोटिप्रकाशं ॥
 अथः शैलं निर्मूलं शैलपाणिं । भवेऽहं भवानीपतिं भावगन्धं ॥
 कलातीव कल्याण कल्पान्तकम् । सदा सज्जनानन्ददाता पुनरी
 चिदानन्दसन्दोहं मोहापहारी । प्रसीदं प्रसीदं प्रभो मन्मथप्रीतिं ॥
 न यावद् उमानाथ पादोदरविन्दं । भजतीह लोके परे वा नराणां ॥
 न तावत्सुखं शान्तिं सन्तापनाशं । प्रसीदं प्रभो सर्वभूतार्थवत्सवं ॥
 न जगन्मिथो गतं नैव पुनः । नतोऽहं सदा सर्वदा शोभे त्वभ्यम् ॥
 जगज्जम्भुः खौघ तावत्प्रमानं । प्रभो पाहि आपन्नसमीश शोभो

श्लोक-कदादिकमिदं प्रोक्तं विप्रो हरेरौषधे ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शोभ्यः प्रसीदति ॥ ९ ॥

टी०-सुनि निवर्ती सर्वथा सिव देवि विप्र अचरन्ति ।

पुनि मन्दिर नभवाणी भद्रे द्विजवर वर माय ॥ १०८ (क) ॥

जौ प्रसन्न भूय भो पर नथ दीन पर नैह ।

निज पदं भाति देहं भूय पुनर्दृश्यं वर देह ॥ १०८ (ख) ॥

तव माया वस जीव जडं सत्तव फिरदं सुखान ।

देहि पर कोष न करिअ भूय कृपा सिंघु भगवान् ॥ १०८ (ग) ॥

संकर दीनदंयाल अब एहि पर देह कृपाल ।

साप अनुग्रह देह देहि नथ शोदेही काल ॥ १०८ (घ) ॥

एहि कर देह परम कल्याण । सोह करहु अब कृपानिधान ॥

विप्रमिया सुनि परहित सानी । एवमस्तु देहि भद्रे नभवाणी ॥

जदपि कीन्ह एहि दान पाप । सँ पुनि दीन्ह कोप करि साप ॥
 तदपि गुहारि साधता देखी । करिदैं एहि पर कृपा बिसेषी ॥
 छमासील जे पर उपकारी । तेँ दिज मोहि प्रिय जया खराती
 मोर आप दिज व्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥
 जनमत मरत दुखह दुख होइ । एहि स्वल्प नहि व्यापिहि सोइ
 कवनै जन्म मिटिहि नहि याना । सुनहि सुद मम बचन प्रवाना ॥
 खपति पुरी जन्म तब मयक । पुनि तँ मम सेवौ मन दयक ॥
 पुरी प्रभाव अनुग्रह मोर । राम भगति उपजहि उरवोर ॥
 सुन मम बचन सत्य अब भाई । हरिनिषेध नहि दिज सेवकाई ॥
 अब जनि करहि प्रिय अपमाना । जानेसु संत अनंत समाना ॥
 इदं कलिस मम मूल बिभाला । कालदंड हरि चक कराला ॥
 जो इन्ह कर मारा नहि मरई । विप्रद्रोह पावक सो जरई ॥
 अस विशेष राखै मन माहीं । गुनह कहँ जा दुल्लभ कछु नहि ॥
 औरउ एक आशिषा मोरी । अपनिहल गति होइहि वीरी ॥

टी०—सुनि निब बचन हरि गुर पवमसु इति भाषि ।

मोहि प्रयोधि गपउ गुह संसु चरन उर गति ॥ १०९ (क) ॥

भरित काल बिधिनिहि जाइ मयउ सँ व्याल ।

पुनि प्रयास विनु सो तब तजेउ गपुँ कछु काल ॥ १०९ (ख) ॥

जोइ तब धरुँ तजुँ पुनि अनायास होजान ।

जिसि बचन एउ पाहिरइ नर पाहिरइ प्रान ॥ १०९ (ग) ॥

खण्डित जल गावत फिरुँ छन छन नव अवसर

श्री०-गुर के बचन सुनि कति राम चरन मनु जा

निगुन मत नहि मोहि सोइहैं । सगुन प्रस रति नहि ॥
जहि पूछुँ सोइ मुनि अस कहैं । ईसर सँ भूतमय अहैं ॥
राम चरन गोरिज जल देखौ । तब निज जन्म सफल करि लेखौ ॥
छूटी बिबिध ईधना गाँठी । एक लालसा उर अति गाँठी ॥
सुनत फिरुँ हरि गुन अनुवाद । अथाहत गति संस्र प्रसादा ॥
ब्रह्मरूप निहै राम गुन गाँठा । कहैं सुनतुँ हरिगत खयानाह ॥
जहँ जहँ निपिन मुनीसर पावतु । आश्रम जाइ जाइ सिरे नावतु ॥
मए कालवस जल पिबु माता । मैं जन गवतुँ भजन जननाता ॥
प्रम मयान मोहि कहुँ न सोइहैं । हरिउ पिता पढ़ाई पढ़ाई ॥
कहुँ खोस अस कवन अमागी । खरी सेव सुरवेजहि लगि ॥
मन ते सकल वासना भगी । केवल राम चरन लय लगि ॥
पौं मए मोहि पिता पढ़ावा । समझतुँ सुनतुँ गुरु नहि भावा ॥
खेलतुँ तहँ बालकन्ह मोला । करतुँ सकल खनियक लोला ॥
चरम देह द्विज कै मैं पाइ । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाइ ॥
एक संल मोहि बिसर न काज । गुर कर कोमल सील सुभाज ॥
विजया देव नर जोइ तनु धरुँ । तहँ तहँ राम भजन अनुसरुँ ॥
पुहि बिधि धरेतुँ बिबिध तनु ग्यान न गयउ खोस ॥ १०९ (घ)

सिब गली श्रुति नीति अरु मैं नहि पावा कैसे ।

* उत्तरकाण्ड *

मरविजय बट छायाँ मुनि जेसस आसीन ।

देखि चरन सिरे नायडू बचन कहेउँ अति दीन ॥ ११० (ख) ॥

मुनि मम बचन विनीत भई मुनि कृपाल जगाराज ।

मोहि सादर पूजव भए छिन आयडू केहि काज ॥ ११० (ग) ॥

तब मैं कछा कृपालिनि तुम्ह सबसुख सुआन ।

सगुन ब्रह्म अवरोधन मोहि कहेहुँ भगवान ॥ ११० (घ) ॥

तब मुनीस खपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥

ब्रह्मन्म्यान रत मुनि विद्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥

जगो करन ब्रह्म उपदेसा । अब अहैत अगुन हटयेसा ॥

अकल अनीह अनगम अरुणा । अजमय गम्य अवड अनूपा ॥

मम गोपीत असल अजिनासी । निर्बिकार निरवधि सुख रासी ॥

सी है ताहि ताहि नहि भेदा । याहि बौचि इव गावहि बेदा ॥

विबिधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । निर्गुन मम मम हटयूँ न आवा ॥

पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहेहुँ मुनीसा ॥

राम भगवि जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीस प्रवीना ॥

साइ उपदेस कहेहुँ करि दाया । निज नयनन्हि देखौँ खराया ॥

भरि लोचन बिलोकि अवधेसा । तब मुनिहउँ निर्गुन उपदेसा ॥

मुनि पुनि कहि हेरिकया अनूपा । खंडि सगुन मम अगुन निरुपा ॥

तब मैं निर्गुन मम कर दूरी । सगुन निकयउँ करि हट भूरी ॥

उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए कोष के चीन्हा ॥

षष्ठ स्वपञ्च तव दृष्ट्यु निगता । सपदि होहि पञ्ची चंडाला ॥
 लीन्ह आप मैं सीस चढ़ाई । नहि कछु भय न दीनता आई ॥

सुनिमि राम रघुबंध मनि दराधित चलेउ उदाई ॥ १२ (क) ॥

उसा जे राम चरन रत बिगल काम मद कोष ।

निज प्रभुमय देखहि जात केहि सन करहि बिरोध ॥ १२ (ख) ॥

सुनु खोस नहि कछु सिधि दूषन । उर प्रेरक रघुबंधनिर्भयन ॥

कृपासिंधु सुनि मति करि मोरी । लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी ॥

मन बच कम मोहि निज जन जाना । सुनि मति पुनि करी भावाना

सिधि मम मंडल सीलता देखी । राम चरन निखारि निखेरी ॥

अति विषमय पुनि पुनि पछिताई । सादर सुनि मोहि लीन्ह बोलै

मम परितोष विविधि विविध कीन्ही । दराधित रामभंज तव दीन्ही ॥

बालकल्प राम कर ध्याना । कहैउ मोहि सुनि कृपानिधाना ॥

सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहि मैं गुंदाहि सुजावा ॥

सुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥

सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोलै सुनि गिरा सुहाई ॥

रामचरित सर गुप्त सुहावा । संसु प्रसाद तात मैं पावा ॥

तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहैउ बखानी ॥

राम भगति लीन्ह केँ उर नाहीं । कबहुँ न तात कहिअ लिन्ह पावै

सुनि मोहि विविधि भाँति समझावा । मैं सप्रेम सुनि पद सिख नावा ॥

टी०-ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।

निज प्रभु दरसन पायउ गए सकल सहेह ॥ ११४ (क) ॥

मासपारयण, उत्तरीसर्ग विग्रह

भगति पछ हठ करि रहेउ टोन्हि महोदधि साय ।

सुनि दुलैम पर पायउ देखहु भजन प्रताप ॥ ११४ (ख) ॥

जे अशि भगति जानि परिहरौ । केवल यान हेतु भ्रम करहौ ॥

ते जइ कामधेनु गहूँ त्यागी । खोजत आऊँ फिरि हेतु लगी ॥

सुनु खोस हरि भगति बिहाई । जे सुख चाहिँ आन उपहै ॥

ते सठ महोदधि प्रिय तरनी । पुरि पार चाहिँ जइ करनी ॥

सुनि भुवि के बचन भवानी । बोलैत गकड़ हरि भई गानी ॥

तब प्रसाद प्रभु मम उर साहँ । संसय सोक मोह भ्रम नाहँ ॥

सुनेउ पुनीत राम गुन आभा । तुम्हरी कपाँ लहेउँ विश्रामा ॥

एक बात प्रभु पूछउ तोही । कहहु बुझाइ कपानधि मोही ॥

कहहिँ संत सुनि ब्रह्म पुराना । नहिँ कहु दुलैम यान समाना ॥

सोइ सुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाहँ । नहिँ आटेहुँ भगति की नाहँ ॥

यानहिँ भगतिहिँ अंतर केत । सकल कहहु प्रभु कपा निकेत ॥

सुनि उत्तारि बचन सुख माना । सादर बोलैत कान सुजाना ॥

भगतिहिँ यानहिँ नहिँ कहु भेदा । उभय हेरहिँ भव संभव वेदा ॥

नाथ मुनीस कहेहिँ कहु अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगर ॥

यान बिराम जोग विरामा । ए सब प्रकष सुनहुँ देखिजाना ॥

पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती । अञ्जलि अक्षर सहेज जई जाती
 द्रो०-पुरुष त्यागि सक नारिहि जो विरक्त मति धीर ।

ननु कामी विषयावस विमुख जो पद रघुवीर ॥ १५ (क) ॥
 सो०-सोच मुनि त्यागनिधान मृगनयनी विषु मुख निरखि ।

विषय होइ हृदिजान नारि विरजुमाया प्रगट ॥ १५ (ख) ॥
 इहो न पच्छयात कछु राखउ । ब्रह्म पुरान संत मत भाषउ ॥

मोह न नारि नारि के कथा । पञ्चगारि यह रीति अर्जुना ॥
 माया भाति सुनहु उरुह द्यौक । नारियन जानइ सब कोऊ ॥

पुनि रघुवीरहि भाति प्रियारी । माया खलु नवीकी विचारि ॥
 भातिहि साजकेल रघुराया । ताते होइ डरपति अति माया ॥

राग भाति निकषम निकषायी । यसइ जासु उर सदा अजायी ॥
 तेहि विबोकि माया संकेचाई । करि न सकइ कछु निज प्रभुतई

अस विचारि जे मुनि विद्यानी जाचाई भाति सकल मुख खानी
 दो०-यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ ।

जो जानइ रघुपति ऊँचा सपनेहुँ मोह न होइ ॥ १६ (क) ॥
 औरउ त्याग भाति कर भेद सुनहुँ सुप्रवीन ।

जो सुनि होइ राग पद प्रीति सदा आविछीन ॥ १६ (ख) ॥
 सुनहुँ तात यह अकथ कहानी । समझत ननइ न जाइ बजानी ॥

हृत्पर अंस जीव अविनशी । चेतन असल सहेज मुख राखी ॥
 सो मायावस भयउ गोसाई । ब्रह्मा कीर मरकट की नई ॥

जइ चेतनहि ग्रंथि परि गइ । जदलि मया छूटत कठिनई ॥
 तब ते जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथि न होइ सुजारी ॥
 श्रुति पुरान बहू कहेउ उपगई । छूट न अधिक अधिक अक्षरगई ॥
 जीव हृदय तम मोह विषयी । ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ॥
 अस संजोग हंस जग करई । तबहु कदाचित सो निरुअरई ॥
 सात्त्विक अज्ञा धेनु सुहाई । जौ हरि कपा हृदय बस आई ॥
 जग तप ब्रत जम नियम अपरा । जे श्रुति कह सुम धर्म अचारा ॥
 तेइ तेन हरित चरै जग गाई । भाव बल्य सिद्ध पाइ पेहोई ॥
 नोइ निवृत्ति पाव निराला । निर्मल मन अहोर निज दावा ॥
 परम धर्ममय पय वृद्धि माई । अवटै अनल अकाम बनाई ॥
 तीष मकत तब जमा जुड़ावै । धृति सम जावत देइ जमावै ॥
 सुदिला मयै विचार मयानी । दम अपारख सत्य सुबानी ॥
 तब माथि काटि लेइ नवनीला । निमल निराला सुभा सुपुनीला ॥
 टी०—जोग अनिवि कति प्राट तब कर्म सुभासु म लाई ।

बुद्धि सिरावै यान धर समवा मल जहि आई ॥ १७ (क) ॥
 तब विद्यानरूपिनी बुद्धि बिसद धर पाई ।
 चित दिआ भरि धरै दृढ़ समवा दिआदि बनाई ॥ १७ (ख) ॥
 दीन अवस्था दीन गुन तेहि कपास व काटि ।
 तैल तैलीय सुवारि पुनि जाती कहे सुगारि ॥ १७ (ग) ॥

०-एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि विद्यानमय ।

जागहिं जासु समीप जगहिं मर्दाहिक सज्जम सब ॥ ११७ (ब) ॥

ममि इति वृत्ति अवलंब । दीपसिखा सोइ परम प्रबल ॥

तम अगुमव सुख सुप्रकाश । तब भव मूल भेद भ्रम नाश ॥

ल अविद्या कर परिवार । मोह आदि तम मिटइ अपार ॥

। सोइ बुद्धि पाइ उजियारा । उर गहूँ बैसि ग्रंथि निरुआरा ॥

रत ग्रंथि जान खगाराया । बिष अनेक करइ तब मारा ॥

दि सिद्धि प्रेइ गहूँ माई । बुद्धिहि लेम दिखवहिं आई ॥

ल बल छल करि जाहिं समीप । अंचल यात बुझावहिं दीप ॥

इ बुद्धि जाँ परम स्यानी । निन्ह तेन चितव न अनहिं जानी ॥

। तेहि बिष बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥

दी दूर झरोखा नाग । तहूँ तहूँ सुर बैठे करि आग ॥

मात देखहिं बिषय बयासी । ते हठि देखि कपट उधारी ॥

स सो प्रभजन उर गहूँ जाई । तबहिं दीप विद्यान बुझाई ॥

ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकाश । बुद्धि निकल भई बिषय बलास ॥

इतिन्ह सुरन्ह न भयान सोहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदहाई ॥

बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ॥

दी०-तब फिर जीव बिबिध बिबिध पावइ संसल कलस ।

हरि माया आनि दुखर तरि न जाई बिहोस ॥ ११८ (क) ॥

कहेव कठिन समुझत कठिन साधव कठिन बिबेक ।

होई बुनाछर न्याय जाँ पुनि प्रसूह अनेक ॥ १८ (ख) ॥
 यान पंथ केषान के धारा परत खोस होई नहिं वारा ॥
 जा निर्विष पंथ निबुहई सो कैवल्य परम पद लहई ॥
 आनि दुलभ कैवल्य परम पद । परत पुरान निगम आगम बर ॥
 राम भजत सोई मुकुति गोसाई । अनदेखित आवइ बरिआई ॥
 जिमि यल विनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ कैसे उपाई ॥
 तथा मोच्छ सुख सुख खगाराई । रहि न सकइ हरि भगति निहोई
 अस विचारि हरि भगत सधाने । मुक्ति निरादर भगति छुमाने
 भगति करत विनु जतन प्रयास । सुखति मूल आविया नास ॥
 भोजन करिअ गेष्टिहि हित लगि । जिमि सो असन पचवै जठरागि
 अहि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस भूत न जाहि सोदाई ॥
 दो—सेवक सेव्य भाव विनु भव न तरिअ उरगारि ।
 भगई राम पद पंकज अस सिद्धांत विचारि ॥ १९ (क) ॥
 जाँ चेतन कहँ जहँ करइ जगहि करइ चैतन्य ।
 अस समर्थ रघुनाथकहि भजहि जीव ते वन्य ॥ १९ (ख) ॥
 कहेउ यान सिद्धांत बुझाई । सुनई भगति मनि कै प्रसूताई ॥
 राम भगति चित्तमानि सुंदर । बसइ गढ़क जाके उर अंतर ॥
 परम प्रकास रूप दिन राती नहिं कछु चहिअ दिआ परत जाती
 सोई दसिद निकट नहिं आवा । जेभ वात नहिं वाहि बुझावा ॥

प्रबल आदिद्या तम मिटि जाई । होरहि सकल सलम समुदाई ॥
 खल कामादि निकट नाई जाही । बसई भगति जाके उर माही ॥
 मरल सुवासम अरि हित होई । तेहि मानि निज सुख पाव न कोई
 व्यापहि मानस रोग न भरी । निन्द के बस सब जीव दुखारी ॥
 राम भगति मनि उर बस जाके । दुख लवलस न समझे ताके ॥
 चरु सिरोमनि तेई जग माही । जे मनि लागि सुजन कराही ॥
 सो मनि जदहि पाट जा अहई । राम कथा निज कोउ लहई
 सुगम उपप पाई के । नर हतभाग्य देहि भटभरे ॥
 पावन पवत वेद पुराना । राम कथा कचिराकर नाना ॥
 मनीं सजन सुमति कंदारी । त्याग निरोग नयन उरगारी ॥
 भाव सहित खोजे जो प्रानी । पाव भगति मनि सब सुख खानी
 मोरे मन प्रभु अस निखासा । राम ते अधिक राम कर दासा ॥
 राम सिधु धन सजन धीरा । बंदन तब देहि संत समीरा ॥
 सब कर फल देहि भगति सुहाई । सो निज संत न काहै पाई ॥
 अस विचारि जोई कर सतसंगा । राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा
 टी०-अष्ट पद्यानिधि मंदर त्याग संत सुर आहि ।
 कथा सुधा मधु काहहि भगति मधुरता आहि ॥ १२० (क) ॥
 निरति चम अति त्याग मंद लेख्य मोहि निरु मारि ।
 अथ पाइअ सो देहि भगति देखि खोस विचारि ॥ १२० (ख) ॥
 पुनि सप्रेम बोलेउ खगाराऊ । जो कथाल मोहि ऊपर भाऊ ॥

नाथ मोहि निज सेवक जानी। सम प्रखमम कहहु ब्रह्मानी ॥
 प्रथमहि कहहु नाथ मतिधीरा। सग ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥
 बह दुख कवन कवन सुख भरी। सोउ संछेपहि कहहु विचारी ॥
 संत अवत मरम गुनह जानहु। निन्द कर सहज सुभाउ ब्रह्मनहु ॥
 कवन पुन्य श्रुति विदित विचारा। कहहु कवन अव परम कराला ॥
 मानस रोग कहहु समझाहु। गुनह सर्वथ कृपा अधिकाहु ॥
 ताल सुनहु सादर अति प्रीति। मँ संछेप कहहु यह नीति ॥
 नर तन सम नाहि कवनिउ देही। जीव चराचर जानत वेही ॥
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी। ज्ञान विराग भगति सुम देनी ॥
 सो तनु धरि हरि भजहि न जे नर। होहि विषय रत मंद मंद नर ॥
 काँच किरिच बदलें ते उहेही। कर ते जारि परममनि देही ॥
 नाहि दखि सम दुख जग माही। संत मिलन सम सुख जग नाही ॥
 पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगारया ॥
 संत सहहि दुख पाहिन जगती। परदुख हेतु अवत अमारी ॥
 भूँ तन सम संत कृपाला। पाहिन निति सह विपति विचाला ॥
 सम हेतु खल पर बंधन करहु। खाल कटहु विपति सहि मरहु ॥
 खल विनु खारय पर अपकारी। आहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
 पर संपदा विनासि नसाही। जिन सति हति हिस उपल विजारी ॥
 दुष्ट उदय जग आरति हेतु। जया प्रसिद्ध अपम ग्रह केतु ॥
 संत उदय संत सुखकारी। निख सुखद जिन दुष्ट तमारी ॥
 परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा। पर निदा सम अव न गरीसा ॥

एहि विधि सकल जीव जग रोगी । सो कहै रघु मय पीति विद्योगी ॥
 भेषज पुनि कोटिन्ह नहि रोग जाहि हेरि जान ॥ १२१ (ख) ॥
 तेम धर्म आचार तप त्याग जय जप दान ।
 पीबहि संत जेव कहुँ सो किमि छै समाय ॥ १२१ (क) ॥
 दो०—एक व्याधि बस नर मरिहै ए असाधि बहूँ व्याधि ।

जुग विधि उपर मत्सर अधिवेका । कहै छी कहै कुरोग अनोका ॥
 देना उदरवृद्धि अति भारी । विविध वैषना नवन विजारी ॥
 अहंकार अति दुखद उमकआ । दम कपट मद मान नैरुअगा ॥
 पर सुख देखि जगिन सोइ छै । कब दुखता मन कटिछै ॥
 समता दाई कंइ इराडाई । हरष विषाद गारु बहूँताई ॥
 विषय मनोरथ दुगम जाना । ते सब सूख नाम को जाना ॥
 प्रीति करहि जौ दीनिउ भाई । उपजइ सन्यास दुखदाई ॥
 काम रात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित नित छाती जारा ॥
 मोह सकल व्याधिन्ह कर भूँज । निन्ह ते पुनि उपजहि बहूँ सूँज ॥
 सुनहुँ तब अग मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहि सब लोभा ॥
 दर है निदा जे जह करही । ते समगादुर होइ अवतरही ॥
 होहि उरक संत निदा रत । मोह निसा प्रिय ग्यान मानु गत ॥
 सुरभीति निदक जे अभिमानी । रौरव नरक परहि ते प्रानी ॥
 हज निदक बहूँ नरक भोग कति । जग जनमइ गयस सरीर धरि ॥
 हर गुर निदक दादुर होइ । जन्म सहस्र पाव तन सोइ ॥

मानस रोग कष्टक मं गण । दृष्टिं सज कें लखि विरलेन्ह पाए ।
 जाने ते: छीजहि कहु पापी । नास न पावहि जन परितपा ॥
 विषय कुपय्य पाइ अंकरे । मुनिहु दृढय का नर यापरे ॥
 राम कृपा नासहि सज रोगा । जां एहि माँति जनै संजोगा ॥
 सदयुर नैद वचन विस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥
 रघुपति भगति सजीवन मूरी । अर्जुपान भद्रा मति परी ॥
 एहि विधि भलेहि सो रोग नसाही । नाहि त जनन कोटि नहि जाही
 जानिय तब मन विरज गोसाँही । जन उर यल विरग अधिकाई
 सुमति दुधा पाटइ नित नई । विषय आस दुर्बलता पाई ॥
 विमल आन जल जन सो नहई । तब रह राम भगति उर छई ॥
 सिव अज सुकसनकादिक नारद । जे मुनि प्रसन्न विचार विषारद ॥
 सब कर मत लगानायक एह । करिअ राम पर पंकज नेह ॥
 भूति प्रगन सब ग्रंथ कहेही । रघुपति भगति विना सुख नाही
 कमठ पाठ जामहि वर याग । ब्रह्मा सुत वर कहिहि मार ॥
 फेलेहि नम वर बह्विधि फेला । जीव न उर सुख हरि प्रतिकला
 ऐसा जाइ वर भुजाजल पाना । वर जामहि सब सीस विधाना ॥
 अधकार वर रनिहि नसावै । राम विमुख न जीव सुख पावै
 हेम ते अनाल प्रगट वर दहै । विमुख राम सुख पाव न कोइ ॥
 १०-बारि मय्य पल दौह वरसिकता ते वर नेह ।
 विषु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धान्त अपेक्ष ॥ १२२ (क) ॥

दी०-आसु नाम भव भयन हरन धीर अथ सुख ।

सो केपाल मोहि लो पर सदा रहव अवकल ॥ १२४ (क) ॥

सुनि सुखि के वचन सुभ होख राम पर नेह ।

बोलेउ प्रेम सहित नियो गइह बिगत सहेह ॥ १२४ (ख) ॥

मैं कलकल भयउ तब गनी । सुनि खीर भगति रस सानी ॥
राम चरन नैनन रति भई । माया जनिव निपति सब गई ॥
मोह जलधि गोहित गुह भए । मो कहै नाथ विविध सुख दए ॥
मो पहि होइ न प्रति उपकार । बंदउ तब एव गयहि गरा ॥
पूरेन काम राम अनुगामी । गुह सम ताव न कोउ बड़भानी
संतपिय सति गिरि धरनी । परहित हेतु सजह कै करनी ॥
संत हरेय नवनीत समान । कइ कविन्ह पर कहै न जाना ॥
निज परिणाम द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहि संत सुपुनीता ॥
जीवन जन्म सुफल भम भयक । तब प्रसाद संसय सब गयक ॥
जानेह सदा मोहि निज निकर । पुनि पुनि उमा कहइ निहंगर ॥
दी०-आसु चरन सिख नाइ कोरे प्रेम सहित मतिधोर ।
गयउ गइह सुकंठ तब हरेयु गानि खीबीर ॥ १२५ (क) ॥

धन्य धरि सोई जेन सतसंग । धन्य जन्म द्विज भगति अमंग ।
 सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत भति सोई पाकी ।
 धन्य सो भूषु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ।
 धन्य देस सो जई सुरसरी । धन्य गति पवित्रत अनुसरी ।
 सोई कति कोविद सोई रत्नवीरा । जो छल छलिं भजई रघुवीरा ।
 नीति निपुन सोई परम सधान । श्रुति सिद्धांत नीक तेहि जाना ।
 धर्म परायन सोई कुल आता । राम चरन जाकर मन राता ।
 सोई सर्वान्य गुनी सोई श्यामा । सोई महि महि पंडित दाता ।
 जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि विस्वास ॥ १२३ ॥

टी०-सुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।

सो रघुनाथ भगति श्रुति गढ़ । राम कृपा काहूँ एक पाई ।
 जहँ छलि साधन वेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवानी ।
 भूत दया द्विज गुर सेवकाई । विद्या विनय विवेक बड़ाई ।
 नामा कर्म धर्म अत दाना । संजम दम जप मख नामा ।
 तीर्थान साधन समुदाई । जोग विराम यथान निपुनाई ।
 मन कम बचन जनिअ अव जाई । सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई ।
 प्रगत कल्पतरु ककना पुंजा । उपजई प्रीति राम पद कंजा ।
 कहैऊ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छूटहिं भवपासा ।
 विबु हरि कृपा न होई सो गावहिं वेद पुराण ॥ १२५ (ख) ॥

निरिज संतसमास सम न लाभ कहु आन ।

टी०-सौ कैल धन्य उमा सुव जात पूज्य सुपुत्री ।

श्रीरघुवीर परायण जेहि नर उपज बिनीत ॥ १२७ ॥

मति अजुल्य कथा सैं भाषी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥

तब मन प्रीति देखि अधिकारु । तब सैं रघुपति कथा सुनारु ॥

पढ़े न कहिय सठही हठबीलहि । जो मन लाइ न सुन हरिलीलहि ॥

कहिअ न जोमिहि कोमिहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर सामिहि ॥

द्विज द्रोहिहि न सुनइअ कबहुँ । सुरपति सरिस होइ नप जगहुँ ॥

राम कथा के तेइ अधिकारी । जिनहूँ केँ सतसंगति आति प्यारी ॥

गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ॥

ता कहूँ यह विसेष सुखदारु । जाहि प्रानपिय श्रीरघुमारु ॥

टी०-राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वान ।

भाव साहित सो यह कथा करव अवन पुट पान ॥ १२८ ॥

राम कथा गिरिजा सैं बरनी । कलिमल समान मनोमल हरनी ॥

संसति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहि श्रुति सुरी ॥

एहि यहूँ वीचर सन सोपाना । रघुपति भगति कर पंधाना ॥

आति हरिकृपा जाहि पर होई । पाऊँ देइ एहिं मारग सोई ॥

मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कण्ठ लजि गावा ॥

कहहिं सुनहिं अनुभादन करही । ते गोपद डेव भवनिधि तरही ॥

सुनि सन कथा हृदय अति भारु । गिरिजा जोली गिरा सुहरु ॥

नाथ क्यूँ मम गत सदेह । राम चरन उपजेउ नव नेह ॥

[illegible]

भजन भजन सदैव । जन जन सजन प्रिय पद ॥

॥ कृष्णं जयामहि गण । सै यद् देव पावन चरित सुदेव ॥

सुमित्रिअ गइअ रामहि । सतत सुनिअ राम गुन आसहि ॥

मन्त्रिभवनं त्रिजगतिषु । राम भवति कुरु पार्थ ॥

। ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५५ ॥

[illegible]

पुत्रसम्पन्नं चरितं यत् कदाहिं सुतहिं जे गवहो ।

न पंच श्रीगुरुं मनोहरं जानि जो नर नर धरै ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

(उत्तरकाण्ड समाप्त)

सप्तमः सर्गः समाप्तः ।

इति श्रीमद्रामचरितमानस सकलकविकृष्वविश्वसे

नवाक्षिपारयण, नवौ विग्रहः ॥

मासपारयण, तीसरा विग्रहः ॥

ते संधारपवद्वयोरिकिरौदृष्टान्ते चो माववाः ॥ २ ॥

श्रीमद्रामचरितमानसमिदं भक्त्यावगाहनेन ये

मायाभोदमजगद्दृष्टिमलं प्रमाद्युर्दुःखम् ।

पुन्यं पापद्वयं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तियुतं

मायावद्विषमं चकार तुलसीदासजया नानसम् ॥ १ ॥

सत्या तद्वृत्तान्तमनिरतं स्नानवस्त्रमःशान्तय

श्रीमद्रामपदाब्जमनिरतं प्रादुर्भूतं रामायणम् ।

श्री०-मरुतं प्रसूया कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दूर्गम्

लिप्ति रचिताय निरंतरं प्रिय जगद्दृष्टो माहि राम ॥ १३० (ख) ॥

कामिनि नारि पित्रादि लिप्ति जामिनि प्रिय लिप्ति दाम ।

अस विचारि रघुवंसमान दृष्टुं विषम भव भूरी ॥ १३० (क) ॥

दी०-गो सम दीन न दीन हित तुष्ट समान रघुवीर ।

पाथो परम विग्रहो राम समान प्रभु नार्हो कर्तुं ॥ १३० ॥

जाको कथा खलस्य ते मतिभूतं तुलसीदासः ॥ १३० ॥

* रामचरितमानस *

२४८

[illegible]

[illegible]

୧.୦ କଲେ ୧୫
 ୧.୦ ପାଞ୍ଚ କଲେ
 ୧.୦ ଲୋକଲେ
 ୧.୦ ଶେଷ-ପାଞ୍ଚ
 ୧.୦ ୧ ଲୋକ " "
 ୧.୦ ୧ ଲୋକ " "

ଲୋକଲେ ଲୋକଲେ

୧.୦ ୧ ଲୋକ " "
 ୧.୦ ୧ ଲୋକ ଶେଷ ଲୋକ
 ୧.୦ (୧ ଲୋକ) ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଶେଷ ଲୋକ
 ୧.୦ (୧ ଲୋକ) ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଶେଷ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଶେଷ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଶେଷ ଲୋକ
 ୧.୦ ୧ ଲୋକ " "
 ୧.୦ ୧ ଲୋକ " "

ଲୋକଲେ-ଲୋକଲେ

୧.୦ (୧ ଲୋକ)
 ୧.୦ ଲୋକ (୧ ଲୋକ)
 ୧.୦ ଲୋକ (୧ ଲୋକ)
 ୧.୦ ଲୋକ (୧ ଲୋକ)

୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ

ଲୋକଲେ-ଲୋକଲେ

୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ

ଲୋକଲେ-ଲୋକଲେ

୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ
 ୧.୦ ଲୋକ ଲୋକ

ଲୋକଲେ-ଲୋକଲେ

एवमप्यप्यक-गीतादेश, ए० गीतादेश (गीतादेश)

॥ अथ पुनर्जातं जातकालं विधेयं ॥

[illegible]

